CRPF SAMACHAR

CRPF Newsletter & Magazine

2003

CRPF SAMACHAR

CRPF Newsletter & Magazine

2003

Contents

28 February 2003 Vol. 16 No. 1

31 March 2003 Vol. 16 No. 2

31 May 2003 Vol. 16 No. 3

30 Jun 2003 Vol. 16 No. 4

31 August 2003 Vol. 16 No. 5

30 September 2003 Vol. 16 No. 6

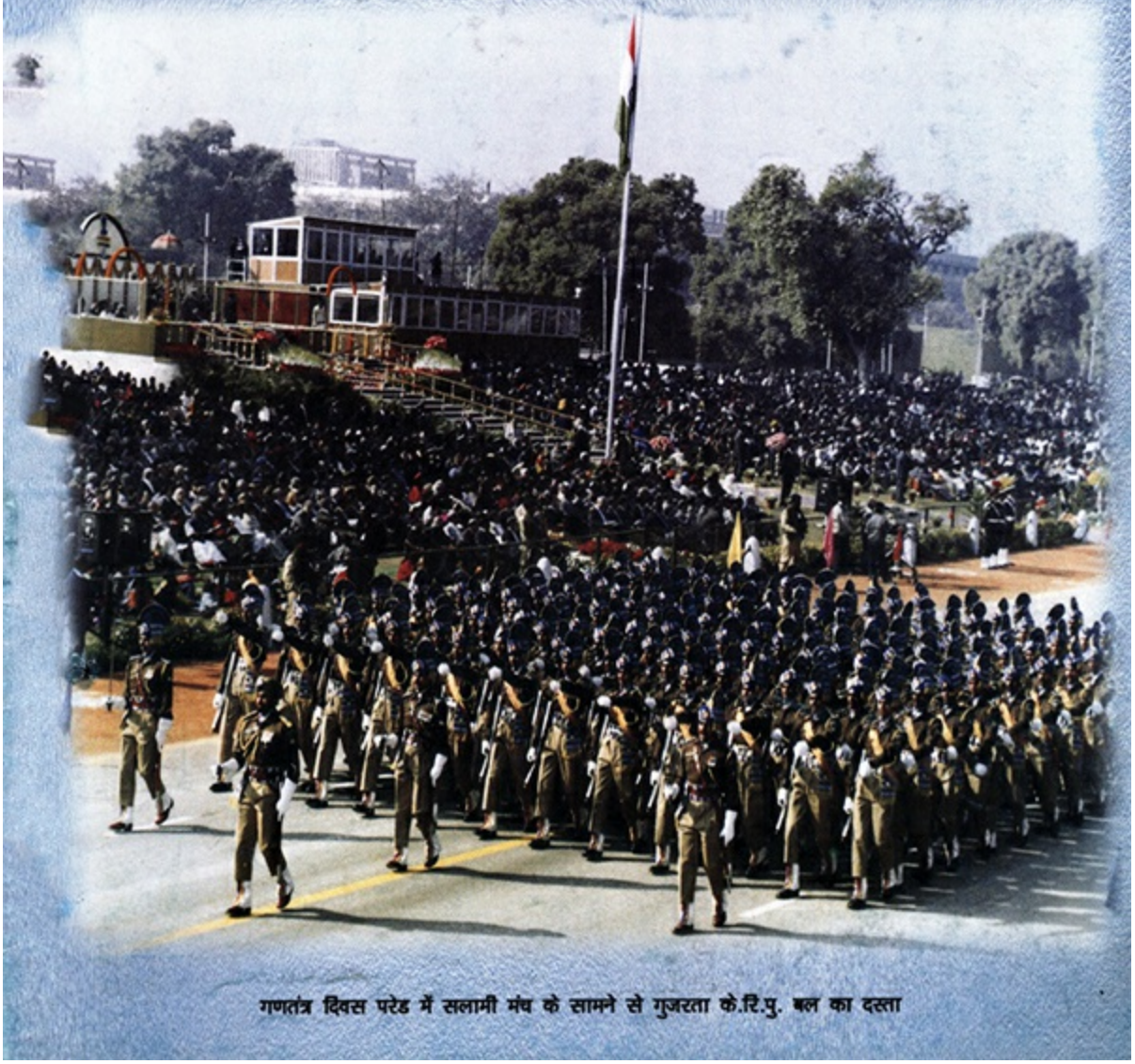
30 November 2003 Vol. 16 No. 7

31 December 2003 Vol. 16 No. 8

सी. आर. पी. एफ.

समाचार

28 फरवरी, 2003



गणतंत्र दिवस परेड में सलामी मंच के सामने से गुजरता के.रि.पु. बल का दस्ता



डा. विनाथ मिश्र से बल के महानिदेशक का पदभार ग्रहण करने के पश्चात् श्री एस.सी. चौबे अपने कार्यालय में



***137*वीं बटालियन द्वारा लगाये गये रक्तदान शिविर में रक्तदान करते बल के कार्मिक**

सी.आर.पी.एफ. समाचार

खण्ड-16 अंक-1
28 फरवरी, 2003
9 फाल्गुन, शक 1924

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
रणबीर सिंह

चित्र
फोटो अनुभाग
के. रि. पु. बल महानिदेशालय एवं यूनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशालय के. रि. पु. बल
ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स
लोधी रोड, नई दिल्ली-110003
की ओर से
डी.जी. महापात्र

कम्पोजिंग एवं प्रिंटिग
सी.आर.पी.एफ. प्रेस
नई दिल्ली-110072

सम्पादक मण्डल

अध्यक्ष

हिमान्शु कुमार, अपर महानिदेशक

सदस्य

विक्रम श्रीवास्तव, महानिरीक्षक (कार्मिक एवं मुख्यालय)
आर.एस. नौटियाल,विक्रम श्रीवास्तव, महानिरीक्षक (संभरण एवं निर्माण)
राजेन्द्र सिंह, उप महानिरीक्षक (कार्मिक)

डॉ.एन.एस. बिष्ट, उप महानिरीक्षक (परिचालन)
पी.जे. शेट्टी, उप महानिरीक्षक (प्रशा.)
सी.बी. मैथ्यू, अपर उप महानिरीक्षक (प्रशि.)
प्रवीण कुमार, उप वित्तीय सलाहाकार
एम.एस. नेगी, कमान्डेंट (एम.टी.)
डी.जी. महापात्र, जनसम्पर्क अधिकारी
राजीव राय, उप कमां. (परि.)
मणि भूषण प्रसाद, हिंदी अधिकारी

इस अंक में

- आप ही नहीं बल्कि बल का प्रत्येक सदस्य चुस्त एवं स्पन्दनशील होना चाहिए
- गणतंत्र दिवस परेड में बल के दो दस्तों ने भाग लिया
- केन्दीय रिजर्व पुलिस बल के सेवानिवृत्त अधिकारियों को भावभीनी विदाई
- आर०टी०सी०-प्रथम में नवारक्षियों की दीक्षांत परेड
- बल कार्मिकों द्वारा मानवीय सेवा एवं कर्मठता का अनुपम एवं उत्कृष्ट उदाहरण
- बल ने वर्ष 2002 के दौरान 240 उग्रवादियों को मारा
- के.रि.पु.बल के 53 कार्मिक राष्ट्रपति के शौर्य वीरता, विशिष्ट एवं सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदकों से सम्मानित
- बल द्वारा सामाजिक कार्य
- वर्ष 2002 के दौरान ग्रुप केंद्र, पल्लीपुरम द्वारा अर्जित राजभाषा की प्रगति से संबधित उपलब्धियाँ
- 81वीं बटालियन में इनफोरमेटिक सेन्टर का उद्घाटन
- खेल जगत में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की उपब्धियां
- अंतर सेक्टर इडंयूरेंस एवं शूटिंग प्रतियोगिता
- माह मई 2002 से जनवरी 2003 तक मृत्यु को प्राप्त हुए बल के कार्मिक

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

-संपादक

आप ही नहीं बल्कि बल का प्रत्येक सदस्य चुस्त एवं स्पन्दनशील होना चाहिए

–एस.सी. चौबे

31 दिसम्बर, 2002 को अपराह्न में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक का कार्यभार ग्रहण करने के पश्चात् श्री सतीश चन्द्र चौबे ने बल के अधिकारियों को 2 जनवरी 2003 को लिखे गये पत्र में कहा :-

देश की एकता एवं अखंडता कायम रखने में महत्वपूर्ण योगदान करने वाले इस महान् बल के महानिदेशक का पद ग्रहण करना मेरे लिए अत्यन्त गर्व एवं सम्मान की बात है।

1987 से 1995 तक 8 वर्ष उप महानिरीक्षक एवं सेक्टर महानिरीक्षक दोनों हैसियतों में मुझे आपके साथ कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। देश की परम्पराओं और बल की परिचालनिक लचक, व्यावसायिकता, ईमानदारी एवं बल की दक्षता बनाए रखने के लिए मैं सदैव प्रयासरत रहूंगा। इस बल की गौरवपूर्ण परम्पराओं को बनाए रखने के लिए ही नहीं बल्कि देश और विदेश में इसे 'उत्कृष्ट बल' बनाने में भी मुझे आपकी सहायता एवं सहयोग की आवश्यकता है।

गंभीर खतरे की परिस्थितियों में केरिपुबल की भूमिका प्रायः वीरतापूर्ण और निर्णायक कार्रवाई करने की मांग करती है। केरिपुबल के अधिकारी के रूप में आप केवल प्रशासनिक कार्य करने वाले कर्मचारियों के प्रबन्धक ही नहीं है वरन एक ऐसे लीडर, एक ऐसे व्यक्ति भी हैं जिसके जवान, खतरे, अव्यवस्था तथा हर कठिन घडी में आपका बेझिझक अनुसरण करेंगे। आपको नेतृत्व का सर्वोत्तम रूप "मेरा अनुसरण करो" और 'आगे बढ़ो' जैसी श्रेष्ठ कमान द्वारा उदाहरण प्रस्तुत करना है।



बल मुख्यालय में महानिदेशक का पद भार ग्रहण करते हुए श्री एस.सी. चौबे



महानिदेशक का कार्य ग्रहण करने के उपलक्ष्य में आयोजित मोज में श्री एससी चौबे को गुलदस्ता भेंट करते हुए बल के अपर महानिदेशक श्री हिमांशु कुमार

नेतृत्व गुण में "पूर्ण समर्पण" की भावना भी निहित है। इसका यह अर्थ है कि अपनी पहचान अपनी कंपनी या बटालियन में समावेश करके ही आप उनसे सर्वोत्तम परिणाम प्राप्त कर सकेंगे जिससे कि आप एक अनुकरणीय आदर्श व्यक्ति बने। इससे कुछ भी उन लोगों की सेवा के लिए पर्याप्त नहीं होगा जिनका नेतृत्व करने का आपको सौभाग्य प्राप्त हुआ है। नेतृत्व उन व्यक्तियों के प्रति समर्पित जिम्मेदारी की मांग करता है जो आपके अधीन हैं, उनका जीवन और उनका कल्याण आपके हाथों में है। अतः उनका आपसे सर्वोत्तम आचरण, व्यावसायिक उत्कृष्टता एवं सत्यनिष्ठा की अपेक्षा करना तर्कसंगत है।

जवानों के लीडर के रूप में अपनी कमान के अधीन अधीनस्थ रैंकों के कार्मिकों के साथ औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों प्रकार के संप्रेषण की व्यावहारिक पद्धति को बनाए रखें, क्योंकि एक अच्छा लीडर वही होता है जो अपने व्यक्तियों के लिए हमेशा आसानी से सुलभ होता है।

एक वर्दीधारी बल के लिए प्रथम प्रभाव महत्व रखता है। केरिपुबल अथवा किसी भी अन्य बल की परख उसके अधिकारियों एवं जवानों की चाल-ढाल से होती है। आपका क्वाटर गार्द चुस्त-दुरूस्त है, इतना ही काफी नहीं है बल्कि आप और बल का प्रत्येक जवान भी चुस्त-दुरूस्त एवं स्पंदक होना चाहिए। आपकी वर्दी से आपके व्यक्तित्व में निखार आना चाहिए।

जैसा कि आप जानते हैं बल के मनोबल तथा दक्षता के लिए कल्याण महत्वपूर्ण स्थान रखता है। अपने जवानों की शिकायतों के प्रति संवेदनशील बनें और जो शिकायतें सही हों उनका निवारण तत्काल किया जाना चाहिए। यद्यपि अनुशासन व नियन्त्रण किसी भी अर्द्ध सैनिक संगठन के स्तम्भ हैं किन्तु इन स्तम्भों को जवानों के कल्याण और मनोबल संबंधी आवश्यकताओं के आड़े नहीं आने देना चाहिए। खतरे के समय, आपके जवान आपसे साहस की अपेक्षा रखते हैं। "वे आपसे अविवादित सत्यनिष्ठा की अपेक्षा करते हैं। वे, आपसे अपना निजी जीवन उच्च दर्जे का बनाए रखने की अपेक्षा करते हैं जो पक्षपात रहित हो, जिसमें सामंजस्य हो, जिसमें गरिमा हो किन्तु अलगाव न हो, जिसमें करूणा एवं सहानुभूति हो, जो प्रत्येक अधीनस्थ की निजी समस्याओं को उसी की भांति समझे। यह भी याद रखा जाए कि कोई भी पद आपको लीडर के रूप में नियुक्त नहीं कर सकता। आप अपने कन्धों पर, अपनी टोपी पर या अपने विजिटिंग कार्ड से लीडरशिप धारण नहीं करते। आप भारत के सबसे पुराने अर्द्धसैनिक बल के लीडर हैं जिसने अनेक वर्ष देश की सेवा की है। मुझे विश्वास है कि आप अपने उस भारत देश की रक्षा करने में अपने जवानों की सहायता करेंगे जिसे हम सदियों से प्यार करते रहे हैं।

आज विद्यमान दबावों के भीतर उपयुक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार करना सर्वाधिक कठिन कार्य है। पिछले वर्ष, जम्मू व कश्मीर तथा पूर्वोत्तर में अत्याधिक परिचालनिक प्रतिबद्धताओं के कारण केरिपुबल के केवल 12% कार्मिकों को ही रोटेशनल प्रशिक्षण दिलाया जा सका। प्रशिक्षण की कमी का कुप्रभाव कई रूपों में

पड़ता है जिनमें अनुशासन, मनोबल और व्यावसायिक दक्षता आदि कुछेक हैं। मेरा आपसे निवेदन है कि आप इस पर विचार करें और मुझे बताएं कि हम विद्यमान सीमाओं के भीतर अपने जवानों को अच्छा प्रशिक्षण किस प्रकार प्रदान कर सकते हैं। आइए, हम मिलकर विचार-विमर्श करें जिससे कोई-न-कोई हल जरूर निकलेगा।

मेरा सदैव सहभागी प्रबन्धन में दृढ़ विश्वास रहा है। मैं हमेशा आपके अनुभव और आपकी विद्वता का लाभ उठाना चाहूंगा। अतः बल से संबंधित मामलों के बारे में आप जो बेहतर समझे, उसे मुझे लिखने के लिए स्वतंत्र है।

पूर्वोत्तर, जम्मू व कश्मीर और देश के अन्य भागों में आतंरिक सुरक्षा की वर्तमान स्थिति में मुझे और अधिक चुनौतियां दिखाई दे रही हैं। कुछ राज्यों में आगामी विधान सभा चुनावों के कारण इन चुनौतियों में और वृद्धि होगी। केरिपुबल को अपनी समर्थता सिद्ध करने के लिए और कौन से चुनौतीपूर्ण समय की आवश्यकता होगी? जिस रास्ते पर आप चल रहे हैं वह प्रायः दुर्गम और बाधाओं से भरा है। केरिपुबल के अधिकारी के रूप में आपकी जो जिम्मेदारी है कृपया उसे याद रखे। अधीनस्थ कर्मचारियों को ब्रीफिंग व डि-ब्रीफिंग करने, सावधानीपूर्वक योजना बनाने के अलावा अभियानों में अपनी निजी सहभागिता द्वारा आपको उत्कृष्ट लीडरशिप को दृढ़ करना चाहिए। सामरिक दृष्टि से सोचें और सामरिक दृष्टि से कार्रवाई करें, क्योंकि योजना न बनाने का अर्थ है अपनी असफलता की योजना तैयार करना।



बल के अधिकारियों एवं कार्मिकों को नववर्ष की शुभकामनाएं देते हुए बल के महानिदेशक श्री एस.सी. चौबे

केरिपुबल ने व्यावसायिक उत्कृष्टता के लिए अद्वितीय ख्याति अर्जित की है। जिसे न केवल अत्याधिक प्रयासों से बल्कि अनेक बलिदानों से अर्जित किया गया है। यह जिम्मेदारी अब आपके कन्धों पर है। आपके अथक प्रयासों से कम कोई बात बल की भलाई के लिए अपर्याप्त होगी। मेरा विश्वास, मेरा चिन्तन और मेरी शुभकामनाएं सदैव आपके साथ हैं।

गणतंत्र दिवस परेड में बल के दो दस्तों ने भाग लिया



राजपथ पर गणतंत्र दिवस परेड में भाग लेता हुआ केरिपुबल का बैंड दस्ता

देश के शांति प्रहरी - केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने गणतंत्र दिवस परेड, 2003 में अपने दो दस्तों को भेजा। इनमें से एक दस्ता पुरूष कर्मियों का था जबकि दूसरा

दस्ता ब्रास बैण्ड का था।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के पहले दस्ते में उप कमाण्डेन्ट श्री हरपाल सिंह के नेतृत्व में तीन अन्य निरीक्षकों के साथ 144 सशक्त जवानों ने परेड में भाग लिया। रंगीली साज-सज्जा वाली बल की इस टुकड़ी के जवान गाढ़े नीले रंग की पगड़ी, अंगोला कमीज, खाकी पेन्ट पर सफेद चमड़े की बेल्ट और नीले रंग का स्कार्फ बाँधे थे। परेड टुकड़ी के जवानों का औसत कद 6 फुट था।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के पुरूष दस्ते के पीछे केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ब्रास बैण्ड के 98 सशक्त बैण्ड कर्मी अन्य तीन अधीनस्थ अधिकारियों के साथ निरीक्षक राज कुमार के नेतृत्व में बल के परेड दस्ते का अनुरक्षण कर रहे थे। के.रि.पु.बल ब्रास बैण्ड का गठन 1961 में किया गया था।

बल के इन दस्तों ने के.रि.पु.बल के कथानक गीत **"सेवा भक्ति का। यह प्रतीक सी.आर.पी.एफ. कहलाता है"** की धुन पर मार्चिंग की। मार्चिंग दस्ते के जवानों के हाथों में एस.एल.आर. तथा उनके कमांडरों के हाथों में तलवार थी।

केन्दीय रिजर्व पुलिस बल के सेवानिवृत्त अधिकारियों को भावभीनी विदाई



महानिदेशक श्री एससी. चौबे सेवानिवृत पर श्री एस.सी. बहुगुणा को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए



सेवा निवृत्त पर श्री भूपेन्द्र सिंह यादव को स्मृति चिन्ह प्रदान करते बल के महानिदेशक श्री एस.एस. चौबे

1968 में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल परिवार में सीधे राजपत्रित अधिकारी के रुप में शामिल हुए श्री चन्द्र मोहन बहुगुणा, के0रि0पु0बल में विभिन्न हैसियतों से देश के विभिन्न भागों में तैनात रहे। अपने 34 वर्ष के सेवा काल के दौरान श्री बहुगुणा ने मणिपुर, बंगाल, पंजाब तथा जम्मू-काश्मीर जैसे उग्रवाद अलगाववाद प्रभावित राज्यों में बल को कुशल नेतृत्व प्रदान किया। इन्होंने अपनी परिचालनिक एवं सामरिक दक्षता बढ़ाने के लिए विभिन्न तरह के सेवा कालीन तथा विशेष कोरों का प्रशिक्षण लिया। 34 वर्ष बल की लंबी सेवा के बाद श्री बहुगुणा 31 जनवरी, 2003 को स्पेशल सेक्टर मुख्यालय से अपर पुलिस उप महानिरीक्षक के पद से सेवानिवृत्त हुए। इनके सम्मान में बल मुख्यालय में आयोजित एक समारोह में बल के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने इन्हें भावभीनी विदाई दी।

हरियाणा के रेवाड़ी जिले में जन्में भूपेन्द्र सिंह यादव 1969 में केन्द्रीय रिर्जव पुलिस बल परिवार में अराजपत्रित अधिकारी के रुप में शामिल हुए थे। अपनी कठिन मेहनत, कर्तव्य परायणता, डयूटी के प्रति समर्पण तथा लगनशीलता के कारण श्री भूपेन्द्र सिंह 1983 में पदोन्नति फलस्वरुप राजपत्रित अधिकारी बने। अपनी 33 वर्ष की सेवा के दौरान श्री भूपेन्द्र सिंह देश के विभिन्न भागों में तैनात रहे तथा बल की कई बटालियनों एवं संस्थाओं में कई पदों पर कार्य किया। 33 वर्ष की लंबी सेवा के बाद श्री भूपेन्द्र सिंह 6 बटालियन, के.रि.पु.बल से द्वितीय कमान अधिकारी के पद से 31 जनवरी, 2003 को सेवा निवृत्त हुए। बल मुख्यालय में आयोजित एक समारोह में बल के अधिकारी एवं जवानों ने श्री यादव को भावभीनी विदाई दी तथा इनके अच्छे स्वास्थ्य एवं दीर्घायु की कामना की।

उत्तर प्रदेश के मऊ जिले में जन्में श्री आर.एस. मल केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में 1968 में अराजपत्रित अधिकारी के रूप में शामिल हुए थे। अपनी लगन एवं मेहनत से श्री मल 1991 में पदोन्नति स्वरूप राजपत्रित अधिकारी बने। श्री मल के.रि.पु.बल में आने से पूर्व 5 वीं बटालियन पी.ए.सी. उत्तर प्रदेश में भी कार्य कर चुके थे। कम्प्यूटर के क्षेत्र में श्री मल को विशेष ज्ञान था इसीलिए इनकी सेवाओं का उपयोग महानिदेशालय की ई.डी.पी. शाखा में बल के कम्प्यूटरीकरण के लिए किया गया। इन्होंने अपने सेवा काल के दौरान कम्प्यूटर के क्षेत्र में कई प्रकार के सेवा कालीन कोर्स किए तथा बल को अपनी बहुमूल्य सेवाए प्रदान की। श्री मल ने अपने 34 वर्ष के सेवा काल के दौरान देश के विभिन्न भागों में विभिन्न हैसियतों से कार्य किया। श्री मल बल मुख्यालय से उप कमाण्डेन्ट के पद पर कार्यरत रहते हुए 34 वर्ष की सफल सेवा के बाद 31 जनवरी, 2003 को सेवा निवृत्त हुए। बल मुख्यालय में आयोजित एक समारोह में मुख्यालय के सभी अधिकारी तथा कर्मचारियों ने इनके अच्छे स्वास्थ्य तथा दीर्घायु होने के कामना की तथा इन्हें भावभीनी विदाई दी।

2दिसम्बर 1942 को एक संभ्रान्त व सुसंस्कृत परिवार में जन्में श्री अरूण कुमार सिंह

ने 9 फरवरी को भारतीय सेना में कमीशन प्राप्त किया तथा 01 जुलाई 1969 को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में सीधे राजपत्रित अधिकारी के रूप में सम्मिलित हुए। अपने लगभग 39 वर्ष के दीर्घ सेवा काल के दौरान इस बल के विभिन्न कार्यालयों/ संस्थाओं में प्रशासकीय पद पर कार्यरत रहते हुए बल का कुशल मार्गदर्शन व नेतृत्व किया। उत्कृष्ट सेवाओं के लिए बल के महानिदेशक ने इनको डिस्क व प्रशंसा पत्र से सम्मानित किया। इसके अलावा सराहनीय सेवाओं के लिए वर्ष 1994 के राष्ट्रपति द्वारा पुलिस पदक तथा पुनः 2000 में विशिष्ट सेवा पदक से सम्मानित किया गया। इतना ही नहीं भारत सरकार द्वारा श्री सिंह को 1965 में सेवा मेडल, पूर्वी स्टार सहित कठिन सेवा मेडल, समर सेवा पदक व संग्राम पदक से भी सम्मानित किया गया। अधिवर्षिता के उपरांत श्री अरुण कुमार सिंह, 31 दिसम्बर, 2002 को पुलिस महानिरीक्षक, मध्य सेक्टर, केरिपुबल के पद से सेवानिवृत्त हुए।



श्री आर.एस. मल को सेवानिवृत्त पर स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए महानिदेशक श्री एस.सी. चौबे



मध्य सेक्टर मुख्यालय में श्री अरुण कुमार सिंह को सेवानिवृत्त पर विदाई देते अधिकारी एवं कर्मचारी

आर०टी०सी०-प्रथम में नवारक्षियों की दीक्षांत परेड



सत्यनिष्ठा की कसम लेने के बाद माचिंग करता हुआ नवारिक्षयों का दस्ता

रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र-प्रथम, केरिपुबल, नीमच में 44 सप्ताह का बुनियादी प्रशिक्ष सफलतापूर्वक पूर्ण करने के बाद 36 नवारक्षियों को 3 जनवरी, 2003 को आयोजित दीक्षांत समारोह में श्री हरभजन सिंह, प्राचार्य आटीसी-प्रथम ने राष्ट्र सेवा व रक्षा की शपथ दिलाई।

दीक्षांत समारोह परेड का संचालन सहायक प्राचार्य श्री बी.ए.के. चौरसिया ने किया। श्री सिंह ने परेड की सलामी ली तथा नवारक्षियों को बुनियादी प्रशिक्षण सफलता पूर्वक पूरा कर बल के सदस्य बनने पर बधाई दी तथा कहा इस प्रशिक्षण केन्द्र का प्राथमिक उद्देश्य बल के नवयुवकों को प्रशिक्षित कर एक कुशल सिपाही बनाना, उनमें धर्म निरपेक्षता की भावना पैदा करना और सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास कर उन्हें देश का एक अच्छा नागरिक बनाना है। इस संस्थान में नवारक्षियों को आज के समय में आंतकवादियों द्वारा चलाई जा रही गतिविधियों तथा अन्य विघटनकारी तत्वों से लड़ने में सक्षम बनाने का प्रशिक्षण दिया गया ताकि वे भविष्य में देश की सुरक्षा के मार्ग में आने वाली विभिन्न प्रकार की चुनौतियों का डटकर मुकाबला कर सकें। श्री सिंह ने नवारक्षियों को देश की संवैधानिक सम्प्रभुता को अक्षुण्ण बनाये रखने हेतु देश आंतकवाद एवं प्राकृतिक विपत्तियों से निपटने के लिये हर क्षण मानसिक एवं शारीरिक रूप से तैयार रहने का आहवान किया। उन्होंने कहा कि पूर्वोत्तर राज्यों, जम्मू-कश्मीर तथा पंजाब में आंतकवाद का सामना करने व देश के कई भागों में साम्प्रदायिक उपद्रवों के समय इस बल द्वारा निःस्वार्थ भाव से किये कार्यों को बहुत ख्याति मिली है। आप सभी से आशा की जाती है कि आप इस बल के

नाम को और रोशन करेगें तथा अपने कर्तव्यों का राष्ट्र हित में सही प्रकार से निर्वाहन करेगें। इस अवसर पर श्री सिंह ने प्रशिक्षण के दौरान अपने बैच में सर्वश्रेष्ठ आउट डोर प्रक्षिणार्थी की ट्राफी नवारक्षी एस. धर्मेन्द्र सिंह, सर्वश्रेष्ठ इन्डौर-नवारक्षी की ट्राफी यादराम मीणा जबकि सर्वश्रेष्ठ फायरी की ट्राफी नवारक्षी के०एन० कोयरिंग को प्रदान की।

बल कार्मिकों द्वारा मानवीय सेवा एवं कर्मठता का अनुपम एवं उत्कृष्ट उदाहरण

1जनवरी 2003 को नीमच जिले के अर्न्तगत मनासा तहसील से करीब 10 किलोमीटर दूर लूमड़ी नामक ग्राम में एक कुंए की खुदाई के दौरान, कुँआ धंसकने से उसमें काम कर रहे मजदूर फंस गये, बचाव एंव राहत हेतु स्थानीय प्रशासन ने केन्द्रीय रिर्जव पुलिस बल की मदद माँगी। सूचना मिलते ही सी0टी0सी0 प्रथम नीमच की एक टुकड़ी सहायक कमाण्डेंट श्री परमिन्दर सिंह यादव के नेतृत्व में भेजी गयी। बल के कार्मिकों ने अपनी कर्मठता। का परिचय देते हुये धंसके हुए कुये से लगभग 10 घंटे की कड़ी मेहनत के बाद 4 मजदूरों को मृत अवस्था में निकाला।



कुंए के मलबे में दबे व्यक्तियों को निकालते हुए बल के कार्मिक

स्थानीय नागरिकों, प्रशासन तथा प्रेस मीडिया ने के०रि०पु०बल के अधिकारियों एंव जवानों द्वारा प्रदर्शित मानवीय सहायता एवं कर्मठता की भूरि-भूरि प्रशंसा की और बल कार्मिकों द्वारा मानवीय सेवा एवं कर्मठता का एक उत्कृष्ट उदाहरण बताया। नीमच के जिला अधिकारी तथा पुलिस अधीक्षक ने बल कार्मिकों के इस कार्य की प्रकार सराहना की :-

दिनांक 1.1.2003 को मनासा तहसील के ग्राम लूमडी में कुआ धस जाने से उसमें फंसे व्यक्तियों को बाहर निकालने में श्री परमिंदर सिंह यादव, सहायक कमाण्डेन्ट, सी.टी.सी. प्रथम तथा सी.आर.पी. एफ. नीमच के 30 जवानों ने जिस अदम्य साहस व परिश्रम का परिचय दिया है, वह सराहनीय होकर प्रशंसनीय है। विशेष कर संक्षिप्त सूचना पर ही अविलंब सहायता सी.आर.पी.एफ. द्वारा उपलब्ध करवाई गई।

आशा है भविष्य में भी जिला प्रशासन को सदैव की तरह सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

–अनुपम राजन
कलेक्टर-नीमच

1 जनवरी 2003 को ग्राम लूमडी थाना मनासा जिला नीमच में निर्माणाधीन कुआं घस जाने से उसमें लगभग 10 व्यक्ति फस गये थे, जिसमे 5 घायलों को निकालने के बाद भी 4 व्यक्ति फसे रह गये। इन चार व्यक्तियों को मलबे से निकालने में श्री परमिन्दर सिंह यादव, सहायक कमाण्डेट सी.टी.सी. प्रथम के साथ 30 सी.आर.पी. एफ. के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की टीम ने रातभर मेहनत कर मलबे में दबे व्यक्तियों को निकालने में स्थानीय पुलिस एवं प्रशासन को सहयोग प्रदान कर अत्यन्त सराहनीय कार्य किया। श्री परमिन्दर सिंह यादव एवं उनकी टीम के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के द्वारा मेहनत, सूझ-बूझ से किये गये सराहनीय कार्य की मैं भूरि-भूरि प्रशंसा करती हूँ।

–मीनाक्षी शर्मा
पुलिस अधीक्षक-नीमच

बल ने वर्ष 2002 के दौरान 240 उग्रवादियों को मारा



केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सी.आर.पी.एफ.) ने वर्ष 2002 के दौरान आतंकवाद तथा उग्रवाद को दबाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बल के जवानों ने विभिन्न मुठभेड़ों में वर्ष 2002 के दौरान 240 उग्रवादियों को मारा तथा 2,017 को गिरफ्तार किया तथा उग्रवादियों से 670 हथगोले/राकेट/बम्ब तथा 975 किलोग्राम विस्फोटक सहित 747 हथियार तथा 22,108 राउंड गोला-बारूद भी बरामद किया। उग्रवादियों के साथ हुई 333 मुठभेड़ों में बल के 64 जवान कर्तव्य पथ पर शहीद तथा 164 घायल हुए।

वर्ष 2002 के दौरान बल के जवानों ने जम्मू-काश्मीर में 178 आतंकवादियों को मारा तथा 107 उग्रवादियों को गिरफ्तार किया जबकि देश के उत्तरी-पूर्वी भागों में 47 उग्रवादियों को मारा तथा 1,135 को गिरफ्तार किया।

आन्ध्र प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, पश्चिमी बंगाल तथा उड़ीसा में भी केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की कम्पनियों को नक्सलवादी तथा वामपंथी उग्रवादियों से प्रभावी रूप से निपटने के लिए तैनात किया गया। वर्ष 2002 के दौरान इन राज्यों में विभिन्न मुठभेड़ों में बल के जवानों ने 14 उग्रवादियों को मार गिराया तथा 721 को गिरफ्तार किया।

इसके अलावा के.रि.पु.बल के जवानों ने स्थानीय लोगों का दिल जीतने के लिए उत्तर-पूर्व राज्यों में अनेक सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जिसके लिये भारत सरकार ने 56 लाख रूपये स्वीकृति किए।

के.रि.पु.बल के 53 कार्मिक राष्ट्रपति के शौर्य वीरता, विशिष्ट एवं सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदकों से सम्मानित

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 153 अधिकारियों और जवानों को गणतंत्र दिवस, 2003 के अवसर पर राष्ट्रपति के शौर्य वीरता, विशिष्ट तथा सराहनीय सेवाओं के पदकों से सम्मानित किया गया है।

14 कार्मिकों को राष्ट्रपति के शौर्य वीरता के पुलिस पदक जबकि 5 कार्मिकों को विशिष्ट सेवाओं के लिए पुलिस पदक तथा 34 को सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक प्रदान किए गये।

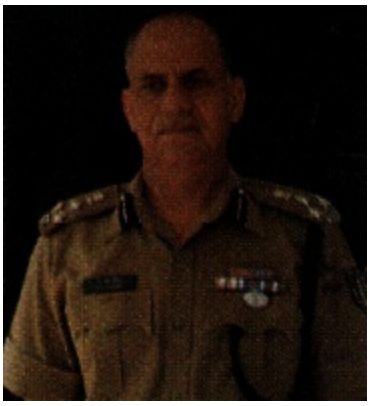
राष्ट्रपति के शौर्य वीरता के पुलिस पदक :- श्री आर.पी.एस. राणा, कमाण्डेन्ट, 39 बटा., श्री के.एस.राणा, सहायक कमाण्डेन्ट, 6 बटा., हवलदार जी.पी. सिंह, 39

बटा., हवलदार हृदय राम 6 बटा., सिपाही पृथ्वी सिंह, 120 बटा., सिपाही/बेगुलर एम.पी.सिंह, 39 बटा., सिपाही मूल सिंह, 112 बटा., सिपाही उत्पल देव, 6 बटा., सिपाही गणेश कुमार, 128 बटा., सिपाही निर्मल प्रकाश, 136 बटा. तथा सिपाही लखविन्दर सिंह, 50 बटा. को राष्ट्रपति के शौर्य वीरता के पुलिस पदक से सम्मानित किया गया है जबकि उप निरीक्षक एम.एस. बिष्ट, 120 बटा., सिपाही एस.के. दास, 28 बटा. एवं सिपाही अशोक कुमार, 28 बटा. को यह पदक मरणोपरान्त प्रदान किया गया है।

राष्ट्रपति के विशिष्ट सेवाओं के पुलिस पदक



श्री वागीश मिश्र, महानिरीक्षक, पूर्वी सेक्टर



श्री एम.एम. शर्मा, उप महानिरीक्षक, गांधीनगर



श्री रिजवान रसूल, अपर उप महानिरीक्षक, महानिदेशालय



श्री जे.एम.एस. कठैत, कमाण्डेन्ट, *50* बटालियन



श्री जगजीत सिंह, कमाण्डेन्ट *86* बटालियन

सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक



श्री पी.एन. शर्मा, अपर उप महानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र नागपुर



श्री आर. गुरखानी, कमाण्डेन्ट *2* बेतार बटा.



श्री बी.आर. सिंह, कमाण्डेन्ट *103* दु.का.बल बटा.



श्री जोगिन्दर सिंह, कमाण्डेन्ट *127* बटा.



श्री सुरेश पाल सिंह, कमाण्डेन्ट *11* बटा.



श्री ए.एस. खान, कमाण्डेन्ट *66* बटा.



श्री आर एल. मीणा, कमाण्डेन्ट *27* बटा,



श्री जी.पी. सिंह, कमाण्डेन्ट *72* बटा.



श्री सी.एस. राठौर कमाण्डेन्ट *75* बटा,



डा. ए.के. दास, मुख्य चिकित्सा अधिकारी, ग्रुप केन्द्र भोपाल



श्री ए.एस. रावत, द्वितीय कमान अधिकारी, *103* द्रु.का.बल बटा.



श्री एम.एस. नायर उप कमाण्डेन्ट, *78* बटा.



श्री होशियार सिंह, सहायक कमाण्डेन्ट, *72* बटा.



श्री डी.पी. सिंह, सहायक कमाण्डेन्ट *63* बटा.,



निरीक्षक एम.एस. चौहान, *134* बटा.



निरीक्षक आर.एस. रावत, *35* बटा.



निरीक्षक ईश्वर सिंह, ए.डब्ल्यू.एस., इम्फाल



निरीक्षक ए.के. बालन, गुप केन्द्र, हैदराबाद



निरीक्षक एम.टी. वी.के.आर. कुरूप, ग्रुप केन्द्र, पल्लीपुरम



उप निरीक्षक कमला सिंह, *123* बटा.



उप निरीक्षक एम.आर. भाष्करन, *110* बटा.



उप निरीक्षक एस. बी.यादव, ग्रुप केन्द्र-एक, अजमेर



हवलदार मार्शल लाकरा, *50* बटा.,



हवलदार/चालक एस.एस. सावन्त, *27* बटा.



हवलदार नैन सिंह, *48* बटा.



हवलदार/बैण्ड प्रेम दास, ग्रुप केन्द्र, नीमच



हवलदार जी.एस. शुक्ला, आर.टी.सी.,पल्लीपुरम,



कुक एस.सी. लोध, *70* बटा.



एस.एम/ओ.एस. उत्तम चंद, ग्रुप केन्द्र जालंधर



एस.एम./ओ.एस. के.डी.पन्त, ग्रुप केन्द्र, गुड़गाँव



एस.एम./ओ.एस. एम.एन.जे. नायर, ग्रुप केन्द्र, नई दिल्ली

श्री ए.एस. वर्मा, कमाण्डेन्ट 1 बेतार बटा.

एस.एम./ओ.एस. एम.एल..शर्मा, ग्रुप केन्द्र-दो, अजमेर

हवलदार पासंग शेरपा, 14 बटा.

बल द्वारा सामाजिक कार्य



पल्स पोलियों उन्मूलन कार्यक्रम के अन्तर्गत ग्रुप केन्द्र जालन्धर में 5 फरवरी, 2003 को शहर के विभिन्न स्थानों पर बच्चों को पोलियों की खुराक पिलाने के लिए शिविर

लगाए गये। शिविर का उद्घाटन ग्रु.के. के अपर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री बलवंत सिंह ने बच्चे को पोलियों की खुराक पिलाकर किया। ग्रुप केन्द्र जालन्धर द्वारा 2280 बच्चों को पोलियों की खुराक पिलाई गई।



आर.ए.एफ. देश के विभिन्न संवेदनशील क्षेत्रों में सामाजिक सौहार्द तथा शान्ति व्यवस्था बनाए रखने लिए तो सदैव तैनात है ही परंतु मानवीय सेवा में भी पीछे नहीं है। इसी क्रम 100 बटा. आर.ए.एफ. ने अहमदाबाद के निकटवर्ती गाँव वरशाल, रतनपुरा महादेव नगर, सुमन पार्क तथा श्रीजी वार्ड इलाकों में 5 जनवरी 2003 को पल्स पोलियों कैम्प लगाए तथा 5709 नन्हें मुन्ने बच्चों को पोलियों की खुराक पिलाई तथा मुफ्त दवाईयां बांटी।



सामाजिक क्रिया कलापों के रूप ग्रुप केन्द्र, अवाड़ी के कार्मिकों द्वारा राष्ट्रीय पल्स पोलियो उन्मूलन कार्यक्रम के रूप में अवाड़ी शहर के विभिन्न इलाकों में पल्स

पोलियो शिविर लगाए। ग्रु.के. अवाड़ी के अपर पुलिस उप महानिरीक्षक सी. फ्रांसिस ने बच्चे को पोलियो ड्राप पिला कर शिविर का उद्घाटन किया। इस कार्यक्रम में ग्रुप केन्द्र अवाड़ी द्वारा 640 बच्चों को पोलियों ड्राप पिलाई।



केरिपुबल कार्मिकों का ध्येय जनता की भावनाओं के अनुरूप सेवा करना है। अतः बल की बटालियनें सुरक्षा व्यवस्था बनाए रखने के साथ-साथ जनता के लिए सामाजिक कार्यक्रम भी आयोजित करती रहती हैं। जम्मू के छन्नी हिम्मत में तैनात 79 बटा. ने 5 जनवरी 2003 को जम्मू के स्वास्थ्य विभाग के सहयोग से पल्स पोलियों कैम्प लगाए। कैम्प का उद्घाटन जम्मू एवं कश्मीर के उप मुख्य मंत्री श्री मंगत राम शर्मा ने एक बच्चे को पोलियो दवा पिलाकर उद्घाटन किया तथा कहा कि केरिपुबल जम्मू एवं कश्मीर राज्य में उग्रवाद से लड़ते रहने के साथ जनता के लिए सामाजिक कार्यों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इस अवसर जम्मू के कमिश्नर एवं स्वास्थ्य सचिव सहित बल तथा सिविल प्रशासन के अनेक गण मान्य नागरिक उपस्थित थे।



केरिपुबल की बढ़ती हुई परिचानिक प्रतिबद्धता तथा श्रीनगर जैसे इलाके में बढ़ते हुए उग्रवाद का मुकाबला करने का जुनून बल कार्मिकों में उच्च कोटि का मनोबल होने का प्रतीक है। श्रीनगर में केरिपुबल जनता के जान-माल की सुरक्षा के लिए ही तैनात नहीं है बल्कि सामाजिक कार्यों में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। श्रीनगर में तैनात 111वीं बटा. केरिपुबल ने सामाजिक क्रिया कलापों के क्रम में 5 जनवरी 2003 को पल्स पोलियों कैम्प का आयोजन किया। बल के पुलिस महानिरीक्षक श्री आर.के. शर्मा ने पल्स पोलियों कैम्प का उद्घाटन, एक बच्चे को दवा पिला कर किया और कहा कि यह कार्य जनता और सुरक्षा बलों के बीच आपसी विश्वास एवं भरोसा बनाए रखने के लिए एक अच्छा कदम है। इस कैम्प में लगभग 430 बच्चों को पोलियों ड्राप पिलाई गई।



जनता तथा सुरक्षा बलों के बीच आपसी विश्वास तथा समन्वय स्थापित करने के उद्देश्य से उत्तर पूर्व के तैनात बल की यूनिटें विभिन्न प्रकार के सामाजिक कार्यक्रम आयोजित करती रहती हैं। इसी उद्देश्य से बोगाईगाँव (असम) के घलाई गाँव में तैनात बल की 118वीं बटा. ने सामाजिक कार्यक्रमों के तहत प्राइमरी स्कूल तथा हाई स्कूल के बच्चों के लिए खेल कूद-चित्र कला प्रतियोगिता जैसे कार्यक्रम आयोजित किए तथा बच्चों को किताब कापी, तथा खेल कूद का सामान बांटा। इसके अलावा वृद्ध एवं गरीब लोगों को मच्छरदानी भी वितरित की। बटालियन के कमांडेंट श्री आर. एस.एच.एस. सहोता ने बताया कि पुलिस उप महानिरीक्षक (परि.) केरिपुबल बोगाईगाँव ने इस प्रकार के सामाजिक कार्य आयोजित करने के लिए 91,000/- रूपये की व्यवस्था की है। बल द्वारा किए जा रहे ऐसे कार्यों से जनता और सुरक्षा बलों के बीच एक अटूट विश्वास और जनता के बीच सहयोग की भावना सुद्धढ़ होती है।



मेघालय राज्य के तूरा क्षेत्र में तैनात केरिपुबल की 18वीं बटालियन ने सामाजिक कार्यक्रम के रूप में वहां के देहाती बच्चों के साथ खेल-कूद, चित्र कला प्रतियोगिता जैसे कार्यक्रम आयोजित किए तथा बच्चों के साथ बल के अधिकारियों एवं जवानों ने चर्चा की। और उन्हें जनता तथा पुलिस में आपसी सहयोग एवं सौहार्द के बारे में बताया। इस कार्यक्रम में स्थानीय युवा एवं बुर्जगों ने भी भाग लिया तथा उन्होंने केरिपुबल के प्रति अपना अटूट विश्वास जाहिर किया।



सामाजिक आयोजन के रूप में ग्रुप केन्द्र जमशेदपुर में क्रिसमिस समारोह मनाया गया। यह केरिपुबल की धर्म निरपेक्ष पृष्ठ भूमि तथा अनेकता में एकता की परम्परा को बनाये रखने के उद्देश्य से किया गया था। इस समारोह में सभी धर्मों के लोगों ने भाग लिया। इस अवसर ग्रुप केन्द्र के कमांडेट श्री कुलबीर सिंह ने कहा कि क्रिसमिस का पर्व विश्व के लिए प्रेम, शान्ति, भाई चारे, सहिष्णुता, स्नेह तथा त्याग एवं समर्पण का सन्देश देता है।



ऊपरी असम में नागालैंड एवं अरूणाचल प्रदेश की सीमा के साथ सटे हुए उग्रवाद से प्रभावित क्षेत्रों में तैनात 12 बटालियन केरिपुबल द्वारा समय-समय पर स्थानीय लोगों के उत्थान के लिए कार्य कर उनमें चेतना, सामाजिक सुरक्षा और विश्वास की भावना पैदा की। बटालियन के कमांडेंट एस.के. मलिक तथा अन्य अधिकारी एवं जवानों ने दिन-रात अथक प्रयास कर क्षेत्र के भीतरी एवं दूर-दराज के इलाकों में रहने वाले पिछड़े लोगों के बच्चों के लिए दो अर्द्ध स्थायी स्कूल भवनों का निर्माण करवाया हैं। बटालियन द्वारा किए गए इस कार्य की प्रेस मीडिया तथा स्थानीय जनता द्वारा भारी प्रशंसा की गई।

वर्ष 2002 के दौरान ग्रुप केंद्र, पल्लीपुरम द्वारा अर्जित राजभाषा की प्रगति से

संबंधित उपलब्धियाँ



पूर्व अवर सचिव श्री बाबू लालपाल से वैजयन्ती प्राप्त करते हुए ग्रुप केन्द्र पल्लीपुरम के प्रशासन अधिकारी श्री सी.के वर्गीस

चालू वर्ष के दौरान, “ग” क्षेत्र में स्थित ग्रुप केंद्र, केरिपुबल, पल्लीपुरम ने राजभाषा की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिसके परिणाम स्वरुप वर्ष 2002 में ग्रुप केंद्र, पल्लीपुरम को चल वैजयन्ती शील्ड प्राप्त हुई। “ग” क्षेत्र में स्थित कार्यालयों के लिए निर्धारित लक्ष्य (55%) को पीछे छोड़ते हुए तीव्र गति से आगे बढ़ रहे इस प्रयास में ग्रुप केंद्र के सभी अधिकारी और कर्मचारी समान रुप से भागीदार हैं।

ग्रुप केंद्र, पल्लीपुरम, तिरुवनंतपुरम, नगर कार्यान्वयन समिति का एक सक्रिय सदस्य हैं जिसमें कुल 102 सदस्य स्थापनाएं हैं। विगत चार वर्षों की भांति इस वर्ष भी, सभी सदस्य स्थापनाओं के पीछे धकेलते हुए वैजयंती शील्ड प्राप्त करने में ग्रुप केंद्र, पल्लीपुरम पीछे नहीं रहा। हिन्दी के कार्यान्वियन के लिए भी ग्रुप केंद्र, पल्लीपुरम को नराकास, तिरुवनंतपुरम द्वारा प्रायोजित वैजयन्ती प्रदान की। ग्रुप केंद्र, केरिपुबल, पल्लीपुरम की यह अद्वितीय उपलब्धि इस गौरवशाली बल के लिए एक मील का पत्थर है।

*81*वीं बटालियन में इनफोरमेटिक सेन्टर का उद्घाटन



इनफोरमेटिक सेन्टर का उद्घाटन करते हुए उप महानिरीक्षक (संचार) ब्रिगेडियर जे.एस. साहनी

महानिदेशालय केरिपुबल के कम्प्यूरीकरण योजना के तहत 81 वी वाहिनी केरिपुबल मुख्यालय, राजेन्द्र नगर, पटना में बटा० इनफोरमेटिक्स सेन्टर (Battalion Informatics center) की स्थापना की गई ताकि बटा० का कामकाज कम्प्यूटर से ही किया जा सके तथा कार्मिकों को कम्प्यूटर शिक्षा दी जा सके। इस इनफोरमेटिक्स सेन्टर का विधिवत उद्घाटन पुलिस उप महानिरीक्षक (संचार) ब्रिगेडियर जे०एस०साहनी, ने 12 नवम्बर, 2002 को किया। इस अवसर पर श्री टी०बी० राय, कमान्डेण्ट, तृतीय बेतार वाहिनी, श्री एस० रामालिंगम, कमान्डेण्ट 81 बटा० तथा अन्य अधिकारीगण उपस्थित थे।

उप महानिरीक्षक (संचार) ने कमान्डेण्ट-81 बटा० द्वारा इस दिशा में किये गये कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि निकट भविष्य में केरिपुबल के कार्यालयों में

सभी काम-काज कम्प्यूटर पर किये जाएंगे। इसके लिए अगले पॉच सालों में केरिपुबल के सभी कार्यालयों को कम्प्यूटरीकृत किये जाने की गृह मंत्रालय की योजना को साकार करना है। महानिदेशालय केरिपुबल इस योजना को पूर्ण रुप से कार्यान्वित करने की ओर अग्रसित है। पुलिस उप महानिरीक्षक (संचार) ने 81 बटा० के कार्मिकों को कम्प्यूटर पर कार्य करने तथा सीखने के लिए उत्साहित किया तथा कम्प्यूटर सीखने वाले कर्मचारियों को नगद पुरस्कार भी दिये। 81 बटा० के लिए गौरव की यह बात भी है कि इस वाहिनी के बल सं० 991410061 कुक राजेश चन्द्र मिश्रा ने अन्तर सेक्टर कम्पीटिशन में कांस्य पदक प्राप्त कर बिहार सेक्टर का नाम उँचा किया।

खेल जगत में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की उपलब्धियां

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल अपने यहां खेलों को बढ़ावा तथा खिलाड़ियों को प्रोत्साहन देने में सदैव अग्रणी रहा है। के.रि.पु.बल के खिलाड़ियों की नर्सरी मुख्यतः इस के प्रशिक्षण संस्थान तथा यूनिट हैं, जहां नवीन प्रतिभाओं की खोज कर उन्हें विकसित किया जाता है। बल के खिलाड़ियों की प्रतिभा तथा क्रीड़ा के क्षेत्र में उनके कीर्तिमान सदैव नवोदित खिलाड़ियों को प्रेरणा देते हैं। खेल जीवन में आने वाले, हार जीत, आशा निराशा, संघर्ष विजय के पल, जीवन का ही एक और रूप है। खेल मनुष्य को इस स्थितियों का सामना करने की सामर्थ्य प्रदान करते हैं। क्रीड़ा और के.रि.पु.बल के जीवन की एक समानता यह भी है कि इन दोनों ही कार्य क्षेत्रों में हर रूकावट के बावजूद अंततः विजय, मानव उत्साह की ही होती है। इसी भावना के फलस्वरूप खेलों को के.रि.पु.बल जीवन के एक अंतरंग हिस्से के रूप में शामिल कर लिया गया है।

दिसम्बर 2002 तथा जनवरी 2003 के दौरान सम्पन्न हुए खेलों में बल के खिलाड़ियों की प्रमुख उपलब्धियां इस प्रकार से रही :—

13 से 22 दिसम्बर, 2002 तक हैदराबाद में सम्पन्न हुए 32 वें राष्ट्रीय खेलों में के.रि.पु.बल के खिलाड़ियों ने विभिन्न खेल प्रतिस्पर्धाओं में कई राज्यों का प्रतिनिधित्व किया और उनके लिए अनेक खिताब एवं पदक जीत कर बल का नाम ऊचां किया। जिम्नास्टिक प्रतिस्पर्धा में के.रि.पु.बल के निरीक्षक विकास पाण्डे तथा उप निरीक्षक मयंक श्रीवास्तव, उत्तर प्रदेश राज्य की तरफ से खेले और तीन स्वर्ण तथा दो कांस्य पदक जीते। बल की विख्यात भारोत्तोलक सुश्री एन.कुन्जा रानी देवी, निरीक्षक डब्ल्यू.

नान्देनो, सिपाही सुमाते देवी तथा निरीक्षक नान्सेता देवी ने मणिपुर राज्य की ओर से भारोत्तोलन प्रतियोगिता में भाग लिया जबकि सिपाही चन्द्रेश्वरी देवी तथा निरीक्षक रोमी देवी हरियाणा की ओर से खेली। उप निरीक्षक सुनैयना, सिपाही सोनिया प्रभा तथा उप निरीक्षक गीता रानी पंजाब की ओर से जबकि हवलदार के.रामा देवी आन्ध्र प्रदेश की ओर से भारोत्तोलन प्रतियोगिता में खेली और चार स्वर्ण, चार रजत तथा 10 कांस्य पदक जीते। बल के पुरूष भारोत्तोलक भी इस प्रतिस्पर्धा में पीछे नहीं रहे। उप निरीक्षक सुरेन्द्र सिंह ने पंजाब राज्य की ओर से खेलते हुए एक स्वर्ण तथा एक रजत पदक जीता जबकि हवलदार संतोष कुमार ने मध्य प्रदेश का प्रतिनिधित्व करते हुए एक कांस्य पदक जीता। बल के जाने माने एथेलिट सहायक कमाण्डेन्ट श्री परम जीत सिंह ने पंजाब की ओर खेलते हुए दो कांस्य पदक जीते। इसी तरह एथेलिट में निरीक्षक शमशेर सिंह ने हरियाणा के लिए एक स्वर्ण पदक जीता जबकि निरीक्षक संजीव टी.एम. तथा हवलदार साजी पी.एस. ने एथेलिट में केरला का प्रतिनिधत्व किया और एक स्वर्ण, एक रजत तथा दो कांस्य पदक जीते। बल की महिला एथेलिट खिलाड़ी निरीक्षक सरोज सिंह ने हरियाणा को एक स्वर्ण तथा एक रजत पदक दिलाया जबकि सिपाही रवीना अन्तिल ने हरियाणा के लिए एक कांस्य पदक जीता। केरला की ओर से बल की निरीक्षक जिन्सी फिलिप ने एथेलिट में केरला राज्य का प्रतिनिधित्व किया और एक रजत पदक जीता। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जुडाका निरीक्षक अकरम शाह, सिपाही धर्म पाल सिंह, उप निरीक्षक सोभ नाथ, उत्तर प्रदेश राज्य की ओर खेले और एक स्वर्ण और दो कांस्य पदक जीते। निरीक्षक के.वी.थापा ने जूडों में मुम्बई का प्रतिनिधित्व किया और एक कांस्य पदक जीता। पुरूषों की तरह बल की महिला जुडाकाओं ने जूडो प्रतिस्पर्धा में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर कई पदक जीते। बल की जुडाका उप निरीक्षक परिवन्दर कौर, हवलदार नृमता शर्मा, सिपाही परमजीत कुमारी पंजाब राज्य की ओर खेली और दो स्वर्ण तथा एक रजत पदक जीता। जबकि सिपाही तोम्बी देवी, सिपाही एन.गोमती चानू, सिपाही अनीता चानू, उप निरीक्षक एल.बृजेश्वरी देवी तथा रिजा चानू ने महिला जूडो में मणिपुर राज्य की ओर से भाग लिया तथा एक स्वर्ण, दो रजत और दो कांस्य पदक जीते। इन राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धाओं में बल के तैराकों ने भी अपनी कार्य क्षमता और खेल व्यवसायकिता का उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए कई पदक जीते। निरीक्षक टी.के.सेन्थिल कुमार ने केरला राज्य की ओर से तैराकी प्रतिस्पर्धा में भाग लिया और तीन स्वर्ण और एक रजत पदक जीता जबकि निरीक्षक दीपक कुमार, निरीक्षक कैलाश नाथ, उपनिरीक्षक मदन एस. जबलेकर तथा निरीक्षक ए. मुरलीधरन ने आन्ध्र प्रदेश की ओर से तैराकी प्रतियोगिता में भाग लिया और सात स्वर्ण, दो रजत और आठ कांस्य पदक जीते। इसी तरह बल की महिला तैराकों ने भी तैराकी में अपनी उत्कृष्ट प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए अनेक पदक जीते। निरीक्षक ऋचा मिश्रा, उप निरीक्षक रश्मी दास, हवलदार अवनी ए. सावन्त, सिपाही रिशु मेहरा, उप निरीक्षक भावना शर्मा ने तैराकी प्रतियोगिता में आन्ध्र प्रदेश राज्य का प्रतिनिधित्व किया और आठ स्वर्ण, 15 रजत तथा दो कांस्य पदक जीते। अकेली निरीक्षक ऋचा मिश्रा ने इस प्रतिस्पर्धा में सात

स्वर्ण, सात रजत तथा दो कांस्य पदक जीते। बल की हवलदार मेघना तथा राजूता देशपाण्डे ने महाराष्ट्र राज्य का प्रतिनिधित्व किया और तैराकी में एक-एक रजत पदक जीता जबकि सिपाही नन्दा सरकार तथा पूर्णिमा पाल ने पश्चिमी बंगाल का प्रतिनिधित्व किया और दोनों ने राज्य के लिए एक-एक कांस्य पदक जीता। कुश्ती प्रतिस्पर्धा में के.रि.पु.बल के पहलवान हवलदार सन्दीप दहिया, हवलदार जय भगवान तथा उप निरीक्षक राजीव कुमार ने इस प्रतिस्पर्धा में हरियाणा राज्य का प्रतिनिधित्व किया और दो स्वर्ण तथा एक रजत पदक जीता। इस तरह के.रि.पु.बल के खिलाड़ियों ने विभिन्न प्रतिस्पर्धाओं में 33 स्वर्ण, 28 रजत तथा 29 कांस्य कुल 90 पदक जीते।

इस वर्ष राजस्थान के कोटा शहर में 5 से 11 जनवरी, 2003 तक आयोजित डी.सी.एम. श्री राम हाकी टूर्नामेन्ट में बल की टीम ने अपनी प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और टूर्नामेन्ट में विजयी हुए। उपलम्ब, पांडिचेरी में 4 से 7 जनवरी, 2003 तक आयोजित नेशनल वूमेन फेस्टिवल में के.रि.पु.बल की महिला एथेलिटों ने दिल्ली राज्य की टीम का प्रतिनिधित्व किया और पाँच स्वर्ण तथा तीन रजत पदक जीते। इसी तरह 12 से 15 जनवरी, 2003 तक भिवानी में आयोजित अखिल भारतीय चौधरी देवी लाल स्मृति हैण्डबाल टूर्नामेन्ट में के.रि.पु.बल की टीम हरियाणा राज्य की ओर से खेली और इस प्रतियोगिता में दूसरा स्थान हासिल किया। राँची, (झारखण्ड) में 8 से 12 जनवरी, 2003 तक आयोजित 49वीं सीनियर रेसलिंग चैम्पियनशिप में हमारे रेसलरों ने पश्चिमी बंगाल की टीम का प्रतिनिधित्व किया और तीन कांस्य पदक जीते। बल के जिम्नास्टिक खिलाड़ियों ने उत्तर प्रदेश राज्य का प्रतिनिधित्व करते हुए 22 से 26 जनवरी, 2003 तक चले नेशनल जिम्नास्टिक चैम्पियनशिप में भाग लिया और पाँच स्वर्ण, चार रजत तथा एक कांस्य पदक जीता। कर्नाटक के बेंगांव में 24 से 26 जनवरी, 2003 तक आयोजित 42 वी सीनियर नेशनल बाडी बिल्डिंग चैम्पियनशिप में बल के बाडी बिल्डरों ने भाग लिया और हमारे दो बाडी बिल्डर खिलाड़ी पाँचवे और छठे स्थान में रहे।

अंतर सेक्टर इंडयूरेंस एवं शूटिंग प्रतियोगिता

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 63वीं वर्ष गाँठ के उपलक्ष्य विभिन्न कार्यक्रम एवं प्रतियोगिताए आयोजित की गई। इसी क्रम में इन्टर सेक्टर शूटिंग तथा इनडयूरेंश प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इन दोनों प्रतियोगिताओं में देश के विभिन्न भागों में तैनात केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के सभी सेक्टरों की

टीमों ने भाग लिया तथा प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार से है :—

अन्तर सेक्टर शूटिंग प्रतियोगिता में पश्चिमी सेक्टर ने प्रथम, आर.ए.एफ. सेक्टर ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया जबकि मणिपुर एवं नागालैंण्ड (परिचालन) तीसरे स्थान पर रहा। एके-47 राईफल शूटिंग प्रतियोगिता के मुकाबलों में पश्चिमी सेक्टर के हवलदार विक्रम सिंह तथा हवलदार ए.के. मुखर्जी, पहले तथा दूसरे स्थान पर रहे जबकि आर.ए.एफ. के सिपाही सिद्दप्पा वाई दूसरे स्थान पर रहे। मणिपुर एवं नागालैंड सेक्टर सिपाही के. तोमचा सिंह, उत्तरी सेक्टर के सिपाही सीता राम तथा पूर्वोत्तर सेक्टर सिपाही ए.एम रहमान तीसरे स्थान पर रहे।



तत्कालीन महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र से शूटिंग प्रतियोगिता में विजेता सेक्टर की ट्राफी प्राप्त करते हुए पश्चिमी सेक्टर के पुलिस महानिरीक्षक श्री ए.के. माथुर

7.62 एस.एल.आर. शूटिंग प्रतियोगिता में पश्चिमी सेक्टर के हवलदार प्रभात सिंह तथा सिपाही निशान सिंह ने 89 अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया जबकि आर. ए.एफ. सेक्टर के सिपाही सिद्दप्पा वाई ने 80 अंक तथा पूर्वोत्तर सेक्टर के विक्रम सिंह ने 79 अंक प्राप्त कर इस प्रतियोगिता में क्रमश: दूसरा तथा तीसरा स्थान प्राप्त किया।



पुलिस महानिरीक्षक आर.ए.एफ. श्री जी.एम. श्रीवास्तव इन्डयूरेंस प्रतियोगिता की ट्राफी तत्कालीन महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र से प्राप्त करते हुए

अंतर सेक्टर इडंयूरेंस प्रतियोगिता में आर.ए.एफ. सेक्टर ने प्रथम, पश्चिमोत्तर अंचल, उत्तरी सेक्टर तथा जम्मू एवं कश्मीर (परिचालन) सेक्टर ने दूसरा स्थान प्राप्त किया जबकि पूर्वोत्तर सेक्टर तीसरे स्थान पर रहा। व्यक्तिगत स्कोर में आर.ए.एफ. सेक्टर के सिपाही कदम सिंह ने 270 अंक प्राप्त कर इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर रहा जबकि आर ए.एफ. के ही सिपाही पी.एम. मीणा 250 अंक प्राप्त कर दूसरे स्थान पर तथा सिपाही अरविन्द कुमार 240 प्राप्त कर तीसरे स्थान पर रहे।

माह मई *2002* से जनवरी *2003* तक मृत्यु को प्राप्त हुए बल के कार्मिक

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित कार्मिक माह मई, 2002 से जनवरी 2003 तक मृत्यु को प्राप्त हुए। सीआरपीएफ समाचार परिवार इनके शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है तथा इन मृत कार्मिकों की आत्माओं को शान्ति प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना करता है :—

सि. मोहम्मद अजीज खान (93 बटा.), हवलदार रियाज मोहम्मद (94 बटा.) सि. बी हसदा (67 बटा.), सि. संतोष प्रसाद तिवारी (85 बटा.), सि. हनुमंत ओल (100 बटा.), सि. युगल किशोर (1 बटा.), हवलदार महाबीर प्रसाद (34 बटा.), सि. राकेश चंद राणा (20 बटा.), सि. बादल कुमार नंदी (73 बटा), हवलदार डी.डी. सिंह (28 बटा.), सि. श्याम एच वेराले (21 बटा.), सि. वेद प्रकाश (9 बटा.), सि. विनय कुमार तांती (गु के मोकामाघाट), उनि ईश्वर सिंह (91 बटा), हवलदार/सी फकीर चंद (5 सिंग बटा.), उनि/एमटी योगेन्द्र सिंह (1 सिंग. बटा.), सि. मेरी दास गोड़ा (14 बटा.), सि. शुभ करन (3 बटा), सि. अजय कुमार (1 बटा.), सि. एन.पी. अरविन्दाशन (42 बटा.), सि. दिनेश कुमार सिंह (4 बटा.), हवलदार उदमी राम (58 बटा.), सि. उमेश बोरा (27 बटा.), सि. मुकेश कुमार सिंह (9 बटा.), सि. बलबीर सिंह (ग्रुके-II), सि. सी. रमेश कुमार (118 बटा.), सि. के.बी. नावले (76 बटा.), उपनि एस.एस. शेखावत (100 बटा.), सि. सुरेश कुमार (128 बटा.), उपनि पाती राम (34 बटा.), सि. प्रवीन कुमार पाण्डे (34 बटा.), सि. प्रदीप कुमार लराई (34 बटा.), हवलदार बी.जी. वर्गिश (51 बटा.), सि. लुदरा सिंह (35 बटा.), सि. धर्मपाल (34 बटा.), सि. एम.जी. अंगूडी (34 बटा.), सि. प्रमोद कुमार त्यागी (34 बटा.), हवलदार सतमिन्दरजीत सिंह (ग्रुके जालंधर), सि. महावीर सिंह (119 बटा.), सि. धनी राम (2 बटा.), सि. जितेन्द्र कुमार (ग्रुके खटखटी), सि. सुब्बा राम राजू (एसएस मुख्यालय), सि. कंधा बेहरा (ग्रुके भुवनेश्वर), सफाई कर्मचारी सुरेन्द्र कुमार (ग्रुके-I अजमेर), सि. रामपाल यादव (23 बटा.), हवलदार नेक राम (48 बटा.), हवलदार शिवाजी कुशवाह (67 बटा.), सि. एस.के. वनखडे (ग्रके भोपाल), हवलदार ताज मोहम्मद (121 बटा.), हवलदार जी. नित्यानंद (32 बटा.), हवलदार ए.पी. कुज़र (93 बटा.), सि. गुरमीत सिंह (25 बटा.), सि. डी.के. मिश्रा (60 बटा.), सउनि/एम अशोक कुमार सिंह (डीआईजी ऑफिस इलाहाबाद), हवलदार/चालक खुर्शीद अहमद (141 बटा.), सि. राज कुमार सिंह (55 बटा.), हवलदार के.वी. नायर (रेप्रके-III), सि. डी.के. मुरमू (134 बटा.), निरी. डी. डी. जादव (122 बटा.), सि. बी. श्रीकृष्ण रेडी (ग्रुके हैदराबाद), सि. सजल मलकार (49 बटा), उपनि (एमएम) ए.के. बिश्वास (35 बटा.), उपनि एल.बी. गिरी (ग्रुके भोपाल), जल वाहक पुरन बहादुर (99 बटा.), सि. रवि अंतिल (54 बटा.), हवलदार डी.एम. हेडु (95 बटा.), सि. अजित सिंह (134 बटा.), सि. बिगलुर जितेन्द्र कुमार (76 बटा.), सि. अशरफ फुलहक (16 बटा.), सि. के. वीरप्पन (78 बटा.), हवलदार डी.सी. एस. नायर (48 बटा.), सि. मलकीत राम (112 बटा.), सि. गिरधारी लाल (114 बटा.), उपनि राम गोविन्द सिंह (76 बटा.), हवलदार रामेश्वर दयाल (67 बटा), उपनि भगत राम (51 बटा.), नाई अजय पाल (5 बटा.), सि. अशोक गाडे (102 बटा.), सि. दिल राम (40 बटा.), वार्ड वॉय शिवजी प्रसाद (ग्रुके इलाहाबाद), सि. एम.सी. सरकार (43 बटा.), सि. टोडर मल (131 बटा.), सि. बी.के दीक्षित (133 बटा.), सि. पाटिल प्रदीप कुशाल (25 बटा.), धोबी भैया लाल (115 बटा.), हवलदार अरुण कुमार झा (35 बटा.), हवलदार जहीर अहमद (सीटीसी-3), नाई राजू ठाकुर (129 बटा), सि. गोतम प्रधान (49 बटा.), सि/मोची जगदीश चंद (34 बटा.), सि. धनवेश्वर दास (49

बटा.), हवलदार तालेब हुसैन (43 बटा.), सि. खेम सिंह (34 बटा.), हवलदार एस. कुमारन (2 सिंग बटा.), सि. संदीप हेगड़े (139 बटा.), हवलदार बाबू खान (67 बटा.), हवलदार होशियार सिंह (99 बटा.), कुक राम बिलाश तिवारी (126 बटा.), निरी (मं.) विजय कुमार वहल (ग्रुके मोकामाघाट), सि. रामफल (71 बटा.), धोबी करमा राव सेठी (ग्रुके जमशेदपुर), सि. मैशके जयहिंद (111 बटा.), सि. बी. पटगिरी (134 बटा.), सि. नन्दन सिंह (111 बटा.), उपनि राम गोविन्द सिंह (76 बटा.), सि. दिल राम (40 बटा.), सहाकमां श्री अभिषेख कुमार (आईएसए), हवलदार राम स्वरुप (107 बटा.), सि. ओम प्रकाश (ग्रुके पिन्जौर), सि. नगेन्द्र सिंह (105 बटा.), हवलदार शिव दत्त प्रसाद (94 बटा.), सि. अशोक कुमार (48 बटा.), हवलदार विरेन्द्र सिंह (48 बटा.), उपनि महेन्द्र सिंह (72 बटा.), सि. गिरधारी लाल (34 बटा.). सि. सुचीत कुमार सुमन (106 बटा.), हवलदार ओम प्रकाश (75 बटा.), हवलदार बीर सिंह (106 बटा.), हवलदार सतीश कुमार यादव (106 बटा.), उपनि राम प्रसाद (14 बटा.), हवलदार राजेन्द्र सिंह (1 बटा.), सि. विष्णु दयाल मीना (13 बटा.), हवलदार संत राम (96 बटा.), उपनि (एम) सुन्दर लाल (ग्रुके-II), लेसनायक गुंदालोर प्रसाद (ग्रुके अवाड़ी), सि. बल्लू यादव (ग्रुके नई दिल्ली), सि. कुलदीप सिंह (29 बटा.), सि. टुन टुन कुमार (116 बटा.), सि. राज मोहम्मद (109 बटा.), हवलदार मनोहर मंडल (70 बटा.), सि. थिरुमल्ला (109 बटा.), हवलदार मोहम्मद इश्त खान (116 बटा.), हवलदार एस. इंग्ले (70 बटा.), सि. प्रदीप सिंह (70 बटा.), सि. बलविन्दर सिंह (116 बटा.), हवलदार बाबु लाल (40 बटा.),उपनि (एमएम) आंनद सिंह (ग्रुके जालंधर), सि. बिजेन्दर सिंह (ग्रुके नीमच), हवलदार स्वर्ण सिंह (ग्रुके भोपाल), सि. नारद कुशवाह (126 बटा.), लेसनायक पी.एफ. टांडेकर (ग्रुके पुणे), हवलदार अब्दुल खलिक (94 बटा.). हवलदार ओम प्रकाश (21 बटा.), सि. जी.डी. भाई (65 बटा.). सि. अनिल कुमार सिंह (107 बटा.), सि. पुन्नई ओरन (122 बटा.), सफाई कर्मचारी सोरन लाल बाल्मिकी (102 बटा.), सि. दशरथ राम (9 बटा.), सि. टी.जी. गाडवे (50 बटा.), कुक चेत राम (113 बटा.), सि. कृष्ण बहादुर (43 बटा.), हवलदार एच.पी. मंग (112 बटा.), सि. महेन्द्र सिंह (40 बटा.), सि. के.के. पाण्डे (79 बटा.), निरी. नगेन्द्र प्रसाद (1 सिंग बटा.), सि. टी. अंजा (ग्रुके भुवनेश्वर), हवलदार ब्रहम देव यादव (58 बटा.), सि. अरविंद पाटिल (ग्रुके पुणे), कुक दलीप कुमार सिंह (36 बटा.), हवलदार ए. कोंडा (72 बटा.), सि. सतपाल सिंह (103 बटा.), सि. रविन्द्र कुमार मणि (43 बटा.), सि. शेलेन्द्र कुमार यादव (117 बटा.), हवलदार प्रकाश चंद (80 बटा.), सि. भंवर सिंह (40 बटा.), सि. शम्भू शरण (134 बटा.), हवलदार रोमी कुमार (138 बटा.), उपनि चंद्र मोहन कलोडिया (44 बटा.), सफाई कर्मचारी टी. देव शहयम (90 बटा.), हवलदार डी.एल. सिंधे (ग्रुके नागपुर), सीएमओ डी.के. पटनायक (124 बटा.), सि. संजय डब्ल्यू वारपालीवाल (ग्रुके पुणे), सि. एस. गोविन्द राव (7 बटा.), कमांडेंट श्री एच.वी. गुंरग (97 बटा.), जल वाहक एस. थगांमुथ्थू (ग्रुके बंगलोर), उपनि मोहम्मद सिद्धकी (44 बटा.), सि. जी. एल. हांजों (19 बटा.), लासनायक बी.एन. राय (109 बटा.), हवलदार विजय बहादुर राय (113 बटा.), सि. सी.एच. सुरेन्द्र (12 बटा.),

सीएमओ श्रीमती एम. जे टुडू (ग्रुके रामपुर), रसोइया रामचन्द्र (137 बटा.), सि. जितेन्द्र सिंह (7 बटा.), सि. सुरजीत सिंह (31 बटा.). सि. विरेन्द्र कुमार (102 बटा.)



6 फरवरी *2003* को स्थापना दिवस के अवसर पर हवन कीर्तन का आयोजन करते हुए *88* महिला बटालियन के अधिकारी व महिला कर्मी



ग्रुप केन्द्र अवाड़ी द्वारा आयोजित पल्स पोलियों कैम्प में अपने बच्चों को पोलियों की दवा पिलाती हुई स्थानीय महिलाएं

रजि. न. 4767/87



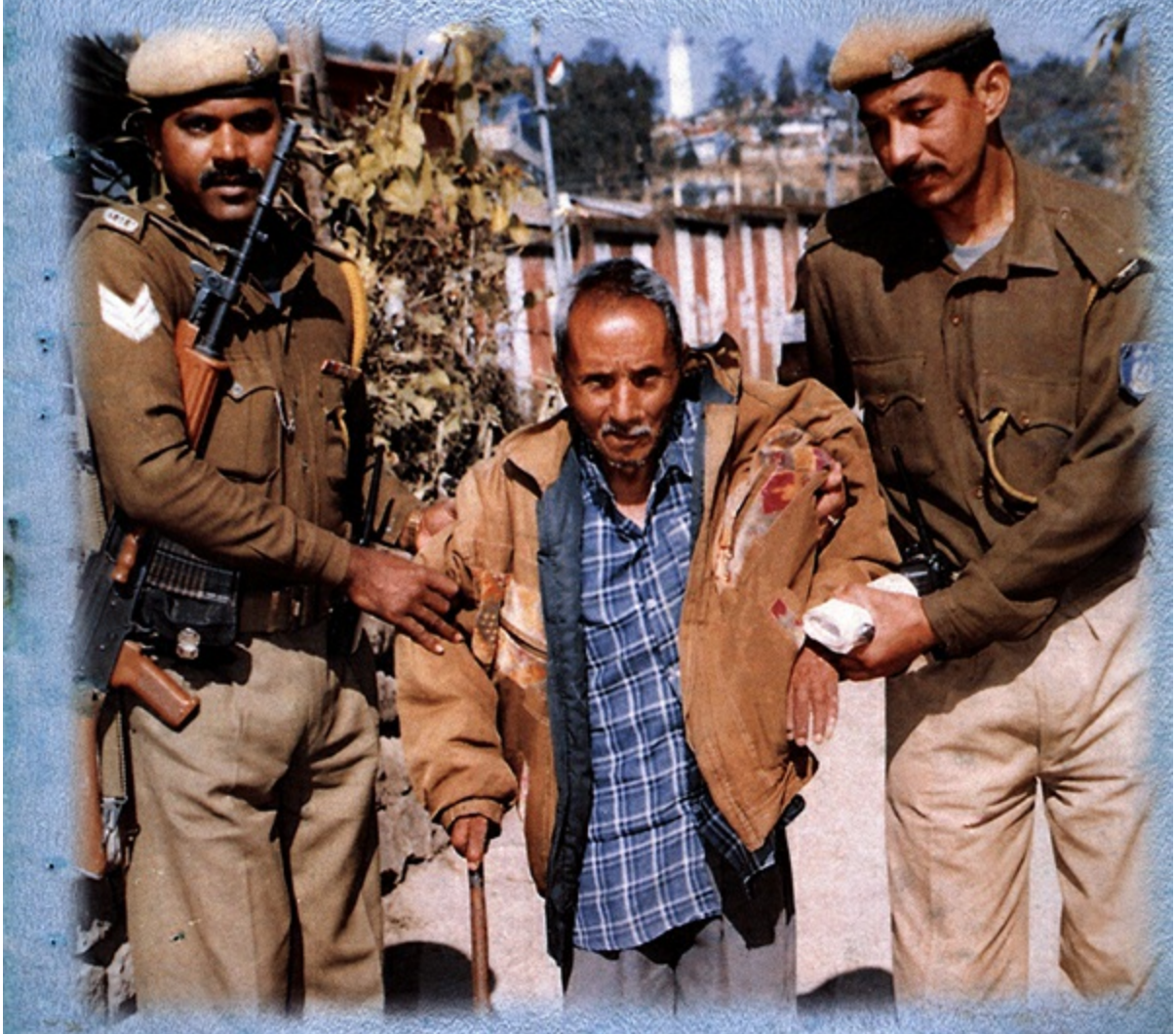


केरिपुबल की 63वीं वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम

सी. आर. पी. एफ.

समाचार

31 मार्च, 2003



नागालैण्ड में विधान सभा चुनाव के दौरान लोगों की सहायता करते बल के जवान



मुम्बई में सम्पन्न हुए अखिल भारतीय हाकी चैम्पियनशिप मैच के दौरान बल के महानिदेशक श्री एस.सी. चौबे अन्य गणमान्य व्यक्तियों के साथ मैच देखते हुए



***102* बटालियन आरएएफ, नवीं मुम्बई मुख्यालय के निरीक्षण के दौरान महानिदेशक श्री एस.सी. चौबे जख्मी जवान से हाल-चाल पूछते हुए**



सी.आर.पी.एफ. समाचार

खण्ड-16 अंक-2
31 मार्च, 2003
10 चैत्र, शक 1924
मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र
संपादक
रणबीर सिंह
चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं यूनिट्स
प्रकाशक
महानिदेशालय के.रि.पु. बल
ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स
लोधी रोड, नई दिल्ली-110003
की ओर से
डी.जी. महापात्र
कम्पोजिंग एवं प्रिंटिग
सी.आर.पी.एफ. प्रेस
नई दिल्ली-110072

सम्पादकीय सलाहकार मण्डल

अध्यक्ष

हिमान्शु कुमार, अपर महानिदेशक

सदस्य

विक्रम श्रीवास्तव, महानिरीक्षक (कार्मिक एवं मुख्यालय)
आर.एस. नौटियाल, महानिरीक्षक (संभरण एवं निर्माण)
राजेन्द्र सिंह, उप महानिरीक्षक (कार्मिक)
डी.एन.एस. बिष्ट, उप महानिरीक्षक (परिचालन)
पी.जे. शेट्टी, उप महानिरीक्षक (प्रशा.)
सी.बी. मैथ्यू, अपर उप महानिरीक्षक (प्रशि.)
प्रवीण कुमार, उप वित्तीय सलाहाकार
एम.एस. नेगी, कमान्डेट (एम.टी.)

डॉ.जी. महापात्र, जनसम्पर्क अधिकारी
राजीव राय, उप कमां. (परि.)
मणि भूषण प्रसाद, हिंदी अधिकारी

इस अंक में

- बल में 64 नई बटालियानों का सृजन
- बल की उपलब्धियाँ
- वीरता का उत्कृष्ठ प्रदर्शन करने लिए के बिना बारी की पदोन्नति
- बल कार्मिकों द्वारा कर्तव्य पालन में कायम की गई अदम्य साहस एवं बहादूरी की मिसाले
- 88 (महिला) बटा. ने मनाया अपना स्थापना दिवस
- चार राज्यों के विधान सभा चुनाव कराने के लिए बल की 136 कम्पनियां तैनात
- मेहनत का फल
- स्वस्थ शिशु प्रदर्शनी/ मेला
- बल के सामाजिक क्रिया कलाप
- रक्तदान शिविर का आयोजन
- मानवीय सेवा में तत्पर बेस अस्पताल-दो हैदराबाद
- केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में हाकी
- कविताएं

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

–संपादक

बल में 64 नई बटालियानों का सृजन



महानिदेशक श्री एस.सी. चौबे १०२ वीं बटालियन आरएएफ का निरीक्षण करते हुए।

केन्द्रीय रिर्जव पुलिस बल के लिए वर्ष 2002 एक बहुत ही चुनौती पूर्ण रहा। फिर भी हमारे के बहादुरों जवानों ने अपने असाधारण धैर्य, साहस, तथा पराक्रम से इन चुनोतियो का मुकाबला कर एक बार फिर देश की आंतरिक सुरक्षा डयूटी में अपनी कुशलता सिद्ध की है।

—एस.सी. चौबे

102 वी बटा० आर.ए.एफ. मुख्यालय (तलोआ) नवीं मुम्बई में आर.ए.एफ. तथा के.रि.पुबल. के अधिकारियों और जवानों को एक सैनिक सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए बल के महानिदेशक श्री एस. सी. चौबे ने उनसे बल की गौरवशाली

परम्पराओं को अपनी कर्तव्य निष्ठा, राष्ट्र प्रेम, निरपेक्षता तथा पारेचालानेक लचकता द्वारा बनाये रखने का आवाह्न किया। उन्होंने नये उपायो, रीतियों, पद्धतियों, रणनीतियों तथा व्यवहार कुशलता से आगामी वर्षों में आने वाली चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए तैयार रहने को कहा। बल की गत वर्ष की उपलब्धियों का पुर्नावलोकन करते हुए श्री चौबे ने कहा वर्ष, 2002 के दौरान 300 मुठभेड़ों में हमने 240 उग्रवादियों को मारा तथा 2017 को गिरफ्तार किया। बल के कार्मिकों ने 670 हथगोले, राकेट, बम्ब तथा 975 कि.ग्रा. विस्फोटक सहित 747 बड़े हथियार तथा 22108 गोला बारूद भी बरामद किया। श्री चौबे ने पिछले वर्ष कत्तळ पालन के दौरान शहीद हुए 64 जवानों को अपनी श्रद्वाजंलि दी।

उन्होंने आगे यह भी कहा कि मंत्रियों के ग्रुप की सिफारिश के आधार पर के.रि.पु.बल जम्मू-कश्मीर तथा देश उत्तरी पूर्वी भागों से सीमा सुरक्षा बल तथा भारतीय तिब्बत सीमा पुलिस को चरणबद्ध रूप में आगामी तीन वर्षों में बदली करेगी। के.रि.पु. बल इस वर्ष 8 बटालियनें कश्मीर घाटी में तथा 6 बटालियनें उत्तर पूर्व क्षेत्र में सीमा सुरक्षा बल की यूनिटों को बदली करने के लिए भेज रही है देश की आतंरिक सुरक्षा की पूरी जिम्मेदारी सभालने के लिए 2005 तक बल में 64 नई बटालियनें खड़ी करने तथा अपने प्रशिक्षण कार्यक्रम, अस्त्र-शस्त्र तथा संचार व्यावस्था को आधुनिक तथा अद्धतन बनाने के लिए 543 करोड रूपये की व्यवस्था की गई है। महानिदेशक ने बटालियन के जवानों को भरोसा दिलाया कि प्राधिकार उनके कल्याण तथा विद्वमान व्यवस्था में सुधार लाने के लिए हर सम्भव प्रयासरत हैं। इस अवसर पर पुलिस महानिरीक्षक पश्चिमी सेक्टर श्री ए.के. माथुर तथा 102 बटा० आर.ए.एफ. के कमान्डेंट श्री जे.पी. अग्निहोत्री तथा बल के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद थे।

बल की उपलब्धियाँ



पुलवामा क्षेत्र में ३० बटा द्वारा उग्रवादियों से बरामद किए गये हथियारों एवं गोला बारूद की जाँच करते केरिपुबल के महानिरीक्षक श्री बी. मिश्रा

जनवरी, 2003 के दौरान दो कमाण्डेन्टों को पदोन्नति कर अपर पु0 उप महानिरीक्षक बनाया गया जबकि 25 द्वितीय कमान अधिकारियों को कमाण्डेन्ट, 10 उप कमाण्डेन्टों को द्वितीय कमान अधिकारी तथा 5 निरीक्षकों को सहायक कमाण्डेन्ट के पद पर पदोन्नति किया गया। इसके अलावा 88 सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारी अपना बेसिक प्रशिक्षण पूरा करने के बाद बल में शामिल हुए। सामान्य छीजन के फलस्वरूप हुई 21,990 रिक्तियों तथा 13 यूनिटों एवं 28 कम्पनियों की नफरी की रिक्तियां संबंधित सेक्टरों को जारी की गई तथा भर्ती सम्बन्धी प्रक्रिया जनवरी, 2003 में पूरी कर ली गई। 385 उम्मीदवारों को उप निरीक्षक/ (सामान्य) के पद पर भी भर्ती किया गया है। इस के अलावा विभिन्न अन्य पदों पर भी 165 कार्मिकों को पदोन्नत किया है।

सरकार से रायपुर (छत्तीसगढ़), हरिद्वार (उत्तरांचल) ग्रेटर नोयडा (उत्तर प्रदेश) में वर्ष 2002-03 के दौरान तथा सिलीगुड़ी (पं0 बंगाल),अगरतला (त्रिपुरा), सरहन (हिमांचल प्रदेश) तथा श्रीनगर (जम्मू-काश्मीर) में 2003-04 के दौरान कुल सात ग्रुप केन्द्र स्थापित करने की अनुमति मिल गई है तथा अब इन ग्रुप केन्द्रों के लिए कार्मिक नफरी स्वीकृति कराने के प्रयास जारी हैं।

इस वर्ष जम्मू-काश्मीर में अमरनाथ यात्रा के दौरान ड्यूटी में तैनात कार्मिकों के आवास हेतु 100 आर्टिक्ट टेन्टों की स्वीकृति प्राप्त करने में भी हम कामयाब रहे।

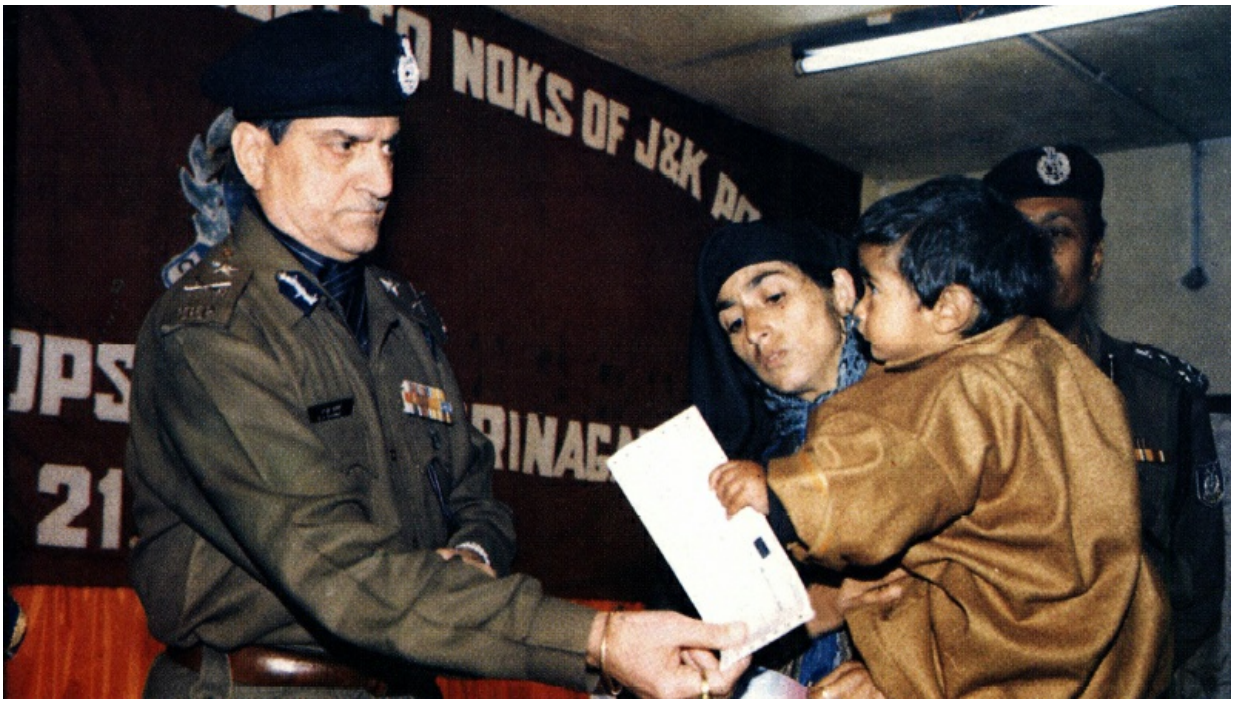
आशा है कि इन टेन्टों के मिल जाने से के.रि.पु.बल के जवानों को बर्फीली हवाओं से बचने में काफी राहत मिलेगी। आपको जानकर यह भी खुशी होगी कि हरेक बटालियन में विद्यमान 8 चूल्हों के बजाए 25 एकल बर्नर वाले गैस चूल्हों की स्वीकृति दे दी गई है। सामरिक फील्ड यूनिट में तैनात कार्मिकों के लिए सरकार ने दो सूती वर्दी के एवज में एक ढीली-ढाली सामरिक वर्दी की स्वीकृति भी प्रदान कर दी है। हमने अपनी सुविधा अनुसार सामरिक वर्दियों का विकास कर लिया है तथा पर्याप्त मात्रा में कपड़ा खरीदने की कार्रवाई जारी है।

इंडियन एयर लाइंस ने के.रि.पु.बल को क्रेडिट के आधार पर पूर्वी, पश्चिम दक्षिणी तथा उत्तरी क्षेत्रों में मृत कार्मिकों के शवों को आपात स्थिति में विद्यमान क्रेडिट नियमों के आधार पर कार्गों की सुविधा प्रदान कर दी है। अतः इस सुविधा का फायदा देश के किसी भाग से उठाया जा सकता।

के.रि.पु.बल की 63 वीं वर्षगांठ परेड के अवसर पर उप प्रधान मंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी ने बल के छः कार्मिकों को राष्ट्रपति के वीरता पदक तथा 11 अधिकारियों और कार्मिकों को वीरता के पुलिस पदक से सम्मानित किया। माह जनवरी, 2003 के दौरान के.रि.पु.बल के 14 बहादुर अधिकारियों एवं जवानों को विभिन्न अभियानों में उच्च कोटि का साहस एवं वीरता का प्रदर्शन करने के लिए वीरता के पुलिस पदक प्रदान किए गये। प्रधान मंत्री पुलिस जीवन रक्षा पदक के लिए अभी तक किसी भी तरह का कोई आर्थिक भत्ता नहीं दिया जाता था। हाल ही में सरकार ने इस पदक को प्राप्त करने वालों के लिए रू0 300/- प्रति माह की दर से पदक भत्ता प्रदान करने की स्वीकृति दी है।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय ने के.रि.पु.बल को कादरपुर, गुड़गांव (हरियाणा) में अपनी अकादमी स्थापित करने के लिए 44.58 एकड़ अतिरिक्त भूमि तथा नगरोटा (जम्मू) में एक बटालियन कैम्प स्थापित करने के लिए 31.5 एकड़ भूमि की खरीद करने की स्वीकृति प्रदान की है। ग्रुप केन्द्र-एक अजमेर में परिवार कल्याण केन्द्र, शापिंग काम्पलेक्स तथा 325 परिवार आवास, ग्रुप केन्द्र, रंगारेड्डी में 180 कार्मिकों की आवासीय क्षमता वाली दो बैरकें तथा ग्रुप केन्द्र, बंगलौर में 180 जवानों की आवासीय क्षमता वाली एक बैरिक बनाने की स्वीकृति भी सरकार से प्राप्त हो गई है। हम, कोयम्बटूर में भी 105 द्रुत कार्य बल, बटा. कैम्प को विकसित कर बुनियादी सुविधाएं मुहैया कराने के लिए 5.11 करोड़ रूपये की स्वीकृति प्राप्त करने में सफल हुए है।

पिछले माह दिल्ली में बन रहे नेहरू नगर अधिकारी परागमन हॉस्टल का बल के महानिदेशक ने दौरा किया। यह योजना 90 प्रतिशत तक पूर्ण हो चुकी है और आशा है कि इस वर्ष अप्रैल तक यह परागमन हास्टल बनकर तैयार हो जायेगा, जिसका दिल्ली आने वाले के.रि.पु.बल के अधिकारी उपयोग कर सकेगें। बसंत कुंज, नई दिल्ली में के.रि.पु.बल संस्थान के निर्माण हेतु भी प्रस्ताव भेजा गया हैं। पुलिस महानिरीक्षक स्पेशल सेक्टर को नोडल अधिकारी की जिम्मेदारी सौपी गई है तथा इस परियोजना की स्वीकृति हेतु विशेष रूप से प्रयास करने को कहा गया है।



कर्तव्य पालन में शहीद हुए कार्मिक की निकटतम संबंधी को अनुग्रह राशि का चैक प्रदान करते हुए महानिरीक्षक (परि.) श्रीनगर, श्री आरके शर्मा



१११ बटा. द्वारा काश्मीर घाटी में उग्रवादियों से बरामद किए गये हथियार एवं गोला बारुद का मुआयना करते पुलिस महानिरीक्षक (परि.) श्रीनगर श्री आरके शर्मा

परिचालनिक उपलब्धियां :- माह फरवरी 2003 के दौरान (26.2.2003 तक) देश के उग्रवाद ग्रस्त विभिन्न भागों में आंतकवादियों के विरूद्व चलाए गये अभियानों के दौरान स्थानीय पुलिस/अन्य सुरक्षा बलों के साथ मिलकर के.रि.पु.बल ने 20 मुठभेड़ों में 16 उग्रवादियों को मार गिराने तथा 87 अन्य उग्रवादियों को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की जबकि विभिन्न प्रकार के 47 हथियार, 2812 गोलियां 43 ग्रेनेड/ बम तथा 75 कि.ग्रा. विस्फोटक पदार्थ बरामद किये गये।

जम्मू एवं कश्मीर में के.रि.पु.बल ने 8 उग्रवादियों को मारा जबकि 3 अन्य को गिरफ्तार किया गया। उनसे 14 हथियार, 39 ग्रेनेड, भारी मात्रा में गोली बारूद तथा 5 कि.ग्रा. आर.डी. एक्स भी बरामद किया गया। राज्य में फरवरी माह के दौरान आतंकवाद विरोधी अभियानों में के.रि.पु.बल को कोई क्षति नहीं हुई।

उत्तर-पूर्वी राज्यों में के.रि.पु.बल ने एक उग्रवादी को मारा जबकि 52 अन्य उग्रवादियों को 20 हथियार सहित गिरफ्तार किया। इन कार्रबायों में के.रि.पु.बल का एक जवान भी शहीद हुआ एवं दो अन्य घायल हुए।

नक्सलवाद से प्रभावित राज्यों में के.रि.पु.बल द्वारा चलाए गये विशेष अभियानों के दौरान 6 नक्सलवादी मारे गए तथा 32 अन्य पकडे. गए। उनसे 13 हथियार, 70 कि.ग्रा.विस्फोटक सामग्री तथा भारी मात्रा में एम्युनिशन भी बरामद किया गया। अभियानों के दौरान झारखड राज्य में के.रि.पु.बल के 6 जवान शहीद हुए एवं 11 अन्य घायल हुए।

बल द्वारा दी गई महत्वपूर्ण कार्रबाईयाँ

21 फरवरी 2003 को जम्मू एवं कश्मीर के बरामुला जिले के बेबा गाँव में श्री एन.एस. ठाकुर, कमांडेंट 10 बटा. , के नेतृत्व में 109 वीं वाहिनी के.रि.पु. बल एस.ओ.जी. तथा राष्ट्रीय राइफल्स द्वारा चलाये गये विशेष संयुक्त अभियान के दौरान उग्रवादिसों से हुई मुठभेड. में जैश-ए-मोहम्मद गुट के दो कट्टर उग्रवादी मारे गये जिनसे 2 ए.के. राइफलें, 3 पिस्तौल, 2 यू.बी.जी.एल., 1 रॉकेट लॉचर, 30 ग्रनेड, 1758 गोली (एम्युनिशन) एवं भारी मात्रा में विस्फोटक सामग्री बरामद की गई।

आंध्र प्रदेश के वारगंल जिले के कोथापल्ली गांव में दिनांक 15.2.2003 को चलाए गये विशेष अभियान के दौरान 63 वीं वाहिनी, के.रि.पु.बल तथा स्थानीय पुलिस द्वारा 2 नक्सलवादियों को मार गिराया गया तथा उनसे 1 पिस्तौल तथा 1 हथगोला बरामद किया गया।

उडी़सा के बारबरा जंगल की उपलब्धियाँ

उडी़सा के वारबरा जंगल के सरक्षण के लिये तैनात बल के जवानों ने जनवरी

2003 के दौरान 10 लकड़ी तस्करों को गिरफतार किया तथा उनसे 1,62,117/- रूपये मूल्य की लकड़ी बरामद की।

वीरता का उत्कृष्ठ प्रदान करने पर बिना बारी की पदोन्नति

4सितम्बर, 2002 को 78 वी बटा. के.रि.पु.बल का एक प्लाटून सशस्त्र सुरक्षा डयूटी के लिए जम्मू के प्रसिद्ध रघुनाथ मंदिर में तैनात किया गया था। 24 नवम्बर, 2002 को लगभग 12:00 बजे श्रद्वालुओं की भीड़ के साथ मंदिर के मुख्य दरवाजे से एक फिदायीन मंदिर परिसर में घुस कर पूजा स्थल तक पहुंच गया। पूजा स्थल पर पहुँच कर उसने मंदिर परिसर में एकत्रित श्रद्धालुओं की भीड़ को डराने तथा भय पैदा करने के उद्देश्य से कुछ हथगोले फेकें। उसी समय दुर्भाग्य से मंदिर परिसर की बिजली भी गुल हो गई। हथगोला विस्फोट के धमाके से वहां उपस्थित भीड़ में हड़बड़ाहट मच गई और फिदायीन अधेंरे का फायदा उठाते हुए मंदिर परिसर के बिलकुल अन्दर पहुंचने में कामयाब हो गया। मंदिर के मुख्य गेट के अन्दर की ओर मोर्चा न० 1 पर तैनात 931770734 सि० के. के. पाण्डे ने अपनी इन्सेंस राइफल से फिदायीन की गोलीबारी का जबाब दिया और तुरंत अपने मोर्चे से बाहर आकर उग्रवादी को ललकारा तथा भागते हुए आतंकवादी को स्वयं के ऊपर फायरिंग करने में उलझाये रखा। अचानक उग्रवादी ने मुड़कर सिपाही के. के.पाण्डे के ऊपर फायर किया, उग्रवादी की गोली सीधी सिपाही के. के. पाण्डे में हिट हुई और वह गिर पड़ा तथा घटना स्थल पर शहीद हो गया। इसी समय दूसरे प्लाटून के कार्मिकों ने पोजीशन ले ली तथा आतंकवादी को जब तक उलझाए रखा तब तक वह संकट सन्टोरियम के नजदीक प्रांगण में नहीं पहुँच गया। आतंकवादी ने प्रगांण के अन्दर पहंचते ही खम्बे की आड़ ले ली और गोली बारी करता रहा। फायरिंग की आवाज सुनकर जवानों को खाना बांट रहा 79 बटालियन का मैस कमाण्डर न० 841130699 हव० ई. जी. राव तुरंत घटना स्थल की ओर भागा और लकड़ी की सीढ़ियों का सहारा लेकर मंदिर की छत पर चढ़ गया। मंदिर की छत पर पहुँच कर हव० ई.जी. राव सन्तरी के साथ खड़ा होकर नीचे की कार्यवाही का मुआवना करता रहा। अन्य तीन सिपाही पहले से ही फिदायीन को खोजने की कोशिश कर रहे थे। दोनों ओर से रूक-रूक कर लगातार तीन बजे तक फायरिंग चलती रही। इतने में ही मंदिर परिसर में बिजली आ गई तथा रोशनी हो गई। आतंकवादी ने स्थिति का फायदा उठाते हुए हवलदार ई.जी. राव को सामने से गोली मारी, जिसमें वह बुरी तरह से जख्मी हो गया। परंतु उसने अपनी परवाह न करते हुए उग्रवादी के साथ फायरिंग में जब तक उलझाएं रखा तब तक कि

वह बुरी तरह से अधिक खून बहने के कारण बेहोश नहीं हुआ। इसी दौरान कोरेपुबल तथा जम्मू-कश्मीर पुलिस बल की अन्य कम्पनियां घटना स्थल पर पहुंच गई और हवलदार ई.जी. राव को जख्मी हालत में राजकीय चिकित्सा कॉलेज जम्मू में भेज दिया।



जम्मू के प्रसिद्ध रघुनाथ मन्दिर में फिदायीन हमले के दौरान पोजीशन लिए बल का जवान

घटना की जानकारी प्राप्त होते ही 52 बटा. के सहा. कमां. श्री वाई. एन. राय, 831170271 हव. देव सिंह तथा अन्य दो सिपाहियों की क्यू.आर. टी. टीम घटना स्थल पर पहुंच गयी। स्थिति का मुआवना करने के बाद सहा. कमां. वाई.एन. राय हवा० देव सिंह बंकर के पीछे पहुंचे जहां सिविल पुलिस का एक उप निरीक्षक तथा दो सिपाही अपनी पोजीशन लिये तैनात थे। बंकर के पास तैनात जम्मू व कश्मीर के उप निरीक्षक को गोली लगी और उसकी मृत्यु हो गई। जैसे ही गोलीबारी थमी मोर्चे पर तैनात जम्मू-कश्मीर पुलिस के दो सिपाही मौके का लाभ उठाते हुए क्रोलिंग कर मुख्य गेट पर आ गये। आतंकवादी अपनी मर्जी से रूक-रूक कर फायरिंग करता रहा। सहा. कमां. श्री वाई.एन. राय ने निश्चय किया कि वे रेंगते हुए बुलट प्रूफ बंकर के साथ आतंकवादी के ऊपर फायरिंग करते हुए मुख्य मंदिर के ग्रिल द्वार तक पहुंचे। हवलदार देव सिंह तदुनसार कार्यवाही करते हुए 30 मीटर रेंगकर मंदिर के सामने पहुंच गया जहां पर आतंकवादी के छिपे होने का आंदेशा था। मौका पाते ही सहा. कमां. श्री वाई.एन. राय तथा हवलदार देव सिंह ने आतंकवादी के ऊपर जबरदस्त फायरिंग किया और आतंकवादी को मार डाला। मरे हुए आतंकवादी के पास से ए.के. 47 राईफल गोली

बारूद बरामद किये।



रघुनाथ मन्दिर में फिदायीन हमले के दौरान स्थिति का मुआयना करते बल के कार्मिक

52 बटा. केरिपुबल के 831170271 हवलदार देव सिंह, तथा 79 बटा. के 841130699 हव. ई.जी. राव द्वारा इस कार्रवाई में प्रदर्शित अदम्य साहस, अभूतपूर्व वीरता तथा कर्त्तव्य परायणता के लिए बल के महानिदेशक ने इन्हे बिना बारी की पदोन्नति प्रदान की ताकि इनका मनोबल ऊँचा बना रहे तथा बल के अन्य कार्मिकों को भी इससे सीख मिल सके।

बल कार्मिकों द्वारा कर्तव्य पालन में कायम की गई अदम्य साहस एवं बहादूरी की मिसालें

अप्रैल 18.4.2001 को आतंकवादियों के छिपे होने की सूचना मिलने पर श्री आर.पी.एस. राणा, कमांडेंट 39 बटालियन के नेतृत्व में के.रि.पु.बल के 32 जवानों की एक टुकडी ने गांव दिंगम के क्षेत्र कोलीखब्बल, थाना राज बाग, जिला कठुआ, जम्मू व कश्मीर में एक तलाशी अभियान चलाया। हवलदार जी.पी. सिहं, सिपाही/बिगुलर एम.पी. सिहं, 2-3 जवानों के साथ आतंकवादियों ठिकाने की ओर बढने लगे जिन्हें देखकर आतंकवादी उन पर ग्रेनेड फेंकते और फायरिंग करते हुए भागने का प्रयास करने लगे। श्री राणा, हवलदार जी.पी. सिहं, सिपाही एम.पी. सिहं ने अदम्य साहस का परिचय दिया और तुरंत रेंगकर आड़ लेते हुए भागते हुए आतंकवादियों पर फायरिंग की और दो आतंकवादियों को मार गिराया तथा एक अन्य को बुरी तरह घायल कर दिया। इसी दौरान श्री राणा को सूचना मिली कि तीन-चार आतंकवादी उत्तर-पूर्वी दिशा में पहाड़ी से फायरिंग करते हुए भाग रहे हैं। इस पर श्री राणा ने पूर्वी दिशा में भाग निकलने वाले सभी रास्तों पर जवानों को तैनात रहने का निर्देश दिया और पश्चिम एवं उत्तर-पश्चिम में उपस्थित जवानों को एक एच. ई. बम आतंकवादियों पर दागने का आदेश दिया। इस प्रकार आतंकवादियों के बच निकलने के पूर्वी रास्ते को घेर कर एक एच.ई.बम दगवाया जिससे आतंकवादी चारों ओर से घिर गए। इतने में अन्य सुरक्षा बलों ने भी क्षेत्र की घेराबंदी कर ली। इसके बाद उन्होंने अपने तीन-चार जवानों तथा दो सिविल पुलिस कर्मियों के साथ घर की तलाशी ली जिसमें दो आतंकवादियों के शव तथा उनके हथियार एवं गोला बारूद बरामद किये। तीन अन्य आतंकवादियों को पकड़ने के लिए तलाशी अभियान जारी रखा गया जिस के दौरान एक छिपे हुए घायल आतंकवादी ने अचानक उन पर फायरिंग की जिसमें श्री राणा बाल-बाल बचे। श्री राणा अदम्य साहस का परिचय देते तुरंत रेंगकर घायल आतंकवादी के ठिकाने के ठीक पीछे पहुंचे परन्तु आतंकवादी ने उनकी आहट सुन ली और वह उनकी और मुड़ा और दोनों एक साथ एक-दूसरे पर फायर किया। श्री राणा के अचूक फायर ने आतंकवादी को धाराशायी कर दिया। इस आतंकवादी के पास से 1 ए.के. 47 राइफल, 4 मैगजीन, 1 बेतार यंत्र तथा 14 हथगोले बरामद किए गए। सहायता दल के पहुंचने पर क्षेत्र की गहन छानबीन की गई जिसमें कुल 7 आतंकवादियों के शव, 8 ए.के, राइफलें, 50 मैगजीन, 1020 राउण्ड तथा 308 राउण्ड सहित 1 यू.एम.जी., 2 मैगजीन व एक राइलेन्सर सहित एक पिस्तौल, 4 बेतार यंत्र तथा 49 हथगोले बरामद किए गए।

इस घटना में अपनी जान की परवाह किए बिना, उच्च कोटी की वीरता तथा साहस के प्रदर्शन के लिए कमांडेंट श्री आर.पी.एस. राणा, हवलदार जी.पी. सिंह तथा सिपाही/बिगुलर एम.पी. सिंह, 39 बटालियन को वीरता के लिए पुलिस पदक से सम्मानित किया गया।

22 नवम्बर, 2002 को लगभग 0615 बजे जब 113 बटालियन के.रि.पु.बल के कुछ जवान अपने कैम्पस में नियमित कार्यों में व्यस्त थे, तभी जम्मू-काश्मीर पुलिस की वर्दी में दो फिदायीन होटल पम्पोस कैम्प में घुस गये तथा अपनी ए.के.एम. रायफलों

तथा ग्रेनेडों से अन्धाधुन्ध गोलाबारी शुरू कर दी। उस समय मेस में सुबह का नाश्ता बना रहे कुक चेतराम को गोली लगी और घटना स्थल पर ही उसकी मृत्यु हो गई। दोनों फिदायीन इसके बाद एम.टी. पार्क की और दौड़े। तीसरी मंजिल से बल संख्या 913230784 सिपाही सी. सुरेश कुमार ने फिदायीनों को एम.टी.पार्क में देख कर फायर किया और एक फिदायीन को एम.टी. पार्क में ही मार डाला तथा दूसरा आतंकवादी अपने साथी को मरा देख बचकर भागने को विवश हो गया। और जैसी ही बच निकलने की कोशिश कर ही रहा था तभी होटल के मुख्य द्वार के नजदीक तैनात कार्मिकों ने उसे घेर लिया। अपने को घिरा देखकर फिदायीन ने अचानक अपने पास से एक ग्रेनेड निकाला, यह देखकर भी कि जान का खतरा है 810714522 स्व0 सिपाही कृष्ण बहादुर ने अदम्य साहस, बहादुरी और अपनी जान की परवाह न करते हुए उसे पकड़ कर उसके इरादे को नाकाम करने की कोशिश की परन्तु ग्रेनेड फट गया जिसमें सिपाही कृष्ण बहादुर तथा फिदायीन दोनों ही मारे गये। इस तरह स्व० सिपाही कृष्ण बहादुर ने राष्ट्र के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। उसके इस वीरता पूर्ण कार्य से उसके कई साथियों की जानें बची। सिपाही कृष्ण बहादुर बल की गौरव शाली परम्पराओं को कायम रखते हुए राष्ट्र के लिए शहीद हुए। बल के महानिदेशक ने घटना स्थल का दौरा किया और स्व० सिपाही कृष्ण बहादुर द्वारा इस कार्रवाई में दिखाई गई वीरता की सराहना की तथा मरणोपरान्त शौर्य पदक के लिए प्रस्ताव भेजने के निर्देश दिये। पुलिस महानिरीक्षक परिचालन श्रीनगर ने स्व० सिपाही के निकटतम संबन्धी को दस हजार रूपये तुरन्त सहायता के रूप में भेजने का एलान किया।

88 (महिला) बटा ने मनाया अपना स्थापना दिवस

हर वर्ष की भांति केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, एवं देश की प्रथम महिला बटालियन ने 6 फरवरी, 2003 को अपना स्थापना दिवस मनाया। यह बटालियन बल में महिला शक्ति का प्रतिनिधित्व करती है तथा देश की होनहार युवा महिलाओं को इस बात का संदेश देती है कि वे किसी भी कार्य में पुरुषों, जहाँ तक कि कानून व्यवस्था तथा राष्ट्र की एकता एवं अखण्डता बनाए रखने में कभी भी पीछे नहीं हैं।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल देश का एक ऐसा अर्द्ध सैनिक बल है जिसकी दो महिला बटालियनें हैं। पहली 88 (महिला) बटालियन 6 फरवरी, 1986 को खड़ी की गई। इस बटालियन ने मेरठ दंगों तथा इसके बाद श्रीलंका में अपने उत्कृष्ट कार्यों के

लिए पदक प्राप्त किए हैं। अभी वर्तमान में इस बटालियन की महिला कर्मी इम्फाल (मणिपुर) तथा दिल्ली में कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए तैनात हैं। जनता की अपेक्षानुसार बल की महिला कर्मियों ने अपनी ड्यूटियों का निष्पादन पूरी निष्ठा के साथ किया है तथा सेना, राज्य एवं सिविल प्राधिकारियों से पदक तथा प्रशंसा प्राप्त की है।

देश के इतिहास में पहली बार इस बटालियन की महिला सिपाही कमलेश कुमारी को मरणोपरान्त संसद पर हुए फिदायीन हमले के दौरान अदम्य साहस, हाजिर जवाबी एवं सजगता का उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए गणतंत्र दिवस 2002 पर देश का सर्वोच्च नागरिक सम्मान "अशोक चक्र" से नवाजा जा चुका है।

इस पूर्व भी 16 जनवरी, 2001 को इसी बटालियन की एक अन्य महिला सिपाही बिन्दु कुमरे श्रीनगर हवाई अड्डे पर फिदायीन हमले में अपने कई साथियों की रक्षा करते हुए शहीद हुई थी। सि. विन्दु कुमरे को भी फिदायीन हमले में प्रदर्शित ज्योतिष्ना उच्च कोटि की शूर वीस्ता एवं पराक्रम के लिए वर्ष 2002 में मरणोपरान्त वीस्ता के पुलिस पदक से समानित किया जा चुका है।



स्थापना दिवस पर आयोजित हवन पूजा में भाग लेते बता के अधिकारी व कार्मिक

श्रीलंका में भी इस महिला बटालियन की एक कम्पनी भारतीय शांति सुरक्षा बल

के एक अंग के रूप में तैनात की गई थी। इस बटालियन की महिला सिपाही विमला देवी को श्रीलंका में उसके प्रशंसनीय कार्यों के लिए सेना मेडल से नवाजा गाथा।

वर्ष 2002 के दौरान इस बटालियन की खिलाड़ियों ने खेल जगत में अपने साहस एवं उत्साह का उत्कृष्ट प्रदर्शन कर अनेक पदक जीते हैं। इस बटालियन की हवलदार ज्योतिष्ना डेका तथा हवलदार ऊषा कुमारी ने नीमच (मध्य प्रदेश) में आयोजित अंतर सेक्टर एथलेटिक चैम्पियनशिप पौलो तथा 400 x 100 मीटर की रिले दौड़ में स्वर्ण पदक जीते जबकि भिलाई में आयोजित राष्ट्रीय सीनियर भारोत्तोलन चैम्पियनशिप में इसी बटालियन की उप निरीक्षक सुनैना ने तीन स्वर्ण पदक प्राप्त किए। उप निरीक्षक शीला तथा सुनैना ने भिवानी, (हरियाणा) में सम्पन्न हुए आखिल भारतीय पुलिस स्पर्धाओं की भारोत्तोलन प्रतियोगिता में दो स्वर्ण पदक तथा हैदराबाद में सम्पन्न हुए 32वें राष्ट्रीय खेलों में दो स्वर्ण पदक जीते।

चार राज्यों के विधान सभा चुनाव कराने के लिए बल की 136 कम्पनियां तैनात



कोहिमा (नागालैण्ड) में विधान सभा चुनाव के दौरान मतदान केन्द्रों पर तैनात बल के जवान

नागालैण्ड, मेघालय तथा त्रिपुरा में 26 फरवरी, 2003 को सम्पन्न हुए विधान सभा

चुनावों के लिए के.रि.पु.बल (C.R.P.E.) की 136 कम्पानेयां तैनात की गइ थी। नागालैण्ड में चुनाव ड्यूटियों के लिए के.रि.पु.बल की 75 कम्पनियां जबकि मेघालय में 15 कम्पनियां तथा त्रिपुरा में 46 कम्पनियां तैनात की गई। बल की कम्पनियों की तैनात का जिलेवार ब्यौरा इस प्रकार रहा :-

नागालैण्ड राज्य के दीमापुर जिले में 11, कोहिमा में 12, फीक में 06, मोकुकचुंग में 10, जुन्हेबूटो में 09, वोखा में 06, मोन में 09 तथा तैन्सांग में 12 बल की कम्पनियां तैनात की गई। मेघालय राज्य के गारोहिल, खासी/ रिभोई तथा जन्तिया जिलों में बल की 5-5 कम्पनियां तैनात की गई जबकि त्रिपुरा राज्य के पश्चिमी त्रिपुरा जिले में 17, दक्षिणी त्रिपुरा में 09, दलाई में 11 तथा उत्तरी त्रिपुरा में 09 कम्पनियां तैनात की गई थी।

इसके अलावा त्रिपुरा में सीमा सुरक्षा बल की 30 कम्पनियां तथा पंजाब सशस्त्र पुलिस की 10 कम्पनियां भी तैनात की गई। हिमाचल प्रदेश में चुनाव ड्यूटियों के लिए भारतीय तिब्बत सीमा पुलिस तथा एस.एस.बी. की 5-5 कम्पनियां भी तैनात की गई।

के.रि.पु.बल को स्वतन्त्र एवं निष्पक्ष चुनाव कराने का काफी अनुभव है, तथा विषम परिस्थितियों में यथा स्थिति बनाए रखने का पुराना बेदाग रिकार्ड रहा है। इसी लिए संवेदन शील एवं उग्रवाद प्रभावित राज्यों में चुनाव के दौरान केन्द्रीय सुरक्षा बलों के आवागमन की जिम्मेदारी के.रि.पु.बल को सौपीं गई थी और के.रि.पु.बल के महानिरीक्षक (परिचालन) श्री के.टी.डी. सिंह को गृह मंत्रालय द्वारा इस चुनाव के लिए संयोजक नियुक्त किया गया था।

इसके अलावा महानिरीक्षक, के.रि.पु.बल, त्रिपुरा, श्री सुखजिन्दर सिंह, महानिरीक्षक, के.रि.पु.बल, मणिपुर एवं नागालैण्ड सेक्टर, श्री सुभाष गोस्वामी, महानिरीक्षक, के.रि.पु.बल, उत्तरी-पूर्वी सेक्टर, श्री राजदीप सिंह, तथा उप महानिरीक्षक, के.रि.पु.बल, चण्डीगढ़, श्री बलवंत सिंह आजाद, क्रमशः त्रिपुरा, नागालैण्ड, मेघालय तथा हिमांचल प्रदेश के लिए नोडल अधिकारी के रूप में नामित किये गये थे।

मेहनत का फल



88 महिला बटालियन में सेवारत बल सं0 919880012 रसोइया मिथलेश शर्मा विधवा होते हुए सीमित संसाधनों से बच्चों को शिक्षा दिला रही है। उनकी पुत्री अंशु शर्मा ने राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय नं०-02, नजफगढ नई दिल्ली द्वारा आयोजित केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद (सी० बी० एस० ई०) की उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2002 में, (क्षेत्र संख्या 22) द्वितीय स्थान प्राप्त किया जिसके लिये अंशु को दिल्ली की मुख्य मंत्री श्रीमति शीला दीक्षित ने 18 नवम्बर, 2002 को वर्ष 2002 के इन्दिरा गाँधी पुरस्कार से सम्मानित किया तथा दो हजार एक सौ रूपये का चैक भी प्रदान किया। बल के लिए यह गर्व की बात इस लिये है कि बल के कार्मिक अपने कत्तव्यों के प्रति समर्पित होने के साथ-साथ अपने परिवार के प्रति भी सजग हैं।

सेवानिवृत्ति पर साथियों द्वारा भावभिनी विदाई



उत्तरांचल प्रदेश के पौड़ी गढ़वाल जिले के गाँव ग्वोल में जन्मे हवलदार दाता राम कुकरेती केरिपुबल परिवार में 1976 में शामिल हुए थे। अपनी कड़ी मेहनत तथा लगन से वे हवलदार के पद पर पदोन्नति हुए। श्री कुकरेती को हेंड कम्पोजिंग में अच्छा ज्ञान था। इन्होंने हेड कम्पोजिंग की शिक्षा केरिपुबल में आने से पूर्व सिविल से प्राप्त की थी। इनके हेड कम्पोजिंग में कार्य करने के अनुभव तथा कुशलता को ध्यान में रखते हुए श्री कुकरेती को केरिपुबल की प्रिटिंग प्रेस में तैनात किया गया। श्री कुकरेती ने केरिपुबल प्रेस में हेड कम्पोजिटर के रूप में लगभग 27 वर्ष सेवा की तथा अपने कार्यों से उच्च अधिकारियों से प्रशंसा अर्जित की। श्री कुकरेती 27 वर्ष की बेदाग सेवा करने के बाद अधिवर्षिता पर 28 फरवरी, 2003 को सेवा निवृत्त हुए। इस अवसर पर केरिपुबल की प्रिटिंग प्रेस में कार्यरत अधिकारियों एवं उसने सहयोगियों द्वारा एक समारोह का आयोजन किया गया जिसमें श्री कुकरेती की बल के प्रति समर्पित सेवाओं को याद किया गया तथा उन्हें भावभिनी विदाई दी तथा ईश्वर से उनकी दीर्घ आयु एवं अच्छे स्वास्थ्य की कामना की।

स्वस्थ शिशु प्रदर्शनी/मेला

22 फरवरी, 2003 को ग्रुप केन्द्र, झड़ौदा कलाँ, नई दिल्ली में बेस अस्पताल-एक के सहयोग से हैल्थी बेबी शो (स्वस्थ शिशु प्रदर्शनी) का आयोजन किया। ग्रुप केन्द्र कैम्पस तथा उसके आस-पास के क्षेत्र में रहने वाले बल के अधिकारियों एवं कार्मिकों के बच्चों ने इस प्रदर्शनी में भाग लिया। सी.आर.पी.एफ. वाईब्ज वेलफेएर एसोशिएसन की अध्यक्षा श्रीमती कंचन चौबे इस प्रदर्शनी में मुख्य अतिथि थी। इस

प्रदर्शनी में कार्मिकों के परिवारों को जच्चा-बच्चा देखभाल, परिवार कल्याण इत्यादि के बारे में भी जानकारी दी गई। मुख्य अतिथि महोदया ने स्वस्थ शिशुओं को पुरस्कार प्रदान किये।







बल के सामाजिक क्रिया कलाप

के.रि.प.बल के जवान जम्मू कश्मीर तथा उत्तर पूर्वी क्षेत्रों में उग्रवाद, अलगावाद तथा विघटनकारी ताकतों का दमन कर वहां शांति व्यवस्था कायम करने में लगे है वहीं ये जवान अपनी तैनाती के क्षेत्रों में स्थानीय जनता के लिए पल्स पोलियों, रक्त दान शिविर, स्वस्थ्य शिशु प्रर्दशनी, स्कूली बच्चों के लिए विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं और उन्हें पाठ्य सामग्री वितरित करना, मुत चिकित्सा शिविरों का आयोजन आदि जैसे सामाजिक कार्य भी करते हैं ताकि जनता का उनमें विश्वास बना रहे। अतः इसी उद्देश्य से सरकार द्वारा चार चरणों में चलाए राम पल्स पोलियो उन्मूलन कार्यक्रम के तहत केरिपुबल ने देश के विभिन्न भागों में 1,308 कैम्प लगाए तथा 3,97,714 बच्चों को पोलियो की दवा पिलाई।



सी.टी.सी.-दो के उपमहानिरीक्षक प्राचार्य श्री ए. एन. श्रीनिवासन बच्चे को पोलियों की ड्राप पिलाते हुए



अहमदाबाद के श्रीजी पार्क इलाके में १०० बटा आर.ए.एफ द्वारा ९ फरवरी, २००३ को लगाया पोलियों कैम्प

29 सितम्बर, 2002 तथा 17 नवम्बर, 2002 को पहले दो चरणों में एक उप राष्ट्रीय पोलियो उन्मूलन कार्यक्रम के अन्तर्गत दिल्ली, बिहार, उत्तर प्रदेश तथा हरियाणा राज्यों में यह अभियान चलाया गया था जबकि तीसरे व चौथे चरण में यह अभियान देश व्यापी रूप में 5 जनवरी तथा 9 फरवरी, 2003 को चलाया था।


5TH JAN. 2008

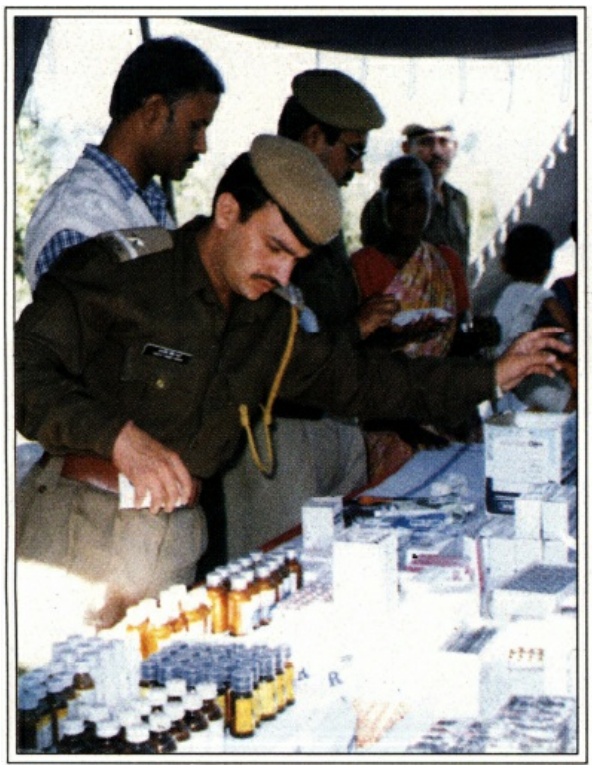


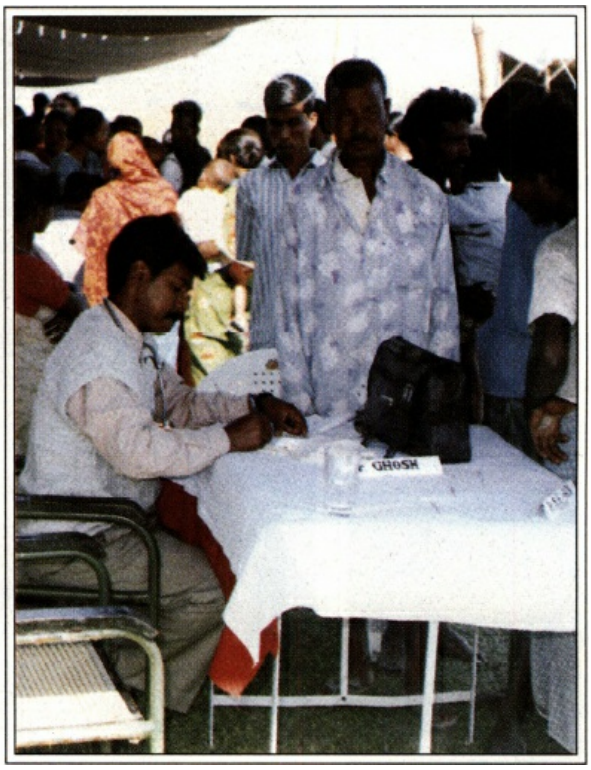
9 फरवरी, *2003* को *47* वीं बटा द्वारा आयोजित पोलियों कैम्प का उद्घाटन करते हुए महानिरीक्षक *(*परि.*)* श्रीनगर श्री आरके शर्मा



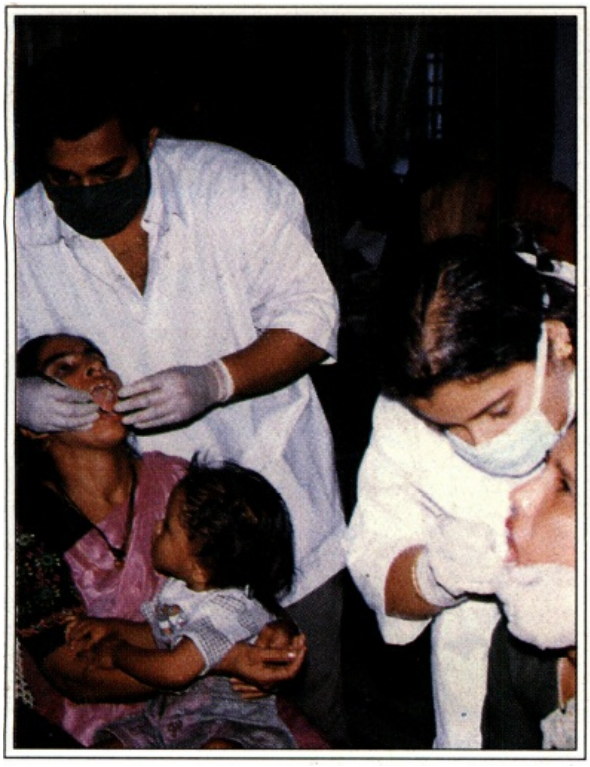
ग्रुप केन्द्र जालंधर द्वारा *5* जनवरी *2003* को लगाए गये पल्स पोलियो कैप में बच्चे को पोलियों की दवा पिलाते हुए उप महानिरीक्षक श्री बलवंत सिंह

देश के विभिन्न भागों में तैनात केरिपुबल की यूनिटों/कार्यालयों के चिकित्सा अधिकारियों तथा अर्द्ध चिकित्सीय स्टाफ ने राज्य सरकार तथा रोटरी अन्तर्राष्ट्रीय की सहायता से देश के विभिन्न क्षेत्रों में पल्स पोलियो कैम्प लगाए और बच्चों को पोलियों की दवाई पिलाई गई।

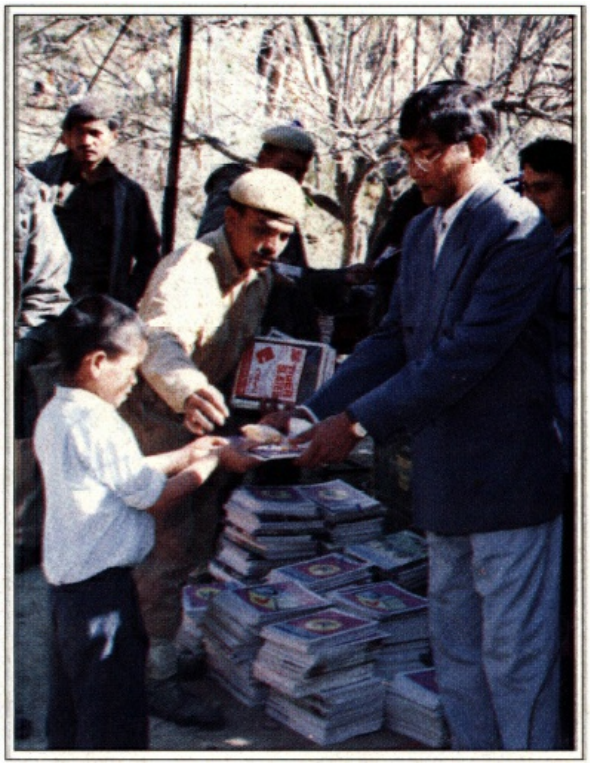


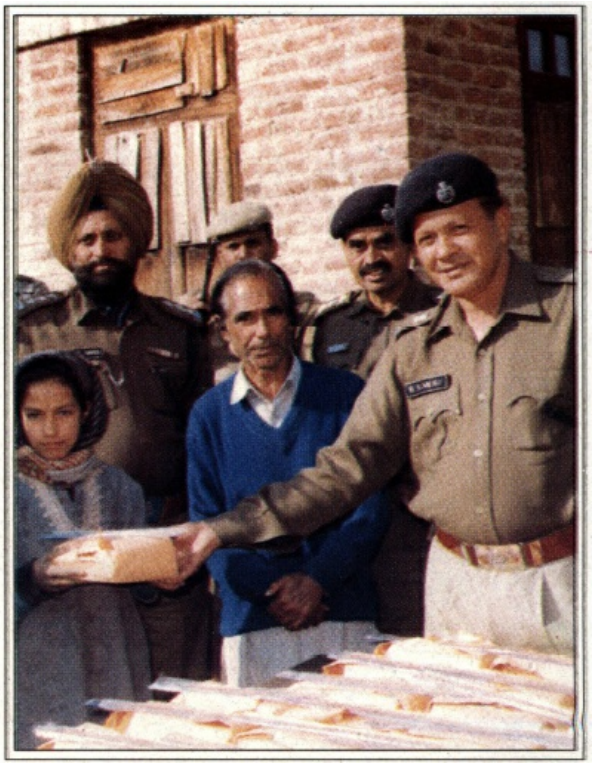


देश के दूर-दराज के इलाकों में आयोजित सामाजिक कार्यक्रमों के तहत मुफ्त चिकित्सा जांच व दवाईयां बांटते बल के अधिकारी व जवान

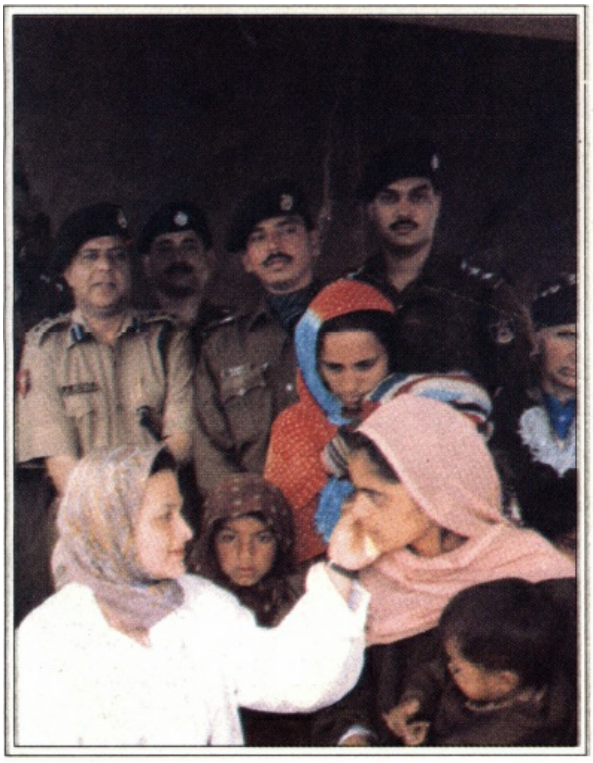








देश के विभिन्न भागों में सिविक एक्शन कार्यक्रम के तहत अपनी तैनाती के क्षेत्रों में स्थानीय स्कूली बच्चों को किताब-कॉपियां तथा स्टेशनरी का सामान वितरित करते हुए बल के अधिकारी व जवान

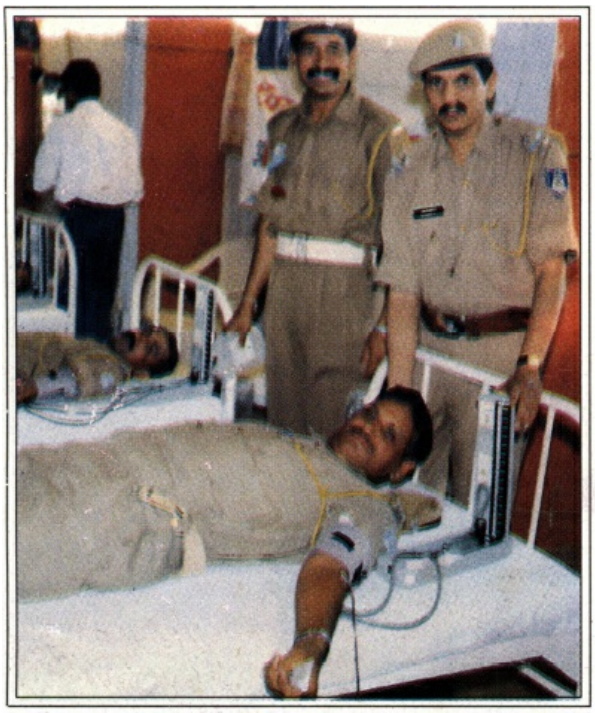




रक्तदान शिविर का आयोजन



समाज सेवा स्वरूप विभिन्न अवसरों पर आयोजित रक्त दान शिविरों में रक्त दान करते बल के कार्मिक

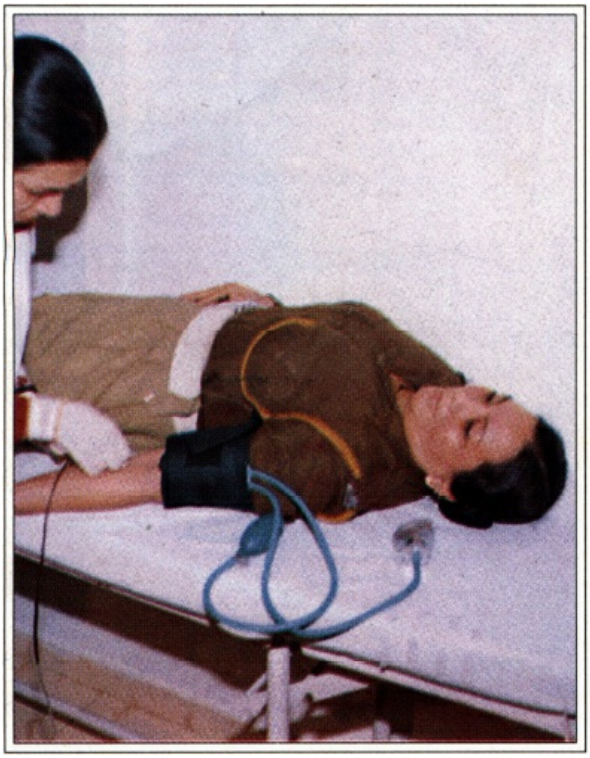


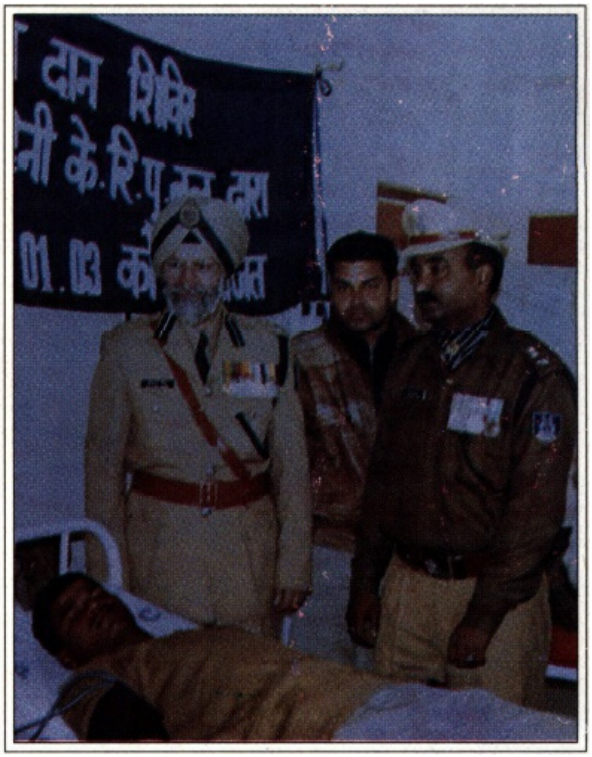






देश के विभिन्न भागों में तैनात समाज सेवा स्वरुप रक्त दान करते बल के कार्मिक





मानवीय सेवा में तत्पर बेस अस्पताल-दो हैदराबाद

बेस अस्पताल दो, के.रि.पु.बल, हैदराबाद की स्थापना आरम्भ में 50 बिस्तर वाले अस्पताल के रूप में 1 जुलाई, 1973 को आवड़ी चैन्नई में हुई थी। बाद में इस अस्पताल को 1 अप्रैल, 1974 में बढ़ा कर 79 बिस्तर वाला अस्पताल कर दिया गया। तत्पश्चात फरवरी, 1975 में इस अस्पताल को 100 बिस्तर वाला अस्पताल कर दिया गया और स्थानान्तरित कर हैदराबाद लाया गया।

तभी से यह अस्पत्ताल आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु सहित पांडिचेरी, केरल, कनार्टक, अण्डमान-निकोबार उड़ीसा, पं० बंगाल, बिहार महाराष्ट्र गोवा तथा मध्य प्रदेश में तैनात दक्षिणी सेक्टर पूर्वी सेक्टर बिहार सेक्टर, पश्चिमी तथा स्पेशल सेक्टर की बटालियनों, कार्यालयों में तैनात अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिवार के सदस्यों को विभिन्न प्रकार की चिकित्सा सुविधायें लगातार सुलभ करा रहा है। इसके अतिरिक्त हैदराबाद में स्थित दक्षिणी सेक्टर मुख्यालय, पुलिस उप महानिरीक्षक कार्यालय, ग्रुप केन्द्र हैदराबाद, ग्रुप केन्द्र रंगारेड्डी, दूसरी सिग्नल बटालियन, 5 बटा.,

35 बटालियन, 99 बटा., द्रुत कार्य बल तथा ए.डब्ल्यू.एस. हैदराबाद एवं ग्रुप केन्द्र कैम्पस में रह रहे परिवारों को भी विभिन्न तरह की सामान्य तथा विशेषज्ञ चिकित्सा सुविधाएं सुलभ कराता है। इस अस्पताल में सामान्य चिकित्सा सुविधाएं होने के साथ–साथ मेडीसन, सर्जरी, मनो चिकित्सा, स्त्री एवं प्रसूती रोग, बाल चिकित्सा, विकलांग चिकित्सा, नेत्र, कान, नाक एवं गला चिकित्सा, विकिरण चिकित्सा, विकृति विज्ञान तथा दन्त चिकित्सा जैसी सभी मूलभूत विशेषज्ञ सुविधाएं उपलब्ध हैं। इस अस्पताल में उच्च जी.आई. इण्डोस्कोपी, गायनोकोलाजीकल लेप्रोस्कोपी, 500 एम.ए. वाली आई.आई.टी.वी. नई एक्सरे मशीन, सभी सुविधा युक्त साइजोथिरोपी विंग, गहन चिकित्सा यूनिट के साथ कम्प्यूटरीकृत तीन चैनल वाली ई.सी.जी., कार्डिक मॉनीटर तथा डेफीब्रिलेटर जैसी आधुनिक अतिरिक्त सुविधाएं भी मौजूद हैं। अस्पताल में एक टी.एम.टी. मशीन तथा आधुनिक विकृति विज्ञानी जाँच के लिए उपयुक्त संसाधन तथा लेव उपलब्ध है।



मरीज की जाँच करते बेस अस्पताल वे के मनोविकासक डा कुल भूषण



बेस अस्पताल–दो में मरीज के घावों पर दवाई लगाती नर्स

आधार भूत संरचना:– अस्पताल में बल कार्मिकों को तथा उनके परिवार के सदस्यों को श्रेष्ठतम चिकित्सा प्रदान करने के लिए बहरहाल निम्नांकित विशेषज्ञ चिकित्सक तैनात हैं :–

मनोचिकित्सक–डा. कुलभूषण, फिजीशियन–डा. जी.सी. मोहन्ती/डा. सतीश कुमार डा. सामान्य चिकित्सक–श्रीमती एच. महापात्रा/डा. एस. मोहेबा, कान, नाक, गला चिकित्सक–डा. ए.बी. घोष/डा. एस.मांझी, विकिरण विज्ञानी–डा. एस.के. मिश्र, विकृति विज्ञान–डा. एम.के. द्विवेदी, सामान्य सर्जरी–डा. डी.के. जैन विसंक्षक (एनथीसिया)–डा. श्रीमती ऊषा जैन/डा. टी.पी. जैन, बाल चिकित्सक डा. श्रीमती आर. नाईक, स्त्री रोग एवं प्रसूती चिकित्सक डा. श्रीमती गीता दास, नेत्र चिकित्सक–डा. एस.के.चक्रबर्ती तथा हड्डी विशेषज्ञ डा. एम. के. सिन्हा।

अस्पताल के मुख्य कार्य:– आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु सहित पांडिचेरी, अण्डमान–निकोबर, महाराष्ट्र, गोवा, बिहार, पश्चिमी बंगाल तथा उड़ीसा में स्थित ग्रुप केन्द्र तथा बटालियनों में तैनात कार्मिकों तथा उनके परिवार के सदस्यों को चिकित्सा सुविधा प्रदान करने के लिए यह अस्पताल रेफरल अस्पताल के रूप में मुख्यतः कार्यरत है। इसके अलावा यह अस्पताल पल्स पोलियों तथा अन्य राष्ट्रीय कार्यक्रमों, व्यवसायिक सम्मेलनों का आयोजन, अर्द्ध चिकित्सीय स्टाफ/प्लाटून हैल्थ वर्कर के लिए प्लाटून स्वास्थ्य कोर्स, नंर्सिग प्रशिक्षण कोर्स तथा टीका–करण एवं स्वास्थ्य शिक्षा तथा परिवार कल्याण आदि जैसे कार्यक्रम भी आयोजित करता है। बेस

अस्पताल–दो, महानिदेशालय के निदेशानुसार चिकित्सा क्षेत्र में मार्ग दर्शन के लिए ग्रुप केन्द्र बंगलौर, अवाडी, नागपुर, रंगारेड्डी, पल्लीपुरम, पुणे, भोपाल, शिवपुरी, सी.टी.सी.तीन नादेड़, 5, 12, 32 तथा 69 बटालियन अस्पतालों का तकनीकी निरीक्षण भी करता है।

अस्पताल में प्रमुख सुविधाएं :–बेस अस्पताल–दो बल के अधिकारी, जवानों एवं उनके परिवारों को चिकित्सा, सर्जरी, हड्डी रोग, मनोचिकित्सा, स्त्री एवं प्रसूति रोग, बाल चिकित्सा, नेत्र, कान, नाक एवं गला, दन्त, एन्थीसिया, विकिरण विज्ञान जैसी सभी प्रकार की मूल भूत सेवाएं प्रदान करने के लिए पूरे संसाधनों से सज्जित है। विकृति विज्ञान /क्लीनिकल जाँच के लिए जीव रसायन, सोरोलॉजी, हेमाटोलॉजी, हिस्टोपैथोलॉजी आदि की जाँच की सुविधा उपलब्ध हैं। विकिरण विज्ञान में एक्सरे की सुविधाएं 500 एम.ए. एक्सरे मशीन के साथ आई.आई.टी.वी. एक्सरे की नई सुविधाएं भी उपलब्ध है। पोर्टेबल एक्सरे मशीन भी इस अस्पताल में उपलब्ध हैं। इस अस्पताल में दैनिक जाँच तथा विशेष जाँच के लिए जी.आई. ट्रेक्ट हेतु बा–मील स्टडीज़, आई.वी.पी., फिस्यूला/सीनोग्रेम, सिस्टो–यूरेथ्रोग्रेम, हिस्टो–सेलपिनोग्रेम इत्यादि सुविधाएं भी उपलब्ध हैं। इस अस्पताल में अल्ट्रासाउन्ड हेतु अत्याधुनिक प्रिन्टर के साथ अल्ट्रासाउन्ड मशीन फिजियोथेरेपी पूर्ण रूप से सज्जित एवं चालित आपरेशन थियेटर, ई.सी.जी. एवं डिफाईब्रिलेटर के साथ गहन हदय चिकित्सा आडियोमीटर, प्रसूती कक्ष, 24 घंटे की आपातकालीन गहन चिकित्सा कम्प्यूटरीकृत ई.सी.जी., ई.सी.टी, एवेरसन थेरापी एवं ब्रेन पोलेराईज़र तथा इण्डोस्कोपी इत्यादि की सुविधाएं भी उपलब्ध हैं।

प्रमुख विशेषज्ञ सुविधाएं:– बेस अस्पताल–दो, के.रि.पु.बल, हैदराबाद के नजदीक, निजाम चिकित्सा विज्ञान संस्थान तथा अपोलो हैदराबाद जैसे दो प्रमुख विशेषज्ञ अस्पतालों की सुविधाएं उपलब्ध हैं। यह अस्पताल अपने प्रधिकार क्षेत्र में आने वाले ग्रुप केन्द्र तथा बटालियनों से हृदय, मस्तिष्क तथा रेनल बीमारियों से ग्रसित अधिकांश मरीजों को उक्त संस्थानों में विशेषज्ञ इलाज के लिए रेफर करता है। मरीजों को प्रमुख विशेषज्ञ इलाज के लिए भेजने से पूर्व बेस अस्पताल–दो में इनकी जाँच–पड़ताल की जाती है। रेफरेल अस्पतालों से मरीज डिस्चार्ज होने के बाद उनका इलाज/देखभाल बेस अस्पताल–दो में किया जाता है। निजाम चिकित्सा संस्थान तथा अपोलो अस्पताल से के.रि.पु.बल के बहुत कार्मिकों की बाई–पास सर्जरी, सी.ए.बी.जी., एन्जियोप्लास्टी, वाल्ब रिप्लेसमेन्ट, रेनल ट्रान्सप्लान्टेशन आदि जैसी दुर्लभ बीमारियों का इलाज कराया है तथा इन बीमारियों से ग्रस्त मरीजों की देख भाल बेस अस्पताल–दो द्वारा नियमित रूप से की जाती है।



बेस अस्पताल–दो में मरीज की नियमित जाँच करती हुए नर्से



बेस अस्पताल हैदराबाद में बच्चे की जाँच करती शिशु चिकित्सक

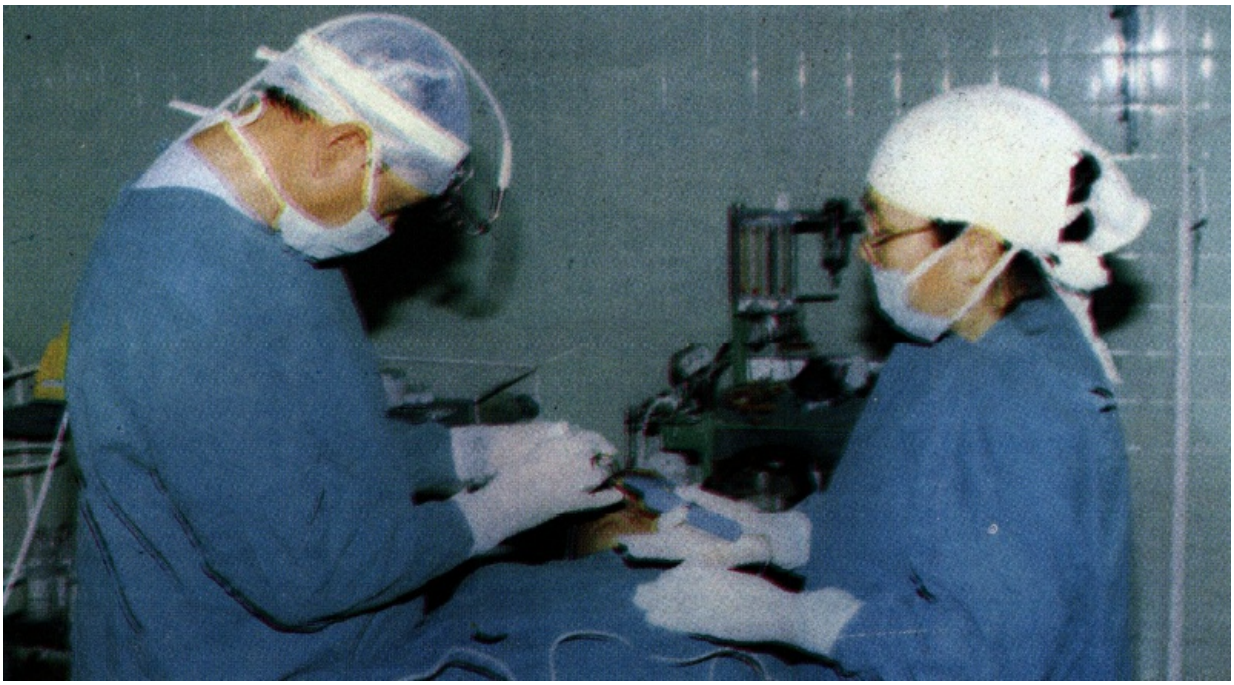
जनवरी, 2002 से दिसम्बर, 2002 तक ओपीडी में 42,423 मरीजों का इलाज

किया गया जबकि इण्डोर मरीज के रूप में 832 लोगों ने अपना इलाज करवाया। 21,970 मरीजों की विभिन्न प्रकार की पैथोलोजीकल जाँच की गई तथा 1,911 मरीजों की एक्सरे और 512 मरीजों की यू.एस.जी. जाँच की गई। इस अवधि के दौरान 22 बड़े तथा 192 छोटे सर्जिकल आपरेशन भी किए गये। परिवार कल्याण कार्यक्रम के अर्न्तगत 18 लोगों की नसबन्दी की गई। अस्पताल द्वारा 3,997 मरीजों का आपातकालीन स्थिति में इलाज किया गया।

सामाजिक क्रिया–कलापों के अर्न्तगत इन्स्टीट्यूट ऑफ प्रिवेन्टिव मेडीसन के सहयोग से रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें बल की महिलाओं सहित 100 अधिकारियों एवं जवानों ने स्वेच्छा से रक्तदान किया। आगामी रक्तदान शिविर शीघ्र ही आयोजित करने की सम्भावना है। पल्स पोलियों कार्यक्रम के तहत बेस अस्पताल–दो द्वारा नियमित रूप से पल्स पोलियों कार्यक्रम आयोजित किए गये तथा हैदराबाद के ग्रामीण एवं देहाती क्षेत्रों में बच्चों को पोलियो ड्राप पिलाने के लिए कैम्प स्थापित किए जिसकी स्थानीय जनता तथा प्रेस मीडिया ने प्रशंसा की है।

बेस अस्पताल–दो, वर्ष 1998 से के.रि.पु.बल के सेक्टर चिकित्सा अधिकारियों के लिए वार्षिक सम्मेलन नियमित रूप से आयोजन कर रहा है। चौथा सम्मेलन बेस अस्पताल–दो में 12 से 13 नवम्बर, 2002 में आयोजित किया गया था जिसमें 23 चिकित्सा अधिकारियों ने भाग लिया था। इस सम्मेलन में जुड़वा शहरों के चिकित्सा क्षेत्र में प्रख्यात विशेषज्ञों द्वारा विभिन्न चिकित्सा विषयों पर लैक्चर दिया गया तथा भाग लेने वाले प्रतिनिधियों के लाभ के लिए चिकित्सा विज्ञान में हाल ही में हो रहे विकास एवं बदलाव के बारे में बताया गया। पाँचवा चिकित्सा सम्मेलन शीघ्र ही आयोजित किया जायेगा। व्यवासायिक ज्ञान को अद्यतन करने के लिए नियमित क्लीनिकल बैठकें आयोजित की जाती हैं।

इसके अलावा इस बेस अस्पताल के चिकित्सक हैदराबाद में स्थित विभिन्न सहयोगी अस्पतालों तथा औषधि फर्मों द्वारा आयोजित चिकित्सा से संबंधित कार्यशालाओं तथा सम्मेलनों में भी हिस्सा लेते हैं। यही नहीं अस्पताल के विशेषज्ञ उनकी एसोशिएसनों द्वारा आयोजित वार्षिक सम्मेलनों में भाग लेते है ताकि वे चिकित्सा क्षेत्र में हो रहे नित नये आविष्कारों तथा विभिन्न बीमारियों के लिए खोज की जा रही नई–नई दवाईयों की जानकारी हासिल कर सके।



बेस अस्पताल–दो हैदराबाद में आपरेशन करते चिकित्सक

प्रशिक्षण कार्यक्रम:– बेस अस्पताल–दो का उद्देश्य अपने क्षेत्राधिकार में आने वाली यूनिट/कार्यालय में तैनात हर कार्मिक को उसकी तैनाती के दुर्गम से दुर्गम स्थान पर कम से कम समय में आपातकालीन स्थिति में कुछ हद तक उपचार कर बीमारी की रोक–थाम करना है ताकि मरीज को नजदीकी अस्पताल में पहुँचाया जा सके। इसीलिए सिपाहियों के लिए 3 माह का प्लाटून स्वास्थ्य कार्यकर्ता कोर्स चलाया जाता है। अभी तक 15 बैच यह प्रशिक्षण ले चुके हैं। बल के फार्मासिष्टों के लिए 6 सप्ताह की अवधि का नर्सिंग प्रशिक्षण चलाया जाता है। अभी तक 2 बैचों को यह प्रशिक्षण दिया जा चुका है। चिकित्सा क्षेत्र में ज्ञान को अद्यतन करने के लिए अस्पताल में चिकित्सा अधिकारियों को नियमित पुनश्चर्या कोर्स के लिए विभिन्न चिकित्सा कालेजों में भेजा जाता है।

टीकाकरण एवं स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम:– बेस अस्पताल अपने नियमित ट्रेनिंग कार्यों के अलावा पोलियो, टी.बी डिप्थीरिया, टिटनेस, भोबिंज कफ तथा मेसलेस आदि जैसी सामान्य बीमारियों के लिए टीकाकरण कार्यक्रम भी आयोजित करता है। अस्पताल के चिकित्सा अधिकारी तथा विशेषज्ञ मलेरिया, एड्स, परिवार कल्याण तथा आपदा प्रबन्धन पर कार्मिकों को जानकारी एवं बचाव के तरीकों के बारे में नियमित लेक्चर देते हैं। यही नहीं बेस अस्पताल दक्षिणी सेक्टर पश्चिमी सेक्टर, स्पेशल सेक्टर के क्षेत्राधिकार में आने वाले ग्रुप केन्द्रों के स्टेशन हास्पीटलों का तकनीकी निरीक्षण भी करता है ताकि इन स्टेशन अस्पतालों में मरीजों के इलाज संबंधी कोई कमी सामने आती है तो उसे निरीक्षण के दौरान दूर करने की तकनीक

बताइ जा सके।

बेस अस्पताल में अति उत्कृष्ट एवं बेहतरीन चिकित्सा सुविधाओं का फायदा तभी आम मरीजों को मिलता जब वहाँ के चिकित्सक तथा स्टाफ अपने कार्यों के प्रति समर्पित हो अन्यथा सब व्यर्थ है। बेस अस्पताल–दो के चिकित्सकगण तथा तैनात स्टाफ अपने कर्तव्यों से पूर्ण रूप से अवगत हैं, इसीलिए अस्पताल में आने वाले मरीजों का निस्वार्थ भाव से अपना कर्तव्य समक्ष कर इलाज करते हैं। अस्पताल में विभिन्न प्रकार की बीमारियों का इलाज करने के लिए अलग–अलग विभाग हैं जिनमें विशेषज्ञ चिकित्सक तथा आधुनिक अल्ट्रा मार्डन सुविधाएं उपलब्ध हैं।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में हाकी



मुम्बई में आयोजित अखिल भारतीय हाकी चैम्पीयनशिप में बल के हाकी खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाते हुए सिने स्टार

बहुत समय से हाकी एक अन्तर्राष्ट्रीय खेल रहा है। 1908 में होकी पहली बार लंदन में आयोजित ओलम्पिक खेलों में शामिल किया गया था। हाकी खेल भारत में ब्रिटेन से आया और मिशनरियों को भारत में स्कूल स्थापित कर इस खेल प्रचार–प्रसार करने

को जिम्मेदारी सौंपी गई। 1884 में कलकत्ता में पहला हाकी क्लब स्थापित किया गया। इस खेल को सही मुआएने में प्रचार–प्रसार तब मिला जब 1895 कलकत्ता में बेगहन कप, एक वर्ष पश्चात बक्सर में आगा खाँ कप तथा 1910 में लखनऊ में डा० राम लाल मेमोरियल टूर्नामेन्ट जैसे अखिल भारतीय टूर्नामेन्ट आयोजित किए गये। ऐसे ही कुछ मशहूर टूर्नामेन्ट भोपाल, ग्वालियर, मद्रास, दिल्ली तथा लाहौर में भी आयोजित किए।

पुलिस खेलों में हाकी शुरू से ही पारम्परिक रूप से प्रसिद्ध रहा है। हाकी चैम्पियनशिप देश के पुलिस कर्मियों को राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ियों के साथ अपने विचार, आदान–प्रदान करने का मंच प्रदान करता है तथा खिलाड़ियों में भाई–चारे, टीम स्प्रिट निस्वार्थ भाव से कार्य करने की भावना जैसे गुण पैदा करने के अवसर प्रदान करता है।

हाकी एक ऐसा खेल है जिसका सीधा संबंध देश के पुलिस कर्मियों की कार्य क्षमता, हौसला, सुदृढ़ता, शारीरिक लचकता तथा दिमाग से होता है। इस में कोई सन्देह नहीं है कि पुलिस बलों में पंजाब पुलिस के बलबीर जैसे राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के अति उत्कृष्ट हाकी खिलाड़ी पैदा किए है जिन्होंने 1956 ओलम्पिक में प्रतिनिधित्व किया और स्वर्ण पदक जीता। सीमा सुरक्षा बल के अजीत पाल सिंह जिन्होंने 1975 में विश्व कप में देश की टीम का प्रतिनिधित्व किया और विजय दिलाई तथा पंजाब पुलिस के परगट सिंह भारतीय हॉकी टीम के कप्तान ने देश के लिए पदक जीते।

51 वीं अखिल भारतीय पुलिस हाकी चैम्पियनशिप का आयोजन 01 से 9 फरवरी, 2003 तक मुम्बई पुलिस ने किया। अखिल भारतीय स्तर पर इस प्रकार के आयोजन करना देश के संघ शासित प्रदेशों केन्द्रीय पुलिस संगठनों तथा विभिन्न राज्य पुलिस बलों के अधिकारियों एवं जवानों के बीच स्वच्छ प्रति–स्पर्धा को बढ़ावा देना तथा उनमें शारीरिक सुदृहणता तथा अनुशासन का विकास करना है।

देश के साहसी एवं दुर्जेय खेलों के रूप में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने भी हाकी को अपनाया है। प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय टूर्नामेन्ट में देश का प्रतिनिधित्व करने का श्रेय के.रि.पु.बल के हाकी खिलाड़ियों को जाता है। कुछ समय से के.रि.पु.बल ने मुरूगप्पा गोल्ड कप, नेहरू हाकी, बाम्बे गोल्ड कप, के.डी. सिंह बाबू टूर्नामेन्ट श्रीराम डी.सी.एम. हाकी, नेहरू गोल्ड कप, महाराजा गोल्ड कप, संजय मेमोरियल तथा सिधिंया गोल्ड कप आदि जैसे बहुत सारे प्रमुख हाकी टूर्नामेन्ट जीते हैं।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के हाकी कोच सतपाल सिंह मान ने दिल्ली की ओर से 1972 तथा 1975 में प्रतिनिधित्व किया तथा 1976 में दिल्ली हाकी टीम को पूर्ण नेतृत्व प्रदान किया। 1977 में हॉलैण्ड टीम के देश में दौरे के दौरान श्री मान ने टेस्ट मैचों में देश का प्रतिनिधित्व किया। उसी वर्ष सतपाल सिंह मान 11वीं नेहरू हाकी टूर्नामेन्ट में यूरोप के विरूद्ध खेले। 1988 में इन्दिरा गाँधी गोल्ड कप अन्तर्राष्ट्रीय टूर्नामेन्ट में वह भारतीय टीम के कोच थे जिसमें टीम ने तीसरा स्थान प्राप्त किया था।

1973 से 1976 तक केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की हाकी टीम दिल्ली की लीग चैम्पियन रही। 1976 में के.रि.पु.बल की हाकी टीम ने दिल्ली की ओर से राष्ट्रीय खेलों में भाग लिया। उन दिनों में राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धाओं के लिए मध्य भारत की टीम में अधिकांश खिलाड़ी केन्द्रीय रिर्जव पुलिस बल के शामिल थे। 1979 में मास्कों में आयोजित प्रि–ओलम्पिक खेलों में बल के प्रमोद कुमार ने देश का प्रतिनिधित्व किया था।



मुम्बई में आयोजित अखिल भारतीय पुलिस हॉकी चैम्पियनशिप के दौरान उत्कृष्ठ खेल का प्रदर्शन करते बल के हाकी खिलाड़ी



पुलिस महानिरीक्षक पश्चिमी सेक्टर श्री एके माथुर बल की हॉकी टीम के खिलाड़ियों का मैच से पूर्व हौसला आफजाई करते हुए

बहरहाल 1994 से केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के खिलाड़ियों ने अखिल भारतीय पुलिस प्रतिस्पर्धाओं सहित विभिन्न टूर्नामेन्टों में उत्कृष्ट प्रदर्शन का परिचय दिया है। बल के हाकी खिलाड़ियों ने अखिल भारतीय पुलिस खेल चैम्पियनशिप में 1994–कांस्य, 1995–कांस्य, 1996–रजत, 1997–कांस्य, 1998–कांस्य, 1999–कांस्य, 2000–रजत पदक जीत कर बल का ही नहीं देश का नाम भी ऊँचा किया है। अभी तक बल के हाकी खिलाड़ियों की सफलता का आलम इस प्रकार से रहा कि बल की हाकी टीम ने अखिल भारतीय गुरमीत स्मृति स्वर्ण कप हॉकी–1997 विजेता और अखिल भारतीय के.रि.पु.बल स्वर्ण कप जालंधर–1998 उप विजेता रही। इसी तरह हमारे हॉकी खिलाड़ियों ने अखिल भारतीय लाल बहादुर शास्त्री कप–1999 जीता जबकि अखिल भारतीय इन्दिरा स्वर्ण कप–1999 उप विजेता रहे। अखिल भारतीय के.डी.सिंह बाबू स्वर्ण कप 2002 विजेता, सर शादी लाल राजेन्दर लाल हॉकी टूर्नामेन्ट–2002 उप विजेता, अखिल भारतीय नेहरू मेमोरियल स्वर्ण कप रायपुर–2002 विजेता, अखिल भारतीय बैण्टम कप कलकत्ता–2002 उप विजेता, अखिल भारतीय अकबर रकीफ स्वर्ण कप भोपाल–2002 उप विजेता, अखिल भारतीय इन्दिरा स्वर्ण कप जम्मू–2002 उप विजेता, अखिल भारतीय लिबरल्स हॉकी टूर्नामेन्ट नाभा (पंजाब)–2003 विजेता तथा अखिल भारतीय डी.सी.एम. श्री राम हॉकी टूर्नामेन्ट कोटा (राजस्थान) –2003 विजेता रही।

बल की हाकी टीम की सफलता का दौर अभी थमा नहीं हैं यह आगे भी लगातार

चलता रहेगा, हमें अपने खिलाड़ियों पर पूरा भरोसा हैं, भविष्य में वे और अधिक पदक जीतेगें तथा बल का नाम ऊँचा करेगें।

हिंदुस्तान की महिमा

यह ऋषियों की भूमि पुरातन, पण्डितों की पावन खान।
जगा रहा है फिर से सोये जन मानस में नूतन प्राण।
नव युग की जाग्रत वेला में, करता ये ही नव निर्माण।
कवियों का यह काव्य कुंज है तपस्वियों का मंथित ज्ञान।
इसकी काया में करती है सदा भवानी दुर्गा वास।
भारत भूमि पर ही जन्में संत कबीरा तुलसी दास।
वरद हस्त से दुलारती है इसे शारदा देकर प्यार।
विष्णु प्रिया कमला करती है इस के वैभव का श्रृंगार।
इस भूमि के भूतकाल में गुजरे द्वापर युग पाषाण।
सरस्वती के शीतल तट पर लिखे गये हैं वेद पुराण।
भारत, आर्यव्रत, इंण्डिया रहे अनेकों इसके नाम।
संस्कृति इसकी रही हमेशा गुण–गौरव गरिमा की धाम।
यह वीरों का देश है और सुरों की है धरती सुजान।
बलिवेदी का प्रतीक यही है, धन्य धन्य तुमको हिंदुस्तान।

स०अ०नि० (मं०) धर्म सिंह मीणा,
गुप केन्द्र, गांधीनगर

सी०आर०पी०एफ० की गौरव गाथा

हम भारत की शान है सी० आर० पी० एफ० महान है,
मात्रभूमि की रक्षा के लिए देती अपनी जान है,
आर्यवर्त की प्राण है सी० आर० पी० एफ० महान है,
प्रबल ज्वाल–माल हो आंधी या कराल हो,

जलधी गगन भूमि पर तनय–प्रलय की जाल हो,
दुश्मनों से लड़ते हुए देश पर कुर्बान है,
वीरों की दास्तान है सी० आर० पी० एफ० महान है।

दंगे हो या लड़ाई, या हो देश में चुनाव,
संसद पर हमले हों या विदेशो से टकराव,
धूल चटाकर आंतकवादियों को देता ये फरमान है,
बल के वीरों को तो छोड़ो, इसकी विरांगनाए भी देती बलिदान हैं,
हम भारत की शान है सी० आर० पी० एफ० महान है।

सी० आर० पी० एफ० सदा अजय, भारत की जय–जय,
दुष्टों से करता सदा अभय, शत्रुओं को करता पराजय,
यही आन–बान है देती सबको सम्मान है,
सेवा और भक्ति से गूंजता जहान है,
हम भारत की शान है सी०आर०पी० एफ० महान है।

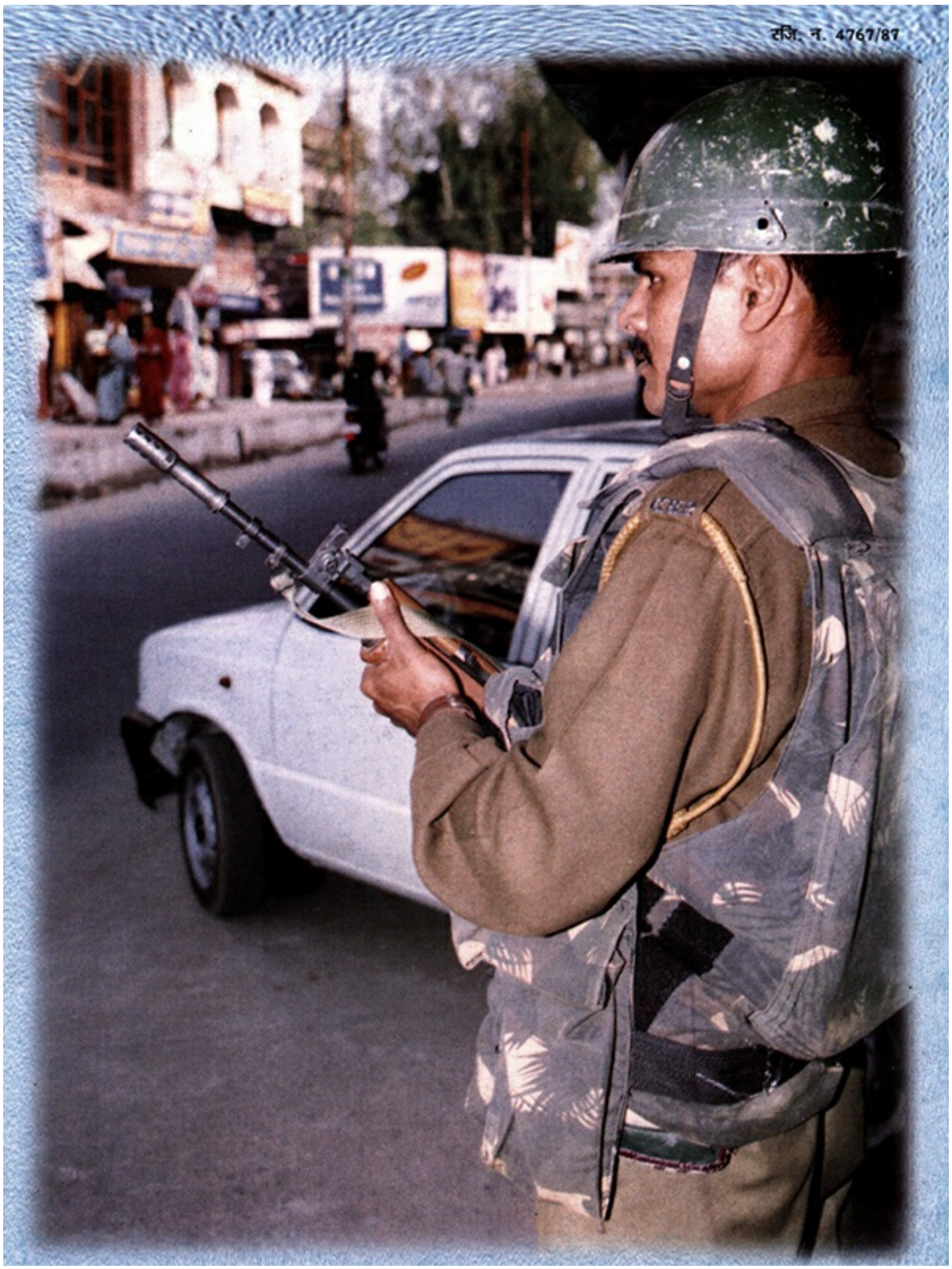
हव० (आर.ओ.) एच.एन. प्रधान 47 बटा.



8 मार्च, *2003* को महिला दिवस के अवसर पर ग्रुप केन्द्र झड़ौदा कलां, नई दिल्ली में महिलाओं के लिए व्यावसायिक कोर्सों का उद्घाटन करती सीआरपीएफ वाईज वेलफेयर एसोसियेशन की अध्यक्षता श्रीमती कंचन चौबे



सीआरपीएफ वाईज वेलफ़ेयर एसोसियेशन की अध्यक्षता श्रीमती कंचन चौवे ग्रुप केन्द्र, नई दिल्ली में हैल्थी बेबी शो में विजेता बच्चों को पुरस्कार देती हुई


रजि. न. 4767/87

सी. आर. पी. एफ.

समाचार

31 मई, 2003





संसद भवन की सुरक्षा ड्यूटी करने वाले के.रि.पु. बल के जवानों के लिए आवंटित कैम्प का उद्घाटन करते लोक सभा के महासचिव श्री जी.सी. मल्होत्रा



प्रेस मीडिया को उत्तर प्रदेश में के.रि.पु. बल द्वारा की जा रही ड्यूटियों के बारे में जानकारी देते हुए बल के महानिदेशक श्री एस.सी. चौबे



सी.आर.पी.एफ. समाचार

खण्ड–16 अंक–3
31 मई, 2003
10 ज्येष्ठ, शक 1925

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
रणबीर सिंह

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं यूनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशालय के.रि.पु. बल
ब्लाक–1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली–110003 की ओर से
डी.जी. महापात्र

कम्पोजिंग एवं प्रिंटिग
सी.आर.पी.एफ. प्रेस
नई दिल्ली –110072

सम्पादकीय सलाहकार मण्डल अध्यक्ष
हिमांशु कुमार, अपर महानिदेशक

सदस्य

विक्रम श्रीवास्तव, महानिरीक्षक (कार्मिक एवं मुख्यालय)
राजेन्द्र सिंह, उप महानिरीक्षक (कार्मिक)
डी.एन.एस. बिष्ट, उप महानिरीक्षक (परिचालन)
पी.जे. शेट्टी, उप महानिरीक्षक (प्रशा.)
सी.बी. मैथ्यू, अपर उप महानिरीक्षक (प्रशि.)
प्रवीण कुमार, उप वित्तीय सलाहाकार

एम.एस. नेगी, कमान्डेंट (एम.टी.)
डी.जी. महापात्र, जनसम्पर्क अधिकारी
राजीव राय, उप कमां. (परि.)
मणि भूषण प्रसाद, हिंदी अधिकारी

इस अंक में

- शौर्य दिवस
- रन ऑफ कच्छ में के.रि.पु. बल के बहादुरों की शौर्य गाथा
- पश्चिमी सेक्टर की वर्ष 2002 की उपलब्धियाँ
- 4 सिंगनल बटा. को चल वैजयंती शील्ड व प्रशस्ति पत्र
- 28वीं बटालियन को सर्वश्रेष्ट परिचालन बटा० की ट्राफी एवं खिताब
- बल की तैराक निरीक्षक रिचा मिश्र का हँगरी में प्रशिक्षण
- बल द्वारा एक नई पहल
- 135 महिला बटालियन ने अपना स्थापना दिवस मनाया
- के.रि.पु. बल द्वारा उ०प्र० में की जा रही सुरक्षा डयूटियों का बल के महानिदेशक द्वारा मुआयना
- आरटीसी–प्रथम, नीमच में ध्यान योग शिविर का आयोजन
- 107 बटा. आरएएफ द्वारा लिंगभेद समस्या एवं उसके निवारण पर कार्यशाला
- सिग्नल ग्रुप केन्द्र रांची में महिला दिवस का आयोजन
- ग्रुप केन्द्र नीमच ने मनाया महिला दिवस
- बल के सामाजिक क्रिया कलाप
- श्रद्धा एवं भक्ति का अनूठा संगम
- कविताएं एवं कहानियाँ

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

–संपादक

शौर्य दिवस

के.रि.पु.बल. का इतिहास हमेशा से वीरता, समर्पण एवं बलिदानों का रहा है।

–हरिन पाठक

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल एक बहुआयामी बल है और यह सामान्य कानून एवं व्यवस्था से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं की रक्षा जैसी विभिन्न प्रकार की डयूटियां कर रहा है। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का इतिहास शौर्य एवं बलिदानों का रहा है। इस बल ने लद्दाख के हॉट स्प्रिंग नामक स्थान पर 1959 में चीन द्वारा किये गये आक्रमण का पहला आघात सहा। अतः प्रत्येक वर्ष इस दिन को सम्पूर्ण देश में पुलिस द्वारा पुलिस स्मृति दिवस के रूप में मनाया जाता है। 1965 में कच्छ में पाकिस्तानी सेना की एक पूरी ब्रिगेड के आक्रमण को निष्फल करने में इस बल द्वारा प्रदर्शित शौर्य एवं बहादुरी का इतिहास में एक अद्वितीय उदाहरण है। हाल के वर्षों में भी केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, आंतरिक सुरक्षा से संबंधित चुनौतियों से अत्यंत प्रभावपूर्ण तरीके से निपटता रहा है तथा देश की एकता और अखंडता बनाए रखी है। संसद भवन पर 13 दिसम्बर, 2001 को फिदायीनों द्वारा किये गये आक्रमण को निष्फल करने में भी इस बल द्वारा प्रदर्शित सतर्कता और दृढ़ता की याद आज भी मेरे दिल में ताजा है। गांधीनगर के अक्षरधाम तथा जम्मू स्थित रघुनाथ मंदिर पर किये गये फिदायीन आक्रमण के दौरान केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल द्वारा समय पर की गई कार्रवाई से अनेक नागरिकों की जान बचाई जा सकी।

मुझे प्रसन्नता है कि 1965 में पाकिस्तानी सेना के आक्रमण को निष्फल करने में बल द्वारा प्रदर्शित वीरता, दृढ़ता और शौर्यता का स्मरण करने के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल प्रत्येक वर्ष 9 अप्रैल को बल में 'शौर्य दिवस' के रूप में मना रहा है। श्री पाठक ने कहा कि इस दिन को के.रि.पु.बल में शौर्य दिवस मनाने से इसके कार्मिकों में राष्ट्र के प्रति निःस्वार्थ भाव तथा कर्तव्य निष्ठा की भावना निश्चित रूप से पैदा करने में सहायक होगी।



शौर्य दिवस के अवसर पर बल मुख्यालय में आयोजित समारोह में रन ऑफ कच्छ से कलश में भर कर लाई गई पवित्र धूल को पुष्पाजंलि अर्पित कर शहीदों को श्रद्धांजलि देते हुए केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री हरिन पाठक



केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री हरिन पाठक संसद भवन पर हुए फिदायीन हमले में अदम्य साहस एवं शौर्यता का उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले बल के हवलदार सुखविन्दर सिंह को शौर्य दिवस के अवसर पर हौसला आफजाई स्वरूप स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए

सरदार पोस्ट (गुजरात–भारत पाक सीमा) जहाँ युद्ध हुआ उस स्थल से एकत्रित एक पात्र में लाकर रखी गई पवित्र रज को श्री पाठक ने श्रद्धासुमन अर्पित किए तथा सरदार पोस्ट युद्ध में कर्तव्य पथ पर शहीद हुए बल के उन वीर जवानों को भी अपनी भाव–भीनी श्रद्धाजंलि दी। 13 दिसम्बर, 2001 को भारतीय, संसद पर हुए फिदायीन हमले को नाकाम करने में प्रदर्शित उच्च कोटि की वीरता तथा कर्तव्य निष्ठा के लिए अशोक चक्र तथा शौर्य चक्र प्राप्त करने वाले बल कार्मिकों को भी उन्होंने अलंकृत किया और कहा कि सरकार को आपके कार्यों एवं संगठन से संबंधित समस्याओं की पूरी जानकारी है। मैं आप सब को आश्वासन देता हूँ कि भारत की एकता और अखण्डता बनाये रखने में आप जैसे दुर्गम कार्य करने वाले इस बल को हम यथा संभव सहायता एवं सहयोग देते रहेंगे।

के.रि.पु.बल के महानिदेशक श्री एस. सी. चौबे ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि दुश्मन के संख्या तथा अस्त्र–शस्त्रों में श्रेष्ठ होंने बावजूद भी 2 बटालियन के.रि.पु.बल की एक छोटी मगर बहादुर टुकड़ी ने हमले को नाकाम कर शत्रु को पीछे लौटने पर मजबूर कर बल तथा देश का नाम ऊँचा किया। इस युद्ध में 34 पाकिस्तानी सैनिक हलाक हुए जबकि कर्तव्य पथ पर बल के 6 बहादुर जवान भी शहीद हुए जिनकी वीरता को मैं नमन करता हूँ।

गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी पुलिस उप महानिरीक्षक, के०रि०पु० बल गांधीनगर ने राजस्थान व गुजरात फ्रंटियर, सीमा सुरक्षा बल के सहयोग से सरदार पोस्ट पर शौर्य दिवस का कार्यक्रम आयोजित किया। उप कमाण्डेंट, 146 बटा० श्री गोकुल चन्द, के नेतृत्व में चार राजपत्रित अधिकारी, 'तीन अधीनस्थ अधिकारी', 15 रंगरुट, 9 प्रशासनिक कर्मचारी तथा 6 अन्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों के एक सैन्य दल ने सरदार पोस्ट 'रन ऑफ कच्छ' गुजरात पहुँचा और 9 अप्रैल, 2003 को एक अस्थायी स्मारक का निर्माण किया तथा पुष्पमालाएं चढ़ाकर बल के वीर शहीदों को भावभीनी श्रद्धाजंलि अर्पित की।

रन ऑफ कच्छ में के.रि.पु.बल के बहादुरों की शोर्य गाथा

ब्रिटिश हुकूमत से मुक्ति और पाकिस्तान के गठन के तत्काल बाद भारत और पाकिस्तान की सीमा पर पाकिस्तानी फौजों द्वारा कानूनी रुप से भारतीय कब्जे वाले क्षेत्र में घुसपैठ के चलते लगातार तनाव एक आम बात हो गई थी। इस जटिल मुद्दे के समाधान के लिए भारत और पाकिस्तान के प्रधानमंत्री, भारतीय एवं

पाकिस्तानी सर्वेक्षण विभाग द्वारा दोनों देशों की सीमाओं का निर्धारण कराने के लिए तैयार हो गए। इस समझौते के तहत 1963 तक पंजाब और राजस्थान के बीच सीमाओं का निर्धारण हो चुका था, जबकि पाकिस्तानी सर्वेक्षण विभाग ने इस कार्य से अपने हाथ खींच लिए थे। लिहाजा गुजरात राज्य की कुछ सीमा चिन्हित होने से बाकी रह गई। भारत इस संबंध में पाकिस्तान से लगातार आग्रह करता रहा किंतु पाकिस्तान ने इस संबंध में कोई रूचि नहीं दिखाई। कारण स्पष्ट था, पाकिस्तान द्वारा रन ऑफ कच्छ के 3500 वर्ग मील क्षेत्र पर अपना दावा करना। पाकिस्तान का दावा था कि विभाजन से पूर्व यह क्षेत्र सिंध सरकार द्वारा शासित था और अब सिंध पाकिस्तान का एक हिस्सा हो चुका है।

1956 के शुरु में पाकिस्तान टुकड़ियाँ रन ऑफ कच्छ के उत्तरी भाग छड़बेट में घुस आई। 19 फरवरी, 1956 को हिन्दुस्तानी पुलिस की एक रोजाना गश्त पार्टी पर छड़बेट इलाके में पाकिस्तानी टुकड़ी द्वारा फायर किया गया, इस घटना के बाद जब 25 फरवरी को भारतीय टुकड़ियाँ इलाके में आई तो वहां पाकिस्तानी घुसपैठिये नहीं थे, वे अपनी सीमा में लौट चके थे। इस घटना के बाद पाकिस्तानी टुकड़ियों द्वारा भारतीय सीमा में घुसपैठ एक आम बात हो गई। 12 मई, 1964 को कंजरकोट के पास अंतर्राष्ट्रीय सीमा से 1800 गज भारतीय सीमा में तीन पाकिस्तानी पाये गये जिन्हें वापिस खदेड़ दिया गया। 25 जनवरी, 1965 का भारतीय सीमा पुलिस ने पाया कि रन क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय सीमा के साथ 1.5 मील भारतीय सीमा के अंदर तक 18 मील क्षेत्र में पाकिस्तानी टुकड़ियाँ कब्जा कर चुकी हैं। काफी कोशिशों के बाद भारतीय पुलिस अधिकारी 5 फरवरी, 1965 को पाकिस्तानी अधिकारियों से मिलने में कामयाब हुए, किंतु पाकिस्तानी अधिकारियों ने इस विषय पर किसी भी चर्चा से इंकार कर दिया।



रन ऑफ कच्छ की सरदार पोस्ट की रक्षा करते शहीद हुए बल के वीर जवानों को *9* अप्रेल, *2003* को श्रद्धांजलि अर्पित करती हुई के.रि.पु. बल की टुकड़ी



के.रि.पु. बल की वीरता का प्रतीक सरदार पोस्ट, जहाँ से बल के बहादुर जवानों ने पाकिस्तानी सेना को खदेड़ा था

भौगोलिक दृष्टि से कच्छ में भारत–पाक सीमा 500 कि.मी. संकरी भूमि पर 240 कि.मी. उत्तर–पश्चिमी और पश्चिमी भाग में फैली है। यह इलाके का सर्वाधिक टूटी–फूटी सीमा वाला इलाका है। कच्छ के कुल 17000 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में से रन ऑफ कच्छ 320 मील लंबा और 50 मील चौड़ा 8000 वर्ग मील का इलाका है।

रन शब्द की उत्पति संभवतः संस्कृत शब्द “इराना” से हुई है जिसका अर्थ है रेगिस्तान, कच्छ शब्द संभवतः “कच्छा” शब्द का बिगड़ा स्वरुप है। संस्कृत में इससे मिलता–जुलता शब्द है “काक्शो” जिसका अर्थ है दलदली मैदान। रन का काफी बड़ा इलाका मई से अक्टूबर के बीच अरब सागर के पानी में डुबा रहता है और बाकी के 6 महीने यह इलाका नमक और रेत की परतों के नीचे दबा रहता है। पूरा इलाका उजाड़ है। कोई प्राकृतिक या मानवीय जीवन नहीं है। इस इलाके में गुजरात की अपेक्षा सिंध में पहुँचना अधिक आसान है। 1906 में ब्रिटिश सरकार ने इसे दलदल घोषित कर दिया था। यहाँ विश्व की सबसे बड़ी नमक की झील है। ज्ञातव्य हो कि रन में जिप्सम, लाइमस्टोन, लिग्नाइट तथा बाक्साइड जैसे खनिजों की भरमार है। भूगर्भ शास्त्री मानते हैं कि इस इलाके में पेट्रोलियम की प्रचुर मात्रा उपलब्ध है। इस इलाके को “इनलैण्ड–सी” का दर्जा देकर पाकिस्तान रन के आधे हिस्से पर अपना

दावा करता है, जबकि वास्तविकता यह है कि रन "इनलैण्ड–सी" के रुप में कभी नहीं जाना गया।

इन सालों में पाकिस्तान को पश्चिमी देशों से एशिया में कम्युनिस्टों के प्रभाव को रोकने के लिए आर्थिक और सैन्य सहायता मिलती रही किन्तु उसकी सेना के ताकतवर होने का सीधा असर भारत पर पड़ता। चीन और पाकिस्तान की भारत विरोधी भावनाएं उन्हें आपस में नजदीक ले आई। 1962 के चीनी आक्रमण के समय पाकिस्तान की सहानुभति चीन के साथ थी। 1962 के बाद पाकिस्तान खुले आम चीन के पक्ष में आ गया। पाकिस्तान को मिलने वाली सैन्य सहायता चीन पर नियंत्रण रखने के लिए थी, किंतु इसके विपरीत 1963 में पाकिस्तान ने चीन के साथ अपनी दोस्ती पक्की करने के लिए जम्मू–काश्मीर क्षेत्र का एक हिस्सा गैर कानूनी रुप से उसके पास था, को चीन को सौंपकर चीन–पाकिस्तान दोस्ती की नींव रखी। 17 जुलाई, 1963 को पाकिस्तान के विदेश मंत्री जुल्फीकार अली भुट्टो ने पाकिस्तान की नेशनल एसेम्बली में बोलते हुए घोषणा की कि जंग की हालत में पाकिस्तान अकेला नहीं रहेगा। पाकिस्तान की मदद एशिया का सबसे ताकतवर मुल्क करेगा।

1947 में विभाजन के समय से ही रन ऑफ कच्छ भारत–पाक के बीच एक विवादित क्षेत्र था। विवाद इसकी सीमा के निर्धारण को लेकर नहीं था बल्कि इसकी वास्तविक भौगोलिक स्थिति पर था। यह पूरा इलाका 3500 वर्ग मील में फैला है, जिसका आधा भाग विवादित है। चूंकि बंटवारे से पूर्व यह इलाका सिंध सरकार द्वारा जो अब पश्चिमी पाकिस्तान का एक हिस्सा है, शासित था। अतः उसी आधार पर पाकिस्तान इस इलाके पर अपना दावा कर सकता है, लेकिन पाकिस्तान ने अपने दावे को केवल आधे उत्तरी इलाके तक ही सीमित रखा है और पाकिस्तान के इस दावे की पुष्टि 1908 में निर्धारित सीमा भी करती है। चूंकि सिंध प्रांत और कच्छ रजवाड़े की सीमाएं पूरी तरह निर्धारित नहीं थी। अतः बटवारे के वक्त यह विवादित रह गया। लेकिन हिन्दुस्तान ने इस सारे इलाके पर अपना दावा किया जबकि हिंदुस्तान इस बात को मानता है कि इलाके का उत्तरी हिस्सा विवादित है। हिंदुस्तान ने इस इलाके को हासिल करने का कभी प्रयास नहीं किया और पाकिस्तान इस इलाके पर बंटवारे के बाद से ही अपने हुकूमत चलाता रहा और छड़बेट में उसने अपनी पुलिस चौकी भी कायम की जो कि इस इलाके के अंदर है जिस पर पाकिस्तानी अपना दावा करते हैं।

पाकिस्तान लगातार तनाव बढ़ाने वाली कोशिशें करता रहा और जनवरी, 1965 में करीमशाही में तैनात भारतीय सीमा पुलिस ने पाया कि पाकिस्तान ने सुरई से डींग तक 10 कि.मी. का ट्रेक लगभग एक मील भारतीय सीमा के अंदर से गुजरते हुए बिछा लिया है।

10 फरवरी को राइफलों, स्टेनगनों तथा मशीनगनों से लैस एक पाकिस्तानी टुकड़ी ने कंजरकोट पर कब्जा कर लिया। 15 फरवरी, 1965 को कंजरकोट में डी.आई.जी. राजकोट और इन्डस रेंजर्स के कमाण्डेन्ट लेफ्टीनेंट कर्नल आफताब

अलो के बीच एक बैठक हुई। इन्डस रेंजर्स के कमाण्डेन्ट ने बताया कि वे कंजरकोट के दक्षिण ट्रेक तक इलाके में गश्त करते हैं, जो कि सुरई और डींग ट्रैक पर गश्त की एक पुरानी परम्परा है। 18 फरवरी को भारतीय हाई कमिश्नर ने पाकिस्तान के विदेश विभाग से निवेदन किया कि वे अपने विशेषज्ञ सर्वेयरों के साथ भारतीय सर्वेयरों की बैठक की व्यवस्था करें ताकि सीमा रेखा का निर्धारण हो सके और पाकिस्तानी फौजों को भारतीय इलाके से हटाया जा सके। (इंडिया–पाक–वार–1965 द रन ऑफ कच्छ) लेखक (श्री आर. एन. गुप्ता, पेज 50 व 51) 3 मार्च, 1965 को पाकिस्तानी टुकड़ियों ने सीमा के लगभग 1000 गज दक्षिण में स्थित कंजरकोट किले के खंडहरों पर एक "स्टैडिंग पोस्ट" की स्थापना कर ली और उसे खाली करने से इंकार कर दिया।



सरदार पोस्ट पर *9* अप्रैल, *2003* को अमर शहीदों को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए बल के अधिकारी व जवान

15 मार्च, 1965 को पाकिस्तानियों ने भारतीय सीमा के अंदर एक और पोस्ट की स्थापना कर ली।

पाकिस्तान ने कच्छ स्थित भारतीय सीमा चौकियों पर हमला करने की योजना मार्च के द्वितीय सप्ताह में बना ली थी और इसके परिणामस्वरुप 25 मार्च, 1965 को कराची के बाहर मलीर छावनी में स्थित 51वीं पैदल सैन्य ब्रिगेड ब्रिगेडियर अजहर खान के नेतृत्व में कच्छ सीमा पर आ गई। बाद में पूरी 8वीं पैदल सैन्य डिवीजन, 12वीं कैवेलरी तथा 19वीं लान्सर रेजिमेंटों के साथ क्वेटा से कच्छ सीमावर्ती इलाके में तैनात की गई। कंजरकोट से 30 मील उत्तर में स्थित बानिम हवाई अड्डे पर तैनात

पाकिस्तानी वायुसेना के युद्धक वायुयानों ने बार–बार देखभाल तथा चित्र खींचने के लिए सीमावर्ती क्षेत्रों की उड़ानें भरी।

कंजरकोट और डींग में पाकिस्तान द्वारा अपनी पोस्टों की स्थापना को एक हमलावर कदम मानते हुए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की द्वितीय बटालियन की 4 कंपनियों को आगे बढ़कर पाकिस्तान को रोकने और सरदार तथा टॉक में अपनी चौकियां स्थापित करने के लिए आदेश दिए गए। कंजरकोट और डींग चौकियां मार्च, 1965 से पहले अस्तित्व में नहीं थी। सरदार पोस्ट कंजरकोट के 4600 गंज दक्षिण में और टाक पोस्ट एवं डींग पोस्ट के 1000 गज के दायरे के अंदर थी। चीन की दोस्ती और नए हासिल किए युद्ध के उपकरणों से मिले साहस ने पाकिस्तान को भारतीय सीमा चौकियों पर "आपरेशन डेजर्ट हॉक" के तहत हमला करने के लिए प्रेरित किया। मार्च के दूसरे सप्ताह में इस आपरेशन की योजना बनाई गई और ब्रिगेडियर अजहर खान के नेतृत्व में 51वीं इन्फेंट्री ब्रिगेड साथ–साथ 8वीं डिवीजन भी। अपनी सहायक टुकड़ियों के साथ हरकत में आ गई। इस जोखिमपूर्ण दुःसाहस के लिए वायुसेना की एयर सहायता भी बादिन एयर बेस से उपलब्ध थी। यह स्थान कंजरकोट के 30 मील उत्तर में स्थित है।



रन ऑफ कच्छ से कलशों में भर कर पावेत्र रज लाते हुए बल के जवान

सरदार पोस्ट एक सपाट मैदान में स्थित था जो कि रणनीति की दृष्टि से सही नहीं था जिस पर सेना के स्थानीय यूनिट कमांडर (लेफ्टिनेट कर्नल के. सुन्दरजी जो कि बाद में सेना अध्यक्ष भी बने) ने आपत्ति भी जताई थी, लेकिन पाकिस्तानियों को रोकने के लिए पोस्ट वहीं बनी रही।

पाकिस्तानियों ने अपने आपरेशन "डेजर्ट हॉक" के इरादे के बारे में पूरी सावधानी बरती और भारतीय पोस्ट को अंधेरे में रखने में पूरी चालाकी दिखाई। 8 अप्रैल को पश्चिमी पाकिस्तानी रेंजर की तरफ से पुलिस उप महानिरीक्षक राजकोट रेंज को एक संदेश भेजा गया कि 10 अप्रैल, 1965 को स्थानीय कमांडरों की एक बैठक का प्रस्ताव किया गया। यह बैठक बॉर्डर पर यथा स्थिति बनाये रखने के लिए थी। उनका इरादा शान्ति वार्ता का प्रस्ताव देकर भारतीय पक्ष की गतिविधियों को रोकना था। जब पाकिस्तान द्वारा यह प्रस्ताव किया जा रहा था। 51 वीं ब्रिगेड के 3500 सैनिक जिनमें 18वीं पंजाब, 8वीं फ्रेंटियर राईफल्स और छठवीं बलूच के जवान शामिल थे, ने 7 अप्रैल को भारतीय। पोस्ट सरदार और टॉक की ओर बढ़कर 8/9 अप्रैल को तड़के हमला कर दिया। 9 अप्रैल, 1965 के सुबह 3.30 बजे पाकिस्तानी टुकड़ियाँ अपनी पोजीशन से आगे बढ़ी और धुंए के आवरण का सहारा लेते हुए पाकिस्तानी सेना ने मोर्टार और 25 पौंडर तोपों के फायर के साथ सरदार और टॉक पोस्ट पर हमला बोल दिया।

उस समय हेड कांस्टेबल रणजीत सिंह मशीनगन पर तैनात थे, उन्होंने 50 से 100 गज उत्तर की ओर कुछ हलचल देखी। यह मान कर कि यह हलचल दुश्मन की हो सकती है उन्होंने घुसपैठियों को ललकारा, बदले में उन्हें मिली गोलियों की बौछार जो कि पाकिस्तानी सेना के लिए एक संकेत थी। मोर्टार और 25 पौंडर का फायर खोल देने के लिए। मोर्टार और तोपखाने की घातक गोलीबारी को निर्देशित करने वाले शत्रु के ऑब्जरवेशन पोस्ट जो सरदार पोस्ट से 600 गज दूर थी का पता लगने का श्रेय सरदार पोस्ट के कांस्टेबल शिवराम को जाता है। पता लगते ही सूबेदार बलवीर सिंह ने तुरंत '3' मोर्टार का फायर डलवा कर दुश्मन के आब्जरवेशन पोस्ट को नष्ट कर दिया। एक पूरी ब्रिगेड ने अपनी पूरी ताकत के साथ सरदार पोस्ट पर हमला कर दिया जिसकी सुरक्षा के लिए के.रि.पु.बल की द्वितीय बटा. की 4 कंपनियाँ तैनात की गई थी। पोस्टों में स्थित जवानों ने तत्काल पोजीशन लेकर अपने फायर पर काबू रखा और पाकिस्तानी सेना को आगे बढ़ने दिया। वे सांस रोके पाकिस्तानी सेना को आगे बढ़ते हुए देखते रहे, चारों और छाए मौत के सन्नाटे ने पाकिस्तानियों को यह सोचने के लिए मजबूर कर दिया कि उनके द्वारा की गई भारी फायरिंग के कारण या तो सभी जवान मर गये हैं या जख्मी हो गए है। उत्साहित पाकिस्तानी टुकड़ियों ने आगे बढ़ कर पोस्ट को चारों ओर से घेर लिया। पोस्ट पर जीवन का कोई निशान मौजूद नहीं था। इस मौके पर 20 हमलावरों को दस्ता आगे बढ़ा कि तभी पोस्ट में मौजूद तीन मशीनगनें हरकत में आ गई और दुश्मन पर आग बरसाने लगी। एक पल में वे सभी

जमीन पर मृत पड़े हुए थे। दुश्मन का दूसरा हमला पिछली तरफ से हुआ उनका हश्र भी वहीं हुआ जो पहले का हुआ था। इस हमले में 34 मारे गए और 4 को जीवित पकड़ लिया गया। दुश्मन को एक छोटी सफलता तब मिली जब उत्तर–पूर्वी कोने में स्थित मशीनगन जाम हो गई, लेकिन के.रि.पु.बल के जवानों ने तत्काल स्थिति को संभालते हुए जवाबी हमला कर दुश्मन को खदेड़ दिया। यह गोलीबारी एक घंटे तक चली जिसमें दुश्मन ने पोस्ट पर कब्जा करने की तीन कोशिशें की और तीनों ही बार उसे भारी नुकसान के साथ वापस लौटना पड़ा। सरदार पोस्ट के पूर्वी भाग में तैनात हेड कांस्टेबल भवानाराम की वीरता ही थी जिसने अपने इलाके में एल.एम.जी. नाकारा हो जाने पर भी पोस्ट में उपलब्ध सारे ग्रेनेडों को इकट्ठा कर एक–एक कर दुश्मन पर फेंकते रहे और दुश्मन के सैनिक जो पोस्ट के नजदीक आने की कोशिश कर रहें थे उनका वीरतापूर्ण मुकावला करते हुए उनके हौसले को पस्त करने में बहुत हद तक कामयाब रहे और दुश्मन को पीछे हटने को मजबूर कर दिया। के.रि.पु.बल के जवानों द्वारा जवाबी कार्रवाई दुश्मन के लिए इतना बड़ा आघात सिद्ध हुई कि संख्या और उपकरणों में बहुत श्रेष्ठ होने के बावजूद उसने दोबारा हमला करने की जुर्रत नहीं की। पोस्ट पर मौजूद हमारे कुछ सौ जवानों जिनके पास हथियार भी पर्याप्त मात्रा में नहीं थे, ऐसा था साहस और आखिर सांस तक लड़ने की प्रतिबद्धता कि दुश्मन भी हैरत में पड़ गया।

जब सुबह का धुंधलका छटा तो पोस्ट के चारों और दुश्मन की लाशें बिखरी पड़ी थी। के.रि.पु.बल जवानों की जवाबी कार्रवाई से घबराया दुश्मन, अपने 34 साथियों को लाशें पीछे छोड़ गया था और इसी उजाले में के.रि.पु.बल जवानों पर यह राज भी खुला कि रात को उन पर हमला पाकिस्तानी सेना की पूरी पैदल ब्रिगेड ने किया था मगर के.रि.पु.बल के बहादुर इससे घबरायें नहीं और पांच बजे शाम तक लगातार लड़ते रहे जब तक कि भारतीय सेना की टुकड़ियों ने आकर पोजीशन नहीं संभाली और के.रि.पु.बल को वापस विगोंकोट भेज दिया गया।



बल मुख्यालय में *9* अप्रैल, *2003* को सरदार पोस्ट की रक्षा करते हुए शहीद हुए जवानों को श्रद्धांजलि देते हुए केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री हरिन पाठक, बल के महानिदेशक श्री एससी चौबे व अन्य अधिकारीगण

युद्ध के इतिहास में यह एक बेजोड़ घटना थी। जिसमें एक भारी संख्या में शस्त्रों और कर्मिकों से सुसज्जित सेना की टुकड़ी को एक छोटे से अर्द्ध सैनिक पुलिस बल की टुकड़ी ने लगातार बारह घंटे तक उलझाए रखा। यह नेतृत्व और संचालन की सहयोग और मर मिटने की भावना, उच्च कोटि के शौर्य और कौशल की अद्वितीय मिसाल थी। तत्कालीन गृहमंत्री गुलजारीलाल नंदा ने जब संसद में भारतीय जवानों के इस पराक्रम की सूचना दी तो जवानों के शौर्य की सभी संसद सदस्यों ने मुक्त हृदय से सराहना की। के.रि.पु.बल के जवानों की प्रशंसा करते हुए गृहमंत्री ने संसद में कहा कि सरदार पोस्ट पर मौजूद हमारी के.रि.पु.बल यूनिटों ने कड़ा मुकाबला करते हुए पाकिस्तानी बटालियनों को अपने चार जीवित साथियों और 34 साथियों की लाशों को छोड़कर जिनमें दो अधिकारी भी हैं, पीछे लौटने के लिए मजबूर कर दिया। सरदार पोस्ट पर के.रि.पु.बल के जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए तत्कालीन गृहमंत्री श्री गुलजारी लाल नंदा ने कहा :–

“मैं सरदार पोस्ट पर पुलिस बल के जवानों की बहादुरी का अपनी

श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ” जिन्होनें पाकिस्तान सेना की 2 बटा. के हमले को भारी कठिनाइयों के बीच भी 12 घंटे तक बहादुरी के साथ लड़ते हुए विफल कर दिया।”

इस युद्ध में मातृभूमि की रक्षा में और देश की अखंडता को बनाए रखने के लिए हुए के.रि.पु.बल की दूसरी बटालियन के ना. किशोर सिंह, सिपाही शमशेर सिंह, सिपाही ज्ञान सिंह, सिपाही हुददूराम, सिपाही सिद्धवीर प्रधान – (वह घायल हो गए थे और दिनांक 29 अप्रैल, 65 को वीरगति को प्राप्त हुए)। सिपाही किशन सिंह (31 जुलाई, 1965 को पाकिस्तानी हिरासत में वीरगति को प्राप्त हुए। वह सरदार पोस्ट पर हमले के दौरान गोली से घायल हो गए थे)।

के.रि.पु.बल के इन अधिकारियों और जवानों की बहादुरी का पूरे देश ने सम्मान किया। श्री डी.एस. पॉल, पुलिस उपाधीक्षक, कंपनी कमांडर, सुबेदार कबीरमन सुब्बा, हवलदार रणजीत सिंह, सिपाही विश्वनाथ सिंह, सिपाही शिवराम को शौर्य वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस और फायर सर्विस मेडल से नवाजा गया तथा सुबेदार बलवीर सिंह, जमादार जयनारायण सिंह, हवलदार भवानाराम, हवलदार महादेव निलगुडे, सिपाही सुच्चा सिंह, सिपाही किशन सिंह, सिपाही मुन्नी सिंह को शौर्य वीरता के लिये पुलिस पदक प्रदान किया गया।



ग्रुप केन्द्र झड़ौदा कलां, नई दिल्ली में शहीद समारक पर *9* अप्रैल, *2003* को शौर्य दिवस पर बल के शहीदों को श्रद्धांजलि देते हुए पुलिस महानिरीक्षक उत्तरी सेक्टर श्री पदमन सिंह

इन पदकों के अलावा सरदार पोस्ट पर अद्वितीय वीरता दिखाने वाले अन्य जवानों को बिना बारी के पदोन्नति और नगद इनाम दिये गए।

द्वितीय बटा. के इन बहादुर जवानों को वीरता के पुलिस पदक प्रदान करते हुए तत्कालीन गृहमंत्री गुलजारी लाल नंदा ने कहा **"यह युद्ध सिर्फ भारतीय पुलिस के इतिहास में ही नहीं बल्कि सैनिक युद्ध के इतिहास में दर्ज किया जायेगा।"**

सरदार पोस्ट पर के.रि.पु.बल की एक छोटी सी मगर बहादुर टुकड़ी ने, 3500

सदस्यों वाली विशाल सशस्त्र पाकिस्तानी फौज को खदेड़ देने की यह एक आद्वितीय मिसाल है। यह है अद्वितीय बहादुरी, कर्तव्य परायणता और मातृभूमि की रक्षा के लिए सीधे मौत से भिड़ जाने का के.रि.पु.बल. का गौरवमयी इतिहास।

पश्चिमी सेक्टर की वर्ष *2002* की उपलब्धियाँ

ग्रुप केन्द्र, नागपुर एवं 64 बटा० के.रि.पु. बल द्वारा जनवरी 2002 एवं मार्च 2002 के प्रथम तथा द्वितीय चरणों में पल्स पोलियों उन्मूलन कार्यक्रम आयोजित किए गए तथा बच्चों को पोलियों ड्राप पिलाई।

सेक्टर की 29, 111 एवं 122 बटा० द्वारा विभिन्न स्थानों पर चिकित्सा कैम्प लगाये तथा लगभग 3 लाख रूपये की दवाईयाँ आम जनता को मुफ्त में वितरित की गई।

29, 45, 79, 111 एवं 122 बटा० द्वारा विभिन्न खेलकूदों का आयोजन किया गया तथा स्थानीय जरूरतमंद लोगों को मुफ्त कपड़े तथा गरीब विद्यार्थियों को शैक्षणिक वस्तुएँ प्रदान की।

परिचालनिक उपब्धियाँ

30 जुलाई, 2002 को विशेष सूचना के आधार पर बी/29 बटा० तथा एस.टी.एफ. सोपोर के साथ की गई संयुक्त कार्रवाई के परिणाम स्वरूप सोपोर थाना के माजब्रग गांव से एच.सी. ग्रुप के 4 दुर्दान्त आतंकवादियों को पकड़ा तथा उनसे दो ए०के० 47 राइफल, दो ग्रेनेड, तीन चीनी ग्रेनेड, एक वायरलेस सेट तथा एक आई.ई.डी. जब्त किया गया।

विशेष सूचना के आधार पर ई/30 बटा० तथा एस.ओ.जी. द्वारा संयुक्त रूप से की गई कार्रवाई के परिणामस्वरूप 4 दुर्दान्त आतंकवादी मारे गए तथा उनसे बड़ी मात्रा में ए०के० 47 राईफल, दस ए.के. 47 राईफल की मैगजीन, 200 ए०के० 47 राईफल के राउंडस, एक एच.ई. ग्रेनेड, एक 9 एम.एम. पिस्तौल, आठ 9 एम.एम. राउंडस, दो वायरलैस सैट, तीन एरियल, एक टेप रिकार्डर, 5,500/– रू० की नकदी, कुछ आपत्तिजनक दस्तावेज, तीन ए०के० 56 राईफल, एक ए०के० 56 राईफल की मैगजीन, एक ग्रेनेड लान्चर, एक राकेट लान्चर, सात पिस्तौल ग्रेनेड, तीन चीनी हैन्ड ग्रेनेड, एक वायरलेस सेट, दो ए०के० सीरीज हथियार, एक यू.बी.जी.एल.हैंड ग्रेनेड, बरामद किया। इसी प्रकार ई/30 बटा० ने 9, 14 व 17 मई तथा 21 दिसम्बर, 02 को विभिन्न स्थलों पर अलग–अलग छापामार कार्रवाई में एक आंतकवादी मार गिराया

तथा एक वायरलेस सेट, 41 ए०के० 47 राइफल, पांच ए०के० 47 राइफल की मैगजीन, 80 जीवित कारतूस, छः कि.ग्रा. आई.ई.डी., एक चीनी हैंड ग्रेनेड बरामद किया। 17 एवं 31 मार्च, 2002 को सिविल पुलिस के साथ संयुक्त खोज के दौरान 45 बटालियन के जवानों ने एक ए०के० 47 राईफल (खाली) तथा 30 कि०ग्रा० गांजा बरामद किया। 24 जनवरी, 5 मार्च एवं 30 नवम्बर 2002 को संयुक्त खोज के दौरान 64 बटालियन के.रि.पु. बल के जवानों ने एक देशी पिस्तौल, 303 राउन्ड, बीस 9 एम. एम. राउन्ड, एक 38 रिवाल्वर (अमेरिका), पांच जीवित कारतूस बरामद किये। 1 मार्च एवं 15 अप्रैल 2002 को 79 बटालियन के.रि.पु. बल के जवानों ने सघन अभियानों के दौरान अलग–अलग स्थानों से दो ए०के० 47 राईफल, छः ए०के० 47 राईफल की मैगजीन, दो हैंड ग्रेनेड, एक वायरलेस सेट तथा आठ कि.ग्रा. चरस पकड़ी। 22 मार्च, 2002 को 111 बटालियन के.रि.पु. बल के जवानों ने विभिन्न कारवाईयों में एक ए०के० 47 राईफल, एक ए०के० 47 राईफल की मैगजीन तथा 02 चीनी हैंड ग्रेनेड पकड़े। 12 जनवरी, 22 मार्च, तथा 26 जून, 2002 को 122 बटा० के.रि.पु.बल के जवानों ने सफल कार्रवाई कर एक आतंकवादी मार गिराया तथा उसके कब्जे से तीन ए०के० 47 राईफल, सात ए०के० 47 राईफल की मैगजीन, 176 ए०के० 47 राउन्ड, दो हैंड ग्रेनेड, तथा 01 देशी पिस्तौल बरामद की।



विभिन्न कार्रवाईयों के दौरान बल कार्मिकों द्वारा जब्त किए गये हथियार व गोलाबारूद

4 सिंगनल बटा. को चल वैजयंती शील्ड व प्रशस्ति पत्र



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षा से *4* सिंगनल बटा के कमान्डेंट श्री के.के. जोआरदार चल वैजयंती शील्ड व प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए।

21 मार्च, 2003 को नगर राज भाषा कार्यान्वयन समिति की अर्द्धवार्षिक बैठक का आयोजन अफीम एवं क्षरोद कारखाना, नीमच में किया गया, जिसमें नीमच जिले में स्थित 33 केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों/केन्द्रीय उपक्रमों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस बैठक में सभी 33 केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों/स्थानीय/कार्यालयों/ केन्द्रीय उपक्रमों द्वारा 30 एवं 31 दिसम्बर, 2002 को समाप्त तिमाहियों (1 जुलाई से 31 दिसम्बर, 2002) के हिंदी के प्रगामी कार्य की समीक्षा की गई एवं उपरोक्त तिमाहियों की हिंदी प्रगति की रिपोर्ट के आधार पर इस बटालियन को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षा द्वारा श्री के०के० जोरदार, कमाण्डेंट–4 सिगनल बटालियन को "चल वैजयंती शील्ड व प्रशस्ति पत्र" से सम्मानित किया गया। अपर पुलिस महानिदेशक (मुख्यालय एवं संचार) महानिदेशालय ने कमाण्डेंट–4 सिगनल बटालियन, अधिकारियों की प्रशंसा की है एवं बधाई दी है और कहा कि बल में और अधिक सरकारी कामकाज राजभाषा हिंदी में करने का यह एक सार्थक प्रयास है। इससे बल्कि अधिकारियों के कुशल निर्देशन

में सम्पूर्ण सरकारी कामकाज हिंदी में करने के निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने की प्रेरणा भी मिलेगी।

इस शील्ड के मिलने से यह सिद्ध होता है कि संचार वाहिनी ने ना केवल संचार के क्षेत्र में अपितु राजभाषा अधिनियम के सफल कार्यान्वयन में भी अपने आदर्श वाक्य "उत्कृष्टता की ओर" का एक अनुकरणीय उदाहरण बल के अन्य संस्थानों/ बटालियनों के लिए प्रस्तुत किया है जो प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है।

श्री हिमांशु कुमार ने अपने बधाई संदेश में कहा कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अर्द्धवार्षिक बैठक में प्रथम स्थान प्राप्त करने एवं "चल वैजयंती शील्ड व प्रशस्ति पत्र" से सम्मानित किये जाने पर कमाण्डेंट–4 सिगनल बटालियन अन्य अधिकारीगण एवं समस्त कार्मिक बधाई के पात्र हैं।

28वीं बटालियन को सर्वश्रेष्ठ परिचालन बटा० की ट्राफी एवं खिताब

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 28वीं बटालियन को 36वें स्थापना दिवस पर हलोमाजरा, कैम्प चण्डीगढ में 01 अप्रैल, 2003 को पश्चिमोत्तर अंचल की वर्ष 2001–02 की "सर्वश्रेष्ठ परिचालनिक वाहिनी की ट्राफी" से नवाजा गया। इस अवसर पर श्री कवलजीत सिंह, अपर पुलिस महानिर्रीक्षक पश्चिमोत्तर अंचल ने 28 वीं बटालियन के कमांडेण्ट श्री मणिधर झा को सर्वश्रेष्ठ वाहिनी ट्राफी भेट करते हुए कहा कि देश में शान्ति एवं सुरक्षा स्थापित करने में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने बल के कार्यों को सराहा और उन्हें व्यावसायिक कौशल का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करने का आवाहन किया। इस अवसर पर श्री सिंह ने वाहिनी के अधीनस्थ अधिकारी मैस के लिए 10,000/– रूपये के अनुदान की घोषणा की तथा गार्द के जवानों को 2000/– रुपये से पुरस्कृत किया।

इस अवसर पर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री बलवन्त सिंह आजाद ने उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा, कि "सी.आर.पी.एफ. हिमालय की गगन चुम्बी उँचाईयों से लेकर दक्षिण में हिन्द महासागर की गहराइयों तक और उत्तर पूर्व के कठिन एवं दुर्गम स्थानों से लेकर गुजरात में कच्छ के अन्तिम छोर तक तैनात है। हमारा बल देश में शान्ति एवं कानून व्यवस्था कायम रखने तथा देश की एकता एवं अखण्डता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। देश के कोने–कोने में बल की उपस्थिति सी.आर.पी.एफ. की बहुआयामी भूमिका एवं संघर्षों से जूझने की अदम्य साहस एवं वीरता का ठोस उदाहरण है। हमारा बल की कामकाजी

परिस्थितियां अत्यन्त कठिन एवं गतिशील होने के बावजूद भी हमारे जवान सुरक्षा एवं शान्ति व्यवस्था कायम रखने में सक्षम रहे हैं और आम जनता की मौलिक जरूरतों को पूरा करने में भी निरन्तर सहयोग देते रहे हैं। सेवा व भक्ति की भावना से ओत–प्रोत, धर्म निरपेक्षता एवं कार्य कुशलता में भी यह बल हमेशा अग्रणी रहा है। असाधारण योग्यताओं वाले इस बल ने देश के जन–जन से विश्वास एवं स्नेह अर्जित किया है तथा अपने कठिन एवं अथक प्रयासों से जनता का विश्वास जीतने में सक्षम रहा है।"



पश्चिमोत्तर अंचल की वर्ष *2002* की सर्वश्रेष्ठ परिचालन बटालियन की ट्राफी *28* बटा के कमान्डेंट श्री मणि शंकर झा को प्रदान करते हुए अपर महानिदेशक श्री कंवलजीत सिंह



स्थापना दिवस के अवसर पर रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत करते *28* बटालियन के कार्मिक

पुलिस उप महानिरीक्षक चण्डीगढ़ ने कहा कि सर्वश्रेष्ठ बटालियन ट्राफी का खिताब 28 बटालियन के लिए नया नहीं है। कश्मीर के आंतकवाद ग्रस्त क्षेत्र में कठिन परिस्थितियों में कार्य करते हुए इसी बटा. ने वर्ष 1998 व 1999 में दो बार लगातार सर्वश्रेष्ठ बटा. का ताज पहना था। यह सम्मान बटालियन के जवानों के अथक परिश्रम, उत्कृष्ट व्यावसायिक कौशलता एवं कर्त्तव्य पथ पर आहुति के बदले अर्जित हुआ है। उन्होंने शहीद जवानों का स्मरण किया एवं उन्हें नमन कर श्रद्धांजलि दी। श्री सिंह ने इस अवसर को अन्य बटालियनों के जवानों के लिए एक प्रेरणा स्रोत बताया। वाहिनी के कार्मिकों ने अब तक 11 शौर्य पदक तथा 5 विशिष्ठ सेवा पदक एवं 35 महानिदेशक प्रशंसा डिस्क अर्जित की हैं।

कमान्डेट श्री मणिधर झा ने उपस्थित अतिथियों को आभार व्यक्त करते हुए विश्वास दिलाया कि 28वीं वाहिनी के बहादुर जाबांज अपनी इस परम्परा को भविष्य में निरन्तर बनाये रखने में प्रयत्नशील रहेगें।

इस अवसर पर चण्डीगढ़ रेन्ज की सभी यूनिटों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भी भाग लिया। वाहिनी के कार्मिकों द्वारा एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। इस दौरान करगम नृत्यकारों ने जन समूह का मन मोह लिया।

बल की तैराक निरीक्षक रिचा मिश्र का हँगरी में प्रशिक्षण



भारत सरकार, खेल मंत्रालय द्वारा के०रि०पु०बल की राष्ट्रीय चैम्पियन तैराक निरीक्षक रिचा मिश्र को मार्च से अगस्त, 2003 तक प्रशिक्षण लेने के लिए नामित किया गया है। वे तैराकी का एडवाँस प्रशिक्षण बुडापेस्ट, (हँगरी) में तैराकी कोच श्री ओटो कोवेस के मार्ग दर्शन में लेगी। भारतीय तैराकी संघ की सिफारिश के आधार पर सरकार ने इस प्रशिक्षण के लिए 5 लाख रुपये स्वीकृत किए हैं।

तैराक रिचा मिश्र 1999 में के०रि०पु०बल में शामिल हुयी थी और तभी से उन्होंने कई पदक, खिताब जीते हैं। रिचा ने वर्ष 1998 तथा 2002 में दक्षिणी कोरिया के बेंकाक तथा बुसैन में आयोजित 12वें तथा 14वें एशियाड खेलों सहित अनेक अन्तराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धाओं में देश का प्रतिनिधित्व किया। दिसम्बर, 2002 के दौरान हैदराबाद में आयोजित राष्ट्रीय खेलों में रिचा मिश्र को सर्वश्रेष्ठ महिला तैराक घोषित किया गया था।

रिचा मिश्र 1996 से आज तक दिल्ली राज्य एक्वाटिक चैम्पियनशिप में भाग लेती रही हैं। तथा कई राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर के रिकार्ड बनाकर सदैव सर्वश्रेष्ठ तैराक घोषित हुयी हैं।

सी.आर.पी.एफ. अन्तर सेक्टर गोल्फ

टूर्नामैन्ट 2003



पुलिस महानिरीक्षक दलजीत सिंह तथा कमान्डेंट श्री सी.जे.एस. हीरा टूनमिंट जीतने के बाद टाफी के साथ मैदान में खडे हुए

"हर साल की तरह से हटकर इस वर्ष इन्टर सेक्टर गोल्फ टूर्नामैन्ट पुलिस महानिरीक्षक, पूर्वी सेक्टर की देख–रेख में सन् 1829 में स्थापित कोलकता की सबसे पुरानी रॉयल गोल्फ क्लब में 17 एवं 18 अप्रैल, 2003 तक आयोजित किया गया। इसमें कुल 5 सेक्टरों की टीमों ने हिस्सा लिया। कड़ाके की धूप और हवा में अधिक नमी होने के बावजूद सभी टीमों ने उच्च कोटि का प्रर्दशन किया। दो दिन की कड़ी मेहनत के बाद इस साल का प्रथम पुरस्कार मध्य सेक्टर की टीम को प्राप्त हुआ जिसमें पुलिस उप महानिरीक्षक, रामपुर, श्री दलजीत सिंह, तथा कमाडेन्ट, श्री सी.जे.एस. हीरा ने प्रथम स्थान प्राप्त कर ट्राफी और गोल्फ पुरस्कार जीता जबकि दूसरे स्थान पर उत्तरी सेक्टर के कमाडेन्ट श्री पी.पी. सिंह को मिला। इस तरह सेन्ट्रल सेक्टर की गोल्फ टीम ने उच्च कोटि का प्रदर्शन करते हुए ट्राफी पर अपना हक जमाया।

बल द्वारा एक नई पहल



बल के महानिदेशक श्री एस.सी. चौबे तथा एनपीसीसीएल के अध्यक्ष एवं प्रबंधक निदेशक श्री एस.सी. बाली मैमोरेंड्स ऑफ अन्डर स्टेडिंग को हस्ताक्षर के बाद आपस में अदला–बदली करते हुए

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने होटल हयात के पास बसंत कुंज नई दिल्ली में अधिकारियों के लिए फ्लेगशिप इंस्टीट्यूट कम परागमन होस्टल के लिए दो एकड़ भूमि का अधिग्रहण किया है। प्रस्तावित भवन में सभागार, मीटिंग तथा चलचित्र प्रस्तुतीकरण कक्ष बनाने के साथ–साथ अधिकारियों के लिए परागमन आवास निर्मित करने की भी व्यवस्था है।

प्रस्तावित भवन में अति महत्वपूर्ण व्यक्तियों के लिए चार कमरे, तथा परागमन अधिकारियों के लिए 45 कमरों का निर्माण किया जायेगा। इस भवन में आडिटोरियम, बैंक्वेट हॉल, बिजनेस सेन्टर, सम्मेलन कक्ष, भूमिगत पार्किंग, स्वीमिंग पूल तथा टेनिस कोर्ट जैसी सभी सुविधाएं उपलब्ध होगी।

भवन का नक्शा मशहूर वास्तुकार मार्डन इण्डिया आर्कटेक्ट लिमिटेड ने बनाया है। भवन का नक्सा समसामयिक रूप से संगठन की भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर अत्याधुनिक सुविधाओं युक्त बनाया गया है जो के.रि.पु. बल की साख तथा सौभाविक विशेषता का एक नायाब नमूना होगा।

भवन का निर्माण चरणबद्ध रूप में किया जायेगा। पहले चरण में सभागार, बैंक्वेट हॉल, बिजनेस सेन्टर आदि का निर्माण नवम्बर, 2003 तक पूरा किये जाने की सम्भावना है। भवन का निर्माण नेशनल प्रोजक्टस् कंस्ट्रक्शन कॉरपोरेशन द्वारा एक समय बद्ध तरीके से किया जायेगा। इस सम्बंध में के.रि.पु. बल तथा एनपीसीसी द्वारा

10 अप्रैल, 2003 को एक मैमोरंडम ऑफ अन्डर स्टोडेंग पर हस्ताक्षर किए गए है। इस अवसर पर बल के महानिदेशक श्री एस.सी. चौबे, अपर महानिदेशक श्री हिमांशु कुमार तथा एनपीसीसीएल के अध्यक्ष एवं प्रबंधक निदेशक श्री एस.सी. बाली भी उपस्थित थे।

135 महिला बटालियन ने अपना स्थापना दिवस मनाया

हर वर्ष की भांति केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल तथा देश की दूसरी 135 महिला बटालियन ने 6 अप्रैल, 2003 को अपना स्थापना दिवस बड़ी धूम–धाम से मनाया। यह बटालियन बल में महिला शक्ति का प्रतिनिधित्व करती है तथा देश की होनहार महिलाओं को इस बात का संदेश देती है कि वे किसी भी कार्य में पुरूषों, जहाँ तक कानून व्यवस्था तथा राष्ट्र की एकता एवं अखण्डता बनाए रखने में कभी भी पीछे नहीं हैं।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ही देश का एकमात्र ऐसा अर्द्ध सैनिक बल है जिसकी दो महिला बटालियनें हैं। 6 फरवरी, 1986 में दिल्ली में खड़ी की गई के.रि.पु.बल की पहली महिला बटालियन की उपलब्धियों का मूल्यांकन करने के बाद दूसरी 135 (महिला) बटालियन 6 अप्रैल, 1996 को गांधीनगर, गुजरात में खड़ी की थी।

वर्ष, 2002 के दौरान 135 (महिला) बटालियन की महिला कर्मियों को श्रीनगर तथा गौहाटी में हवाई अड्डों, सचिवालय, रेडियो स्टेशन आदि संवेदनशील स्थानों पर तलासी एवं जाँच कार्य जैसी एक्टिव ड्यूटी के लिए तैनात किया गया था। अयोध्या में राम जन्म भूमि तथा बाबरी मस्जिद स्थलों पर भी सुरक्षा तथा जाँच–पड़ताल कार्य के लिए इस बटालियन की महिला कर्मी तैनात हैं। जनता की अपेक्षानुसार इस बटालियन की महिला कर्मियों ने अपनी ड्यूटियों का निष्पादन पूरी निष्पक्षता एवं कर्तव्य निष्ठा के साथ किया है तथा जनता, सेना, राज्य तथा सिविल प्रशासन के अधिकारियों से पदक तथा भरपूर प्रशंसा प्राप्त की है। इस बटालियन की महिला टुकड़ी को श्रीनगर में पवित्र अमरनाथ यात्रा के दौरान पहलगाम से पवित्र गुफा तक यात्रियों की सुरक्षा व्यवस्था की जिम्मेदारी भी सौपी गई थी जिसे इन महिला कर्मियों ने बखूबी से निभाया है।

वर्ष, 2002 के दौरान इस बटालियन की महिला खिलाड़ियों ने क्रीड़ा जगत में अपने साहस तथा उत्साह का उत्कृष्ट प्रदर्शन कर विभिन्न राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय खेल प्रतिस्पर्धाओं में 10 से भी अधिक स्वर्ण पदक जीते हैं।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस द्वारा वर्ष 2003 को इलेक्ट्रोनिक प्रबन्धन वर्ष घोषित

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सी०आर०पी०एफ०) के महानिदेशक श्री एस०सी०चौबे ने वर्ष 2003 को बल के लिए इलेक्ट्रोनिक प्रबन्धन वर्ष घोषित किया है और कहा कि के०रि०पु०बल ने सहस्त्राब्धि का पहला इलेक्ट्रोनिक अर्द्धसैनिक बल बनने के लिए कार्रवाई शुरु कर दी है।

बल को पूर्ण रुप से कम्प्यूटरीकृत करने के उद्देश्य से एक पंचवर्षीय सूचना प्रौद्योगिकी योजना की कल्पना की गई थी जिसे साकार करने के लिये सभी एलीमेन्टस को आपस में पूरी तरह जोड़कर इंटरानेट **'सेलो'** नामक साफ्टवेयर बनाया गया है। **सेलो** सभी कार्यों को करने के लिए हर स्तर के आदेशों को आनलाइन जोड़ना सुनिश्चित करेगा चाहे वे परिचालनिक हो या प्रशासनिक। प्रथम चरण के रुप में **सेलो** को कार्यान्वित करने के लिए मैसर्स एन०आई०आई०टी० के मार्फत एक एकीकृत एप्लीकेशन साफ्टवेयर का विकास कर लिया गया है जो आपरेशनल, व्यक्तिगत सूचना तंत्र, इनवेन्ट्री तथा वित्त एवं बजट जैसे सभी कार्यों को स्वतः ही कवर करता है। परियोजना के पहले चरण के रुप में अपेक्षित हार्डवेयर तथा नेटवर्क्स को वर्ष 2003–2004 के दौरान चालू किए जाने की सम्भावना है।

के०रि०पु०बल ही देश का एक ऐसा अर्द्धसैनिक बल है जिसके पास इन्टरानेट **सेलो** जैसी टोटल आटोमेशन समाधान की परियोजना है।

के.रि.पु. बल द्वारा उ०प्र० में की जा रही सुरक्षा डयूटियों का बल के महानिदेशक द्वारा मुआयना



बल के महानिदेशक श्री एस.सी चौबे उत्तर प्रदेश की मुख्य मंत्री सुश्री मायावती को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए

बल के महानिदेशक श्री एस.सी. चौबे ने लखनऊ में से तीन दिवसीय दौरे के दौरान 27 मार्च, 2003 को प्रातः उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री सुश्री मायावती से मिले तथा उन्हें प्रदेश में के०रि०पु०बल एवं द्रुत कार्य बल की भूमिका के बारे में जानकारी दी और बल द्वारा अयोध्या, मथुरा तथा वाराणसी में महत्वपूर्ण तीर्थ स्थलों की सुरक्षा डयूटियों के बारे में चर्चा की। इसके अतिरिक्त के०रि०पु०बल पर उच्च न्यायालय इलाहाबाद तथा इसकी लखनऊ पीठ की सुरक्षा का भी उत्तरदायित्व है। द्रुत कार्य बल के रुप में के०रि०पु०बल का एक सर्वोत्कृष्ट स्कंध साम्प्रदायिक सदभाव बनाए रखने में राज्य प्रशासन की सहायता करता है।

महानिदेशक, ने लखनऊ में स्थित के०रि०पु०बल संस्थापनों का निरीक्षण किया तथा बल के जवानों व अधिकारियों को देश की आशाओं पर खरा उतरने हेतु आहवान किया, क्योंकि संपूर्ण देश की आंतरिक सुरक्षा का दायित्व के०रि०पु०बल ने सेना और सीमा सुरक्षा बल से अपने ऊपर लेना प्रारम्भ कर दिया है। आगामी दो वर्षों में 205 बटालियनों वाला के०रि०पु०बल देश का सबसे बड़ा अर्द्ध सैनिक बल हो जायगा।

संक्षिप्त समाचार



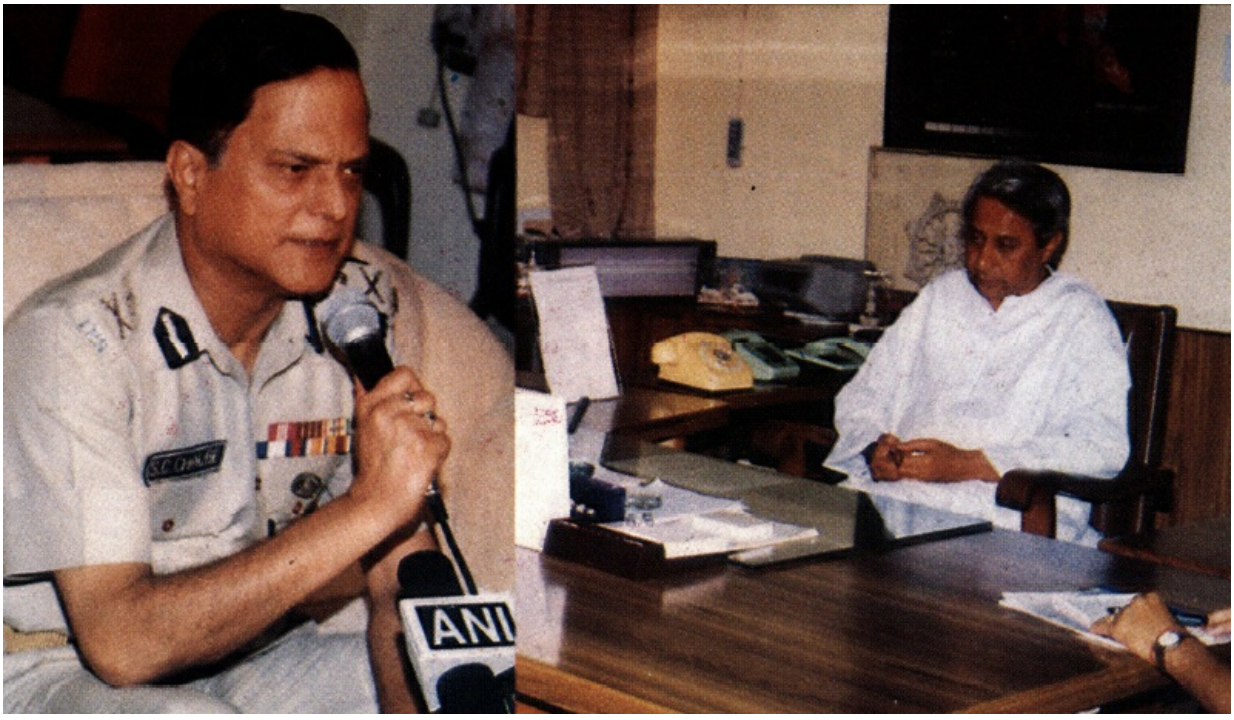
बल के महानिदेशक श्री एस.सी. चौबे अधिवर्षिता पर सेवानिवृत हुए पुलिस महानिरीक्षक (सम्भरण एवं निर्माण) श्री आर.एस. नौटियाल को बल मुख्यालय में आयोजित समारोह में स्मृति चिन्ह भेट करते हुए



हाल ही में टोंगा में सम्पन हुए कॉमन वेल्थ खेलों की भारत्तोलन प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाले बल के खिलाड़ियों के साथ महानिदेशक श्री एस.सी. चौब एवं अन्य अधिकारीगण



बल के महानिदेशक श्री एस.सी. चौबे उत्तर प्रदेश में अपने दौरे के दौरान वाराणसी में के०रि०पु०बल द्वारा की जा रही सुरक्षा ड्यूटियों के सम्बंध में प्रेस मीडिया को जानकारी देते हुए



बल के महानिदेशक श्री एस.सी. चौबे उड़ीसा में के०रि०पु०बल द्वारा की जा रही ड्यूटियों के सम्बंध में प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री नवीन पटनायक तथा प्रेस मीडिया को जानकारी देते हुए

आरटीसी–प्रथम, नीमच में ध्यान योग शिविर का आयोजन

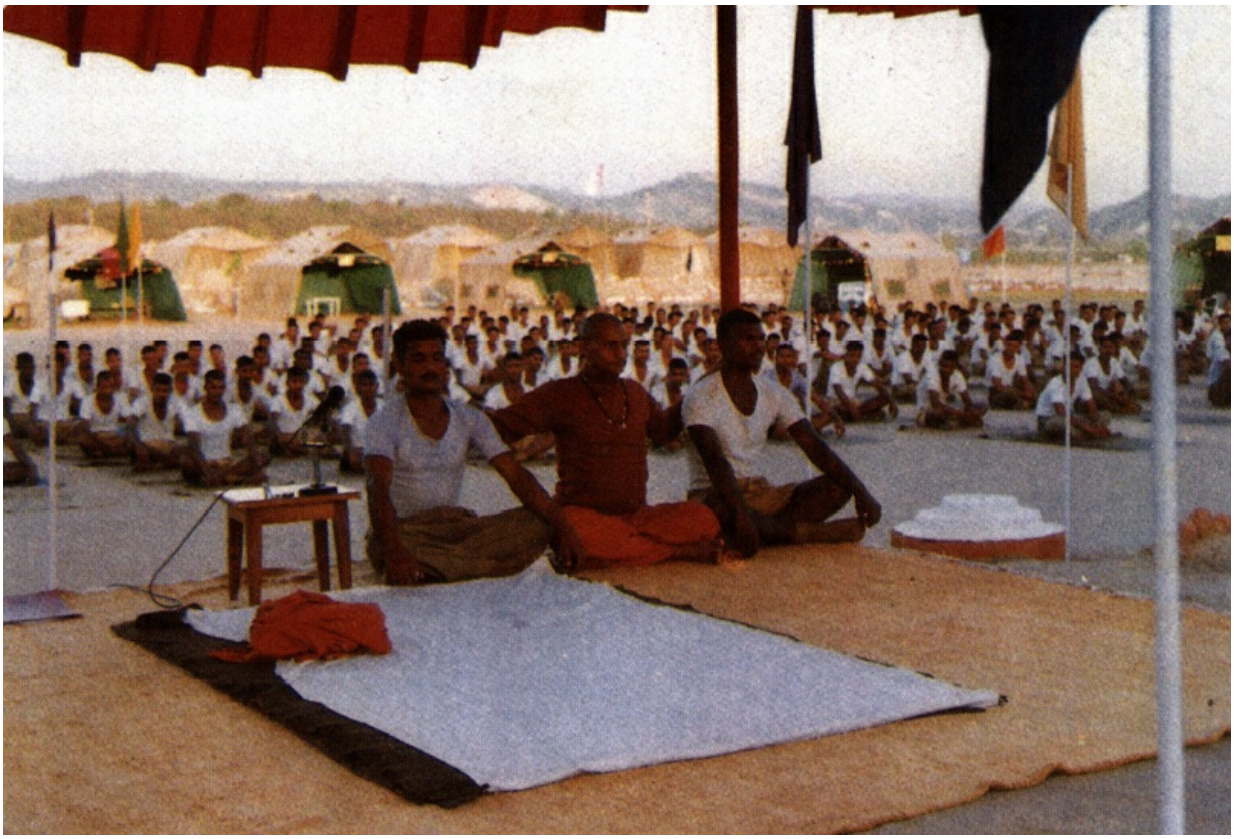
नीमच शहर के दशहरा मैदान पर चल रहे योग शिविर की कड़ी में 10 मार्च, 2003 को दिव्य योग मन्दिर कनखल हरिद्वार के संस्थापक अध्यक्ष स्वामी रामदेव जी महाराज ने आरटीसी–प्रथम के०रि०पु०बल के जवानों के लिये अपने व्यस्त कार्यक्रम से अपना अमूल्य समय निकालकर सांय 06:00 बजे से 07:30 बजे तक विशेष ध्यान योग शिविर का आयोजन किया।



आर.टी.सी. नीमच के अधिकारियों एवं जवानों को योग एवं प्राणायाम की शिक्षा देते हुए स्वामी राम देवजी महाराज

इस शिविर में बल के कार्मिकों को प्राणायाम एवं योगासन द्वारा तनाव मुक्त रहने

एवं आन्तारेक उर्जा को जाग्रत करने के योग सिखाये तथा प्राणायाम द्वारा अपने शरीर के विकारों, बीमारियों एवं व्याधियों को दूर करने के लिए अधिकारियों एवं जवानों को प्रोत्साहित किया। स्वामी जी ने बताया कि सैनिक अपने परिवार से दूर रहता हैं इसलिये उन्हें मानसिक शान्ति की आवश्यकता आम नागरिकों की अपेक्षा ज्यादा होती है। जब एक सैनिक का मन शान्त होगा तभी वह तनाव मुक्त होगा और तभी अपने कर्तव्यों का निर्वाहन और अच्छे ढंग से कर पायेगा। तथा देश की सेवा में पूर्ण तन-मन से अपना योगदान दे पायेगा। स्वामी जी के साथ आदरणीय आचार्य श्री करनवीर जी द्वारा भी अधिकारियों एवं जवानों को योग की शिक्षा दी गई। ध्यान योग शिविर में आरटीसी-I के अधिकारियों, जवानों, नवारक्षियों एवं उनके परिवारजनों ने पूर्ण उत्साह के साथ भाग लिया।



योग एवं प्राणायम का अभ्यास करते हुए आरटीसी नीमच के अधिकारी व कर्मचारी

इसके पश्चात स्वामी जी ने 10 एवं 11 मार्च, 2003 को बल के कार्मिकों एवं उनके परिवारजनों की बीमारियों के निराकरण हेतु अपना अमूल्य समय दिया। बल के कार्मिकों एवं उनके परिवारजनों को कई वर्षों के पुराने एवं असाध्य रोगों के निराकरण हेतु उचित परामर्श / मार्गदर्शन एवं आयुर्वेदिक दवाईयां दी गई।

संस्थान के प्राचार्य श्री हरभजन सिंह ने स्वामी जी का आरटीसी-प्रथम में आकर अपना अमूल्य समय देने, बल के अधिकारियों/जवानों एवं उनके परिवारजनों को

प्राणायाम एवं योग की शिक्षा देने तथा उनकी बीमारियों के निराकरण हेतु उचित मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए हार्दिक आभार व्यक्त किया। श्री सिंह ने इस विशेष ध्यान योग शिविर को सफल बनाने हेतु श्री यशंवत बंसल, महेश गर्ग एवं निलेख बंसल का भी हार्दिक आभार प्रकट किया।

107 बटा. आरएएफ द्वारा लिंगभेद समस्या एवं उसके निवारण पर कार्यशाला

107 बटालियन, द्रुत कार्य बल केरिपुबल, भोपाल (म०प्र०) में 7 से 9 अप्रैल, 2003 तक द्रुत कार्य बल में लिंगभेद समस्या एवं उसके निवारण हेतु एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कमाण्डेंट 107 बटालियन, द्रुत कार्य बल के श्री हेमराज के नेतृत्व में उक्त कार्यशाला का उद्घाटन श्री ए. आर. पंवार, भा.पु.से., अपर पुलिस महानिदेशक (प्लानिंग एवं प्रोविजनिंग), मध्य प्रदेश पुलिस द्वारा किया गया। इस कार्यशाला में द्रुत कार्य बल की दस बटालियनों से 09 महिला एवं 17 पुरूष प्रतिनिधियों ने भाग लिया। कार्यशाला को ज्ञानवर्धक, रोचक एवं सुलभ बनाने के लिए भूतपूर्व जेल महानिदेशक श्री एस.सी. अग्रवाल, भा.पु.से. तथा बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग के प्रधान प्रोफेसर श्री गौतम ज्ञानेन्द्र को भी अतिथि के तौर पर आमंत्रित किया गया था। कार्यशाला का समापन श्री नरेन्द्र प्रसाद, भा.पु.से. भूतपूर्व जेल महानिदेशक के कर कमलों द्वारा किया गया।

समारोह के प्रारंभ में कमाण्डेंट 107 श्री हेमराज ने मुख्य अतिथि श्री पंवार का स्वागत किया तथा कार्यशाला की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। श्री ए.आर. पंवार, भा.पु.से., अपर महानिदेशक, म०प्र०पु० ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि द्रुत कार्य बल देश का पहला पुलिस बल है जो कम सुविधाओं के होते हुए भी संवेदनशील पुलिस ड्यूटी कर रहा है तथा इसमें महिलाओं की भागीदारी होने से आम जनता में विश्वास बढ़ा है। उन्होंने कहा कि विभागीय कार्य करने में महिलाएं किसी भी मामले में पुरूषों से कम नहीं हैं। अपने संबोधन में श्री पंवार ने कहा कि महिलाओं के साथ प्राकृतिक प्रदत्त कुछ समस्याएं अवश्य हैं, लेकिन वे किसी भी तरह के विभागीय कार्यों में पुरूषों के पीछे नहीं हैं। उन्होंने कहा कि इतना ही नहीं, दोहरी जिम्मेदारी होने के बावजूद उनमें आत्मविश्वास एवं जिम्मेदारी निर्वाहन का जजबा काबिले गौर है। द्रुत कार्य बल में महिला कार्मियों की भागीदारी से राहत एवं बचाव कार्यों में संगठन की भूमिका को और गति मिली है। श्री पंवार ने कहा कि शारीरिक आधार पर कार्य क्षमता का मुद्दा बनाकर लिंग भेद करना न्याय संगत नहीं है, लिहाजा यह आवश्यक है कि महिला कार्मिकों को प्रोत्साहित किया जाये। उन्होंने कहा कि नये

स्थान पर बल की तैनाती के दौरान महिलाओं के लिए चालेत शौचालयों की व्यवस्था की जानी चाहिए। इसके अलावा महिलाओं की सेवा निवृत्ति की अवधि कम करने पर भी विचार करना आवश्यक है।



107 बटालियन आरएएफ द्वारा लिंग भेद समस्या एवं निवारण विषय पर आयोजित कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए मध्य प्रदेश पुलिस के अपर पुलिस महानिदेशक श्री ए.आर. पवार तथा बटालियन कमान्डेंट श्री हेम राज



आरएएफ में लिंग भेद समस्या तथा उसके निवारण हेतु *107* बटालियन में आयोजित कार्यशाला में भाग लेने वाले प्रतिनिधि

उक्त विषय पर सेवा निवृत्त जेल महानिदेशक श्री एस.सी. अग्रवाल, भा.पु.से. तथा प्रोफेसर गौतम ज्ञानेन्द्र ने समाज में फैली लिंग भेद समस्या के बारे में प्रतिनिधियों को उत्कृष्ट ज्ञान प्रदान कर कार्यशाला को सफल बनाने में अपना सराहनीय योगदान दिया। उन्होंने पूरे समाज में लिंग भेद के कारण महिलाओं के साथ भेद भाव किये जाने को गलत ठहराया तथा बताया कि महिलाओं को हर क्षेत्र में पुरूषों के समान ही अवसर प्रदान कर लिंगभेद की समस्या को दूर किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि भारत को महाशक्ति बनाने के लिए आवश्यक है कि महिलाओं को पुरूष के समरूप समझते हुए हर क्षेत्र में उनकी भागीदारी के लिए उन्हें उत्साहित/प्रोत्साहित किया जाये।

श्री नरेन्द्र प्रसाद, भा.पु.से., भूतपूर्व जेल महानिदेशक ने समापन भाषण के दौरान लिंगभेद समस्या पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मुझे गर्व है कि 107 बटालियन में लिंगभेद समस्या तथा उसके निवारण हेतु इस कार्यशाला का आयोजन करके एक नया उदाहरण एवं नई दिशा में पहल की शुरू की है इस प्रकार की कार्यशालाओं के आयोजन से न सिर्फ द्रुत कार्य बल में बल्कि पूरे समाज में फैली लिंगभेद समस्या से काफी हद तक निजात पायी जा सकती है। उन्होंने इस कार्यशाला के सफल आयोजन के लिए उपस्थित प्रतिनिधियों तथा 107 बटा० के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को धन्यवाद दिया।

सिग्नल ग्रुप केन्द्र रांची में महिला दिवस का आयोजन

8मार्च, 2003 को सिग्नल ग्रुप केन्द्र रांची में महिला दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ परिवार कल्याण केन्द्र में महिलाओं के लिए कढ़ाई-सिलाई कोर्स के उद्घाटन के साथ किया गया। इस अवसर पर मेला का आयोजन किया गया जिसमें परिसर की लगभग सभी महिलाओं ने भाग लिया। महिलाओं के स्वास्थय जाँच के लिए सि.ग्रु.के. के वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी द्वारा चिकित्सा परीक्षण शिविर लगाया गया था जिसमें महिलाओं की जाँच की गई। इसके अलावा मेले में खान-पान स्टाल, तम्बोला गेम, मांटेसरी स्कूल के बच्चों की रस्साकसी प्रतियोगिता, म्यूजिकल चेयर रेस, आरकेष्ट्रा वाद्ययंत्रों का प्रदर्शन इत्यादि विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम प्रस्तुत किये गए। इन प्रतियोगितायों में क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले

प्रातियोगियों को उचित पुरस्कार दिये गए। मेले से प्राप्त लगभग 1384.52 रूपये की आय को महिलाओं के कल्याण हेतु इस ग्रुप केन्द्र परिवार कल्याण केन्द्र में दिया गया।



महिला दिवस के अवसर पर महिलाओं का चिकित्सा परीक्षण करते सिग्नल ग्रुप केन्द्र के वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी



महिला दिवस के अवसर पर ग्रुप केन्द्र रांची में रस्सा कसी में भाग लेते सीआरपीएफ मॉंटेसरी स्कूल के बच्चे

ग्रुप केन्द्र नीमच ने मनाया महिला दिवस



महिला दिवस के अवसर पर आयोजित समारोह में भाग लेती ग्रुप केन्द्र परिसर की महिलाएं

08 मार्च, 2003 को ग्रुप केन्द्र नीमच परिसर महिला दिवस मनाया गया। करीब 800 महिलाओं ने इसमें भाग लिया। इस अवसर पर के.रि.पु. बल महिला कल्याण संस्थान नीमच की अध्यक्षा श्रीमती एस.एस. रावत ने बैठक की जिसमें परिवार को सुदृढ़ बनाने, अपने स्वास्थ्य, बच्चे, परिवार व परिवारिक संबंधों पर चर्चा की। इस परिवार चर्चा में महिलाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

स्टेशन अस्पताल केरिपुबल नीमच द्वारा विभिन्न परिवार नियोजन संबंधी सामग्री बांटी गई तथा मु. चि. अधिकारी डॉ. बी.एल. मीणा ने महिलाओं को परिवार सीमित रखने के विभिन्न तरीकों एवं अपने तथा बच्चों के स्वास्थ पर विभिन्न प्रकार के मार्गदर्शन दिये।

महिला दिवस के अवसर पर महिलाओं ने आकर्षक नृत्य प्रस्तुत किया गया एवं जादूगर द्वारा जादू का प्रदर्शन दिखाया गया। इसके अतिरिक्त स्टेशन में स्थित परिवार कल्याण केन्द्र की ओर से एक प्रदर्शनी लगाई गई जिसमें महिलाओं द्वारा बनाई गई वस्तुओं कों बिक्री हेतु रखा गया। इस अवसर पर नेशनल इन्स्टीव्यूट ऑफ फैशन डिजाईन से प्रशिक्षक को आमंत्रित किया गया, जिन्होंने वर्तमान में प्रचलित विभिन्न फैशन डिजाईनों पर चर्चा की। महिलाओं को मेंहदी लगाना, साज-सज्जा, चूड़ियों की स्टाल इत्यादि पर प्रदर्शनी लगाने की जानकारी से अवगत कराया गया।

बल के सामाजिक क्रिया कलाप

73बटा. ने पूर्वोत्तर क्षेत्र में तैनाती के दौरान 23 फरवरी, 03 को चन्द्रपुर में स्कूल के छात्रों के बीच खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया। खेल प्रतियोगिता में विजेता छात्रों को खेलकूद की सामग्री वितरण की गई। गुवाहाटी के आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में नागरिक को सिविक एक्शन कार्यक्रम के तहत सस्ते दर पर उपभोक्ता वस्तुओं का भी वितरण किया। क्षेत्रीय लोगों ने बल कार्मिको का धन्यवाद करते हुए भविष्य में ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने का अनुरोध भी किया।



73 बटा द्वारा सिविक एक्शन प्रोग्राम के अन्तर्गत आयोजित प्रतियोगिता के विजेता बच्चों को ट्राफी प्रदान करते अ. पु. उ. महानिरीक्षक पूर्वोत्तर सेक्टर श्री ए.एन. अवस्थी

इसी तरह 03 मार्च, 2003 को बटालियन द्वारा जन कल्याण कार्यक्रम के तहत केरिपुबल ट्रांजिट कैम्प में स्कूली छात्रों के बीच खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया और विजेताओं को मुख्य अतिथि अपर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री एन.के. अवस्थी टैक हेडक्वाटर नोर्थ ईस्ट सैक्टर ने शील्ड प्रदान की तथा खेल सामग्री वितरित की। इस अवस कैंटीन से ग्रामीणों को उपभोक्ता वस्तुओं का भी वितरण किया गया। इस कार्यक्रम के आयोजन से जनता में केरिपुबल के प्रति विश्वास में

बढ़ोत्तरी हुई है। इस समारोह को स्थानीय टी.वी. चैनलों तथा समाचार पत्रों ने बहुत सराहा।



कमान्डेंट विनय यादव स्कूली बच्चों को ट्राफी प्रदान करते हुए

श्रद्धा एवं भक्ति का अनूठा संगम

केरिपुबल के साये में मचैल, मनी महेश, तथा कैलाश यात्रा



सुरक्षित एवम् सुखमय यात्रा के लिए तैनात 8वीं बटालियन के कार्मिक

जिला मुख्यालय डोडा से लगभग 170 किमी दूर मचैल क्षेत्र, जिलों का दूरदराज का एवं पिछड़ा हुआ इलाका है। यह समुद्र तल से 10000 (दस हजार) की उँचाई पर स्थित है। फिर भी माता चंडी के चमत्कारों से इस स्थान की ख्याति दूर-दूर तक प्रख्यात है। प्रसिद्ध मचैल यात्रा भद्रवाह स्थित चिनौल मंदिर से शुरू होती है तथा विभिन्न पड़ावों पर विश्राम करते हुए तीर्थयात्री मचैल मंदिर तक पहुँचते है। चंडी माता का यह प्राचीन मंदिर मचैल गांव में सब से ऊपर स्थित है। माता चंडी के प्रकट होने के संदर्भ में स्थानीय नागरिकों की विभिन्न मान्यताएं हैं। कुछ लोगों की धारणा है कि किसी भक्त को सपने में माता चंडी ने दर्शन देकर कहा कि मैं मचैल में प्रकट होना चाहती हूँ। आप कल उस स्थान पर पहुँच जाना। यह भक्त बिना किसी को बताये मचैल पहुँचा और पिंडी के रूप में माता के दर्शन किये एवं वहां पर मंदिर बनाकर पूजा पाठ करने लगा। तत्पश्चात् माता ने उस भक्त को चमत्कार दिखाने शुरू किये। एक अन्य मान्यता के अनुसार एक बार संस्कार-लद्दाख क्षेत्र में महामारी फैल गई और लोग घबरा कर मचैल गांव में पहुँचे और उन्होंने कामना की कि अगर माता चंडी की कृपा होगी तो महामारी रूक सकती है और चमत्कार स्वरूप महामारी समाप्त हो गई और तब प्रत्येक घर से एक-एक तोला चांदी इकट्ठा करके मां चंडी की मूर्ति स्थापित की गई और इसी मूर्ति को आज तक तीर्थयात्री मचैल में जाकर पूजते है।

सुरक्षा प्रबन्ध :–

प्रत्येक वर्ष माता चंडी मचैल यात्रा का आयोजन जम्मू-कश्मीर सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त स्वयं सेवक संस्था "सर्वशक्ति सेवक संस्था" के द्वारा माह अगस्त में भद्रवाह के चिनौती मंदिर से प्रारम्भ करके किया जाता है तथा इस यात्रा में न केवल जम्मू-कश्मीर राज्य के तीर्थ यात्री बल्कि अन्य दूसरे राज्यों के श्रद्धालु भी शामिल होते हैं। यात्रा के लिये प्रस्थान करने वाले तीर्थयात्रियों की औसतन संख्या 8000 से 9000 के बीच में होती है।

चूंकि डोड़ा जिला एक अति संवेदनशील एवं उग्रवाद ग्रस्त जिला है और उसी के अनुसार तीर्थयात्रियों की सुरक्षा व्यवस्था के लिये स्थानीय प्रशासन के द्वारा सिविल पुलिस के अलावा सुरक्षा बलों की मांग की जाती है जिसमें केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की डोडा जिले में तैनात यूनिटें, राष्ट्रीय राइफल्स के जवान एवं सेना की टुकड़ियां तैनात की जाती हैं। वर्तमान में 8वीं बटालियन केरिपुबल ने 1999 से इस जिले में तैनाती से तीर्थयात्रियों को प्रत्येक वर्ष सुरक्षा प्रदान कर रही है इसके अतिरिक्त 33 बटालियन केरिपुबल एवं 41 बटा. केरिपुबल भी सुरक्षा प्रदान करती है।

यात्रा के पड़ाव :–

चिनोत मंदिर, भद्रवाह, किश्तवाड़ आठौली, मासू, चासाली, मचैल पांव

मनी महेश यात्रा

मनी महेश यात्रा भद्रवाह के प्राचीन मंदिर "लक्ष्मी नारायन" से प्रत्येक वर्ष दो चरणों में प्रारम्भ होती है और मनी महेश "हिमाचल प्रदेश" के चम्बा जिले में स्थित है, तक जाती है। हिमालय की गोद में बसने वाला जिला डोडा नाग देवताओं की भूमि माना जाता है। इस पावन भूमि पर नाग देवताओं की पूजा करने की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है जिसका अपना विशेष महत्व है। भद्रवाह के ऐतिहासिक माठा गांव में भगवान वासुकी नाग जिन्हें भगवान का अवतार माना जाता है, का प्राचीन मंदिर स्थित है और समस्त भद्रवाहवासी इन्हें अपना ईष्ट देव मानते है। पौराणिक कथानकों के अनुसार जब वासुकी नाग गरूड़ के डर से अपने प्राणों की रक्षा करते हुए कैलाश कुंड पहुँचे वहां पर भगवान भोलेनाथ निवास करते थे वहां पहुँच कर उन्होंने अपनी गाथा शंकर भगवान को सुनाई और अपने प्राणों की रक्षा करने की गुहार की। तब भगवान शंकर ने उन्हें यह स्थान निवास करने के लिये दे दिया और स्वयं मनी महेश की ओर प्रस्थान कर गये। आज भी लोगों का कहना है कि शंकर भगवान अपने भक्तों को मनी महेश में दर्शन देते है और उनके दर्शन करने के लिये भक्तगण प्रत्येक वर्ष दो चरणो में मनी महेश यात्रा करते हैं। यह यात्रा मचैल यात्रा की भांति अगस्त माह में भद्रवाह के "लक्ष्मी नारायन मंदिर" से प्रारम्भ होती है।



सुरक्षित यात्रा सुनिश्चित करने के लिए मुश्तैद 8 बटालियन के कार्मिक



यात्रेयों को सुरक्षा एवं सहायता प्रदान करते हुए केरिपुबल के जवान

सुरक्षा प्रबंध :–

डोडा जिले की संवेदनशील एवं उग्रवाद ग्रस्त होने के कारण इस यात्रा के सफल आयोजन के लिये सिविल पुलिस के अतिरिक्त केरिपुबल की एक कंपनी तथा इलाके में तैनात आर्मी को सुरक्षा व्यवस्था की जिम्मेदारी सौपी जाती है। वर्ष 1999 से 8वीं बटालियन भद्रवाह में तैनात है, इसलिये बटालियन की एक कंपनी तीर्थयात्रियों को भद्रवाह के प्राचीन मंदिर लक्ष्मी नारायन से लन्गेरां (हिमाचल प्रदेश) एक सुरक्षा प्रदान करती आ रही है। रास्ते के दुर्गम व ऊँचे स्थानों पर आर्मी तथा सिविल पुलिस को तीर्थयात्रियों को आतंकवादी दुष्प्रयासों से सुरक्षा प्रदान करने के लिये तैनात किया जाता है। लन्गेरा (हिमाचल प्रदेश) से तीर्थयात्रियों को हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा सुरक्षा प्रदान की जाती है एवं तीर्थयात्रियों को वहां उन्हें सुपुर्द कर दिया जाता है एवं वापसी पर पुनः लन्गेरा से उनको सुरक्षा प्रदान करते हुए भद्रवाह तक लाया जाता है। यात्रा चूंकि दो चरणों यानि अगस्त के तृतीय व चतुर्थ सप्ताह में आयोजित की जाती है। अतः जो यात्री प्रथम चरण से वापिस लन्गेरा आते है उनको द्वितीय चरण की सुरक्षा के लिये जाने वाले सुरक्षा बलों के द्वारा वापस भद्रवाह ले जाया जाता है।

वर्ष 2002 का पहला जत्था लगभग 1700 यात्रियों के साथ 18 अगस्त, 2002 को यात्रा के लिये रवाना हुआ था, जिसकी सुरक्षा का दायित्व 8वीं बटालियन के सहा. कमा. श्री राम औतार सिंह को सौंपी गई। उपरोक्त आफिसर के नेतृत्व में बटालियन की एक प्लाटून तथा एडहॉक बी/548 की दो प्लाटून यात्रियों को सुरक्षा प्रदान करने के लिये तैनात की गई थी। मनी महेश यात्रा क दूसरा चरण दिनांक 31 अगस्त, 2002 को 250 यात्रियों के साथ यात्रा के लिये गया जिसकी सुरक्षा की जिम्मेदारी भी 8वीं बटालियन के श्री राम औतार सिंह सहा. कमा. के नेतृत्व में एडहॉक बी/548 को सौंपी गई। इस यात्रा को लन्गेरा (हिमाचल प्रदेश) में हिमाचल प्रदेश प्रकाशन को सुपुर्द करने के पश्चात् प्रथम चरण से यात्रा समाप्त करके आये हुए 150 तीर्थयात्रियों को लेकर 02 सितम्बर, 2002 को सफलता पूर्वक यात्रा समाप्ति के पश्चात भद्रवाह पहुँचे। मनी महेश यात्रा के समाप्ति के पश्चात अन्य राज्यों के तीर्थयात्री चम्बा से सिविल बसों के द्वारा अपने-अपने स्थानों पर प्रस्थान कर जाते है।

यात्रा के पड़ाव :–

तहसील भद्रवाह, जिला डोडा में :–

लक्ष्मी नारायण मंदिर भद्रवाह, सून्वसी, सरथन्मल, भेजा, पाड़रगली

जिला चम्बा (हिमाचल प्रदेश) में :–

पाड़रगली, कुंडी मोराल, लन्गेरा, सिन्हो कोठी, सलोनी, कियानी, रजेरा, चोयारी, खारमुख, हडसल, धनसू से मनी महेश लेक।

कैलाश यात्रा

कैलाश यात्रा का आयोजन स्थानीय प्रशासन के द्वारा माह सितम्बर में भद्रवाह के घाटा लक्ष्मी नारायण मंदिर से प्रारम्भ किया जाता है तथा लगभग 35 किमी की यह यात्रा कच्चे रास्तों, ऊँचे व मिट्टी को पहाड़ों, नालों व घने जंगलों से गुजरती हुई कैलाश कुंड पर जाकर समाप्त होती है। कैलाश पर्वत, हिमालय की पर्वत श्रृंखला में आता है। और प्राचीन काल में ऋषि मुनि इन्हीं पर्वतमालाओं में अपनी तपस्या पूर्ण किया करते थे। हिमालय पर्वत की असीम शांति एवं शुद्ध वातावरण के कारण भगवान शंकर का निवास भी इसी स्थान पर माना गया है। ऐसी मान्यता है कि भगवान शंकर तप करने के उपरांत स्नान करने के लिये कैलाश कुंड में आया करते थे। इसी कारण तीर्थयात्री स्नान करके मोक्ष प्राप्ति की कामना रखते हैं। भद्रवाह के मूल निवासियों की यह मान्यता है कि कैलाश कुंड के स्थान पर भगवान श्री शंकर के साथ नागदेव श्री वासुकी भगवान के दर्शन भी उपलब्ध होते है।



केरिपुबल के कार्मिकों की निगरानी में निष्कंटक यात्रा करते यात्री



यात्रियों की सुरक्षा व्यवस्था में तल्लीन बल के कार्मिक

सुरक्षा प्रबंध :– स्थानीय प्रशासन के द्वारा यात्रा के सफलता पूर्वक आयोजन के लिये सिविल पुलिस के अलावा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की एक कंपनी की मांग तीर्थयात्रियों को सुरक्षा प्रदान करने के लिये प्रत्येक वर्ष की जाती है। रास्ते में ऊँचे पहाड़ों पर यात्रियों को सुरक्षा प्रदान करने के लिये आर्मी, एस टी एफ की तैनाती की जाती है। पिछले वर्ष दिनांक 02 दिसम्बर, 2002 को 8वीं बटालियन की एक प्लाटून उ.नि. रतन सिंह के नेतृत्व में एडवांस लंगर पार्टी के रूप में भद्रवाह से कैलाश कुंड के लिये प्रस्थान हुई। इस पार्टी का कार्य तीर्थयात्रियों के लिये रास्ते को सुरक्षा की दृष्टि से क्लीयर करना तथा रास्ते में पैट्रोलिग करना था ताकि किसी भी असम्भावी दुर्घटना की संभावना को समाप्त किया जा सके। दिनांक 04.09.2002 को एडहॉक बी/548 केरिपुबल की तीन प्लाटून श्री पी.पी. साहा सहा. कमा. बी/48 के नेतृत्व में सुबह 10:30 बजे भद्रवाह के लक्ष्मी नारायन मंदिर से लगभग 1800 यात्रियों को लिये प्रस्थान किया। अगले दिन अर्थात् दिनांक 05 सितम्बर, 2002 को गांव हियान में रात्रि विश्राम करने के पश्चात् सुबह 07:00 बजे कैलाश कुंड के लिये प्रस्थान किया गया एवं

शाम को कैलाश कुंड पहुँचने के बाद तथा रात्रे विश्राम एवं स्नान करने के बाद तीथ यात्रियों को लेकर सफलता पूर्वक यात्रा समापन करके भद्रवाह आ गई।

यात्रा के पड़ाव :- लक्ष्मी नारायण/घटा मंदिर, सरथन्मल, नालथी, हियान (हियान में रात्रि विश्राम) रामथुन्द, शंख-पाडर से कैलाश कुंड

8वीं बटा. केरिपुबल जिला डोडा भद्रवाह कस्बे में मई 1999 से तैनात है। भद्रवाह के इलाके में कई उग्रवादी संगठन सक्रिय है तथा कस्बे में शांति व्यवस्था बनाये रखने के लिये अलग-अलग स्थानों पर तैनात किये गये दस्तों को उनकी जगह से न हटाया जाये और यात्रा के आयोजन के लिये अलग से सुरक्षा बल तैनात किये जाये क्योंकि यात्राओं की सुरक्षा एवं व्यवस्था के लिये तैनात कार्मिकों की नफरी कम करने के पश्चात इन यात्राओं इन यात्राओं को सुरक्षा प्रदान करनी पड़ती है।

- कमान्डेंट श्री टी.एम. बखला, 8 बटा.

भाग्य की रोटी

एक राजा की तीन बेटियाँ थी। सबसे छोटी राजकुमारी बड़ी सुंदर और सभी बहनों में बुद्धिमान थी। वह हमेशा सच बोलती थी। एक दिन राजा ने तीनों राजकुमारी से सवाल किया तुम किसके भाग्य का खाती हो। बड़ी और मंझली ने कहा आप राजा हैं और हमारे पिता हैं, इसलिए हम आप ही के भाग्य का खाते हैं। छोटी राजकुमारी बोली मैं तो अपने भाग्य का खाती हूँ। यह सुनकर राजा बहुत नाराज हुआ। माँ और बहनों के द्वारा लाख समझाने के बाद भी वह अपनी बात पर अडिग रही। राजा ने कहा कि मैं इसे ऐसी सजा दूंगा कि वह जिंदगी भर याद रखेगी। राजा ने एक भिखारी के साथ छोटी राजकुमारी का ब्याह कर दिया। सोनें-हीरे, मोती के गहनों और कीमती कपड़ों की जगह एक सादी सी धोती के साथ साथ एक टूटा कटोरा उसे देकर कहा जा आज से अपनी किस्मत का खा और पहन कर देख।

महलों से निकलकर राजकुमारी भिखारी पति के साथ झोपड़ी में रहने लगी। भिखारी राजकुमारी को कष्ट में देखकर बहुत दुखी हुआ। एक दिन उसने राजकुमारी को अपनी आप बीती सुनाई। असल में भिखारी भी एक राजा का बेटा था। उसकी मां बचपन में मर गई थी और राजा ने दूसरी शादी कर ली थी। सौतेली मां राजकुमार को देख-देख कर बहुत जलती और भुनती थी और उसने राजकुमार को एक दिन घर से निकालन दिया। राजकुमारी ने भिखारी राजकुमार का उत्साह बड़ाया और उसे व्यापार करने के लिए प्रेरित किया तथा दोनों ने एक अन्य राज्य में जाकर व्यापार शुरू किया और उनका व्यापार दिन दूनी रात चौगुना बढ़ता गया और वे अपनी लगन

और मेहनत से एक प्रतिष्ठित साहूकार बन गये, जबकि उस राजा के देश पर किसी पड़ोसी राजा ने आक्रमण कर दिया और उसका राज्य अपनी अधीन कर लिया। राजा और उसकी अन्य बेटियों को देश छोड़ कर भागना पड़ा। अब वे सभी छोटी लड़की की तरह भीख मांगने लगे। और भीख मांगते मांगते एक दिन उसी लड़की के दरवाजे पर पहुँचे। लड़की ने तुरंत अपने पिता-माता और बहिनों को पहचान किया और बड़े आदर के साथ अपने घर में ले आई तथा कहा कि सभी अपने-अपने भाग्य का खाते है, और नसीब से ही रहते है, कोई किसी के भाग्य का नहीं खाता। इसलिए हमें मेहनत करनी चाहिए और अपने भाग्य पर भरोसा करना चाहिए।

सिपाही-सुखविन्द्र सिंह
96 बटालियन

अहंकार

एक बार एक राज्य के एक सेठजी बहुत बीमार पड़े। उन्हें अपने बचने की आशा न रही तो सेठजी ने अपने पुत्र को बुलाकर कहा मुझे लगता है। मेरा अन्त समय आ गया है। मैं चाहता हूँ कि रूपयों के सिक्कों से मेरा तुलादान करके वह धन पंडितों को दे दो। वे उसे किसी सिद्धकार्य में लगा देंगे।

पिता की इच्छा थी और धन भी उन्हीं का कमाया हुआ था। अतः पुत्र ने अपने पिता के भार के बराबर सिक्कों से उसे तौलकर रूपयों की ढेरी विधिवत सजाकर ब्रम्हाणों को उसे स्वीकार करने के लिए आमंत्रित किया।

तभी ब्रम्हाणों की भीड़ से एक ब्राहमणों सहज भाव से आया और सिक्कों की ढेरी को निहारने लगा, उस ब्राम्हाण को देख कर पुत्र के मन में न जाने क्या भाव आया, कहने लगा पंडितजी पिताजी की इच्छा थी तुलादान की राशि ऐसे ही ब्राह्मण को दी जाए जिसे लेने की उसमें लालसा हो। वैसे भी आपने अब तक इतनी बड़ी रूपयों की राशि एक साथ एक जगह न देखी होगी कृपया ले जाइयें।

उस पंडित ने सेठजी के पुत्र को एक बार देखा और उसके मनोभाव को जाना, कहा कुछ नहीं उसने अपनी जेब से एक रूपया का सिक्का निकाला और उसे उस ढेरी पर फेंक कर पैर की एक ठोकर से उस ढेरी को बिखराकर कहा-सेठ पुत्र निश्चय ही मैने अब तक इतनी बड़ी धन की ढेरी एक साथ, एक जगह नहीं देखी, परन्तु तुमने भी ऐसा ब्राम्हण अब तक न देखा होगा जो इतनी बड़ी धन की ढेरी में अपनी जेब का भी एक सिक्का डालकर उसे पैर की ठोकर से ठुकरा दें, जिस दान से दाता के मन में अहंकार पैदा हो जाय वह उसके लिए शांतिप्रद नहीं होता है।

ब्राहमण कह कर चल दिया और उस ब्राहमण के पीछे पूरे ब्राहमण चले गये। सेठ पुत्र देखता रह गया।

सिपाही- रवीन्द्र कुमार मांझी,
67 वाहिनी

“वीर सुहाग”

टूटी थी सुईयाँ घड़ी थी इन्तजार की,
हाथों की छूटी भी ना थी मेंहदी, वो घड़ी थी प्यार की।
जोड़ा था सुहाग का, लिए कारवां अरमान का,
भरी थी मांग जिसने, वह लाल था जहान का।
कर्मठ था, देश प्रेमी था, क्रांति थी आनन पर वीर के,
रहा था ताक दुश्मन सरहद के पार एक प्रावीर के।
था ना खौफ वीर को, वो मोर्चे पर अड़ा रहा,
तान सीना माँ का प्रहरी, शस्त्र लेकर खड़ा रहा।
ईद, होली और दीवाली मनाई जाती जब देश में, लक्ष्मण सा खड़ा रहता, यह देश प्रेमी के भेष में।
झोंका एक गरम हवा का आया, सरहद के पार से,
खड़ा-खड़ा सह गया, वीर बड़े प्यार से।
आहट के होते ही दी, ललकार शस्त्र तान कर,
घुस पड़े थे दुश्मन, सरहद को पार कर।
लड़ता रहा बे खौफ, ढेर दुश्मन को किया,
खाई कसम उस आंचल की, दूध जिसका उसने पिया।
लगाकर घात दुश्मन ने उस पर, गोली का वार किया,
हंस कर के गोली को वीर ने सीने में सम्हार लिया।
भक्ति थी देश की उस हृदय में, जिसे गोली ने चीर दिया,
सो गया चिर निद्रा में, देखते ही देखते शहीद हो गया।
हाथ था तिरंगा, स्वर होंठों पर देश भक्ति के राग का

मैं धन्य हो गई, जो मस्तक पर सिन्दूर था, ऐसे सुहाग का।

उ०नि० (म०) आर०के० गांगले
ग्रु०के० भोपाल

अनमोल वचन

कानून पाप को खोज सकता है, किन्तु मिटा नहीं सकता।

नीम गुड़ के साथ खाने पर भी अपनी कड़वाहट नहीं छोड़ता,
इसी तरह नीम व्यक्ति सज्जनों के साथ रह कर भी अपनी आदत से बाज नहीं आता है।

क्रोध को वैसे ही दूर रखना चाहिए, जैसे सांप और बिच्छू को दूर फेंका जाता है।

स्वार्थ मनुष्य के ज्ञान को हर कर उसे अंधा बना देता है।

अभिमान मनुष्य को अपने दोष देखने का अवसर ही नही देता।

जब यह शरीर नश्वर है और आत्मा अमर है, तो फिर भय किसका और किसलिए।

सिपाही- श्रीकृष्ण
67 बटा०

सी०आर०पी०एफ० महान

सी०आर०पी०एफ० के, रे नौजवान,
देश है यह अपनी शान,
देश की खातिर मर मिट जाना,
सी०आर०पी० का पहला काम।

भर्ती होकर आया हूँ
सेवा करूँ दिल जान से,
आगे रख कर हर पहल को,

पूरा करूँ आभेमान से।
नमक मैंने इसका खाया हैं,
समझा नहीं पराया है,
इस खून का मैं एक-एक कतरा,
कर दूँगा मैं जान कुर्बान।
सी०आर०पी०एफ० के, रे नौजवान,
देश यह अपनी शान,
देश की खातिर मर मिट जाना,
सी०आर०पी० का पहला काम।
नीमच में इसकी जन्म भूमि हैं,
दिल्ली में हैं मेन स्थान,
डियूटी करो सच्चे मन से,
यह हमारी सच्ची आन।
करो डियूटी शान से,
हमको देती यह उपदेश,
देश के निष्ठावान रहो,
विपदा में पड़ता जब देश।
सी०आर०पी०एफ० के, रे नौजवान,
देश है यह अपनी शान,
देश की खातिर मर मिट जाना,
सी०आर०पी० का पहला काम।
सुनो प्यारे साथियों,
सदा रहना तुम सावधान,
देश के हर संकट की खातिर,
देना अपना योगदान।
यह देश की हर पल शाया है,
इसने बड़ा नाम कमाया है,
सी०आर०पी० मेरी पिता और माता है,
इसपे जाऊँ मैं कुर्बान।
सी०आर०पी० के ऐ नौजवान,
देश है यह अपनी शान,

देश की खातेर मर मिट जाना,
सी०आर०पी० का पहला काम।

हवा. कुलवन्त सिंह गिल,
124 बटा.

“सी०आर०पी०एफ० के जवां”

नहीं होने दूंगा कामयाब,
मिटा दूंगा तेरी हस्ती,
नेस्तनाबूद कर दूंगा,
नहीं होने दूंगा कामयाब,
क्योंकि सरहदों को संभाले वतन को बचाये,
मौजूद है, हम सी०आर०पी०एफ० के जवां।
किस कदर मजबूत है रिश्ता,
अपनी मिट्टी से, तुझे दिखायेंगे,
तू कारगिल में हो या द्रास में,
तुझे धूल चटायेंगे,
तू रावण बन के आ धमकाता है,
लेकिन तुझे मजा हम चखायेंगे,
क्योंकि सरहदों को संभाले वतन को बचाये,
मौजूद हम सी०आर०पी०एफ० के जवां।
यह अह्द है अपने खून से,
मस्तक पर टिका लगाऊंगा,
अपने वतन पर मिट जाऊंगा,
तुझे सबक सिखाऊंगा,
क्योंकि सरहद को संभाले, वतन को बचाये,
मौजूद हैं हम सी०आर०पी०एफ० के जवां।
नहीं खेलने दुंगा तुझे नाखॉ का खेल,

बांधे खड़ा है कफन,
हर नौजवां सी०आर०पी०एफ० का,
यह मजाक दुश्मन तू ना समझ,
यह वादा है “शशि” का।

सि० शशिकांत एफ० मोरखडे
45 बटा.

“दस मोती ज्ञान के”

01. जीवन में जीतने के लिए कोई चीज है तो वह है -प्रेम
02. पीने के लिए कोई चीज है तो वह है -क्रोध
03. खाने के लिए कोई चीज है तो वह है -गम
04. देने के लिए कोई चीज है तो वह है -दान
05. दिखाने के लिए कोई चीज है तो वह है -दया
06. लेने के लिए कोई चीज है तो वह है -ज्ञान
07. कहने के लिए कोई चीज है तो वह है -सत्य
08. रखने के लिए कोई चीज है तो वह है -इज्जत
09. फेंकने के लिए कोई चीज है तो वह है -ईर्ष्या
10. छोड़ने के लिए कोई चीज है तो वह है -मोह

विद्यार्थी और अनुशासन

सुन्दर, ऊँचे और सुदृढ़ भवन बनाने के लिए यह आवश्यक है उसकी नींव भी गहरी तथा मजबूत हो। ठीक इसी प्रकार मनुष्य का जीवन भी एक ऊँचे और सुन्दररूप में तभी खड़ा हो सकता हैं जब उसके बचपन की नीव अनुशासन के साथ मजबूत हो। व्यवस्थित तरीके से जीवन व्यतीत करना तथा नियमानुसार प्रत्येक कार्य करना ही

अनुशासन है। विद्यार्थी जीवन ही जीवन का नींव है। विद्यार्थी शब्द का अर्थ है-विद्या को ग्रहण करने वाला। विद्यार्थी के जीवन में अनुशासन का बड़ा ही महत्व है। अनुशासन केवल विद्यार्थी तथा विद्यालय तक सीमित नहीं है अपितु यह सम्पूर्ण समाज में दिखाई देता है। ज्ञान तथा अनुशासन परस्पर संबंध रखते हैं। आज के युग में विद्यार्थियों के अन्दर अनुशासन की कमी दिखाई दे रही है। जिससे उनके प्रति समाज चिन्तित दिखाई दे रहा है। लेकिन क्या हम यह भूल गये हैं? कि हमारे छात्र भी समाज के अंग हैं तथा उनकी क्या क्या समस्या है? उस पर भी विचार किया जाना चाहिए। विद्यार्थियों को अपने विद्यालय में अनुशासन का पालन करना होता है। नियमों का पालन करके ही अनुशासन में रहने वाले छात्र आदर्श विद्यार्थी कहे जाते हैं। परन्तु आजकल वे अनुशासन का उल्लंघन करते हैं, यहां तक कि अपने माता-पिता तथा गुरुजनों की आज्ञा का पालन नहीं करते हैं। जिसको देखकर बुजुर्ग लोग कहते हैं कि वे लोग अपने जमाने में बहुत अनुशासन प्रिय थे, परन्तु आज के लोगों में कोई अनुशासन दिखाई नहीं दे रहा हैं। जो विद्यार्थी अनुशासन का पालन करता है, वही आदर्श विद्यार्थी होता है। संयमित और नियमित जीवन व्यतीत करने वाला विद्यार्थी सांसारिक आकर्षणों से अलग होकर, इन्द्रिय-निग्रह कर अपनी सम्पूर्ण शक्ति अध्ययन में लगाता है। परन्तु आजकल के विद्यार्थी फेशन के प्रति आकर्षित होकर अपने उद्देश्य से भटक रहे हैं। वर्तमान में विद्यार्थियों को चाहिए कि वे अपने इंन्द्रियों पर संयम बनाकर संपूर्ण ध्यान अपने अध्ययन में लगायें, तभी हमारा समाज सुधर सकता हैं। विद्यार्थी के जीवन की सफलता का मुख्य आधार है-अनुशासन। हमारे युवक यदि जीवन में अनुशासन का पाठ नहीं पढ़ेंगे, तो वे आगे चलकर कोई काम व्यवथित रूप से नहीं कर सकेगें।

आज के विद्यार्थी कल राष्ट्र के कर्णधार बनेंगे। आदर्श विद्यार्थी ही समाज की रचना करगें। अतः यह आवश्यक है कि विद्यार्थी अनुशासन से रहना सीखें और राष्ट्र का सच्चा कर्णधार बनें।

रवि कुमार चौबे,
कक्षा-9, सीआरपीएफ पब्लिक
स्कूल, रंगारेड्डी

बाल मजदूरी

गरीबों की मजबूरी।
है यह बाल मजदूरी।
बच्चा बच्चा काम करेगा।
तब इनका पेट भरेगा।

कोइ करता तेल मालिश।
कोई करता जूते पालिश।
कोई बर्तन माँजता हैं।
कोई भीख माँगता हैं।
गरीबों को मजबूरी।
है यह बाल मजदूरी।
सरकार इनका भला चाहती।
बच्चों के कार्यक्रम चलाती।
हम सब इनका प्रचार करेगें।
बचपन इनका लौटाएगें।

मनोज गोस्वामी, कक्षा-10
सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल
जवाहर नगर, रंगारेड्डी।

कर्म करों

पीछे कभी मत देखना यारो,
आगे कर्म करना प्यारो,
कर्म करने से फल मिलेगा,
तू अंधेरे से आगे बढ़ेगा।
कभी मत डरना मेहनत से,
कर्म दुनिया की मंजिल हैं,
ये दुनिया को आगे बढ़ाती,
दुनिया में खुशहाली लाती।
अगर दुनिया में आगे बढ़ना है,
हिंसा से मत लेना काम,
सदा भलाई करते रहना,
दुनिया करेगी तुझे सलाम।
सदा देश के हित करना कर्म,

छोड़ देना मन के भ्रम,
दुनिया तेरे पाँव पूजेगी,
तुझको हरदम याद करेगी।

गोविन्द कुमार चौधरी
कक्षा-8, केरिपुबल, पब्लिक स्कूल, रंगारेड्डी

मिट्टी का कर्ज

मैं हूँ धरती,
सब चलते हैं मुझपर, हुकूमत भी करते हैं,
सबके सहती पद-प्रहार फिर भी,
मैं हूँ धीरज धरती,
मैं हूँ माता धरती।
सोना उगलूँ, चाँदी उगलूँ,
खेत भरूँ, खलिहान भरूँ,
अन्तस्तल के खनिजों का,
भण्डार तुम्हें भी दान करूँ।
तुम खेलों गोदी में मेरी,
फूलो-फलो गोदी में मेरी,
पर याद रखो जब जुदा हो सांसें,
न हो जाऊँ वीरान गली में,
मेरा कर्जा तुम-सिर रहता,
मैं तो हूँ चुप रहती,
मैं हूँ माता धरती।
दुश्मन को बन्दूक की नली,
छलनी कर दे मेरी छाती,
खंजर भौंके तन पर मेरे,
बना मेरे सुत को हो साथी,

क्या देख सकोगे चीर-हरण,
सीता-हरण चुपचाप खड़े?
मैं लुटती रहूँ और पुत्र मेरे
द्वार बन्द कर खड़े रहें?
कायरता अब लेश न पालो,
आपस का मतभेद मिटा लो,
वरना अतीत दुहराओगे तुम,
माँ को आज बचा लो,
मैं तो मूक नहीं मुख मेरा,
कुछ कह सकती, न कहती
सदियों से चुपचाप पड़ी
मैं माँ हूँ तेरी धरती।

नौरा चौहान
अध्यापिका, सी.आर.पी.एफ.
पब्लिक स्कूल, जवाहर नगर

अपील

प्रिय पाठकों

सी.आर.पी.एफ. समाचार पत्रिका केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के सभी यूनिटों में जवानों तथा अधिकारियों के बीच सूचनाओं के आदान-प्रदान का एक सशक्त माध्यम है। इसके माध्यम से जहां न केवल हम पाठकों को बल से संबंधित अधिक से अधिक जानकारी प्रदान करने का प्रयास करते है वहीं पाठकों के लिए इसमें रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक सामग्री का समावेश भी करने की कोशिश करते हैं। किंत अच्छी सामग्री के अभाव में पत्रिका के स्तर को बनाए रखने में वर्तमान में कुछ समस्या आ रही हैं।

अतः अपने प्रिय पाठकों से हमारा निवेदन है कि अगर उनकी लेखन में रूचि है तो वे अपनी कविताएं कहानियां, लेख, संस्मरण, हास्य व्यंग तथा अन्य सामग्री हमें प्रकाशन के लिए भेजें। पत्रिका में हम अपने चिकित्सक साथियों से भी चिकित्सा संबंधी लेख आमंत्रित करते हैं, इससे न केवल हमारे पाठकों का ज्ञानवर्द्धन होगा अपितु बल की इस पत्रिका को भी हम विचारों के आदान-प्रदान का एक उपयोगी मंच बना पाएंगे। आशा है पत्रिका के स्तर को सुधारने के लिए हमें पाठकों की ओर से

शीघ्र ही उनकी रचनाएं प्राप्त होंगी।

आपका
मुख्य संपादक, सी.आर.पी.एफ. समाचार

पत्रिका सी.आर.पी.एफ. समाचार के स्वामित्व एवं प्रकाशन से सम्बन्धित अन्य विवरण

(रजिस्ट्रेशन आफ न्यूजपेपर्स सैंट्रल रूलस् के फार्म IV के नियम 8 के अधीन)

1. प्रकाशन का स्थान	–नई दिल्ली
2. प्रकाशन की अवधि	–वर्ष में आठ बार
3. प्रिंटर का नाम	–डी.जी. महापात्र
4. नागरिकता	–भारतीय
5. पता	–ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड़, नई दिल्ली-110 003
6. प्रकाशन का नाम, नागरिकता और पता	–डी.जी. महापात्र, भारतीय, ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स, लोधी रोड़, नई दिल्ली-110 003
7. संपादक का नाम, पता और नागरिकता	–डी.जी. महापात्र, भारतीय, ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स, लोधी रोड़, नई दिल्ली-110 003
8. उन लोगों के नाम व पते जो अखबार के मालिक या हिस्सेदार हों या जिनके पास पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के शेयर हो।	–महानिदेशक, के.रि.पु.बल, ब्लाक-1 सी.जी.ओ. काम्पलेक्स लोधी रोड़, नई दिल्ली-110 003

मैं डी.जी. महापात्र एतद् द्वारा घोषणा करता हूं कि ऊपर दिए गए विवरण मेरी जानकारी व विश्वास के आधार पर पूर्णसत्य हैं।

31 मई, 2003.

ह.
डी.जी. महापात्र
प्रकाशक के हस्ताक्षर



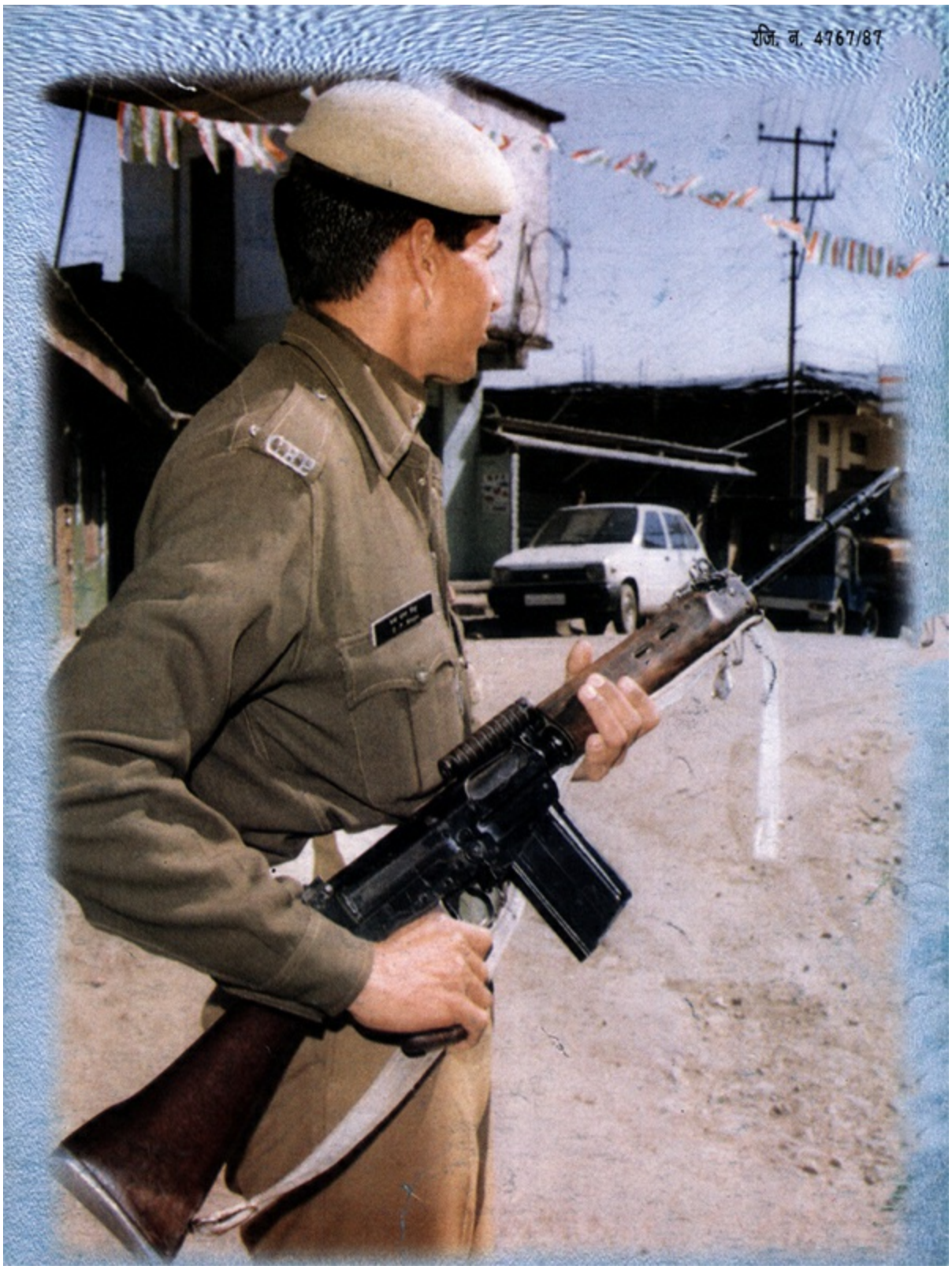
*88 (*म०*)* बटालियन में आयोजित समारोह में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क बल के कार्मिक को प्रदान करते हुए उत्तरी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री पद्मन सिंह एवं बटालियन कमान्डेंट श्री पी.पी. सिंह



राष्ट्रीय एकता एवं साम्प्रदायिक सौहार्द बनाये रखने में केरिपुबल की भूमिका विषय पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता की विजेता उप निरीक्षक आशिता एस को ट्राफी प्रदान करते हुए दक्षिण सेक्टर के पुलिस

महानिरीक्षक श्री पी.एन. रामकृष्णन

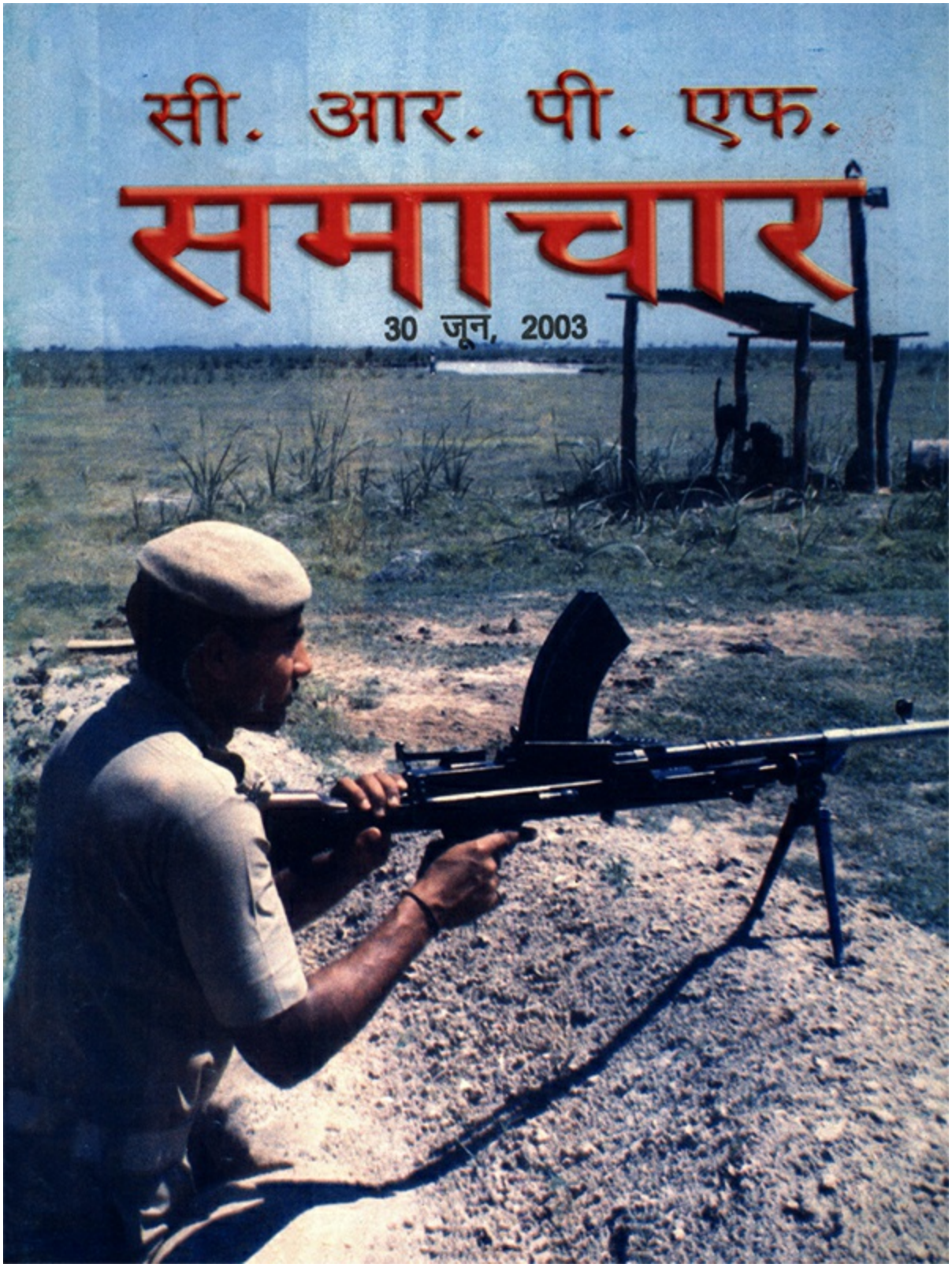
रजि. न. 4767/87



सी. आर. पी. एफ.

समाचार

30 जून, 2003





बल के महानिदेशक श्री एस.सी. चौबे अनौपचारिक रूप से केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री राजनाथ सिंह से मुलाकात करते हुए



बल के महानिदेशक श्री एस.सी. चौबे अधिवर्षिता पर सेवा निवृत्त हुए दक्षिणी सेक्टर के पुलिस महानिरीक्षक श्री पी.एन. रामकृष्णन को बल मुख्यालय में आयोजित समारोह में स्मृति चिन्ह प्रदान करते

हुए



सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खण्ड-16 अंक-4
30 जून, 2003
9 आषाढ़, शक 1925

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
रणबीर सिंह

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं यूनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशालय के.रि.पु. बल ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से
डी.जी. महापात्र

कम्पोजिंग एवं प्रिंटिग
सी.आर.पी.एफ. प्रेस नई दिल्ली-110072

सम्पादकीय सलाहकार मण्डल अध्यक्ष
हिमांशु कुमार, अपर महानिदेशक

सदस्य

विक्रम श्रीवास्तव, महानिरीक्षक (कार्मिक एवं मुख्यालय)
राजेन्द्र सिंह, उप महानिरीक्षक (कार्मिक)
डी.एन.एस. बिष्ट, उप महानिरीक्षक (परिचालन)
पी.जे. शेट्टी, उप महानिरीक्षक (प्रशा)
सी.बी. मैथ्यू, अपर उप महानिरीक्षक (प्रशि.)
प्रवीण कुमार, उप वित्तीय सलाहाकार
एम.एस. नेगी, कमान्डेंट (एम.टी.)

डॉ.जी. महापात्र, जनसम्पर्क अधिकारी
मणि भूषण प्रसाद, हिंदी अधिकारी

इस अंक में

- क्या केरिपुबल एक बहुआयामी बल है
- मौत का फरमान एड्स
- आन्तरिक सुरक्षा अकादमी में धूम्रपान निषेध दिवस
- चुनौती भरे दायित्व निभाने के लिए सघन प्रशिक्षण जरूरी
- नए स्थान पर तैनाती से पूर्व परिचितीकरण प्रशिक्षण जरूरी
- बल के सामाजिक कार्यक्रम
- आर०टी०सी० नीमच में नवारक्षियों की दीक्षांत परेड,
- बल के महानिदेशक द्वारा सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल के मेधावी छात्रों का सम्मान
- सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल रोहिणी ने लगाया ग्रीष्म कालीन कैम्प
- परिचालनिक उपलब्धियां
- बल की उपलब्धियाँ
- भारतीय समाज में मानव अधिकारों की भूमिका
- तीसरी सिग्नल बटालियन में नई बैरिक व क्वार्टर गार्ड का उद्घाटन
- कहानी एवं कविताएं

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

- संपादक

क्या केरिपुबल एक बहुआयामी बल है

- चन्द्र मोहन बक्शी
अपुउमनि, स्पेशल सेक्टर

देश में आन्तरिक सुरक्षा व्यवस्था को कायम रखने के लिए कार्यरत केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल देश का सबसे बड़ा अर्द्ध सैनिक बल है। कार्य, संरचना और तैनाती की दृष्टि से यह अखिल भारतीय स्तर का फोर्स है। इसमें देश के हर हिस्से, प्रान्त, समुदाय, जाति, वर्ग, भाषा एवं बोली के लोग कार्यरत हैं और बिना किसी भेद-भाव के आपस में मिलकर तथा अनुशासनबद्ध होकर कार्य को अंजाम देना इसकी खासियत है। बहुआयामी बल होने का परिचय मात्र इस एक वाक्य से मिलता है कि प्यार से लोग सी.आर.पी. को चलते रहो प्यारे कहते हैं। स्टेशन अथवा बस अड्डे पर बल के जवानों को खाकी वर्दी पहने सी.आर.पी.एफ. के लोहे के बाक्स एवं हथियार के साथ देखा जा सकता है। इसलिए गतिशीलता इसकी खास पहचान है। यह सर्वाधिक प्रभावशाली केन्द्रीय पुलिस बल है जो राज्यों को कानून व्यवस्था बनाये रखने में सर्वाधिक मदद देता है। क्राउन रिप्रजेन्टेटिव पुलिस से केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के लगभग 64 वर्षों के सफर में यह बल विभिन्न ड्यूटियों को अंजाम देता आया है। प्रारम्भ में केरिपुबल को कानून व व्यवस्था बनाये रखने में रजवाड़ों की सहायता करने की जिम्मेदारी दी गई थी किन्तु बाद में धीरे-धीरे जिधर देखो उधर केरिपुबल की ही मांग होती गई यही इसके बहुआयामी होने की पुष्टि करता है। आतंकवाद विरोधी प्रमुख परिचालन कार्रवाईयों के साथ-साथ केरिपुबल द्वारा की जा रही कुछ प्रमुख ड्यूटियों का विवरण इस प्रकार है जो इसके बहुआयामी होने का स्पष्ट प्रमाण है :-

किसी भी राज्य में आन्तरिक शान्ति स्थापित किये जाने में राज्य सरकार नाकाम रहती है तो इसके लिए केन्द्र सरकार से सहायता मांगी जाती है और केन्द्र सरकार द्वारा केन्द्रीय पुलिस बल को इस कार्य के लिए तैनात किया जाता है। यदि किसी राज्य में चुनाव करवाये जाने है तो इसके लिए भी केरिपुबल जैसे अर्द्ध सैनिक बल को ही जिम्मेदारी सौंपी जाती है। देश की आन्तरिक सुरक्षा ड्यूटी के साथ साथ श्रीलंका, कम्बोडिया एवं कोसोवो इत्यादि जैसे देशों में भी केन्द्र सरकार द्वारा शांति व्यवस्था कायम करने के लिए केरिपु बल को इसकी उच्चकोटि की कार्य प्रणाली के लिए तैनात किया जाता रहा है एवं किया जा रहा है।



हाल ही में नागालैंड में सम्पन्न हुए विधान सभा चुनावों में सुरक्षा ड्यूटी पर तैनात केरिपुबल का जवान

भूकम्प, महामारी, बाढ़, तूफान, सूखा, अग्निकांड, रेल/सड़क/वायुयान दुर्घटना आदि जैसे प्राकृतिक आपदाओं के समय भी केरिपु बल को राहत एवं बचाव के लिए तैनात किया जाता है। यह समय-समय पर सिविल प्रशासन के साथ चिकित्सा कैम्प लगाकर मानव जीवन की रक्षा करता है।

जम्मू कश्मीर जैसे राज्य की आन्तरिक सुरक्षा का जिम्मा बी.एस.एफ. से हटाकर केरिपु बल को हस्तांतरित करने की कार्रवाई चल रही है। जम्मू कश्मीर में विशिष्ट व्यक्तियों की सुरक्षा एवं पर्यटन स्थलों की सुरक्षा की जिम्मेदारी भी केरिपुबल को सौपी जाती रही है।

प्रेरणादायक प्रसंग

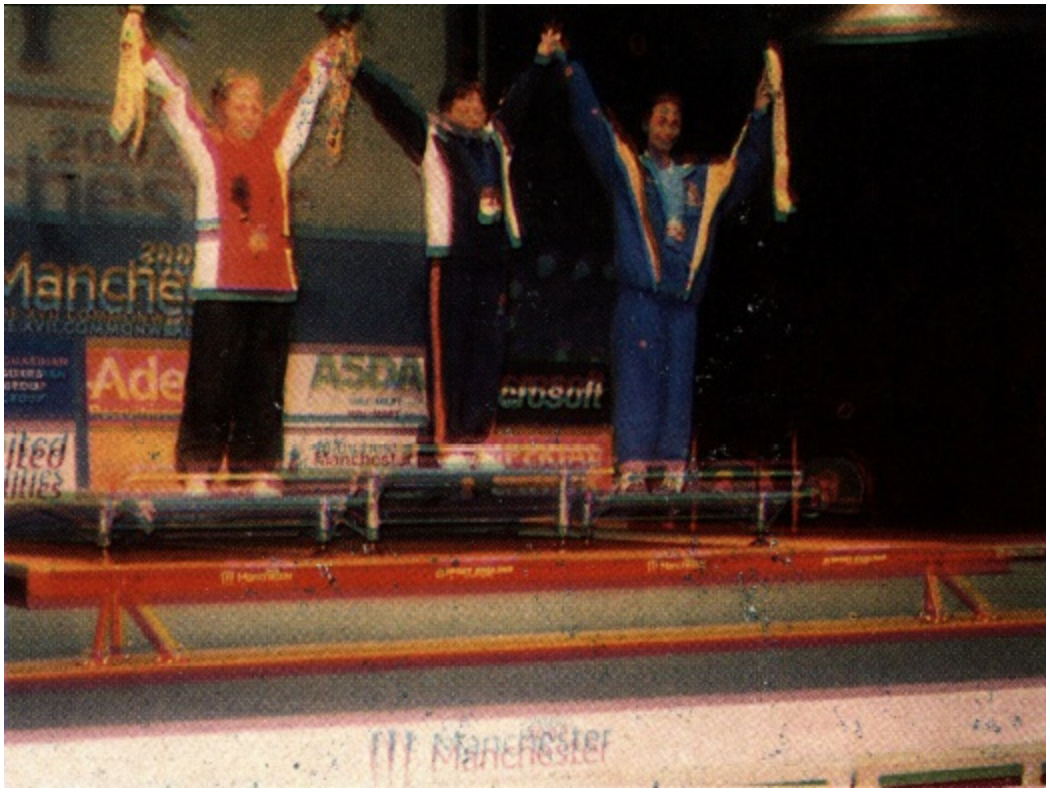
के.रि.पु.बल के इतिहास पर नजर डाले तो स्पष्ट होता है कि इसके जवानों में देश प्रेम की भावना इस कदर भरी है कि अपनी जान की परवाह किये बिना देश की सुरक्षा एवं व्यवस्था को बनाये रखने में अपनी जान की बाजी लगा देते हैं जिसका प्रमुख उदाहरण : स्व. सि० श्रीमती कमलेश कुमारी, जिसने आंतकवादियों को संसद भवन में घुसने से रोकने के लिए अपनी जान की आहुती दे दी। केरिपुबल में कार्यरत विभिन्न जाति एवं धर्मों के लोगों ने बिना किसी भेदभाव के एक साथ प्रेमभावना के साथ रहकर समय-समय पर एक दूसरे की खुशियों में शामिल होकर सामाजिक एकता एवं भाईचारे की प्रेरणा प्रस्तुत की है।

बल के कार्मिकों द्वारा कायम की गई विभिन्न मिसालें :- अपने 64 वर्ष के इतिहास में केरिपुबल ने कई उतार-चढ़ाव देखे हैं। इस दौरान फोर्स ने अनेकों मिसालें कायम की हैं जो सदैव स्मरणीय एवं बल के गौरवशाली इतिहास के स्वर्ण पन्नों में हमेशा दर्ज रहेंगी। 1942-44 के प्रारम्भिक वर्षों में हुए उत्पात से प्रभावशाली ढंग से निपटने के लिए इस बल ने खैरपुर दरबार से काफी प्रशंसा पायी थी। आजादी के समय देशी राजे-रजवाड़ों को भारत संघ में शामिल कराने में इस बल ने अहम् भूमिका निभायी। आजादी के तत्काल बाद इस बल को भारत-पाकिस्तान के बीच बनी सीमा पर घुसपैठ और सीमा पार से होने वाले अपराधों की रोकथाम के लिए तैनात किया गया। 1957 में इस बल को भारत तिब्बत सीमा के लद्दाख क्षेत्र में तैनात किया गया। जहाँ हॉट-स्प्रिंग में 21 अक्टूबर, 1959 को एक बहुत बड़ी चीनी सैनिकों की टुकड़ी का सामना करते हुए बल के 10 वीर जवान शहीद हुए। उनके बलिदान स्थल पर निर्मित शहीद स्मारक आज भी हम उनके शौर्य का सत्त स्मरण कराता है। प्रतिवर्ष भारतीय पुलिस के विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधि 21 अक्टूबर को शहीद स्मृति दिवस पर वहाँ जाकर इन वीर जवानों को अपनी श्रद्धांजलि देते हैं।



उड़ीसा में आए विनाशकारी महा चक्रवात के दौरान पीड़ितों की सहायता करते बल के कार्मिक

1962 के चीनी हमले और 1965 और 1971 के भारत-पाक युद्धों में भी केरिपुबल जवानों ने सेना के साथ कंधे से कंधा मिलाकर दुश्मन के हर हमले का जवाब बड़ी वीरता के साथ दिया। 1956 में केरिपुबल को मिजोरम में विद्रोहात्मक स्थितियों से निपटने के लिए तैनात किया गया। इसके अलावा 1959 में जब नागा नेता फिजो ने विद्रोह की आवाज बुलंद कर मारो और भागो की गुरिल्ला रणनीति का सहारा लिया तो इससे निपटने के लिए केरिपुबल की बटालियनों को भेजा गया। इस विद्रोह के विरूद्ध लड़ते हुए केरिपुबल ने कई कुर्बानियाँ दी। 70 के दशक के अंत में जब त्रिपुरा और मणिपुर में भी आंतकवादियों ने अपनी गतिविधियों से शांति-व्यवस्था भंग करनी चाही तो वहाँ भी इन गतिविधियों पर काबू पाने के लिए केरिपुबल को तैनात किया गया और देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए बल के कई बहादुर जवानों ने अपने प्राणों की आहुति दी। 1988 से अबतक उत्तर पूर्वी राज्यों में शान्ति व्यवस्था रखने के एवज में बल के 377 वीर जवान और अधिकारी अपने प्राणों की आहुति दे चुके हैं।



गत वर्ष मानचेस्टर में आयोजित कॉमन वेल्थ खेलों में भारोत्तोलन प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीतने के बाद पदक दिखाती हुई बल की सहायक कमांडेन्ट सुश्री कुंजा रानी देवी

1980 के दशक के प्रारम्भ में आतंकवाद के जहरीले नाग ने पंजाब में भी अपने फन उठाने शुरू कर दिये थे। आतंकवाद के इस फन को कुचलने की जिम्मेदारी का काफी बड़ा हिस्सा केरिपुबल के पास ही था। अपनी इस जिम्मेदारी का निर्वाह करते

हुए केरिपुबल के जवानों ने भारी संख्या में अपने प्राणों की आहुति दी। पंजाब में आंतकवाद के दौर में बल के 192 वीर जवान और अधिकारी वीरगति को प्राप्त हुए और अन्ततः वहाँ आतंकवाद का सफाया करने में केरिपुबल ने एक मिसाल कायम की।

1988 से अब तक जम्मू-कश्मीर की स्थिति अत्यन्त गंभीर हो उठी। आतंकवादी, बैंक लूटने, तोड़फोड़, बम विस्फोट तथा बेगुनाहों की हत्याओं तथा सुरक्षा बलों पर हमले करने जैसी वारदातों को अंजाम देने लगे। केरिपुबल पिछले चार दशकों से जम्मू-कश्मीर पुलिस के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कानून व्यवस्था की जटिल समस्याओं से जूझ रहा है। आतंकवादी गतिविधियों के कारण राज्य पुलिस पूरी तरह पंगु हो गई थी। अतः आतंकवादियों के विरूद्ध स्वतंत्र मुहिम चलाने की जिम्मेदारी केरिपुबल को सौंपी गई। यहाँ भी केरिपुबल ने कर्तव्य पराणयता एवं वीरता की कई मिसालें कायम की हैं।

अभी हाल ही में बहादुरी के लिए बल के 14 कार्मिकों को शौर्य पदक प्रदक किये गये है जो बल के अन्य कार्मिकों के लिए वीरता की मिसाल है। सिपाही पृथ्वी सिंह 120 बटा., स्व० उनि. एम.एस. बिष्ट 120 बटा., कमान्डेण्ट श्री आर.पी.एस. राणा 39 बटा., हवलदार जी.पी. सिंह 39 बटा, सि/बिगु. एम.पी. सिंह 39 बटा., सिपाही मूल सिंह 112 बटा., सहा.कमा. के.एस. राणा 6 बटा., हवलदार ह्दय राम 6 बटा, सिपाही उत्पल देव 6 बटा., सिपाही गनेश कुमार 128 बटा., स्व. सि. एस.के. दास 28 बटा., स्व. सि. अशोक कुमार 28 बटा., सिपाही निर्मल प्रकाश 136 बटा., सिपाही लखविन्द्र सिंह 50 बटा.

खेल :- केरिपुबल ने अनेकों प्रतिभावान एवं विश्व स्तर के उच्च कोटि के उत्कृष्ट खिलाड़ी तैयार किये जिन्होंने देश एवं विदेश में ख्याति अर्जित करके बल को सम्मान एवं प्रशंसा दिलाई है। एथलीट सर्वश्री जी.एस. रंधावा, आर.एस. बल एवं हरि चन्द, तैराक खजान सिंह, राजा राम टोकस एवं राधाकृष्णन, भारोत्तोलन में सुश्री कुंजारानी देवी, जीवन ज्योति, मणितोम्बी देवी तथा नीलम लक्ष्मी, मैराथन दौड़ में निरीक्षक रागजेन अंगमो ने खेल जगत में महान् उपलब्धियाँ हासिल कर देश का नाम ऊँचा किया है।

कलकत्ता में वर्ष 1998 में आयोजित ओपन ऐथलेटिक चैम्पियनशिप में सहा/कमा. परमजीत सिंह ने 400 मीटर की दौड़ में फ्लाइंग सिख मिल्खा सिंह के 38 वर्ष पुराने रिकार्ड को तोड़ते हुये एक नया राष्ट्रीय रिकार्ड बनाया एवं स्वर्ण पदक प्राप्त किया। वर्ष 1998 में बैंकाक में आयोजित 13 वें एशियान खेलों में उन्होंने रिले टीम में रजत पदक व 400 मीटर में कांस्य पदक अर्जित किया। 47 वीं अखिल भारतीय पुलिस मीट 1998 में केरिपुबल की महिला एथ्लेटिक टीम ने चैम्पियनशिप का खिताब हासिल किया।

केरिपुबल के श्री जी.एस. रंधावा (धावक), कमाण्डेण्ट (सेवानिवृत्त), श्री हरिचन्द (धावक), द्वि.क.अ. (सेवानिवृत्त), श्री आर.एस. बल (धावक), द्वि.क.अ., श्री परमजीत

सिंह (धावक) सहा/कमा. को ऐथलेटिक में, श्री खजान सिंह (तैराक) कमा. को तैराकी में एवं सुश्री कुंजारानी देवी (भारोत्तोलक), सहा/कमा., श्रीमती निरीक्षक/म.एन. लक्ष्मी (भारोत्तोलक), निरीक्षक/मं सोनामाचा चानू (भारोत्तोलक) को भारोत्तोलन में उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन एवं महान उपलब्धि के लिये अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।

मौत का फरमान एड्स

- डा० के०के० सैनी
निदेशक (चिकित्सा)

एडस एक घातक रोग है जिसके बारे में आम आदमी को बहुत सारी गलतफहमियाँ रहती हैं। यह रोग कैसे होता है और इसके क्या लक्षण हैं तथा इसके बचाव के क्या क्या तरीके हैं।

एडस क्या है ?

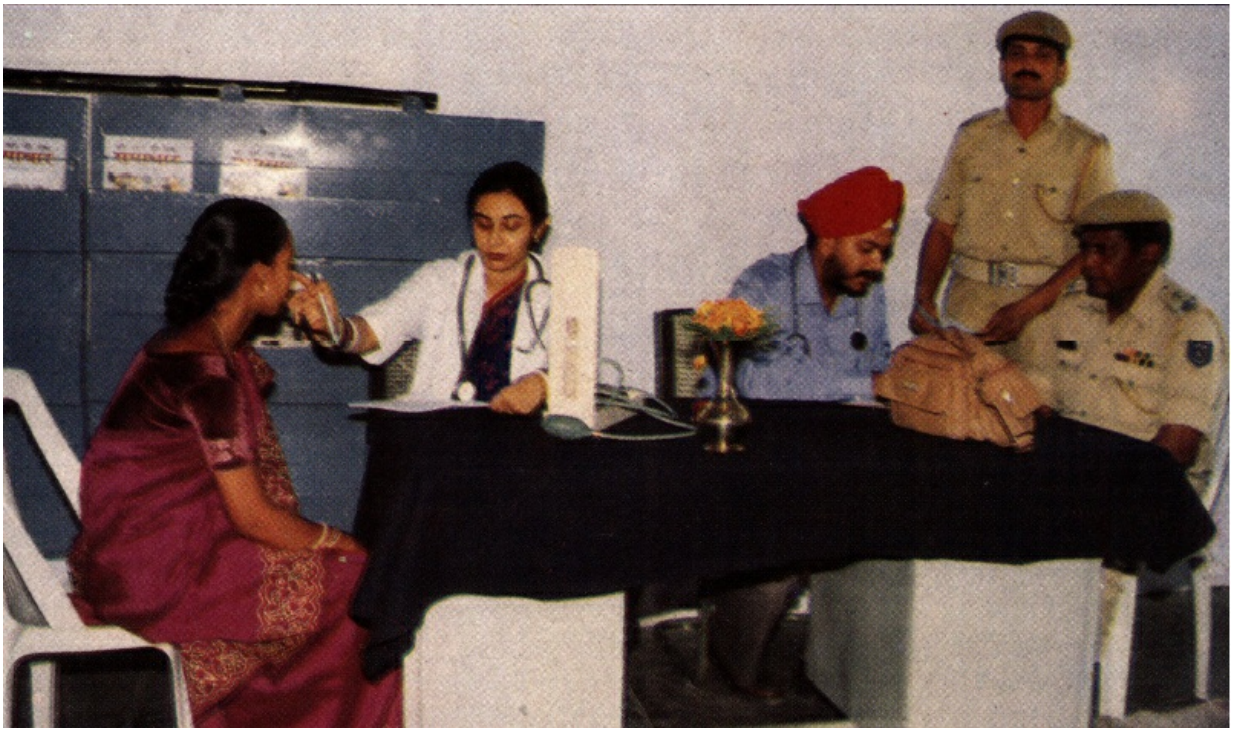
एड्स अर्थात् एक्वायर्ड इम्मयूनो डिफिशियेन्सी सिन्ड्रोम, एक ऐसी बीमारी है जिसके कारण शरीर की रोधक प्रणाली काफी हद तक नष्ट हो जाती है और रोगी बाहरी जीवाणुओं के आक्रमण का सामना नहीं कर पाता है। यह हयूमन इम्मयूनो डिफिशियेन्सी वायरस के कारण होता है। कोई भी एच०आई०वी० से ग्रस्त व्यक्ति ही इस रोग को फैलाता है। कुछ समय के बाद एच०आई०वी० पोजीटिव से ग्रस्त व्यक्ति को एड्स हो सकती है। इसके उभरने में 10 वर्ष या उससे अधिक समय भी लग सकता हैं और कुछ मामलों में इसके लक्षण विकसित नहीं हो पाते हैं। अधिकांशतः इससे प्रभावित व्यक्ति को इस रोग का पता नहीं चल पाता है क्योंकि इसके लक्षणों को विकसित होने में काफी लम्बा समय लगता है| एक बार इससे संक्रमित हो जाने पर इसका कोई इलाज नहीं है। इस घातक रोग से बचने का एक मात्र उपाय सावधानी बरतना है।

एड्स होने के कारण ?

एड्स वायरस की वजह से होता है जो रक्त की सफेद कोशिकाओं को दूषित करता है। इस वायरस से हर व्यक्ति को पूर्ण विकसित रूप में रोग नहीं होता है। कुछ ऐसे व्यक्ति भी होते हैं जिनमें वायरस होने के बावजूद सिन्ड्रोम में विकसित नहीं होते हैं।

आरांम्भिक संकेत एवं लक्षण :-

बड़ी तेजी से तथा अप्रत्याषित रूप से वजन में कमी होना; ग्रन्थियों का सूज जाना, ज्वर तथा स्वप्नदोष और बेचैनी रहना, पानी जैसा दस्त लगातार होना, मुख और मूत्रनली का श्लैष्मिक झिल्ली में संक्रमण



विश्व स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर स्टेशन अस्पताल नीमच मैं बल कार्मिकों के स्वास्थ्य की जांच करते हुए चिकित्सा अधिकारी



मानवीय सहायता स्वरूप रक्त दान करती हुई बल की महिला कर्मी

किस तरह से फैलता है :-

एच०आई०वी० से ग्रस्त व्यक्ति के साथ संभोग से, संक्रमित व्यक्ति के रक्त/रक्त उत्पाद को चढ़ाने से, पीड़ित माँ से नवजात शिशु में, गैर रोगाणु मुक्त सुई से इन्जेक्शन लगाने से।

उपरोक्त के अतिरिक्त निम्नलिखित कारणों से भी यह रोग हो सकता हैः-

रोग ग्रस्त व्यक्ति द्वारा प्रयोग किये गये ब्लेड/रेजर का शेविंग/कटिंग के लिये प्रयोग करने से, ऐसे शल्य उपकरणों/सुईयों की सफाई/धुलाई में लापरवाही करना जिनका संक्रमित/ दूषित रक्त से संपर्क रहा हो, संक्रमित व्यक्ति की शल्यचिकित्सा के दौरान डाक्टरों/नर्सों को, संक्रसित व्यक्ति का दंतब्रुश उपयोग करने से, संक्रमित व्यक्ति के रक्त यौनिस्राव तथा वीर्य से सने हुए कपड़ों को लापरवाही व अनुचित रूप से उपयोग करना।

रोकथामः-

असुरक्षित यौन संबंध से बचें तथा यौन सबंध केवल जीवन साथी से रखें, समलैगिक होने से बचे, मान्यता प्राप्त स्वास्थ्य संस्थान के सिवाय किसी दूसरी जगह से इन्जेक्शन लेने से बचें। यह सुनिश्चित कर लें कि उपकरणों को भली भांति विषाणुमुक्त कर दिया गया है अथवा डिसपोजेबल सीरिंज का प्रयोग किया गया है। जिस रक्त या रक्त उत्पाद की जांच नहीं हुई है उसे चढ़वाने के लिये कभी भी

स्वीकार नहीं करें। सुनिश्चित कर लें कि आपके रेजर/ब्लेड की अदला बदली किसी दूसरे के साथ तो नहीं होती है। आप अपने किट का उपयोग करते हैं। यदि आप नाई की सहायता लेते हैं तो सुनिश्चित करले कि औजार साफ हैं रोगाणुमुक्त हैं तथा डिसपोजेबल ब्लेड का प्रयोग किया गया है, मेडिकल स्टाफ तथा अन्य को संक्रमित व्यक्तियों से व्यवहार करते समय तथा संक्रमित व्यक्तियों द्वारा प्रयोग किये हुए दूषित लिनेन संभालते समय उचित एवं सावधानी पूर्वक कदम उठाएं, अन्य व्यक्तियों के टूथ ब्रुश का उपयोग न करें।

ध्यान देने हेतु बातें:-

इस बीमारी से अनावश्यक रूप से भयभीत नहीं होना चाहिए क्योंकि एच०आई०वी० पाजिटव/एड्स जैसे मामलों वाले व्यक्तियों के साथ सामान्य रूप से सम्पर्क में आने से एड्स नहीं फैलता है :

हाथ मिलाने से, स्पर्श से, बातचीत करने से, एक ही घर में रहने से, एक ही कक्षा में साथ-साथ बैठने से, एक साथ बैठने एवं खाना खाने से, साझे स्नानघर तथा शौचालन के इस्तेमाल से, खांसने या छींकने से, एक साथ खेलने से, कीड़े मकोड़े के काटने से, कार्यालय आदि से उपकरणों के साझे इस्तेमाल से।

आन्तरिक सुरक्षा अकादमी में धूम्रपान निषेध दिवस

- एम.पी. नथैनियल
अपर पुलिस उप महानिरीक्षक

माउंट आबू, 31 मई, 2003 को धूम्रपान करने वाले को चेतावनी देते हुए आन्तरिक सुरक्षा अकादमी, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के अपर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री एम.पी. नथैनियल ने बताया कि इससे कैंसर सहित अनेक रोगों के होने की पूरी संभावना बनी रहती है। अकादमी में आयोजित धूम्रपान निषेध दिवस पर वे अकादमी के अधिकारियों और जवानों को सम्बोधित कर रहे थे।

एक अंग्रेजी कहावत का रूपातंर करते हुए उन्होंने बताया कि सिगरेट के एक ओर आग है तो दूसरी ओर वे मूर्ख लोग हैं जो यह जानते हुए भी कि धूम्रपान सेहत के लिए हानिकारक है, उसका सेवन करते हैं। उन्होंने बताया कि संसार की तुलना में अपने देश में तंबाकू का सेवन करने वालों की संख्या अधिक है। मुंह के कैंसर से पीड़ित रोगियों में अधिकतर संख्या तंबाकू का सेवन करने वालों की ही है।



धूम्रपान निषेध दिवस के अवसर पर आयोजित सम्मेलन में व्याख्यान देते आन्तरिक सुरक्षा अकादमी माउन्ट आबू के अपुउमनि श्री एम पी नथैनियल



आन्तारेक सुरक्षा अकादमी माउन्ट आबू में धूम्रपान निषेध दिवस के अवसर पर लगाई गई चित्रकला प्रदर्शनी को देखते हुए बल के कार्मिक

इस अवसर पर एक पोस्टर पेंटिंग प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया जिसमें सहायक कमांडेंट आर.एस. अपर्णा की पेंटिंग को सर्वप्रथम घोषित किया गया। लगभग 35 पोस्टर इस प्रदर्शनी में लगाए गए थे। अधिकारियों एवम जवानों ने इन पोस्टरों को सराहा और बहुत प्रभावित हुए।

चुनौती भरे दायित्व निभाने के लिए सघन प्रशिक्षण जरुरी

- हरी राम सिंह
कमांडेन्ट 144 बटालियन,



बटालियन की प्रगति के लिए सर्वधर्म प्रार्थना सभा में भाग लेते हुए *144* बटालियन के अधिकारी व जवान

देश में बढ़ती हुई अराजकता एवं आतंकवाद से निपटने के लिये वोहरा कमेटी की सिफारिशों के अनुसार के०रि०पु०बल द्वारा आन्तरिक सुरक्षा एवं काउन्टर इंसर्जेंसी की एकल जिम्मेदारी के निर्वहन के लिये आगामी पांच वर्षों में क्रमवार 65 नई बटालियन गठित की जानी हैं। इसी विस्तार की कड़ी में गृह मंत्रालय की स्वीकृति के तहत 13 नई बटालियनें वर्ष 2002-03 में खड़ी की गई। जिनमें से एक ग्रुप केन्द्र भोपाल परिसर में 144 बटालियन के रूप में सरचित की गई है।

इस बटालियन के प्रशिक्षण के लिये मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल के समीप बहुत ही सुंदर एवं रमणीय ग्रुप केन्द्र परिसर बंगरसिया को प्रशिक्षण स्थल चुना गया है। यहाँ प्रातः एवं शाम का मौसम बहुत ही मधुर व सुहावना होता है। थोड़ी उँचाई पर होने के कारण चारों तरफ का प्राकृतिक दृश्य अति मनोहरम लगता है। यहाँ पास के जिले रायसेन में महात्मा बुद्ध के महान स्तूप व नक्कासी के प्रसिद्ध अवशेष स्थित है तथा ऐतिहासिक उज्जैन नगरी में महाकालेश्वर मंदिर स्थित हैं जहाँ महाकुम्भ का मेला लगता है। समीप में ही राष्ट्रीय धरोहर भोजपुर का शिव मंदिर, भीम वाठिका, एशिया की सबसे बड़ी मस्जिद जाजुज मस्जिद, बिरला मंदिर, गुफा मंदिर, मानव संग्रहालय, भारत भवन, मण्डद्वीप औद्योगिक क्षेत्र, बड़ी व छोटी झीलें तथा अनेकानेक दर्शनीय स्थल हैं।

नव गठित इस बटालियन के नवारक्षियों की संरचना उत्तरी, दक्षिणी, पूर्वी, पश्चिमी व स्पेशल सेक्टर के अलावा मध्य, जम्मू, उत्तर पूर्वी, बिहार व उत्तर पश्चिमी सेक्टर को मिलाकर कुल दस सेक्टरों से की गई है। इसमें जम्मू-कश्मीर से लेकर सुदूर कन्याकुमारी तक कुल सोलह राज्यों के 699 नवारक्षी प्रशिक्षण प्राप्त करेगें।

प्रशिक्षण विवरण व अवधि :- इन नवारक्षियों के उचित प्रशिक्षण व्यवस्था के लिये इन्हें 'ए' से लेकर 'जी' तक सात कंपनियों में विभाजित किया गया है। इनको देश की जटिल आतंकवादी व राष्ट्र विरोधी गतिविधियों से निपटने के लिये 24 मार्च, 2003 से 7 फरवरी, 2004 तक 44 सप्ताह का सघन प्रशिक्षण दिया जाएगा जिसमें शारीरिक प्रशिक्षण निहत्थे लड़ाई, फुटड्रिल, आधुनिक हथियार, प्रशिक्षण, रात्रि प्रशिक्षण, जंगल प्रशिक्षण, फायरिंग, फील्ड इंजीनियरिंग तथा युद्ध एवं भूमिकला का प्रशिक्षण आदि शामिल होगा। साथ ही कानून नियम व महत्वपूर्ण स्थानों की सुरक्षा सहित मानवाधिकार, प्राथमिक चिकित्सा बचाव एवं राहत कार्य अभियान जैसे विषयों पर भी विशेष प्रशिक्षण दिया जाएगा।

प्रशिक्षण एवं प्रशासनिक स्टाफ :- इन नवारक्षियों को प्रशिक्षण देने के लिए भोपाल व स्पेशल सेक्टर, नई दिल्ली से अच्छे सर्विस रिकार्ड वाले कार्यकुशल व श्रेष्ठ प्रशिक्षक व प्रशासनिक स्टाफ उपलब्ध कराया गया हैं। जिन्हें प्रशिक्षण के दौरान नवारक्षियों की समुचित देखभाल, उचित रहन-सहन व खान-पान की व्यवस्था पर विशेष ध्यान रखने के लिये आवश्यक दिशा-निर्देश दिये गये हैं।

नवारक्षियों के प्रशिक्षण को अर्थपूर्ण, प्रभावी एवं मनोरंजक बनाने के लिए इसमें उचित खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम व अतिरिक्त क्रियाकलापों एवं प्रतिस्पर्धाओं के

आयोजन का भी समावेश किया गया है। इस प्रकार उचित अनुशासन, उचित प्रशिक्षण व उचित व्यवस्थाओं द्वारा भिन्न-भिन्न क्षेत्रों व परिवेशों से आये ये नवारक्षी एक लघु भारत का प्रतिनिधित्व करते हैं, को एक सक्षम, साहसी, प्रभावी, निपुर्ण व कार्यकुशल सैनिक के बनाया जायेगा तथा चुनौती भरे सृजनात्मक दायित्व निर्वाह में सभी नवारक्षियों को एक सूत्र में पिरोते हुए राष्ट्रीय एकता व अखण्डता अक्षुण्ण बनाये रखने की दिशा में यह बल के लिये ही नहीं बल्कि एक राष्ट्रीय महत्व का कार्य होगा।



1 मई, *2003* को मजदूर दिवस के अवसर पर बंगरसिया गांव के रास्ते को ठीक करते हुए *144* बटालियन के नवारक्षी।



1 मई, *2003* को मजदूर दिवस के अवसर पर कमांडेन्ट श्री हरी राम सिंह के निर्देशन में बंगरसिया गांव के शासकीय प्राथमिक स्कूल के खेल मैदान को साफ व समतल बनाते हुए *144* बटालियन के नवारक्षी।

बटालियन के लक्ष्य :- हाल ही में 20 मार्च, 2003 पूर्वान्ह से मैंने इस बटालियन का कार्यभार सम्भाला है तथा बटालियन की व्यावसायिक क्षमता व खुशहाली के लिए मैंने 'बटालियन के लिए श्रेष्ठता व संतुष्टि के लिए दो लक्ष्य निर्धारित किए हैं। मैं इस शुभ अवसर पर बटालियन के प्रशासनिक व प्रशिक्षक स्टाफ व प्रशिक्षण के लिए आए सभी नवारक्षियों को उनके अच्छे स्वास्थ्य, प्रगति व कुशल प्रशिक्षण की शुभकामना देता हूँ। मुझे उम्मीद है कि इस बटालियन में प्रशिक्षण पाकर हर कर्मी एक कर्मठ सिपाही व कुशल नागरिक बनते हुए राष्ट्र निर्माण में विशेष योगदान देगा।

उचित मार्गदर्शन व सराहनीय सहयोग :- बटालियन गठन में भोपाल रेंज के पुलिस उप महानिरीक्षक श्री के०डी० पचौरी का सक्षम मार्गदर्शन व ग्रुप केन्द्र भोपाल के अपर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री बी०एस० नेगी व उनकी टीम तथा ग्रुप केन्द्र अस्पताल के मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा० ए० के० दास एवं उनकी टीम तथा द्रुत कार्य बल 107 बटालियन, भोपाल के अधिकारीगण एवं कर्मचारियों का सहयोग भी सराहनीय रहा है तथा आशा है कि भविष्य में भी इसी प्रकार बटालियन प्रशिक्षण के सुचारू संचालन में सभी का पूर्ण स्नेह व सहयोग मिलता रहेगा।

नए स्थान पर तैनाती से पूर्व पारिचेतीकरण प्रशिक्षण जरूरी

- श्री विवेक वैद
कमांडेन्ट 44 बटा.,



चूडाचाँदपुर (मणिपुर) में तैनात *44* बटालियन के कार्मिकों को आर.ओ.पी ड्यूटी के बारे में व्याख्यान देते हुए बटालियन के अधिकारी

44 बटालियन, के०रि०पु०बल को (ए०सी०ओ०) वार्षिक बदलाव 2003 के तहत असम से मणिपुर में ड्यूटी के लिए स्थापित होने का निर्देश मिला। मणिपुर जैसे उग्रवाद से ग्रस्त क्षेत्र में ड्यूटी पर स्थापित होने से पूर्व हर बटालियन को करीब एक महीने की प्री-इन्डेक्शन प्रशिक्षण के दौरे से गुजरना होता है, तदनुसार 44 बटालियन, के०रि०पु० बल की ए/44 कंपनी मार्च माह में नागालैन्ड में सफलतापूर्वक चुनाव कराने के उपरान्त नागालैन्ड से सीधे 09 एम०आर० कैम्प, तफाऊ मणिपुर में वाहिनी की एडवांस टुकड़ी के रूप में आयी। इसी कैम्प में प्री-इन्डेक्शन ट्रेनिंग शुरू की। मार्च के अन्तिम पक्ष में वाहिनी की अन्य बी/सी/डी/ई/एफ कंपनियाँ भी प्री-इंडेक्शन ट्रेनिंग के लिये आयी तथा 09 एस०आर० कैम्प तफाऊ सेनापति (मणिपुर) में 44 बटालियन के०रि०पु०बल का डेट हेड क्वाटर स्थापित हुआ।

कैम्प में एक प्लाटून की नफरी तैनात रहती है। यह कैम्प एक दुर्गम एवं वीरान

पहाड़ी पर करीब ढाई किलो मीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है। यह पहाड़ी आस-पास की दूसरी पहाड़ियों से चारों तरफ से घिरी हुई है। कैम्प की इस पहाड़ी पर न तो जवानों के पीने एवं इस्तेमाल के लिए आवश्यकतानुसार पानी है और न ही डाक/दूरभाष एवं इस्तेमाल किए जाने वाले सामान की खरीदारी की सुविधा।

तफाऊ कैम्प की इस खंडहर/दुर्गम पहाड़ी पर मार्च, 2003 के अंतिम सप्ताह में 44 बटालियन, केरिपुबल का हेड क्वा० स्थापित हुआ और ऊपर वर्णित प्राकृतिक एवं कृत्रिम विषमताओं के बावजूद कमाण्डेन्ट श्री विवेक वैद के नेतृत्व में वाहिनी की छः कंपनियों एवं डेट हेड क्वा० के कार्मिकों की प्री-इंडेक्शन ट्रेनिंग की शुरूआत उच्च कार्यालयों से मिले ट्रेनिंग प्रोग्राम के अनुसार हुई। श्री एन.जी. नाथ, सहा० कमा० एवं निरीक्षक भगत सिंह को ट्रेनिंग से संबंधित सिखलाई अभियानों एवं भाषण आदि के प्रबंधन की खास जिम्मेदारियाँ भी सौंपी गयी। वाहिनी के अन्य अधीनस्थ अधिकारियों एवं कार्मिकों ने भी प्री-इंडेक्शन ट्रेनिंग के दौरान प्राकृतिक एवं कृत्रिम प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद भी बढ़-चढ़कर पूरे जोश और रूचि के साथ भाग लिया। ट्रेनिंग में दी गयी सिखलाई का संक्षेप इस प्रकार हैं :-

प्रातः काल एक पीरियड बुलेटप्रूफ हेलमेट एवं व्यक्तिगत हथियार के साथ पहाड़ी की चढ़ाई व दौड़ एवं पी.टी., बी.पी.टी., एवं अन्य बाधाएँ जैसे नाला, कांटेदार तारें, दलदल इत्यादि को पार करने का अभ्यास कराया गया। तुरन्त कार्रवाई के लिए क्यू.आर.टी. टीमें बनाई गई। दिन में हथियारों की सिखलाई, मैप रीडिंग की सिखलाई, इटेलीजेंस, फील्ड क्राफ्ट, फील्ड इंजीनियरिंग इत्यादि की थ्योरिटीकल/प्रैक्टिकल ट्रेनिंग करायी गयी। रात के समय में भी सुरक्षा संबंधी एम्बुस, सर्च, कोर्डन, आर.ओ.पी. एल.आर.पी., पेट्रोलिंग, नाका कॉम्बींग, रेड जैसे अन्य अभियानों की सिखलाई, क्षेत्र की बनावट एवं परिस्थितियों के अनुरूप दी गयी। कमाण्डेन्ट श्री विवेक वैद ने वाहिनी के कार्मिकों को पुराने केस स्टडीज, इटेलीजेंस रिर्पोट एवं मानव अधिकारों की शिक्षा दी। क्षेत्र की रीति-रिवाजों एवं मणिपुर की संस्कृति से जवानों को अवगत कराया। आर्मी के कार्मिकों द्वारा बल के जवानों को ए.जी.एल., 51 एम.एम. मोर्टर एवं एल.एम.जी. आदि आधुनिक हथियारों की सिखलाई का एक सप्ताह का प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण के दौरान पुलिस महानिरीक्षक, के.रि.पु. बल, मणिपुर एवं नागालैण्ड सेक्टर श्री सुभाष गोस्वामी एवं पुलिस उप महानिरीक्षक, के.रि.पु.बल, इम्फाल श्री एस.एस. संधु के दौरे एवं प्रशिक्षण के दौरान दिए गए सुधारात्मक आदेशों/निर्देशों से प्रशिक्षण में निखार आया और वाहिनी के कार्मिकों में जोश, स्फूर्ति एवं उत्साह का संचार हुआ जिससे प्री-इंडेक्शन ट्रेनिंग एक वास्तविक अभियान में तबदील हो गया। प्री-इंडेक्शन प्रशिक्षण में वाहिनी के सभी रैंक के कर्मचारियों ने पूरे जोश के साथ भाग लिया। इस प्रक्रिया के दौरान क्विक रिफ्लेक्श एवं क्विक डाइरेक्शन, फायरिंग के अभ्यास ने वाहिनी के कार्मिकों का हौसला और बुलंद कर दिया। तफाऊ कैम्प (डेड हैड क्वा.-44) की करीब ढाई किलोमीटर क्षेत्र में फैली इस दुर्गम पहाड़ी पर बने कैंप की सुरक्षा के लिए करीब डेढ़ सौ कार्मिक तैनात रहते हैं और पानी पास के गांव तफाऊ से खरीदना पड़ता है। इन सभी प्रतिकूल एवं विषम

परिस्थितियाँ होने के बावजूद भी इस वाहिनी के अधिकारियों, अधीनस्थ अधिकारियों एवं कार्मिकों के प्रशिक्षण पर असर नहीं डाल पायी। सच में देखा जाए तो यह प्री-इंडेक्शन प्रशिक्षण एक साधारण प्रशिक्षण न होकर एक ऐसे युद्ध की तैयारी हैं, जिससे वाहिनी के कार्मिक अपनी जान की परवाह किये बिना आतंकवादी, उग्रवादी एवं इंसरजेंट के नापाक इरादों को धराशायी करके दुश्मन को नेस्तानाबूत करने के लिए तैयार होते हैं। मुझें पूर्ण विश्वास है कि इस वाहिनी के कार्मिक मणिपुर के इस उग्रवाद प्रभावित क्षेत्र में अपनी कामयाबी एवं काउंटर इंसरजेंसी अभियानों द्वारा मणिपुर क्षेत्र को उग्रवाद से मुक्त दिलाने में तथा शांति बहाली की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान मिलेगा। अपने इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए निरीक्षक भगत सिंह की कमाण्ड में ए/44 कंपनी अपनी प्री-इंडेक्शन ट्रेनिंग पूर्ण होने के बाद 64 बी.एस. एफ. बटालियन की कंपनी पोस्ट खुगा हिल, चूडाचाँदपुर (मणिपुर) में 22 अप्रैल, 2003 को तैनात हो चुकी है। इस वाहिनी की अन्य कंपनियाँ भी प्री-इंडेक्शन ट्रेनिंग पूरी करके मई, 2003 के प्रथम सप्ताह में चूड़ाचाँदपुर (मणिपुर) में बी.एस.एफ. की डयूटियों का चार्ज लेने को तैयार हैं। इस वाहिनी के कार्मिकों के दिलों दिमाग में बस एक ही बात समाई हुई है कि -

“ हर कठिन मंजिल का पा सकना कोई मुश्किल नही ”
पर मुसाफिर में, जरा चलने की हिम्मत चाहिए।



क्विक डायरेक्शन फायरिंग का अभ्यास करते *44* बटालियन के कार्मिक



परिचितीकरण कोर्स के दौरान फायरिंग का अभ्यास करते हुए *44* बटालियन के कार्मिक

वाहिनी के कार्मिकों के सामने जो कठिन मंजिल का जिक्र किया गया है वो मंजिल है काउंटर इंसरजेंसी ऑपरेशन। बल के जवान अपनी ड्यूटी एवं कर्त्तव्य परायणता तथा बल के मोटो, "सेवा और भक्ति" को ध्यान में रखकर मणिपुर के इस क्षेत्र में शांति बहाली की पताका फहराकर भारतीय इतिहास में एक और अध्याय जोड़ने में कामयाबी हासिल करेगें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस वाहिनी के कार्मिक अपने इस उद्देश्य में जरूर कामयाब होंगे।

महानिदेशक द्वारा नव गठित *152* बटालियन का

निरीक्षण



नवगठित *152* बटालियन के प्रशिक्षण के बारे में बल के महानिदेशक श्री एस.सी. चौबे को जानकारी देते हुए बटा कमांडेन्ट श्री विनोद कुमार शर्मा साथ में अपर महानिदेशक, पश्चिमोत्तर, श्री के.जे. सिंह तथा उप महानिरीक्षक *(*चड़ीगढ़*)* श्री अधीर शर्मा

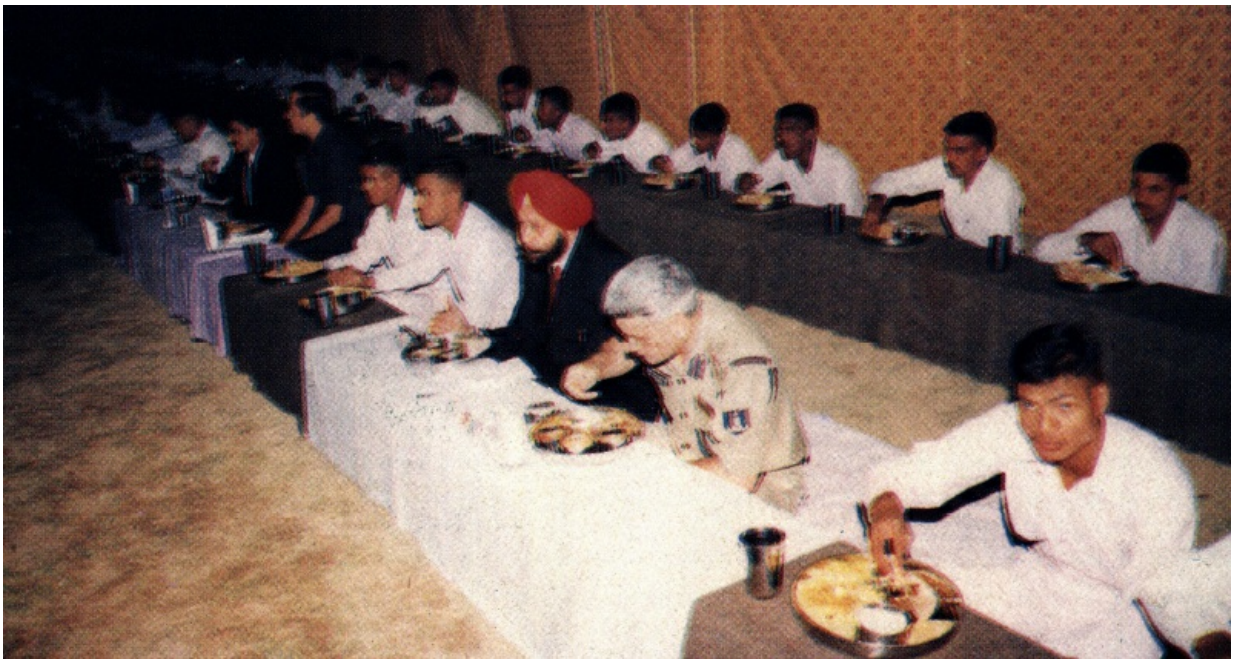


महानिदेशक श्री सतीश चन्द चौबे *152* बटा के नवारक्षियों के ट्रेनिंग का जायजा लेते हुए

महानिदेशक द्वारा आरटीसी-चतुर्थ का निरीक्षण



आरटीसी चतुर्थ, श्रीनगर में प्रेस मीडिया को बल के बारे में जानकारी देते हुए बल के महानिदेशक श्री एस.सी. चौबे



प्रशिक्षुओं के साथ परम्परागत बड़े खाने के दौरान रात्रि भोज में बल के महानिदेशक श्री एस.सी चौबे व बल के अन्य अधिकारीगण

संक्षिप्त समाचार



आतंकवादी कार्रवाईयों के दौरान शहीद हुए जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के कार्मिकों के निकटतम संबधियों को केन्द्र सरकार की ओर से अनुग्रह राशि का चेक प्रदान करते केरिपुबल के महानिरीक्षक (परि०) श्रीनगर, श्री जी.एम. श्रीवास्तव

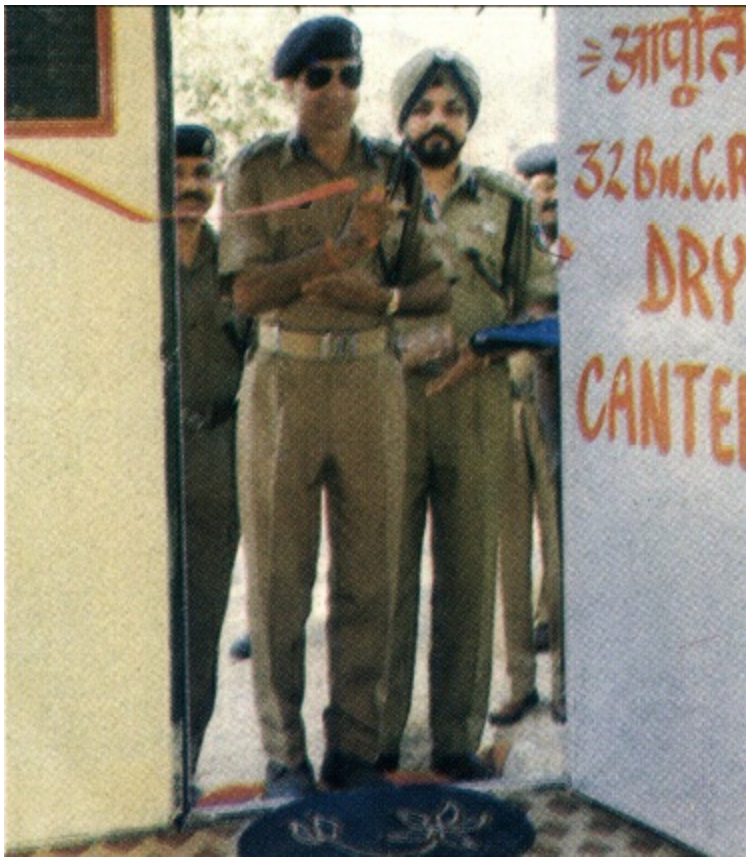


श्री जी.एम श्रीवास्तव, पुलिस महानिरीक्षक (परि०) श्रीनगर, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के शहीद जवानों के आश्रितों को केन्द्र सरकार की ओर से अनुग्रह राशि का चेक प्रदान करने के बाद प्रेस मीडिया से बातचीत करते हुए

बल के कल्याणकारी कार्य



32 बटालियन द्वारा बिना लाभांन्स के कार्मिकों एवं अधिकारियों के जल-पान के लिए ऊधमपुर में स्थापित किया गया उत्सव रेस्टोरेंट



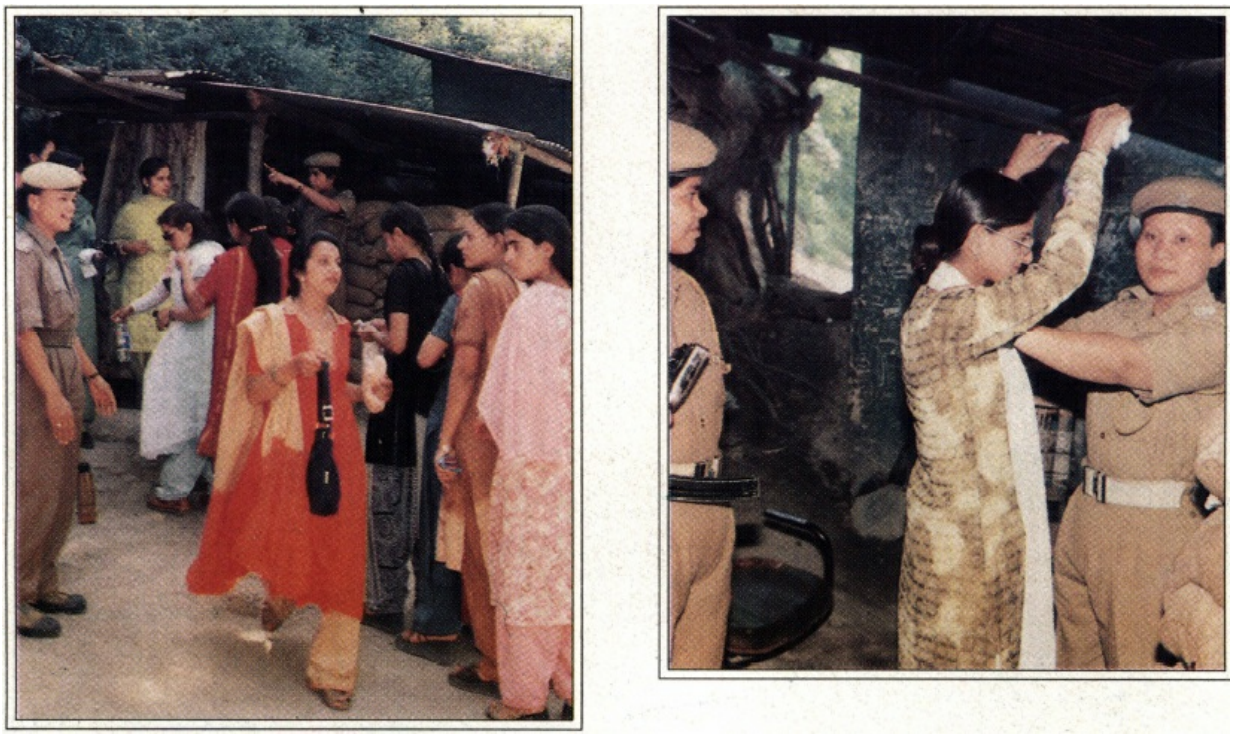
डीआईजी (परिचालन) डोडा ब्रिगेडियर श्री एम.एस. रोहिल उत्सव रेस्टोरेंट का उद्घाटन करते हुए



कॉनवाई द्वारा जाने-आने वाले जवानों के जलपान के लिए *32* बटालियन द्वारा उधमपुर में स्थापित उत्सव रेस्टारेंट



श्रीनगर में श्री शंकराचार्य मंदिर में आने-जाने वाले श्रद्धालुओं की जांच करती बल की महिला कर्मी



श्रीनगर के श्री शंकराचार्य मंदिर में सुरक्षा ड्यूटी पर तैनात बल की महिला कर्मी

आरटीसी-दो में पासिंग आउट परेड समारोह



मुख्य अतिथि एवं तमिलनाडु पुलिस के महानिदेशक श्री आई.के. गोविन्द आरटीसी द्वितीय अवाड़ी में नवारक्षियों की परेड का निरीक्षण करते हुए



प्रशिक्षणोपरांत कर्तव्य निष्ठा की शपथ लेते आरटीसी-दो अवाड़ी के रंगरूट



मुख्य अतिथि तमिलनाडु पुलिस के महानिदेशक श्री आई.के. गोविन्द आरटीसी-दो में नवारक्षियों की पासिंग आउट परेड की सलामी लेते हुए



प्रशिक्षणोपरांत पासिंग आउट परेड मार्च करते आरटीसी-दो अवाड़ी के नवारक्षी

आरटीसी चतुर्थ में पासिंग आउट परेड



आरटीसी चतुर्थ में *22* मई, *2003* को *51* वें बैच के रंगरूटों की पासिंग आउट परेड का निरीक्षण करते पश्चिमोत्तर अंचल के अपर महानिदेशक श्री के.जे. सिंह



पासिंग आउट परेड के बाद सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षु की ट्राफी प्रदान करते पश्चिमोत्तर अंचल के अपर महानिदेशक एवं मुख्य अतिथि श्री कंवलजीत सिंह

बल के सामाजिक कार्यक्रम





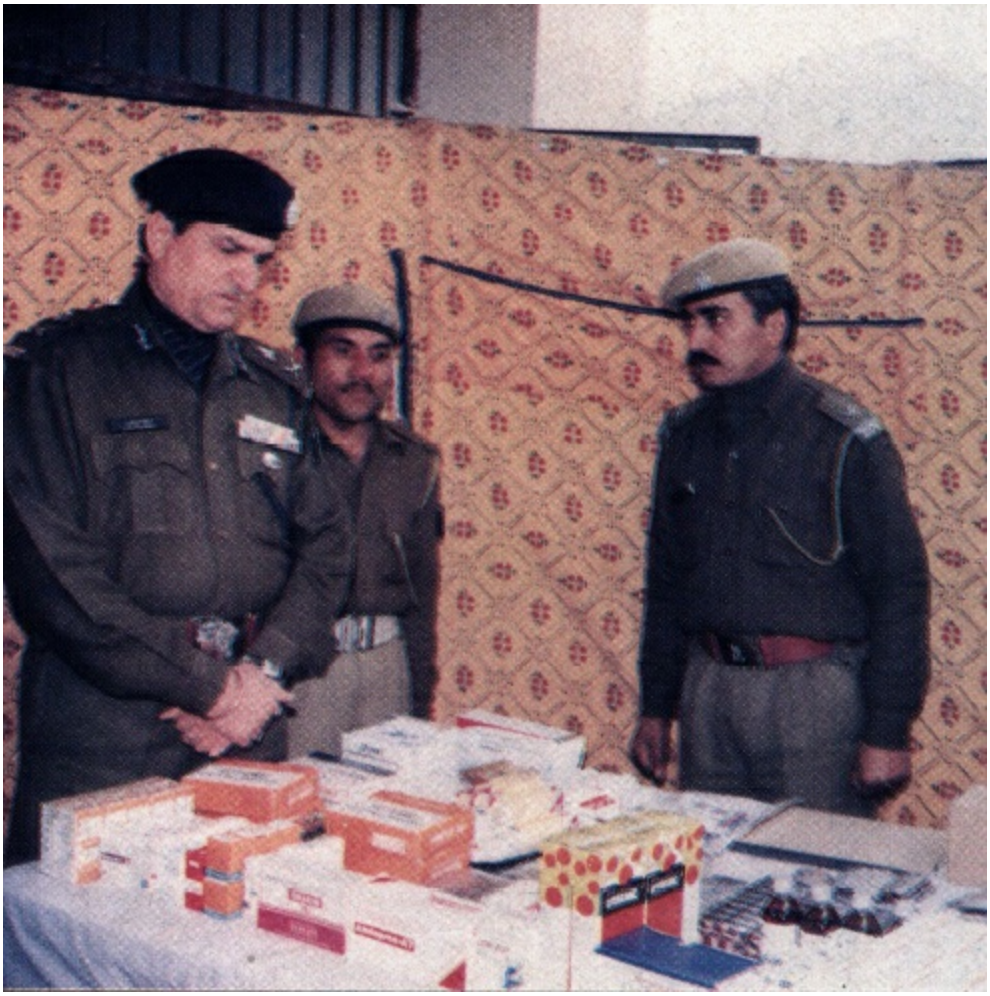


13 अप्रैल, 2003 को 96 चरना (बाधमारा) स्थित कैम्प में ग्रामीण युवा बालीवाल प्रतियोगिता का आयोजन उप कमा. 96 बटालियन श्री सजन सिंह की अध्यक्षता में किया गया जिसमें सिलबारा गाँव की टीम प्रथम तथा साउगुड़ी गाँव की टीम ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। विजयी प्रथम व द्वितीय टीमों तथा प्रतियोगिता में सबसे उत्कृष्ट खिलाड़ी खनिम कलिता भुटियापुआ को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इस प्रतियोगिता के दौरान सभी संबधित गाँवों के बुजर्ग, जवान, चरना स्वास्थ्य केन्द्र के चिकित्सक एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए थे।

दक्षिणी त्रिपुरा में बल की 51वीं बटालियन अपनी सुरक्षा ड्यूटियों को निभाने के साथ-साथ स्थानीय जनता के बीच बल की ख्याति और विश्वास बढ़ाने के उद्देश्य से अनेक प्रकार के सामाजिक कार्यक्रम आयोजित कर रही है। बटालियन के जवानों एवं अधिकारियों ने अपने संसाधनों से सतनियाकाग तथा नितचेटा क्षेत्र में दो सामुदायिक भवनों का निर्माण किया तथा भवनों की चाबियां सम्बंधित स्थानीय लोगों को सुपुर्द की। युवा तथा बच्चों के लिए रंगीन टीवी तथा खेल-कूद का सामान भी मुहैया कराया गया। 51 वीं बटालियन ने ऐसे कार्यक्रम अपनी तैनाती के कई क्षेत्रों में आयोजित कर राज्य सरकार तथा स्थानीय जनता का विश्वास जीता है। बटालियन द्वारा निर्मित भवनों का उद्घाटन केरिपुबल के महानिरीक्षक (परि०) त्रिपुरा श्री सुखजिन्दर सिंह ने किया। श्री सिंह ने इस अवसर पर कहा इस प्रकार के आयोजन से बल की जनता के बीच विश्वासनीयता बढ़ती है। इस अवसर पर बल के अन्य वरिष्ठ अधिकारी तथा स्थानीय प्रमुख व्यक्ति उपस्थित थे।

9 मार्च, 2003 को इस बटालियन की ओर से सिविक एक्शन प्रोग्राम के तहत एक फ्री चिकित्सा शिविर का अयोजन गर्ल्स पब्लिक स्कूल पार्म्पोर, जिला पुलवामा (कश्मीर) में पुलिस महानिरीक्षक (परि०), श्रीनगर, श्री आर. के. शर्मा के आगवानी में श्री जोगिन्दर सिंह, कमाण्डेन्ट 127 वीं बटालियन केरिपुबल के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ। उपरोक्त चिकित्सा कैम्प में मेडिकल आफिसर डॉ० मु० लतीफ खान,

एस.एम.ओ.-48 बटालियन तथा डॉ० दिनेश मेहता, सी.एम.ओ.-114 बटालियन एवम् डॉ० जगबीर सिंह, एस.एम.ओ. 127 बटालियन ने भाग लिया। फ्री चिकित्सा कैम्प विभिन्न बीमारियों के लगभग 450 मरीजों को चैक अप किया गया जिसमें बच्चे बुजुर्ग एवम् महिलायें भी शामिल थी। सभी मरीजों को मुफ्त दवाईयां वितरण की गई। चिकित्सा शिविर में आने वाले मरीजों में जरूरत मन्द मरीजों को यूनिट ड्राइ व वेट कैन्टीन से रियायती दर पर सामान उपलब्ध करवाया गया। कैम्प की सिविल प्राधिकारियों तथा जनता ने बहुत ही सराहना की।



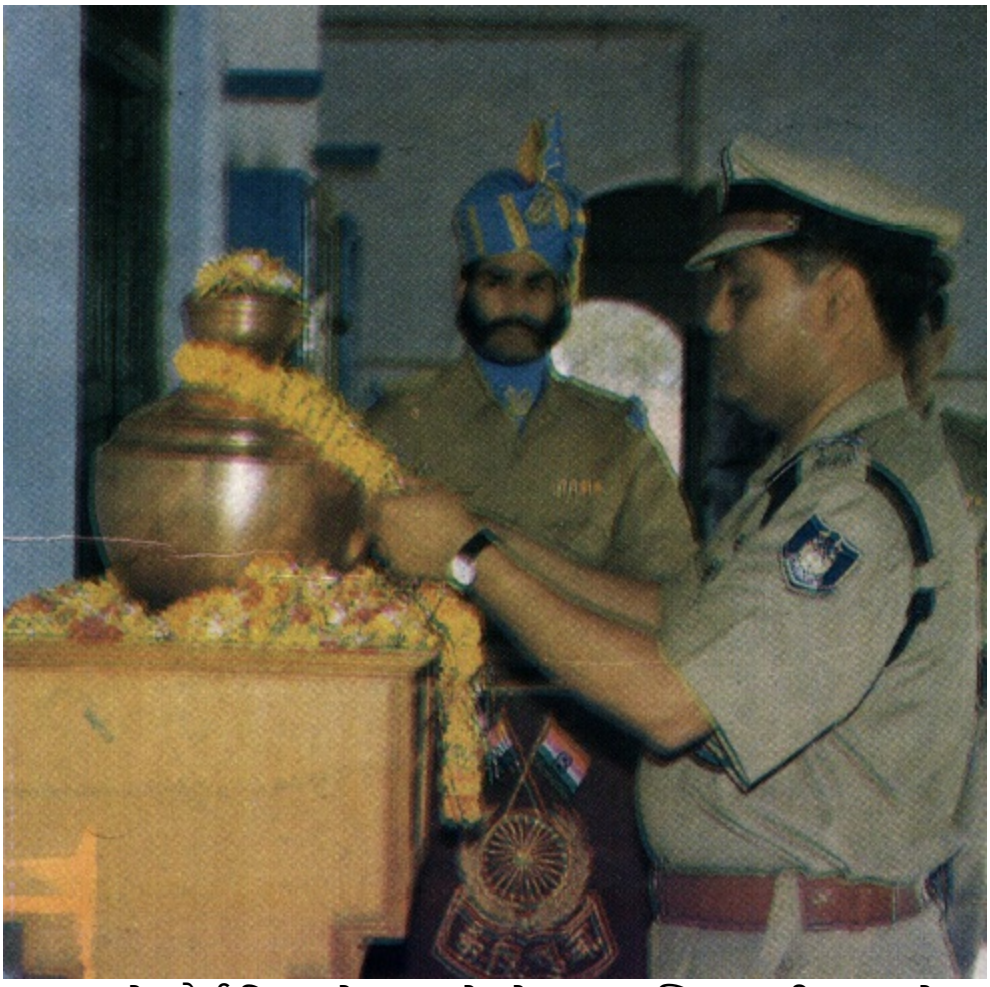
01, 02 एवं 03 जून, 2003 को सघन पल्स पोलियों टीकाकरण के क्रियान्वन हेतु पोलियों के प्रथम चरण में प्रातः 6 बजे से सांयकाल 7 बजे तक 107 बटालियन द्रुत कार्य बल के कमाण्डेन्ट श्री हेमराज ने मुख्य चिकित्सा अधिकारी, डा० अशोक कुमार एवं अधीनस्थ अधिकारियों एवं जवानों के साथ सक्रिय रूप से भाग लिया। इस दौरान बटालियन मुख्यालय, गोविन्दपुरा एवं ग्राम हिनौतिया, रायसेन में कैम्प लगाये गए। भोपाल एवं रायसेन जिलों के निर्धन एवं दूर दराज की बस्तियों में अपनी मोबाईल टीमें भेज कर 7 हजार से ज्यादा बच्चों को पोलियों की दवाई पिलाई गई। इसके अलावा जे०पी० अस्पताल, भोपाल, जिला चिकित्सालय रायसेन एवं ब्लॉक

चिकित्सालय ओबदुल्लागंज में अपनी गाड़ियाँ एवं जवानों को भेज कर पल्स पोलियों कार्यक्रम में स्थानीय प्रशासन को भरपूर सहयोग दिया। द्रुत कार्य बल पहले भी इस तरह के जन सहयोगी कार्यक्रमों को करने में अग्रणी भूमिका निभाती रही है।





ग्रुप केन्द्र नीमच में 7 अप्रैल, 2003 को विश्व स्वास्थ्य दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर स्वास्थ्य के विषय में विभिन्न जानकारियाँ दी गई तथा 5 कि. मी की मास दौड़ का आयोजन किया गया। इस दौड़ में प्रथम द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले कार्मिकों को उचित पुरस्कार भी प्रदान किये गये। इसके अतिरिक्त स्टेशन अस्पताल के चिकित्सा अधिकारियों द्वारा स्टेशन में स्थित सभा भवन में सभी संस्थानों के कार्मिकों को स्वास्थ्य से संबंधित जानकारी दी। शाम को फुटबाल मैच का भी आयोजन किया गया।



9अप्रैल, 2003 को शौर्य दिवस के रूप में स्टेशन पर स्थित सभी संस्थानों/बटालियनों द्वारा सामूहिक रूप से मनाया गया। श्री एस.एस. रावत, प्राचार्य / पुलिस उप महानिरीक्षक, सीटीसी-प्रथम ने क्वार्टर गार्ड में सरदार पोस्ट कलश पर पुष्पांजलि अर्पित की तथा 10:30 बजे सभा भवन में सामूहिक सभा का आयोजन किया गया जिसमें सेवारत तथा सेवानिवृत्त शौर्य पदक धारक विशेष रूप से सम्मानित किये गये तथा उनके द्वारा कायम की गई मिसालों पर व्याख्यान दिया गया। सांय को बड़े खाने का आयोजन किया गया जिसमें सभी शौर्य पदक धारक भी शामिल हुए।

आर०टी०सी० नीमच में नवारक्षियों की दीक्षांत परेड

रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र-प्रथम, केरिपुबल, नौमच में 144 सप्ताह का बुनेयादी प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूरा करने पर 642 नवारक्षियों को इस संस्थान में 22 अप्रैल, 2003 को आयोजित दीक्षांत समारोह में शपथ दिलवाई गई। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री के०जे० सिंह, भा०पु०से०, अपर महानिदेशक, नार्थ वेस्ट जॉन, केरिपुबल, चंडीगढ़ थे।

सर्वप्रथम परेड कमांडर सहायक कमाण्डेन्ट श्री गुलाब सिंह द्वारा मुख्य अतिथि महोदय को परेड का निरीक्षण करने का अनुरोध किया। मुख्य अतिथि ने परेड का निरीक्षण किया तथा राष्ट्रीय एवं केरिपुबल के ध्वज को सलामी दी। इसके पश्चात श्री नदीम समदानी, उप कमाण्डेन्ट द्वारा सभी नवारक्षियों को शपथ दिलवाई गई। शपथ ग्रहण करने के पश्चात् सभी नवारक्षियों द्वारा शानदार मार्च-पास्ट का प्रदर्शन किया गया।

इस अवसर पर प्राचार्य श्री हरभजन सिंह, ने अपने सम्बोधन में कहा कि इस प्रशिक्षण केन्द्र का प्राथमिक उद्देश्य बल के ध्येय को प्राप्त करने के लिये नवयुवकों को प्रशिक्षित करके एक कुशल सिपाही बनाना है तथा इसका द्वितीय उद्देश्य जवानों में धर्मनिरपेक्षता समाहित कर उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास कर उन्हे देश का अच्छा नागरिक बनाना है। इस अवसर मुख्य अतिथि श्री के. जे. सिंह ने प्रशिक्षण के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रशिक्षुओं को बेस्ट आउटडोर, बेस्ट इन्डोर, बेस्ट फायर तथा ओवरऑल बेस्ट प्रशिक्षणार्थी की ट्राफियाँ तथा प्रशंसा प्रमाण पत्र प्रदान करके मनोबल बढ़ाया। मुख्य अतिथि अपने सम्बोधन में कहा कि केरिपुबल एक धर्मनिरपेक्ष बल है और इसकी गरिमा बहुत उँची है। हमारे बल में भारत के विभिन्न राज्यों, धर्मों, भाषाओं और जातियों के लोग हैं और सभी बिना किसी भेद-भाव के एक परिवार के समान रहते हैं। केन्द्रीय पुलिस संगठनों में हमारा बल एक बहुमुखी प्रतिभा वाला बल माना जाता है। इस बल की मुख्य भूमिका देश में आन्तरिक सुरक्षा कायम रखना है। पिछले कुछ वर्षों में सुरक्षाबलों को नुकसान पहुँचाने के लिये आतंकवादियों द्वारा आधुनिक हथियारों तथा नित नये तरीकों के इस्तेमाल के कारण उनको जड़ से खत्म करने के लिये बल की चुनौतियां और बढ़ गई हैं इसीलिए आपको आन्तरिक सुरक्षा एवं कानून व्यवस्था बनाये रखने के लिये आतंकवाद, आसामाजिक व विघटनकारी ताकतों से निपटने का विशेष प्रशिक्षण दिया गया है। हमें ऐसे तत्वों से निपटने के लिये सख्ती से कार्रवाई करनी पड़ती है, परन्तु हमारा दृष्टिकोण मानवीय होना चाहिए। हमें अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते समय मानवाधिकारों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। मुझे गर्व है कि मैं इस प्रशिक्षण केन्द्र में नवप्रशिक्षित जवानों की शपथ ग्रहण समारोह में उपस्थित हुआ और मुझे आपको आशीर्वाद देने का अवसर मिला। मुझे आशा है कि आप इस संस्था द्वारा दिये गए उच्च प्रशिक्षण से अपनी ड्यूटी को निष्पक्ष भाव, लगन तथा कठिन परिश्रम से इस बल का नाम ऊंचा करेगें। मैं एक बार फिर आप सबको व आपके परिवारों को शुभकामनाएं देता हूँ तथा सभी के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।



पश्मिोत्तर अंचल के अपर महानिदेशक श्री के. जे सिंह आटीसी-प्रथम में नवारक्षियों की परेड की सलामी लेते हुए



पश्मिोत्तर अंचल के अपर महानिदेशक एवं मुख्य अतिथि श्री के. जे. सिंह एवं आरटीसी-प्रथम के प्राचार्य श्री एच. बी. सिंह नवारक्षियों की परेड का निरीक्षण करते हुए

संस्थान के प्राचार्य श्री हरभजन सिंह ने मुख्य आतिथि महोदय को एक स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। इस अवसर पर केरिपुबल के नीमच स्टेशन के वरिष्ठ अधिकारी श्री एस एस रावत, पुउमनि, सीटीसी-1, श्री जे एस गिल, अपुउमनि, ग्रुप केन्द्र-नीमच एवं अन्य वरिष्ठ सिविल व पुलिस के प्रशासनिक अधिकारी भी उपस्थित थे। सिंह द्वारा अन्त में सभी उपस्थित सिविल अधिकारियों एवं नीमच स्टेशन के जवानों तथा उनके परिवारों का कार्यक्रम में पधारने एवं इस कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु दिये गये सहयोग के लिये आभार प्रकट किया।

बल के महानिदेशक द्वारा सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल के मेधावी छात्रों का सम्मान

जून 2003 को सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल रोहिणी में आयोजित सम्मान समारोह में केरिपुबल के महानिदेशक श्री एस.सी. चौबे ने कहा कि सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल दिल्ली का ही नहीं बल्कि देश का एक उत्कृष्ट शिक्षा संस्थान है। पिछली वर्ष की भाँति इस वर्ष भी स्कूल का केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की 10वीं तथा 12वीं की परीक्षाओं का परिणाम शत-प्रतिशत रहा है।

श्री चौबे ने बोर्ड परीक्षाओं में स्कूल में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले केरिपुबल कार्मिकों के बच्चों को नगद पुरस्कार प्रदान किए। उन्होंने 12वीं कक्षा में सभी विषयों में विशेष योग्यता तथा उत्कृष्ट अंक प्राप्त करने वाले विक्रान्त तनेजा तथा माधवेन्द्र कुमार को 1500/- रूपये (प्रत्येक को) जबकि 10वीं कक्षा में विशेष योग्यता तथा उत्कृष्ट अंक प्राप्त करने वाले छात्र महेन्द्र प्रताप सिंह, राजेश सिंह, संदीप कुमार यादव, सुमित कुमार रावत तथा अवनीत सिंह को एक हजार-एक हजार रूपये के नगद पुरस्कार प्रदान किए। बोर्ड की परीक्षाओं में अच्छे अंक प्राप्त करने वाले अन्य 15 विद्यार्थियों को भी इस समारोह में सम्मानित किया गया तथा छात्रों को स्मृति चिन्ह तथा मेरिट प्रमाण-पत्र देकर उनका हौसला बढ़ाया गया।



बल के महानिदेशक श्री एस.सी. चौबे को पेंटिंग भेंट करती हुई स्कूल की छात्रा

बल के महानिदेशक ने पुरस्कार प्रदान करने के बाद कहा की मातृभूमि की सेवा के लिए देश के दूर-दराज क्षेत्रों में तैनात केरिपुबल कार्मिकों के बच्चों की शिक्षा जरूरत पूरा करने में सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल द्वारा निभाई जा रही भूमिका सराहनीय है। शिक्षा के क्षेत्र में ही नहीं बल्कि स्कूल के विद्यार्थियों ने विभिन्न प्रकार के अन्य क्रिया-कलापों में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन कर पदक जीते हैं।

महानिदेशक ने अध्यापकों तथा अभिभावकों से राष्ट्र के होनहार इन युवा भविष्य के लिए और अधिक सृजनात्मक भूमिका अदा करने की अपील की।



श्रीमती कंचन चौबे दसवी तथा बारहवीं की बोर्ड परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने वाले सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल के छात्रों को शील्ड प्रदान करती हुई

श्री चौबे ने स्कूल की कम्प्यूटर लैब के लिए 20 आधुनिकतम मशीनें, 32 सीटर स्वाराज माजदा बस, होस्टल में रहने वाले के लिए अप्रैल, 2003 से होस्टल सब्सिडी 100/- रूपये से बढ़ाकर 300/-रूपये स्वीकृति करने की भी सहर्ष घोषणा की।

सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल रोहिणी ने लगाया ग्रीष्म कालीन कैम्प



सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल द्वारा लगाए गए ग्रीष्मकालीन कैम्प के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता छात्रों को पुरस्कार देते हुए स्कूल के प्रबंधक एवं पुउमनि (प्रशा.) श्री पी.जे. शेट्टी

सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल रोहिणी, नई दिल्ली में तीन सप्ताह का ग्रीष्म कालीन कैम्प का आयोजन किया गया जिसमें स्कूल के लगभग 150 छात्र-छात्राओं ने संगीत, थिएटर, आर्ट, मार्शल आर्ट, खेलकूद तथा पेंटिग एवं गणितीय योग्यता आदि जैसे विभिन्न क्रिया-कलापों में भाग लिया।

इस ग्रीष्म कालीन कैम्प का समापन 30 मई, 2003 को स्कूल परिसर में आयोजित एक समारोह में किया गया जिसमें उप महानिरीक्षक (प्रशासन) एवं प्रबन्धक श्री पी.जे. शेट्टी ने कैम्प के दौरान आयोजित विभिन्न क्रिया-कलापों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्र-छात्राओं को पुरस्कार वितरित किए तथा उन्होंने कहा कि निःसन्देह यह ग्रीष्म कालीन कैम्प विद्यार्थियों के लिए बहुत उपयोगी तथा लाभकारी रहा, क्योंकि कैम्प के दौरान विद्यार्थियों ने तनाव मुक्त वातावरण में रहकर एक दूसरे के विचारों का आदान-प्रदान किया। ऐसे कैम्पों के आयोजन से बच्चों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को विकसित करने में सहायता तो मिली ही है बल्कि शैक्षणिक लाभ होता है। सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल के प्राचार्य श्री सूरज प्रकाश ने कहा कि हाल ही में घोषित सी.बी.एस.सी. बोर्ड की परीक्षाओं का परिणाम इस बात का जीता जागता सबूत है।

परिचालनिक उपलब्धियां



65 बटालियन द्वारा अलबदर ग्रुप के आतंकवादियों से श्रीनगर में बरामद किए गए हथियार एवं गोला-बारूद

5मई, 2003 को गुप्त एवं विश्वसनीय सूचना के आधार पर 65 बटालियन की ए/65 कम्पनी की एक प्लाटून ने सहायक कमाण्डेन्ट श्री रमाशंकर सिंह के नेतृत्व में 5 आर.आर. की एक सैक्शन तथा एस.ओ.जी. गन्दरबल के साथ अंचार गाँव (गन्दरबल) का घेरा डाला व आतंकवादियों को पकड़ने का अभियान चलाया। अंचार गांव पहाड़ियों के बीच घिरा हुआ एक दलदली इलाका है। सुबह 03:00 बजे अंधेरे में चलाये गये ऑपरेशन में ए/65 की प्लाटून ने अल-बदर ग्रुप के एक आतंकवादी को गिरफ्तार किया व उसके पास से ए.के. 47 एक राईफल, एक यू.बी.जी.एल., चार यू.बी.जी.एल. ग्रिनेड, चार हेण्ड ग्रिनेड, दो डिटोनेटर, एक हेण्ड ग्रिनेड फ्यूज, दो रिमोट कंट्रोल डिवाईस, ए.के. 47 राईफल की तीन मैगजीन, ए.के. 47 राईफल की 161 गोलियां, 64 पिका अमुनेशन, 20 पेन्सिल सैल।

आभियान में भाग लेने वाले 19 कार्मिकों के मनोबल को बढ़ाने के लिए महानिदेशक, केरिपुबल ने 10,000/- (दस हजार रूपये) मात्र नकद पुरस्कार की राशि स्वीकृत की। पुलिस महानिरीक्षक (परिचालन) श्रीनगर ने ए/65 बटालिन द्वारा अर्जित "सफलता की काफी सराहना की व ऑपरेशन में भाग लेने वाले कार्मिकों को बधाई दी।

त्रिपुरा में एन.एल.एफ.टी. के *11* उग्रवादियों द्वारा सी.आर.पी.एफ. के समक्ष आत्मसमर्पण

दक्षिणी त्रिपुरा में नेशनल लिबरेशन फ्रन्ट ऑफ त्रिपुरा-विसमोहन (एन.एल.एफ.टी.–वी.एम.) के 11 उग्रवादियों ने गत मंगलवार को सीआरपीएफ के अधिकारियों के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया।

कमाण्डेन्ट 5 बटा. सीआरपीएफ श्री सूरत सिंह ने बताया कि एन.एल.एफ.टी.–वी.एम. के फाला पाल जमातिया, देव चन्द्रा मालसम, स्वपन देव वर्मा, जगत गुरा जमातिया, जीतेन्द्र रियांग, निरंजन जमातिया, ललित जमातिया, सूरत मोहन जमातिया, लौन्चा हरि जमातिया, सुनील जमातिया तथा कीर्ति प्रभा जमातिया नामक 11 उग्रवादियों ने सीआरपीएफ के अधिकारियों के समक्ष आत्मसमर्पण किया।

आत्मसमर्पित उग्रवादियों ने एक ए.के. 47 राईफल, एक ए.के. 56 राईफल, एक कार्बाईन, ए.के 47 राईफल की 241 गोलियां, 9 एम.एम. पिस्टल की 109 गोलियां, तीन चीन के ग्रेनेड तथा सात मैग्जीन भी प्राधिकारियों को सौपें।

बल की उपलब्धियाँ

परिचालन अभियानों में अदम्य साहस एवं वीरता का उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए समय पूर्व पदोन्नति

जम्मू एवं कश्मीर के जिला कुपवाड़ा में स्थिति भारतीय स्टेट बैंक की शाखा पर 12 मई, 2003 को आतंकवादियों ने अचानक हमला किया। बैंक में इन्कैशमेंट ड्यूटी के लिए तैनात केरिपुबल के दो जवान इस कार्रवाई में शहीद हो गए। एक आतंकवादी अपने साथियों की कवरिंग फायरिंग की मदद से बैंक में बने मोर्चा नम्बर एक तक हथगोले लिए उस स्थान पर पहुँच गया जहाँ बल की प्रोक्टेशन पार्टी पोजीशन लिये हुए थी। जैसे ही आतंकवादी ने हथगोला बैंक में फेकना चाहा उसी समय मोर्चे पर स्थित 113 बटालियन के 941382495 सिपाही/जीडी के आर.

रंगास्वामी ने अपनी जान की परवाह न करते हुए तुंरत कारेवाइ कर आतंकवादी के ऊपर मोर्चे से निकल कर फायर किया और आतंकवादी को हथगोला फेकनें से पूर्व ही मार गिराया। मारे गए आतंकवादी के कब्जे से एक ए.के. 46 राईफल, 6 मैंगजीन, ए.के. 47 राईफल की 43 गोलियां, तथा 4 हथगोला बरामद किए गए।

सिपाही के आर स्वामी ने इस कार्रवाई में अभूतपूर्व वीरता एवं साहस का परिचय दिया तथा अपनी जान की परवाह किए बिना अपने अन्य साथियों की जान बचाई और आतंकवादियों की योजना को नेस्तानाबूत कर उनको अपने उद्देश्य में सफल नहीं होने दिया। बल के महानिदेशक ने सिपाही के. आर. स्वामी द्वारा प्रदर्शित उच्चकोटि के पराक्रम, निरडता एवं साहस के लिए समय पूर्व सिपाही से हवलदार के रैंक में पदोन्नति प्रदान की है।

पदोन्नति

बल के जो लैंस नायक/सिपाही सेक्शन कमाण्डर कोर्स क्रमांक 21/ए पास कर चुके थे उन्हें अनमोदित सूची ए/जीडी 4/93 में लाया गया है तथा हवलदार (जीडी) के पद पदोन्नत कर बल के अंचल/सेक्टरों में आवंटित किए जा चुके हैं। अतः इस प्रकार से माह जून 2003 के दौरान 687 सिपाही/लैंस नायक को हवलदार के रैंक में पदोन्नति प्रदान की गई। इसी तरह इस माह के दौरान 26 उप कमांडेन्टों को द्वितीय कमान अधिकारी 146 हवलदार (जीडी) को पदोन्नति कर उप निरीक्षक (जीडी) बनाया गया, इसके अलावा 8 उप कमांडेन्ट, एक सहायक कमांडेन्ट, एक निरीक्षक को सयुक्त राष्ट्र मिशन के तहत कोसोवो भेजा गया है।

नई स्वीकृतियाँ

सरकार ने केरिपुबल के अधिकारियों के मेसों के लिए 1.5 टन क्षमता वाले एयर कंडीशनर लगाने की अनुमति प्रदान कर दी हैं। प्रत्येक सेक्टर, आरटीसी, सीटीसी, आन्तरिक सुरक्षा अकादमी (माउन्ट आबू)/केरिपुबल अकादमी गुडगांव के लिए चार-चार तथा. प्रत्येक ग्रुप केन्द्र के लिए पाँच-पाँच एयर कंडीशनर लगाने की अनुमति मिल गई है।

गृह मंत्रालय ने केरिपुबल में कॉटन वेब इक्यूमेंट की जगह सिन्थेटिक वेब इक्यूमेंटस् की खरीदने की मंजूरी भी दी है। आशा है कि वित्तीय वर्ष २००३-०४ में पहले चरण की खरीददारी संबधी कार्रवाई पूरी कर ली जाएगी।

खेल उपलब्धियां

25 अप्रैल से 10 मई, 2003 तक भोपाल में आयोजित अखिल भारतीय रफीक होकी टूर्नामेंट में केरिपुबल की हाकी टीम ने भाग लिया और हमारी टीम ने इस टूर्नामेंट में दूसरा स्थान प्राप्त किया।

कमांडेन्ट श्री खजान सिंह (खेल अधिकारी) के नेतृत्व में 9 निरीक्षक, एक उप

निरीक्षक, 1 हवलदार सहित कुल 12 खिलाड़ियों की टीम 27 जुलाई से 3 अगस्त, 2003 तक बार्सिलोना (स्पेन) में सम्पन्न होने वाले वर्ल्ड पुलिस तथा फायर सर्विस खेलों में देश का प्रतिनिधित्व करने के लिए चयनित किया गया है।

केरिपु बल की पाँच महिला भारोत्तोलकों ने 1 मई से 3 मई, 2003 तक टोंगा में आयोजित कॉमन वेल्थ खेलों में अपने-अपने वजन की श्रेणी में प्रत्येक ने एक-एक स्वर्ण पदक जीत कर देश का गौरव बढ़ाया है। बल की सहायक कमाण्डेन्ट कुन्जा रानी ने 48 किग्रा., निरीक्षक/महिला सानामाचू चानू ने 53 किग्रा., निरीक्षक / महिला सुनेना आनन्द ने 58 किग्रा., निरीक्षक / महिला प्रतिभा कुमार ने 63 किग्रा. तथा हवलदार/ महिला सुमिती देवी ने 75 किग्रा. वजन की श्रेणी में एक-एक स्वर्ण पदक जीता है।

भारतीय समाज में मानव अधिकारों की भूमिका



राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री जे एस वर्मा मानवाधिकारों पर आयोजित वाद विवाद प्रतियोगिता में विजेता केरिपुबल की टीम को ट्राफी प्रदान करते हुए

भारतीय संस्कृति में मानव अधिकारों की प्रतिष्ठा हमेशा से रही है। मानव अधिकारों की रक्षा करना हमारे कार्मिकों की धर्म-निरपेक्ष आस्थाओं और विश्वासों का स्वाभाविक अंग रहा है। प्राचीन काल में भारत का मानवाधिकारों की प्रतिष्ठा और बन्धुता की भावना का सर्वोत्तम उदाहरण हमारी "वसुधैव कुटुम्बकम्" की अवधारणा है जिसका अर्थ है–"सम्पूर्ण विश्व हमारा परिवार है।"

मानव अधिकार वे अधिकार हैं जो व्यक्ति को जन्म से ही प्राप्त हो जाते हैं चाहे उसकी राष्ट्रीयता, लिंग, सामाजिक, आर्थिक स्थिति व व्यवसाय कुछ भी हो। मानव अधिकारों की बदौलत ही व्यक्ति अपनी आकस्मिक, सामाजिक और अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति कर पाता है। और अपने व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करने में समर्थ हो पाता है | 10 दिसम्बर, 1948 को संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा एक स्वर में मानव अधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा की गई थी। इस घोषणा के साथ ही मानवाधिकार, अन्तर्राष्ट्रीय नीतियों और व्यवस्था के केन्द्रीय स्तम्भ बन गये। मानवाधिकारों की इस सार्वभौमिक घोषणा को "मानवता का महाधिकार पत्र" कहा जाये तो भी इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

मानव अधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा का हमारे संविधान निर्माताओं पर भी गहरा प्रभाव पड़ा। इस घोषणा के अधिकतर अधिकारों का सार हमारे संविधान के भाग 3 और 4 में दिये गये मूल अधिकारों और राज्य के नीति निर्देशक तत्वों में समाहित है, जिनके बारे में डॉ० राधाकृष्णन ने कहा था कि ये हमारे अपने लोगों के प्रति वचनबद्धता और विश्व के प्रति मित्रता के द्योतक है। ये हमारे देश के संविधान द्वारा शुरू हुई जनतांत्रिक जीवन-पद्धति की आधारशिला हैं जिनकी रक्षा करना हर भारतवासी का परम कर्त्तव्य है।

मानव अधिकार है क्या ? : जब एक स्त्री या पुरूष इस संसार में जन्म लेता है तभी से उसका यह हक हो जाता है कि वह अपना सांसारिक जीवन संतोषजनक ढंग से, सुरक्षा और आनन्दपूर्वक बिताये। समाज और सरकार उसे सभी प्रकार की बुनियादी सुविधाएँ प्रदान करे और उसके लिए उपयुक्त वातावरण का निर्माण करे जिससे कि वे अपना जीवन पूरी आजादी से बिना किसी रोकटोक के सुरक्षित ढंग से जी सके।

जरूरी यह है कि इंसान को हर तरह की बुनियादी आजादी होनी चाहिये। और इस आजादी की रक्षा होनी चाहिये सरकार का ही नहीं हम सभी का यह कर्तव्य है कि मानवाधिकारों की रक्षा करें, क्योंकि सम्पूर्ण मानव जाति के अतिच्छिन्न अधिकार की स्वीकृति और पालन ही विश्व शांति, न्याय और स्वतंत्रता की बुनियाद है। इन अधिकारों का मतलब यह भी नहीं है कि मानव पर कोई भी अंकुश नहीं होगा। आखिरकार इंसान समाज में रहता है और उसे समाज की मर्यादा और कानून के अन्दर ही इन मानवाधिकारों को भोगना होगा।

यह सही है कि इंसान जब से पैदा हुआ है उसके साथ ही उसके अधिकार भी उससे जुड़ गये हैं। यह भी सही है कि जब से समाज बना है तब से इन मानवाधिकारों

का उल्लंघन भी होता आया है। करीब-करीब सभी देशों में अपराधी प्रवृत्ति के लोग मानवाधिकारों का उल्लंघन करते आये हैं। हमारा देश एक बहुत बड़ा सभ्य देश माना जाता है और हमारी संस्कृति में हमेशा से मानवाधिकारों को काफी महत्व दिया गया है। भारतीय समाज हमेशा से मानव अधिकारों की इज्जत करता आया है। इनकी रक्षा करना हमारे रहन-सहन का एक मूल अंग है।

अगर हम भारतीय संस्कृति से बाहर जाकर देखें तो सन् 1776 में अमेरिका स्वतंत्रता के बाद जारी घोषणा पत्र में यह कहा गया कि यह स्वयं सिद्ध सत्य है कि सभी मनुष्य जन्म से एक समान और बराबर है। सन् 1789 में फ्रांसीसी घोषणा हुई जिसमें स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे का नारा लगाया। हालांकि इन दोनों दस्तावेजों ने मनुष्य के आर्थिक एवं सामाजिक हकों के बारे में कोई बात नहीं की, फिर भी ये घोषणाएँ दुनिया के इतिहास में बहुत महत्व रखती हैं। शांति के संदेश देने वाले प्रत्येक देश को इस घोषणाओं पर गर्व महसूस होना चाहिये और अपने देशवासियों के दिलो-दिमाग में भाईचारे का प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए। फ्रांसीसी घोषणा पत्र के दस्तावेजों में राजाओं और दूसरे सामंतों के खिलाफ आवाज थी, जो समाज का हर तरह का नाजायज फायदा उठाते थे। आम लोगों की तब भी यही चाहत थी कि हरेक को पैसा कमाने का और सम्पत्ति प्राप्त करने तथा उसे रखने का बराबर हक हो।



बल के अपर महानिदेशक श्री हिमांशु कुमार राष्ट्रीय मानवाधिकार के अध्यक्ष न्यायमूर्ति जे एस वर्मा को स्मृति

20 वीं सदी में संसार में बड़ी उथल-पुथल हुई। सन् 1914 में 1918 तक प्रथम विश्वयुद्ध हुआ। फिर तीस के दशक में घोर आर्थिक मंदी का दौर चला, और बड़ी भुखमरी और बेरोजगारी फैली। फिर फासीवाद ने जन्म लिया। दूसरा विश्वयुद्ध हुआ और अन्त में जापान के दो शहरों हिरोशिमा और नागासाकी पर एटम बम्ब फेंके गये। इसके बाद दुनिया में एक नई मुसीबत पैदा हुई। अमेरिका और रूस तथा उनके गुटों के देशों के बीच एक तनाव और झगड़ा शुरू हुआ जिसे "शीत युद्ध" का नाम दिया गया। उन लोगों का शोषण हुआ जो आर्थिक और मौलिक रूप से पिछड़े हुए थे।

इस तरह से इंसान ने इस सदी में कई तरीकों से काफी चोटे खाई। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद इंसान को थोड़ा बहुत समझ में आया कि दुनिया में सभी देशों व सभी इंसानों के हितों की रक्षा होनी चाहिये। इसके फलस्वरूप एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था "लीग ऑफ नेशन्स" कहा गया, बनी। जिसने सन् 1948 में इंसान के हकों का एक दस्तावेज संसार के सामने पेश किया, उसके बाद तो संयुक्त राष्ट्र संघ चार्टर में परिवर्तन होते रहे, कई दस्तावेज निकले, जिन सभी का मतलब एक ही था कि हर मानव के कुछ अधिकार हैं और उनकी रक्षा सब देशों को करनी चाहिये।

संयुक्त राष्ट्र संघ के इन सारे दस्तावेजों को उसके सदस्य देशों ने माना और अपने अपने देशों में मानवीय हितों ने अनुरूप था तो नये कानून बनाये या पहले से लागू कानूनों में तब्दीलियाँ लाने की कोशिश की ताकि हर प्रकार से मानवाधिकारों की रक्षा हो सके। ऐसा करते हुए देशों ने अपनी संस्कृति और विशेष जरूरतों को भी ध्यान में रखा। भारत भी उन देशों में से एक है जिसने एक नहीं बल्कि कई कानून बनाये और पिछले कानूनों में तब्दीलियां की ताकि मानवाधिकारों की रक्षा को उचित स्थान मिल सके। यह कहना कोई गलत नहीं होगा कि हमारे देश ने इन अधिकारों को जो रंग रूप कानून में दिया है, उससे अच्छा शायद ही कोई और उदाहरण दुनिया में मिले। हमारे संविधान में दिये गये मूल अधिकारों में से कुछ अधिकार इस प्रकार है :–

भाषण एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, आवागमन की स्वतंत्रता, सभा एवं समिति बनाने की स्वतंत्रता, व्यावसाय की स्वतंत्रता, जीवन एवं स्वतंत्रता का अधिकार, विधि के समक्ष स्वतंत्रता का अधिकार, समान अवसर का अधिकार, अपने जन्मजात या मनपसंद धर्म का पालन और उसके खुले प्रदर्शन का अधिकार, अल्पसंख्यकों को समान जीवन का अधिकार।

जाहिर है कि हमारे संविधान निर्माता अमेरिका और फ्रांसीसी क्रांतियों के आदर्शों से प्रभावित थे। इसलिये उन्होंने कुछ बुनियादी अधिकार हमें प्रदान किये। ये अधिकार वाद योग्य हैं। और उच्चतम न्यायालय को विशेष रूप से इन अधिकारों के संरक्षण का दायित्व सौपा गया है। इसके अलावा सन् 1919 की रूस की क्रांति और समाजवादी विचारों से प्रेरित होकर कुछ अन्य अधिकार भी हमारे संविधान निर्माताओं ने संविधान में शामिल किये जो बहुत महत्वपूर्ण हैं। उदाहरणतः रोजी-रोटी कमाने का अधिकार,

जीवन निर्वाह के पर्याप्त साधन का अधिकार, न्यूनतम मजदूरी का अधिकार, समान कार्य के लिये समान वेतन का अधिकार, बेरोजगारी की स्थिति में सार्वजनिक सहायता का अधिकार, बीमारी और बुढ़ापे में उपचार और देखभाल का अधिकार, शिक्षा का अधिकार, न्याय प्राप्त करने के समान अवसर और विधिक सहायता का अधिकार इत्यादि। इन्हें हमारे संविधान में राज्य के नीति-निर्देशक तत्व के रूप में घोषित किया गया है। ये तत्व वाद योग्य नहीं हैं किन्तु संविधान ने स्वयं इन्हें देश के शासन में मौलिक सिद्धान्तों के रूप में घोषित किया है। जिन्हें नया नियम या कानून बनाते समय राज्य को ध्यान में रखना आवश्यक है।



राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री जे एस वर्मा वाद-विवाद प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करते हुए

भारत एक प्राचीन और सभ्य देश है, हमारी संस्कृति में मानवाधिकारों की रक्षा करने का स्थान हमेशा से महत्वपूर्ण रहा है। सदियों से हमारे पूर्वजों द्वारा प्रस्तुत राजनैतिक दर्शन हमारे कानूनों का मार्गदर्शन करता रहा है। जब पश्चिमी देश संयुक्त संघ में 40 के दशक के अंतिम चरण में मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा की चर्चा चल रही थी तब हमारे नये स्वतंत्र राष्ट्र के लिये संविधान बनाने वाले नेता इन अधिकारों को प्राथमिकता दे रहे थे। यहाँ तक कि संयुक्त राष्ट्र की कुछ घोषणाएँ इन मानवाधिकारों के बारे में हमारे संविधान के लागू होने के 16 वर्ष बाद हुई जबकि

उनकी झलक हमारे सांवेधान में पहले से ही मौजूद थी। इससे साफ जाहिर है कि भारत अपने प्राचीन आदर्शों पर चलते हुए इस मामले में सबसे आगे है। संसार के किसी देश के संविधान में ऐसा कोई दूसरा उदाहरण दुनिया में शायद ही मिले। मानवाधिकारों के समावेश को हमारे भारतीय संविधान नामक फूल में रहने वाली "मधू" कहा जाये तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

प्रत्येक भारतवासियों का यह परम कर्त्तव्य है कि वे इन विशिष्ट मानव अधिकारों का निष्ठापूर्वक पालन करें, जिससे कि हमारी पुरातन भारतीय संस्कृति गौरवान्वित बनी रह सके और भारतीय समाज का नाम जनमानस विश्व समाज का साथ देते हुए सुख, शांति और समृद्धि की मंजिल की ओर बढ़ सके।

– हवलदार/ आरमोरर, कुलकर्णी रामचन्द्र भीमराव
139 बटा०,

तीसरी सिग्नल बटालियन में नई बैरक व क्वार्टर गार्ड का उद्घाटन



3सिग्नल बटालियन के.रि.पु.बल का मुख्यालय, ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल रामपुर (उत्तर प्रदेश) से 5 जनवरी, 2000 को सेक्टर-5, साल्ट लेक, कोलकता-91 में स्थानांतरित हुआ। तदोपरान्त बटालियन की समस्त गतिविधियां समुचित कार्यालय भवन के अभाव में पारिवारिक आवासीय परिसर में चल रही थी। जुलाई, 2001 में केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग द्वारा इन नवनिर्मित भवनों को केन्द्रीय रिजर्व रिजर्व पुलिस बल को सुपुर्द किया गया। 9 मई, 2003 को उक्त भवनों का उद्घाटन पुलिस महानिरीक्षक, केरिपुबल, पूर्वी सेक्टर, श्री वागिश मिश्र, भा.पु. सेवा, द्वारा किया गया। इस अवसर पर के.रि.पु.बल के स्थानीय सेवारत व सेवानिवृत अधिकारियों समेत कई गणमाण्य लोग भी उपस्थित हुए। श्री वागिश मिश्र ने केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग द्वारा किये गये कार्य की गुणवत्ता की तारीफ की तथा सम्पूर्ण निर्माण कार्य पर संतोष प्रकट किया। मुख्य अभियंता (सिविल) केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग श्री प्रताप सिंह के भी इस अवसर पर बोलते हुए निर्माण कार्य के दौरान केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल द्वारा मिले सहयोग की सराहना की। इससे पूर्व अपने उद्घाटन भाषण में कमांडेन्ट-3 सिगनल बटालियन, केरिपुबल, श्री टी.बी. राव ने निर्माण कार्य के दौरान पुलिस महानिरीक्षक, केरिपुबल, पूर्वी सेक्टर द्वारा समय-समय पर मिले मार्गदर्शन व केन्द्रीय लोक निर्माण द्वारा किये गये उच्च स्तरीय कार्य के लिए उनका आभार प्रकट किया। उप कमांडेन्ट-3 सिगनल बटालियन, श्री ए.के. सिंह ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। 9 मई, 03 को ही उक्त भवनों में बटालियन का मुख्य कार्यालय, तकनीकी स्टोर तथा जवानों व अधीनस्थ अधिकारियों का भोजनालय और आवास स्थानांतरित कर दिये गये। 180 जवान की बैरक में कार्मिकों के मनोरंजन के लिए मनोरंजन कक्ष के साथ-साथ इंटरनेट, व्यायामशाला व टेबल टेनिस की भी सुविधा प्रदान की गयी है। इस अवसर पर 24 टाईप-दो के पारिवारिक आवासों को जरूरतमंद कार्मिकों के लिए आवंटित कर दिये गये।

पिता का शिक्षक के नाम पत्र

अब्राहिम लिंकन का उस विद्यालय के हेडमास्टर को लिखा गया पत्र जिसमें उनका पुत्र पढ़ता था। अब्राहिम लिंकन संयुक्त राज्य अमेरिका के सन् 1831 से 1865 तक 16 वे राष्ट्रपति थे।

“मैं जानता हूँ उसे समझना चाहिए कि सब लोग निष्पक्ष नहीं है, सब लोग सच्चे नहीं है। लेकिन उसे यह शिक्षा भी दो कि दुनिया में अगर दुष्ट लोग हैं, तो बहादुर भी

हैं, जहाँ स्वार्थी राजनीतिज्ञ है, वहाँ समर्पित नायक भी हैं। उसे शिक्षा दीजिए कि जहाँ दुश्मन है वहीं दोस्त भी है। मैं जानता हूँ कि इसमें समय लगेगा, लेकिन उसे सिखाइए कि कमाया हुआ एक डालर भी मुफ्त में पाए हुए पांच डालरों से अधिक मूल्यवान होता है। उसे शिक्षा दीजिए ताकि वह हारना और जीतना सीख सके। उसे ईर्ष्या से दूर ले जाइए और अगर हो सके तो उसे शांत हंसी का रहस्य सिखाइए। उसे यह जल्दी जान लेना चाहिए कि निर्दयी लोग बहुत जल्दी दीन हो जाते हैं। अगर हो सके तो उसे पुस्तकों के चमत्कार बताइए लेकिन उसे आसमान में उड़ते पंछियों, धूप में उड़ती मधुमखियों और हरे भरे पहाड़ी इलाकों में खिले फूलों के अनंतः रहस्यों पर भी शान्ति से चिन्तन करने के लिए समय दीजिए।

स्कूल में उसे शिक्षा दीजिए कि बेईमानी करके सफल होने की बजाय असफल हो जाना ज्यादा सम्मानजनक है। उसे सिखाइए कि वह अपने विचारों पर भरोसा रखे भले ही हर कोई उसे गलत बताए। उसे शालीन लोगों के साथ शालीनता से और दुष्ट लोगों के साथ कड़ाई का बर्ताव करने की शिक्षा दीजिए। मेरे बच्चे को शक्ति देने की कोशिश कीजिए ताकि वह सबकी देखा देखी भीड़ के साथ न चलने लगे। उसे सबकी बात सुनने की शिक्षा दीजिए, लेकिन उसे यह भी सिखाइए कि वह सब कुछ सुना हुआ सच्चाई के पर्दे पर छाने और उसके बीच से निकला अच्छा ही प्राप्त करे।

अगर हो सके तो उसे दुःख में हंसना सिखाइए। उसे सिखाइए कि आंसू आना लज्जा की बात नहीं है, उसे कुटिल लोगों को मुँह न लगाने और ज्यादा मीठा होने से सावधान रहने की शिक्षा दीजिए। उसे सिखाइए कि वह अपनी मेहनत और बुद्धिमानी को उसी के लिए इस्तेमाल करे जो उसके सबसे अधिक मूल्यवान लगे, लेकिन अपने दिल और आत्मा को न बेचे। उसे शोर मचाती भीड़ को अनसुना करने और सही बात पर संघर्ष करने की शिक्षा दीजिए।

उसे सौम्यता सिखाइए, लेकिन अच्छे फौलाद को दबाइए नहीं। उसमें अधीर होने का साहस आने दीजिए लेकिन उसमें बहादुर होने का धीरज भी आने दीजिए। उसे हमेशा अपने आप पर पवित्र विश्वास रखने की शिक्षा दीजिए क्योंकि तभी वह हमेशा मनुष्यता पर पवित्र विश्वास कर पाएगा। यह एक बड़ी बात है, लेकिन देखना है कि आप क्या कर सकते है ? वह है ही इतना अच्छा, नन्ही सी जान-मेरा बच्चा।

अगर हर इन्सान उपरोक्त भावार्थ पर अध्ययन व विचार करके चले तो कभी भी जिन्दगी में निराश नहीं होगा।

– शिवराम विश्नोई
122 बटालियन

कहानी

तकदीर की खोज

रामनगर नाम का एक छोटा सा गाँव था। वहाँ पर एक गरीब पंडित रहता था। जिसका नाम था कृपाशंकर। दिनभर मेहनत मजदूरी करता था, और जो थोड़ी सी खेती थी उसी में वो अपना घर चला रहा था। कृपाशंकर के चार लड़के थे, लेकिन चारो महामूर्ख थे, बाप के काम में कोई भी हाथ बांटने के लिए तैयार नहीं था। कुछ भी काम नहीं करते थे, दिन भर गाँव में घूमते रहते थे। कृपाशंकर इन चारों की हरकतों से काफी परेशान था। अपने चारों लड़कों को उसने भविष्य के बारे में काफी समझाने की कोशिश की। लेकिन चारों मूर्ख एकदम समझ के बाहर थे। चारों ही आलसी थे और कुछ करना नहीं चाहते थे, चारों को बैठकर खाने की आदत पड़ी थी। कृपा शंकर के हाथ पैर जब तक चले तब तक उसने उनको पाला पोसा, लेकिन जब बुढ़ापा आया तो वह कुछ भी नहीं कर पाता था। सभी को भूखे मरने की नौबत आयी तो चारों लड़कों ने घर का एक-एक सामान बेचना शुरू कर दिया। घर में जो कुछ सामान था वो बेचकर उन्होंने कुछ दिन घर चलाया, लेकिन इधर कृपाशंकर की चिंता दिन पर दिन बढ़ती जा रही थी। उसने सोचा कि ये ऐसे ही घर का सारा सामान बेच देंगे तो एक दिन घर भी बेचने की नौबत आ जायेगी और सभी को रास्ते पर आना पड़ेगा। इसलिए उसने एक तरकीब निकाली और अपने चारों लड़कों को अपने पास बुलाया और कहा कि आप लोगों की तकदीर बहुत खराब है। आप लोगों की अच्छी तकदीर बनाने के लिए मैंने यहाँ से पश्चिम दिशा की ओर एक पहाड़ी है, उसके ऊपर एक मंदिर है और मंदिर के पीछे एक गुफा है, उसी में धन छुपा के रखा है। अगर आप लोग ले आयेंगे तो आप लोगों की तकदीर फिर से चमक जायेगी और आप लोगों को कभी दुःख का सामना नहीं करना पड़ेगा।

दूसरे दिन चारों लड़के घर में जो कुछ खाने का सामान बचा था उसे लेकर वहाँ चल पड़े। चारों पूरे दिन रास्ते में चलते रहे और आगे उनको घना जंगल मिला। जंगल में चलते चलते उनको अंधेरा हो गया, इसलिए चारों ने मिलकर खाना खाया और एक बड़े पेड़ के नीचे सो गये। मध्यरात्रि 12 बजे के करीब वहाँ पर चार चोर अपना चोरी का सोना बाँट रहे थे, अपने-अपने हिस्से को लेकर चारों के बीच जोर-जोर से झगड़ा होने लगा। एक मूर्ख की आँख झगड़े की आवाज सुनकर खुल गयी। उसने जैसे ही चारों चोरों को झगड़ते हुए देखा तो लगा कि कोई भूत पिशाच झगड़ा कर रहा है। इसलिए डर के मारे वह रोने लगा। इससे तीनों मूर्खो की नींद खुल गयी और इतनी रात में एक को रोते देखकर तीनों जोर-जोर से हँसने लगे। चोरों ने जब रोने तथा हँसने की आवाज सुनी तो उन्होंने इधर-उधर देखा तो उनको कोई नजर नहीं आया, इसलिए उन्होंने सोचा कि जरूर यहाँ कोई भूत पिशाच है और डर के मारे सारा सोना उधर ही छोड़कर चारों चोर वहाँ से भाग गये। ये मूर्ख भाई उधर से उठकर देखने गये तो उनको बहुत सारा सोना नजर आया, एक ने कहाँ चलो ये सोना हम चारों बांटकर

लेते हैं और घर वापस चलते है। तीन भाइयों ने कहाँ नहीं, हम अपनी अच्छी तकदीर ढूंढ लायेगें परन्तु एक ने सोचा यही अपनी अच्छी तकदीर है। और वह सारा सोना लेकर वापस आया। बाकी तीनों वहाँ से चल पड़े, रास्ते में उनको एक गुफा नजर आयी, तीनों को लगा कि इसी गुफा में अपनी अच्छी तकदीर छिपी होगी, लेकिन गुफा के मुँह पर एक बड़ा पत्थर रखा हुआ था, तीनों ने मिलकर उस पत्थर को हटाया और अन्दर गये। अन्दर देखा तो पूरी गुफा सोने तथा चांदी से भरी पड़ी थी, एक ने कहाँ यही अपनी अच्छी तकदीर हो सकती है, ये सब हम तीनों बाँट लेते हैं। दो भाईयों ने कहाँ ये सोना-चांदी अपनी अच्छी तकदीर नहीं हो सकती, हमें नहीं चाहिए। तीसरे ने सोचा यही मेरी तकदीर है और वह सारा सोना चांदी लेकर वापस आ गया। अभी बचे दोनों भाई दिन रात चलते रहे, एक दिन सुबह वे एक नगर में पहुँच गये, वहाँ का राजा भी सुबह वहाँ घुमने के लिये आया था, राजा की नजर जैसे ही इन दोनों नौवजवानों पर पड़ी तो राजा ने अपने सैनिकों को आदेश दिया कि इन दोनों को पकड़कर दरबार में लाया जाये। जब दोनों को राजा के सामने दरबार में लाया गया। राजा ने पहले ही ऐलान कर रखा था कि आज सुबह जिस अजनबी का वह पहले मुँह देखेगा उसी के साथ राजकुमारी का विवाह कर देगा। आप दोनों में से कौन राजकुमारी के साथ शादी करने के लिये तैयार हैं, एक ने सोचा कि यहाँ अपनी अच्छी तकदीर नहीं हो सकती है। मैं उसी गुफा में जाकर अपनी अच्छी तकदीर ले कर आऊँगा, दूसरा राजकुमारी से विवाह करने के लिये राजी हो गया और विवाह करके भोग विलास की जिन्दगी जीने लगा। लेकिन चौथा भाई अपनी अच्छी तकदीर की खोज में घूमते घूमते एक घने जंगल में आ पहुँचा। जंगल से गुजरते समय एक भयंकर तूफान आया और एक पेड़ की बड़ी टहनी टूटकर उसके सिर पर जोर से गिरी, वह वहाँ पर बेहोश होकर गिर गया, कुछ एक पल में ही वहाँ जोर से बारिश होने लगी, बारिश की बूंदे जैसे ही चौथे मूर्ख के मुँह पर गिरी तो होश में आ गया, चोट के कारण उसका सिर दर्द कर रहा था, लेकिन सिर पर लगे इस चोट के कारण उसके दिमाक से मूर्खता के पूरे लक्षण नष्ट हो गये और वह सोचने लगा कि हमको पिताजी ने अपनी अच्छी तकदीर लाने के लिये भेजा था। लेकिन तकदीर ऐसे थोड़े कहीं छिपाई जाती है। वह अपने आप को ही बनानी पड़ती है। ऐसा सोचकर वह वापस अपने गाँव में आया और जो थोड़ी जमीन थी, उसमें मेहनत करके खेती करने लगा, धीरे-धीरे उसकी मेहनत रंग लाती गयी और उसके पास पैसा आने लगा। अभी उसने गाँव में और जमीन खरीद ली और पूरी जी-जान लगाकर उसमें मेहनत करने लगा। धीरे-धीरे वह गाँव का सबसे बड़ा अमीर आदमी बन गया। धीरे-धीरे उसने शादी की और उसके बच्चे भी हो गये।

लेकिन जिसने राजकुमारी के साथ शादी कर रखी थी वह अपने राजविलास का सही उपभोग नहीं कर सका इसलिये उसने अपना पूरा खजाना खाली कर दिया और कुछ एक दिन में उसने अपनी पत्नी को भी गवां दिया और भिखारी बन गया। दूसरे दो भाई जिनको सोना, चांदी मिली थी वे भी मूर्खता के कारण अपनी सम्पत्ति का सही उपभोग नहीं करना जानते थे इसलिए कुछ दिन में वे भी भिखारी बन गये, लेकिन

चौथा मूख जिसके अन्दर के सारे मूखता के लक्षण चोट के कारण नष्ट हो गये थे, उसने अपनी सारी सम्पत्ति मेहनत से कमायी थी। इसलिए वह उसका उपभोग भी करना जानता था। अतः भविष्य में उसको कभी भी दुःख का सामना नहीं करना पड़ा।

- सि० एस.एम. सावंत
122 बटा.

"सी०आर०पी०"

तेरा जन्म हुआ नीमच में, 27 जुलाई, 1939 को,
तुझे नाम दियो क्राउन रिप्रेजेनटव पुलिस को,
तेरी बागडोर शुरू में रही अंगेजों के हाथ,
तेरा दिल रहा सदा अपने भारतीयों के साथ,
तेरे परिवार को भारतीयों ने बढ़ाया,
कोने-कोने से आकर शूरवीरों ने तेरा नाम चमकाया,
अंग्रेजों की कमान में रहकर भी तूने की, भारत की सेवा,
सब जगह होने लगी तेरी वाह-वाह, तेरे काम की पाकर मेवा,
एक दिन आया तूफान आजादी का,
तूने पाई निजात अंग्रेजों से बरबादी का,
भाग्य तेरा फिर चमका सरदार पटेल के हाथ,
तेरा नाम फिर बदला देश की आजादी के साथ,
तुझे दिया लौह पुरूष ने "सेन्ट्रल रिजर्व पुलिस" का नाम,
28 दिसम्बर, 1949 को, भारतीय संविधान में, लिखा गया तेरा सुनहरा नाम,
सी०आर०पी० परिवार की खुशियाँ हुई अपार, पाकर तुझे राष्ट्र की, सेवा-भक्ति का काम,
तूने दी अपनी कुर्बानी भारत को एकजुट बनाने में,
सब गुलामी रियासतों को पिरोया भारत की एक माला बनाने में,
तेरे बहादुरों ने चीनियों के खिलाफ हाट स्प्रींग में,
21 अक्टूबर, 1959 में की पहली लड़ाई,

उनको वापेस खदेड़ देश सीमा से बाहर,
बहादुर सेनानियों ने अपार खुशियाँ मनाई,
सींचा देश की बगिया को देकर अपने खून की बलिदानी,
ये ही तो है सी०आर०पी० के बहादुर सेनानियों की एक अमर कहानी,
जिसे पूरा भारतवर्ष मनाता है "शहीद दिवस" के नाम,
सभी पुलिस बल शीश झुकाकर करते हैं उन्हें सलाम,
सी०आर०पी० जननी अन्य भारतीय बलों की,
सभी अनुकरण करते हैं सी०आर०पी० जवानों की,

था, अप्रैल "1965" का सी०आर०पी० का एक सुनहरा दिन,
थी, सरदार पोस्ट पर तैनात "सेकण्ड बटालियन" की दो कंपनियों उस दिन,
किया वार धोखे से पाकिस्तानी फिरगियों ने सी०आर०पी० पर उस दिन,
मुँह की खाकर भाग पड़े 34 जवानों को मरवाकर उस दिन,
हाहाकार मच गया पूरे ब्रिगेड में इस मार व हार की,
जय जय कार होने लगी पूरे भारत में सी०आर०पी० की,
ये ही तो है एक अनोखी क्वालिटी सी०आर०पी० की,
कर देती है वो काम तमाम पाकर दुआँ बलिदानों की,

दिया ध्वज महामहिम राष्ट्रपति ने सी०आर०पी० के नाम,
सी०आर०पी० का परिवार करता है उसे सुबह-शाम सलाम,
सन् 1939 से आज तक तूने किया सफर 63 वर्ष का,
दिन-रात की तूने सेवा राष्ट्र की, देकर नारा सेवा-भक्ति का,
तेरे परिवार में एक साथ रहते हैं हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई,
आपस में मिलकर रहते हैं भाई-भाई,
विश्व में तुझे जानते हैं मिनी इंडिया के नाम विदेशी भाई,
तेरे सुनहरे सिद्धांत में है यही एक गुण की अच्छाई,
भारत के हर लोगों की तूने की है निष्पक्ष भलाई,

मांग बढ़ी संसद में महिलाओं की इज्जत और रक्षा की,
राजीव जी ने गठन की 1988 में एक नयी वाहिनी सी०आर०पी० की,
जिसे नाम दिया महिला वाहिनी सी०आर०पी० की,
विश्व में पहली बार महिला अर्द्ध सैनिकों ने छवि बढ़ाई सी०आर०पी० की,
ऐसा काम कर दिखाया सी०आर०पी० की महिलाओं ने,
जिसको विश्व में नयी शक्ति के रूप में हुई पहचान तेरी महिलाओं की,

दिसम्बर 1990 में माननीय प्रधामंत्री राजीव गाँधी की दूर दृष्टे से,
जन्म हुआ सी०आर०पी० में द्रुत कार्य बल का,
जिसने अंत किया सदा के लिए भारत से साम्प्रदायिक दंगों का,
बढ़ा भारत के इतिहास में एक और उपलब्धि का तेरा नाम,
जिससे हिन्दू-मुस्लिम के बीच प्रेम बढ़ाने का किया तूने अपना काम,
13 दिसम्बर "2001" को संसद पर वार किया काफिरों/आंतकियों ने,
तेरे ही वीरों ने देकर कुर्बानी विश्व में भारत की लाज बचाई,
नतमस्तक होकर सब भारतियों ने उन पर पुष्पांजलि चढ़ाई,
किया सम्मान राष्ट्रपति ने देकर राष्ट्र की ओर से पदक और बधाई,
तूने अपना परिवार दिन-रात मेहनत करके बढ़ाया,
भारत की जनता के साथ-साथ विश्व में नाम कमाया,
चाहे खेल हो, चाहे आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई,
तूने कभी न मात खाई,
सन् 1952 से आजतक तूने संसद का शांति एवं निष्पक्षता से चुनाव कराया,
तूने विश्व में भारत के लोकतंत्र की शान बढ़ाई,
हर जगह तूने जीते पदक बढ़ाकर अपने कदम,
घोर विपत्ति आने पर भी नहीं रूके तेरे कदम,
20 वीं सदी में तूने बढ़ाए थे अपने कदम,
21 वीं सदी आने पर भी तेरे बढ़ते जा रहे हैं कदम,
यह ही दुआएँ मेरी बढ़ते रहें तेरे कदम ऐसे ही सदा,
करते रहना राष्ट्र का नाम ऊँचा विश्व में सदा,
जोड़ते रहना भारत के इतिहास में अपना नाम सदा,
करके राष्ट्रद्रोहियों का विनाश सदा,
लगाते रहना मेला उन की यादों में सदा,
जिन्होंने देकर अपना खून अमर रखा तुझे सदा।

- राजेन्द्र सिंह
कमांडेण्ट-93 बटालियन

दोहरी मानसिकता

नवरात्रों के दौरान हम वैष्णो देवी के दर्शनों के लिए जा रहे थे। रेलगाड़ी जैसे ही लुधियाना स्टेशन पहुँची, सेना के तीन-चार जवान हमारे डिब्बे में आ गए। इत्तफाक से मैं रिर्जवेशन पा गया था। डिब्बे में कोई भी सीट खाली न पाकर वे दरवाजे और शौचालय के बीच की खाली जगह पर चादर बिछाकर लेट गए। जैसा कि हम फौज वाले आमतौर पर करते हैं।

कुछ समय बाद एक स्त्री की नजर उन फौजियों पर पड़ी तो वह आग बबूला हो गई। उसने उन्हें तुरन्त वह आरक्षित डिब्बा छोड़ कर दूसरे डिब्बे में जाने को कहा। सैन्य कर्मियों ने श्रीनगर में अपनी इमरजेंसी ड्यूटी की दुहाई दी, परन्तु वह स्त्री अपनी जिद पर अड़ी रही। जालंधर आते-आते उसने उन्हें डिब्बे से बाहर निकालकर ही दम लिया।

अगले दिन जब हम माता के दरबार में पहुँचकर लाईन में अपनी बारी की प्रतीक्षा कर रहे थे। तभी वह स्त्री अपने परिवार वालों के साथ घूमती हुई वहाँ नजर आई और उसने बताया कि लाईन में लगे बगैर उसने माता के दर्शन कर लिए हैं क्योंकि उनके परिवार के दो सदस्य सेना में कार्यरत हैं। अतः आर्मी कोटे के अन्तर्गत उसे लाईन में लगे बगैर ही दर्शन हो गए।

यह बात सुनकर उस स्त्री द्वारा ट्रेन में सेना के जवानों को अपमानित करने का दृश्य मेरी आँखों के सामने आ गया।

मैं समझ नहीं पाया कि सैनिक परिवार से संबंधित होने पर भी उन्होंने जवानों के साथ ऐसा अशोभनीय व्यवहार क्यों किया। आखिर यह “दोहरी मानसिकता” किस लिए।

सि० राजेश कुमार तिवारी
1 बटा., केरिपुबल

अभिलाषा

ये भारत के वीरों,
उठो फिर दुबारा।
हिमालय ने पुकारा,
लगा दो बाजी जान की।

तुझकों देता हूँ कसम भगवान कों,
खा के कसम हल्दी घाटी पानीपत की।
ले के तिंरगा बढ़ जाओ,
चट्टानों को तोड़ के रख दो।
दुश्मन को दहला दो सीना ताने,
निकल जाओ घर से।
माया न रखो जान की,
तुझको देता हूँ कसम भगवान की।

इन्द्रजीत सिंह
आई.टी.आई., सी.आर.पी.एफ.
ग्रुप केन्द्र, भुवनेश्वर (उड़ीसा)

निराशा भगाओ खुशियाँ पाओ

सुनों मेरे भाई और बहनों कहता हूँ सबको,
कभी न निराश करो अपने मन को।
निराशा एक बहुत बड़ी नाल हैं,
उस नाल में अंधेरों का जाल है।
जो उस जाल में जाए फिसल,
बाहर निकलना उसे बहुत मुश्किल।
यदि निराशा मन में फैल जाए,
किसी तरह उसे दो हटाए।
निराशा के पास न जाओ भला,
यदि चाहते हो जीवन में सुख व उजाला।
सदा ईश्वर पर करो विश्वास,
न आएगा निराशा तुम्हारे पास।
कभी न सताओ किसी को,
सदा प्यार करो सबको।

– रामा कृष्णा राणा
आई.टी.आई., सी.आर.पी.एफ.
भुवनेश्वर (उड़ीसा)

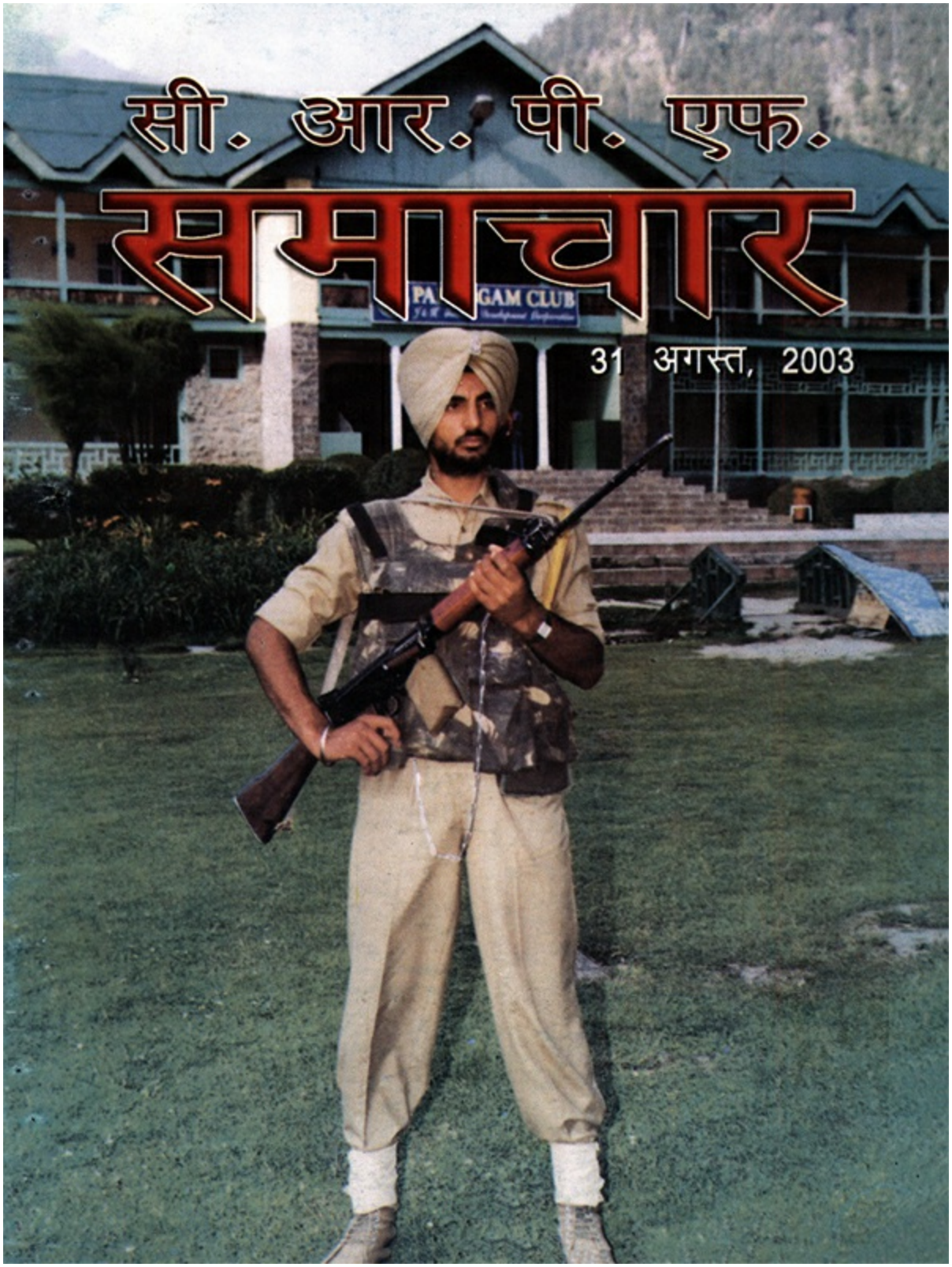


सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल रोहिणी में आयोजित समारोह में स्कूल के मेधावी छात्रों को शील्ड प्रदान करती हुई श्रीमती कंचन चौबे



ग्रुप केन्द्र जमशेदपुर में सौंदर्य प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन करती हुई श्रीमती श्यामानंदन सिंह


रजि. न. 4767/87


सी. आर. पी. एफ.
समाचार
31 अगस्त, 2003



सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल रोहिणी, नई दिल्ली के मेधावी छात्रों के साथ अपने कार्यालय में चर्चा करते बल के महानिदेशक श्री एस.सी. चौबे



हाल ही में बार्सिलोना *(*स्पेन*)* में सम्पन्न हुए वर्ल्ड पुलिस एवं फायर गेम्स-*2003* में पदक जीत कर लाने वाले केरिपुबल के खिलाड़ी



सी.आर.पी.एफ. समाचार

खण्ड-16 अंक-5
31 अगस्त, 2003
9 भाद्रपद, शक 1925

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
रणबीर सिंह

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं यूनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशालय के.रि.पु. बल
ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स
लोधी रोड, नई दिल्ली-110003
की ओर से
डी.जी. महापात्र

कम्पोजिंग एवं प्रिंटिग
सी.आर.पी.एफ. प्रेस
नई दिल्ली-110072

सम्पादकीय सलाहकार मण्डल
अध्यक्ष
हिमांशु कुमार, अपर महानिदेशक
सदस्य
विक्रम श्रीवास्तव, महानिरीक्षक (कार्मिक एवं मुख्यालय)
राजेन्द्र सिंह, उप महानिरीक्षक (कार्मिक)
डी.एन.एस. बिष्ट, उप महानिरीक्षक (परिचालन)

पी.जे. शेट्टी, उप महानिरीक्षक (प्रशा)
सी.बी. मैथ्यू, अपर उप महानिरीक्षक (प्रशि.),
प्रवीण कुमार, उप वित्तीय सलाहाकार
एम.एस. नेगी, कमान्डेंट (एम.टी.)
डी.जी. महापात्र, जनसम्पर्क अधिकारी
मणि भूषण प्रसाद, हिंदी अधिकारी

इस अंक में

- तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्टता की मिसाल सी०आर०पी०एफ० आई.टी.आई भुवनेश्वर
- फोर्स का कोई मजहब नहीं होता
- झारखण्ड में नक्सलवादी आन्दोलन
- पी.डब्ल्यू.जी. नक्सलवाद
- केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के साये में श्री अमरनाथ यात्रा
- के०रि०पु०बल- चुनौतियाँ एवं सफलता
- "जम्मू-कश्मीर के बदलते हुए परिदृष्य की आहट"
- बल की महिला शक्ति
- प्रकृति की सजग पहरेदार केरिपुबल की 30वीं बटा.
- जूड़ो
- तनाव एक महामारी
- ज्योतिष का मानव जीवन पर प्रभाव तथा उपायों से लाभ

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

–संपादक

तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ठता की मिसाल सी०आर०पी०एफ० आई.टी.आई भुवनेश्वर

- डी. जी. महापात्र
जन संपर्क अधिकारी



केरिपुबल आईटीआई संस्थान भुवनेश्वर *(उड़ीसा)*

दूर दराज के भागों में तैनात के.रि.पु.बल कार्मिकों को अपने बच्चों के भविष्य के बारे में सदैव चिन्ता रहती है कि वे लोग स्वयं इतनी दूर तैनात हैं और उनके बच्चे गाँव-देहात में किस प्रकार से पढते-लिखते होगें। क्योंकि अभी भी देश के देहाती इलाकों में बेहतर रोजगारोंमुखी शिक्षा प्राप्त के संसाधनों का अभाव है। अपने कार्मिकों की इस चिन्ता को ध्यान में रखते हुए बल ने आवड़ी, दिल्ली एवं भुवनेश्वर में आई.टी.आई संस्थान स्थापित किये हैं ताकि बल कार्मिकों के बच्चे व्यावसायिक रोजगारोंमुखी शिक्षा प्राप्त कर सके। एकीकृत तकनीकी शिक्षा संस्थान भुवनेश्वर की स्थापना इसी उद्देश्य से केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल कर्मचारी शिक्षा सोसाइटी द्वारा 1995 में की गई थी। इस आई.टी.आई की शुरूआत इलेक्ट्रोनिक्स तथा रेडियो/टीवी मकेनिक जैसे दो

ट्रेडों के साथ एक यूनेट के रूप में की गइ। इस ट्रेड की दूसरी यूनेट वर्ष 1996 में शुरू की गई।

यह संस्थान केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के उन जवानों के बच्चों/भाई-बहनों को तकनीकी शिक्षा की मूलभूत जरूरतों को पूरी करता है जो देश के सुदूर क्षेत्रों में अपने कर्तव्यों का निर्वाहन कर रहे हैं। अतः सी.आर.पी.एफ आई.टी.आई भुवनेश्वर में योग्य एवं अनुभवी अनुदेशकों को तैनात किया गया है जो प्रशिक्षु छात्रों को सदैव स्वेच्छा से प्रशिक्षण के साथ-साथ हर प्रकार की सहायता देने के लिए उपलब्ध रहते हैं। संस्थान में तैनात प्रशासनिक स्टाफ भी बहुत ही योग्य एवं अनुभवी है।

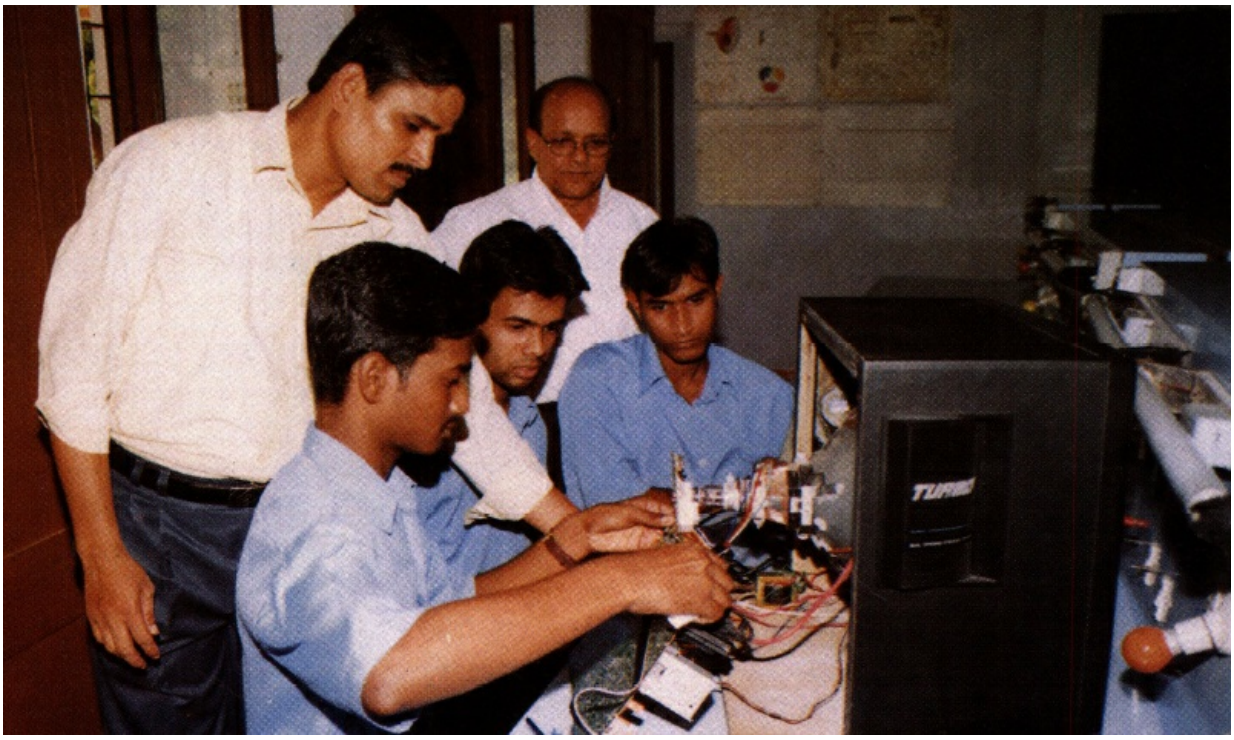
इस समय संस्थान में 62 प्रशिक्षु प्रशिक्षणरत हैं, जिनमें से 40 प्रशिक्षु के०रि०पु०बल कार्मिकों के बच्चे तथा भाई-बहन जबकि 22 प्रशिक्षु सिविलियन हैं। पिछले वर्ष से यह संस्थान केन्द्रीय अर्द्धसैनिक बलों के कार्मिकों के बच्चों/भाई-बहिनों को शतप्रतिशत दाखिला प्रदान कर रहा है।

इस संस्थान में शिक्षा के अलावा प्रशिक्षुओं को शारीरिक रूप से चुस्त दुरूस्त बनाने के लिए सुबह शारीरिक व्यायाम की शिक्षा भी दी जाती है। संस्थान का ध्येय अनुशासन है। इसलिए इस संस्थान में प्रशिक्षुओं को केवल तकनीकी शिक्षा ही प्रदान नहीं की जाती है बल्कि उनके व्यक्तित्व को निखारने के लिए हर पहलू पर ध्यान दिया जाता है।

सभी प्रशिक्षुओं को होस्टल की सुविधा प्रदान की गयी है ताकि वे शान्तचित रहकर गहन शिक्षा गृहण कर सकें। यह एक आवासीय संस्थान है। किसी भी प्रशिक्षु को बाहर रहने की अनुमति नहीं दी जाती है। संस्थान के छात्रावास के कमरे पूरी तरह से सज्जित हैं जिनमें चौबीसों घंटे पानी की व्यवस्था है। प्रशिक्षुओं का सर्वांगीण विकास करने के लिए इन्डोर खेलों के साथ योग की कक्षांए भी शीघ्र चलाने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं।

कर्मशाला

अभियांत्रिकी ट्रेडों में महारथ एवं कौशलता प्राप्त करने के लिए प्रेक्टिकल ट्रेनिंग बहुत जरूरी है। अतः दोनों ट्रेडों के प्रेक्टिकल के लिए संस्थान में अपनी स्वतंत्र कर्मशाला है जिसमें प्रशिक्षुओं को श्रेष्ठ एवं आधुनिकतम तकनीकी शिक्षा प्रदान करने के लिए पर्याप्त औजार एवं टूल उपलब्ध हैं। उड़ीसा की अन्य आई.टी.आई की तुलना में इस संस्थान की कर्मशाला में बेहतरीन सुविधाए सुलभ हैं। प्रशिक्षुओं को शत प्रतिशत मुफ्त टूल तथा कच्चा सामान अभ्यास तथा प्रोजेक्ट कार्य के लिए मुहैया कराया जाता है। प्रशिक्षु केवल टी.वी.,रेडियो, स्टेबलाइजर तथा अन्य इलेक्ट्रोनिक उपकरणों की मरम्मत का काम ही नहीं सीखते हैं बल्कि क्लाप स्वच, इन्टर काम व्यवस्था आदि जैसे प्रोजेक्ट वर्कों पर भी कार्य करने के लिए स्वतंत्र हैं।



आईटीआई भुवनेश्वर में प्रेक्टिकल ट्रेनिंग लेते प्रशिक्षु

संस्थान में एक बेहतरीन पुस्तकालय है जिसमें इलेक्ट्रोनिक विषयों पर सन्दर्भ प्राप्त करने के लिए बहुत सारी पुस्तकें उपलब्ध हैं जो प्रशिक्षुओं को संदर्भ प्राप्त करने के लिए मुहैया कराई जाती हैं। प्रशिक्षुओं का सर्वांगीण विकास करने के लिए खेल तथा करेन्ट अफेयरस पत्रिकाएं उपलब्ध कराने के लिए भी सभी आवश्यक उपाय किए जा रहे हैं।

प्रशिक्षुओं के लिए संस्थान में आउटडोर खेल की व्यवस्था है। हाल ही में पीछे संस्थान में अन्तर यूनिट वालीबाल टूर्नामेंट का आयोजन किया गया था।

प्रशिक्षुओं के लिए रोजगार के अवसरों की खोज

ऐसे प्रयास किए जा रहे हैं कि जो प्रशिक्षु संस्थान से परीक्षा पास करके जाते हैं उन्हें रिक्तियों की उपलब्धता के अनुसार रोजगार मुहैया कराया जाए। संस्थान विभिन्न औद्योगिक संगठनों में प्रशिक्षुओं को एपरेंटिस दिलाने हेतु हरसंभव प्रयास करता है तथा प्रशिक्षुओं को प्राइवेट तथा सरकारी क्षेत्र में रोजगार प्राप्त करने के बजाय उन्हें स्वयं का रोजगार स्थापित करने के लिए प्रेरित करता है। क्योंकि आर्थिक उदारीकरण के कारण रोजगार अवसरों में निरंतर कमी होती जा रही है। संसाधन संपन्न व्यक्तियों को बुलाकर प्रशिक्षुओं को उद्यगमता प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए भी यह संस्थान प्रयासरत है। अभी तक अनेक प्रशिक्षु विभिन्न प्राइवेट तथा सरकारी संगठनों में रोजगार प्राप्त कर चुके हैं।

मोटर चालक कोर्स

वाहन चालक कोर्स अधिक उम्र वाले मैट्रिक तथा अण्डर मैट्रिक प्रशिक्षुओं के लिए लाभकारी है। वहरहाल यह कोर्स आई.टी.आई. में एक अतिरिक्त यूनिट के तौर पर आरंभ किया गया है। प्रशिक्षुओं को इस ट्रेड की प्रेक्टिकल ट्रेनिंग देने के लिए संस्थान में कर्मशाला तथा गैराज बनाने के लिए उपयुक्त जगह उपलब्ध है। गाड़ियां, टूल आदि जैसे सभी आवश्यक औजार आई.टी.आई को सुलभ करा दिए गये हैं ताकि जुलाई, 2003 से यह कोर्स आरंभ हो चुका है।

सूचना प्रौद्योगिकी तथा इलेक्ट्रोनिक्स व्यवस्था रखरखाव कोर्स का आरंभ

संस्थान के प्राचार्य इंजीनियर श्री जी.सी. मिश्र ने बताया कि आई.टी. आई भुवनेश्वर में रेडियो एवं टी.वी. मकेनिक ट्रेड के स्थान पर एक नई ट्रेड सूचना प्रौद्योगिकी एवं इलेक्ट्रोनिक व्यवस्था एवं रखरखाव कोर्स अभी हाल ही में शुरू किया गया है। निःसंदेह इस कोर्स के आरंभ होने से देश के सभी भागों में रह रहे के.रि.पु.बल कार्मिकों के बच्चे/सहोदर प्रशिक्षण हेतु आने लगेंगें। आज का अंग कम्प्यूटर का युग है और निश्चित रूप से यह कोर्स आज के उद्योगों की मांग पूरी कर सकेगा।

रेडियो एवं टी०वी० ट्रेड के लिए कर्मशाला में पहले से उपलब्ध 90प्रतिशत औजार से नई ट्रेड की आवश्यकता पूरी हो जाएगी।

रेडियो तथा टी०वी० ट्रेड के लिए नियुक्त अनुदेशक ही एक अल्प अवधि की डी०जी०ई० एण्ड टी० द्वारा मान्यता प्राप्त केन्द्र से प्रशिक्षण लेने के उपरांत इस नई ट्रेड का प्रशिक्षण देने योग्य हो जाएंगे। उड़ीसा की पांच सरकारी आई.टी.आईयों जैसे महिला आई.टी.आई कटक, भुवनेश्वर आदि ने भी रेडियो एवं टी०वी० ट्रेड को समाप्त कर इस नई ट्रेड का प्रशिक्षण देना आरंभ कर दिया है।

हल्का मोटर वाहन चालक कोर्स

मोटर वाहन चालक(एल.एम.वी.) कोर्स को अनुमोदित किया जा चुका है तथा अभ्यार्थियों के लिए कोर्स ज्वाइन करने हेतु अनुदेश जारी कर दिए गए हैं। यह कोर्स मात्र 3 माह की अवधि का है क्षेत्रीय परिवाहन अधिकारी भुवनेश्वर से आई.टी.आई में इस कोर्स को चलाने के लिए मान्यता प्रदान करने का अनुरोध कर दिया गया है।

इस आई.टी.आई के गत वर्षों के परीक्षा परिणाम यह दर्शाते हैं कि यह संस्थान तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में एक अहम एवं उल्लेखनीय स्थान रखता है। वर्ष 2001-2002 में इलेक्ट्रिकल मकेनिक ट्रेड में 17 प्रशिक्षुओं ने परीक्षा दी और 88% से ऊपर अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण घोषित हुए। इसी तरह रेडियो/टी.वी. मकेनिक ट्रेड में 16 प्रशिक्षु परीक्षा में बैठे और सभी प्रशिक्षु 100% अंक से पास हुए हैं। इस वर्ष जुलाई, 2003 में कुल 28 नियमित प्रशिक्षुओं ने दोनों ट्रेडों की परीक्षा दी है और उनका परीक्षा परिणाम अभी आना अपेक्षित है।

अतः इस औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान की उपलब्धियों, क्रिया कलापों पर नजर एक डालते तो हमें पता चलेगा कि यह के०रि०पु०बल के कर्मिकों को जो की सुरक्षा एवं कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए अपने परिवारों से सुदूर तैनात हैं उनके बच्चों को शिक्षा और वह भी ऐसी व्यावसयिक शिक्षा प्रदान कर रहा है जो कही भी अपने जीवन यापन एवं परिवार का भरण पोषण के लायक कमा सकते है।

फोर्स का कोई मजहब नहीं होता

- एच. आर. बंगा
कमांडेण्ट 100 बटा. आर.ए.एफ.



जख्मी व्यक्ति को हास्पीटल ले जाते *100* बटा. आरएएफ के जवान

गुजरात के गोधरा रेलवे स्टेशन में हुए मानव नरसंहार के पश्चात गुजरात राज्य में फैले दंगे काफी हद तक ठंडे पड़ चुके थे। दंगों की जो आँधी 27 फरवरी, 2002 से बहुत जोर से चली थी वह अपना वेग बहुत हद तक कम कर चुकी थी। इस आँधी के थपेड़ों से कई बेगुनाह अपनी जान से हाथ धो चुके थे, कई माताओं तथा बहनों के

सुहाग व भाई दंगों की भेंट चढ़ चुके थे। कई बेगुनाह बच्चों की सिसकियां अपने घरों की दिवारों तक सिमट कर रह गयी थी। इस आँधी ने लोगों की मात्र जान का ही नुकसान नहीं किया बल्कि बहुत लोगों का मानसिक कत्ल भी किया। रोजी-रोटी को मुहताज ऐसे परिवार जब इस त्रासदी के भंयकर असर से बाहर आने की कोशिश करते तभी एकाएक साम्प्रदायिकता रुपी दानव बुझती हुई चिंगारी को हवा दे देता, जिसके फलस्वरूप धार्मिकता रूपी जुनून फिर वापिस आ रही शान्ति को भंग करने के लिए गलियों तथा सड़कों के ऊपर उतर आता। राज्य के किसी न किसी स्थान से इस तरह की छोटी-मोटी घटनाओं की रोज खबर आती तथा सुरक्षा बल ऐसे दंगों पर काबू पाने के लिए निकल पड़ते।

100 वीं बटालियन आर०ए०एफ० की एक कंपनी अहमदाबाद में ऐसी घटनाओं से निपटने के लिए हर समय तैयार रहती और घटना की खबर लगते ही मौके पर तुरंत पहुँच कर दंगों को शान्त करती। इस बटालियन के जवानों ने इन दंगों में रातदिन एक कर अपने दुःख व सुख को भुलाकर प्रशासन तथा जनता की मदद करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। 09 जून, 2002 को इस बटालियन की एक कंपनी शहर में डयूटी के लिए तैनात थी तभी खबर मिली कि जुहापूरा इलाके में दंगा भड़क गया है। कंपनी तुरंत घटना स्थल के लिए रवाना हो गई। मैं अपने कार्यालय में बैठा कार्य को निपटा रहा था तभी एकाएक टेलीफोन की घंटी बजी और मुझे दंगा भड़कने के बारे में जानकारी मिली। बिना कोई समय गवाए, मैं तुरंत निकल पड़ा और अगले 10-15 मिनट में घटना स्थल पर था। आर०ए०एफ० की एक कंपनी जो पहले से ही वहाँ पहुँच चुकी थी दंगा नियंत्रण व आग बुझाने के कार्य मे व्यस्त थी। मुख्य सड़क तथा गलियों में बिखरे पड़े ईट, रोड़े व पत्थर इस बात की गवाही दे रहे थे कि कुछ समय के लिए तो दोनों तरफ से यहां इनकी की बरसात हुई होगी।

यह रविवार का दिन था तथा पलट रही शान्ति के माहौल को देखकर साथ के पार्क में मुस्लिम समुदाय के लोगों ने सामूहिक विवाहों का आयोजन भी किया था। मुख्य सड़क के ऊपर एक धार्मिक स्थल है जिसमें दूर-दूर से लोग आए हुए थे, बच्चे, बूढे तथा औरतें भी इस समारोह में शामिल थी। दंगा भड़कते ही सभी लोगों को अपनी जान के लाले पड़ गये तथा अपने बचाव के लिए ईधर उधर छुपने की जगह खोज रहे थे। तभी आर०ए०एफ० की टुकड़ी वहां पहुँची तो उसे देखकर उनके दिलों में थोड़ी सी सुरक्षा की भावना पैदा हुई। मैंने पूरी कार्रवाई अपने नियंत्रण में की और कंपनी को जरूरी हिदायत व दिशा निर्देश दिये। तभी खबर मिली कि पास के मोहल्ले में दंगा दुबारा भड़क उठा है। उसी समय सफेद कपड़े पहने एक व्यक्ति हमारी तरफ तेजी से साईकिल चलाता हुआ चिल्लाता हुआ आया। उसके माथे से खून की धारा बह रही थी और सफेद कपड़ों के उपर खून के गहरे लाल धब्बे आज के बहुत तरक्की किए हुए इंसान की तंगदिली, द्वेष तथा धार्मिक जुनून की कहानी खुद बयान कर रहे थे। हमारे पास पहुँचते ही वह व्यक्ति अपने आपको सुरक्षित महसूस कर धड़ाम से गिर पड़ा और जोर-जोर से रोना शुरू कर दिया। मेरे चालक ने जल्दी उसे उठाकर ढांढस बंधाया तथा अपने पास बिठाकर गाड़ी में रखे प्राथमिक चिकित्सा

बाक्स की मदद से उसकी मरहम पट्टी की। मेरे सुरक्षा में तैनात एक जवान ने उसे पानी पिलाकर सुरक्षित स्थान पर बिठा दिया। बहुत सी औरतें बच्चे तथा बुजुर्ग लोग जो इस सामूहिक विवाह में शामिल होने आए थे, अपने घरों को जाने के लिए बहुत चिंतित थे। क्योंकि गाड़ियों आदि का चलना सब बंद हो गया था तथा रास्ता सुन्सान पड़ा था, कोई सवारी गाड़ी दिखाई नहीं देती थी, शाम ढल रही थी, जिन लोगों के पास मोबाईल फोन थे उनकी घंटियाँ बार-बार बज रही थी और यही पूछा जा रहा था कि आप सुरक्षित हैं। आप कब तक वापिस आयेंगे। छोटे-छोटे बच्चे हालात को देख कर बहुत खौफजदा थे तथा अपने माँ-बाप के सीने से इतनी गर्मी के बावजूद चिपटे हुए थे। मौके की नजाकत को देखकर मैंने अपनी तीन गाड़ियाँ तैयार की और उसमें उन्हे पूर्ण सुरक्षा देकर सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाया।



उड़ीसा में आए भंयकर तूफान से हुई तबाही के दौरान बचाव एवं राहत कार्यों में लगे आरएएफ के जवान



विश्व बाल दिवस के अवसर पर गली कूचों के बच्चों के साथ आरएएफ के जवान

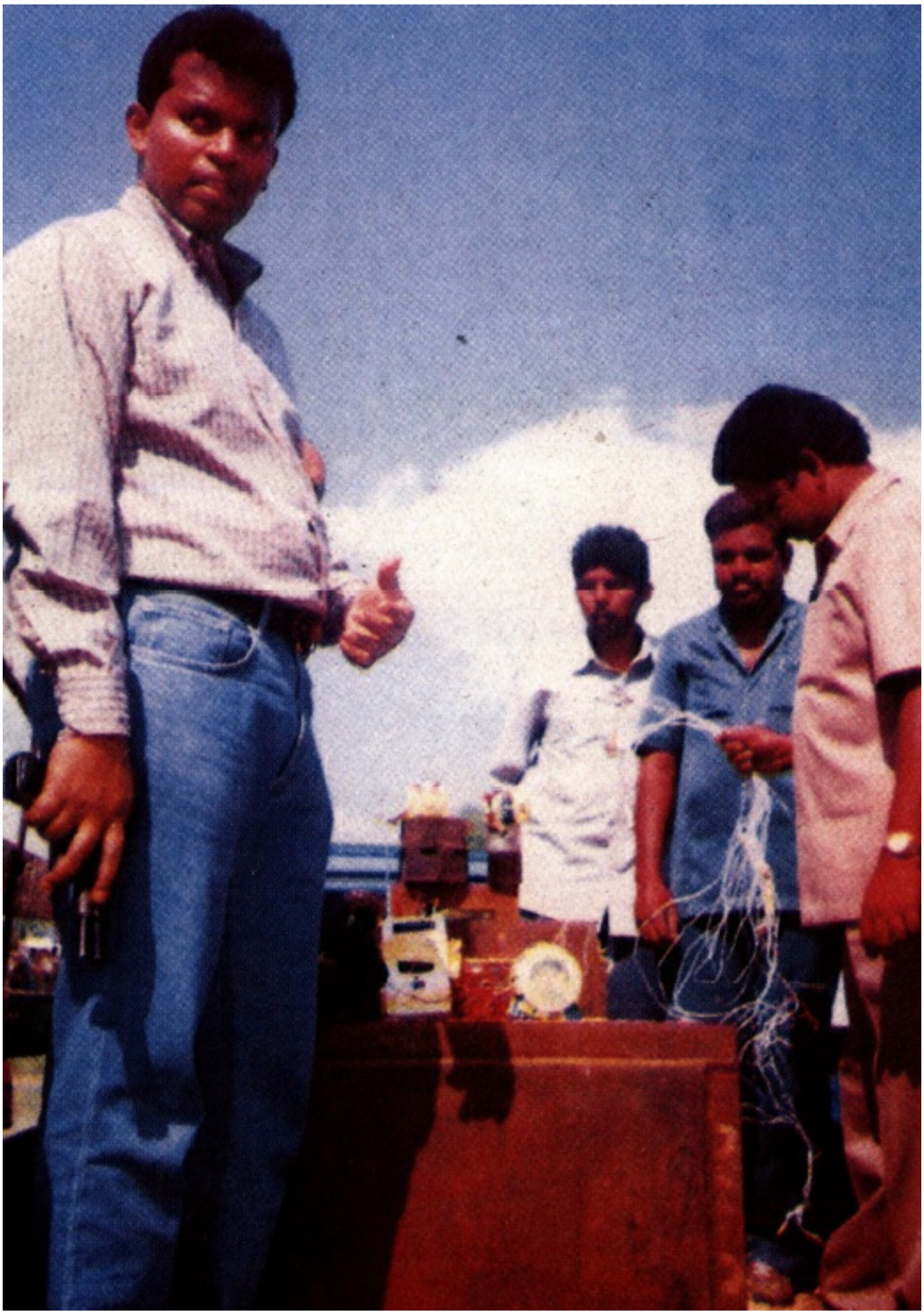
आर०ए०एफ० की यह मानवीय मदद तथा दंगाग्रस्त लोगों की सुरक्षा प्रदान करना, जख्मी हुए लोगों को मरहम पट्टी देना और ऐसे नाजुक मौकों पर बच्चों औरतों तथा बुजुर्गों को सुरक्षित दंगों से बाहर निकालना और दंगाईयों के खिलाफ सख्ती से पेश आने के दृश्य को करीब 9-10 वर्ष का एक बालक जो थोड़ी दूर एक कोने मे दुबक कर बैठा हुआ, बहुत देर से देख रहा था। उस बालक के साथ एक सात वर्ष की बच्ची भी बैठी थी, जो उसकी बहन थी। वे दोनों अपने माता पिता से बिछड़ गये थे। आ०ए०एफ० के जवानों के बर्ताव एव कार्य व्यवहार को देखते-देखते उनके मन में जब ढांढस बंधी। और मैं जब उस शेड़ की तरफ गया जहां पर वे दोनों छिपे हुए थे तो वह बच्चा अपनी छोटी बहन की ऊँगली पकड़ सहमी हुई अवस्था में मेरे समीप आया। उसकी दयनीय दशा मेरे मन को छ गई। मैंने उसके पास जाकर उससे कुछ प्यार भरे शब्द बोले और अपनी जेब से निकालकर दो तीन चाकलेट उन दोनों को दी। उस बालक की छोटी बहिन के आँखों से आँसू टप-टप टपक रहे थे। वह अपने बड़े भाई के साथ चिपकी हुई थी। कुछ और बातचीत करने के पश्चात बच्चों का हौसला बँधा और उसने मेरे से खुलकर बातचीत करना आरंभ की। मैं उनको एक जगह बिठाकर 5-7 मिनट के लिए दूसरी तरफ जवानों को जरूरी दिशा निर्देश देने गया। इस दौरान आर०ए०एफ० के जवानों ने कई दंगाईयों को भी पकड़ लिया था। जब मैं वापिस उन बच्चों के पास आया तो उस बच्चे ने मेरे से जो प्रश्न किये मैं उन प्रश्नों को कभी नहीं भूल सकता। पहला प्रश्न जो उसने मेरी नजरों से नजरे मिलाकर

कहा कि “क्या आप मुसलमान है”? मैंने उस बच्चे से बोला कि हम फोस के जवानों का कोई मजहब नही होता, हमारा धर्म वर्दी होता है। बच्चे ने तपाक से पूछा “फिर आप मेरी मदद क्यों कर रहे हैं ? मैने कहा क्योंकि आप छोटे बच्चे है, आप को प्यार करना हर इंसान का फर्ज है। आप की मदद करना हमारा धर्म है। बच्चे ने पुनः उसी अंदाज में पूछा “तो फिर दूसरे लोगों ने मेरे छोटे-छोटे साथियों को मेरे ही मोहल्ले में आकर क्यों पीटा व क्यों मारा”? इस प्रश्न का मेरे पास कोई उत्तर नहीं था। यह बच्चे की भावना तथा उसकी सोच जिसको गुजरात के दंगों ने उसके जहन तथा दिमाग में बहुत गहरी छाप छोड़ी थी। क्या वह कभी दूर होगी या नही ? मुझें नहीं पता।

आज भी जब कभी इस घटना का स्मरण होता है तो मेरे दिमाग में भी कई प्रश्न उठते है कि धर्म के नाम पर दंगे क्यों ? धर्म की आड़ में इंसानियत का कत्ल क्यों ? धर्म की आड़ में बेगुनाह बच्चे, औरत तथा मजबूर लोगों को ही क्यों पीड़ा सहन करनी पड़ती है ? क्या हम सभी इन्सान को इन्सान की तरह नहीं देख सकते?

झारखण्ड में नक्सलवादी आन्दोलन

- रणवीर सिंह,
कमांडेन्ट 105 बटा.



बल कर्मियों द्वारा नक्सलवादियों से बरामद की गई जेलटिन विस्फोटक, डेटोनेटर, स्पलेन्टर, रिमोट कंट्रोल टाईम डिवाइस आदि की जांच करते हुए विशेषज्ञ

झारखण्ड नाम से "पठार और जंगल का एक हिस्सा" अर्थ ध्वनित होता है। इस नवोदित राज्य में जिन क्षेत्रों को शामिल किया गया है, उनमें अधिकांशतः इस

अथ को साकार करते हैं। पहाड़ों और जंगलों का एक बड़ा भूभाग जहां अनेक जनप्रतिनिधि एक सशक्त राष्ट्रीय चेतना एवं क्रान्ति के संवाहक रहे हैं और उन्हें ऐतिहासिक व्यक्तित्व होने का दर्जा भी प्राप्त हैं। नये राज्य की एक चिरपुरातन मांग अंततः नई शताब्दी के मुहाने पर सफलीभूत हुई है। इस अलग राज्य में कई सपने, कई आकांक्षायें और कई हसरतें गर्भित हैं, क्योंकि इस क्षेत्र में वह सब कुछ है जिससे खुशहाली और समृद्धि आती है। 1991 की जनगणना के अनुसार 79,714 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में वन क्षेत्र तकरीबन 23,325 वर्ग कि०मी० का है और इसी कारण कुल 2,18,43,911 जनसंख्या में से तकरीबन 6000000 जनजातियों की जनसंख्या है, जिनमें मुख्य रूप से बैगा, मूथूडीह, गेदिया, भूमिज, बिन्झिया, चेरो, चिक बड़ाइक, गोंड गोराइल, करमाली, खड़िया, खरवार, खोंड, किसान, कोरा, लोहरा, महली, उरांव, संथाल, मुंडा बंजारा, तथा मिजटिया अल्पसंख्यक आदिम जनजाति असुर, बिरहोर, विरजिया, परैहया, माल पहाड़िया, हिल खरिया, साबर, तथा कोरवां जन जातियां है।

पहाड़ी जातियों एवम् जनजातियों की एक विशेषता रही है कि उनकी आबादी कम होने पर भी वे अपनी एक विशेष पहचान बनाये रखने के लिए कमरबद्ध रहती हैं। जनजातियों की इस विशेषता का नमूना झारखण्ड और देश के कई अन्य भागों के अतिरिक्त पूर्वोत्तर राज्यों में विशेषकर पाया जाता है। प्रत्येक जनजाति अपने अस्तित्व को न सिर्फ कायम रखने के लिए, बल्कि उसे सर्वशक्तिमान रूप में देखने के लिए कठिन से कठिन संघर्ष और त्याग के लिए तैयार रहती है। यहीं कारण है कि ऐसे क्षेत्रों में एक आम राय और सामूहिक विकास की भावना पैदा करने में तुलनात्मक रूप से अन्य क्षेत्रों मे वनस्पति ज्यादा समय लगता है।

“वाद” शब्द का अर्थ साधारणतया “विचारधारा” से लिया जाता है। विभिन्न मानव समूहों का विभिन्न खान-पान, वेश-भूषाओं, रहन-सहन, तौर-तरीकों, आस्थाओं, विश्वासों इत्यादि के कारण उनमें विभिन्न विचारधाराओं का होना भी स्वाभाविक है और यदि समाज विभिन्न जातियों, जनजातियों के रूप में जहां हो तो उसमें जातिवाद का होना भी स्वाभाविक है। अतः विभिन्न जातियों, जनजातियों का समाज होने के कारण झारखण्ड में भी जातिवाद का होना स्वाभाविक है। शायद इसी कारण झारखण्ड में भी जातिवाद की समस्या के पनपते रहने की प्रवृति से इंकार नहीं किया जा सकता। परन्तु इसके ऊपर इसमें क्षेत्रीयता की समस्या ब्रिटिश शासन के दौरान से ही आम तौर पर झलकती रही। अंग्रेजों एवम् गैर झारखंडियों के इस क्षेत्र में प्रवेश तथा रहन-सहन एवं विकास का भी प्रबल विरोध रहा। जिसका अंदाजा 1793 तिलका माझी के नेतृत्व में पहला संथाल विद्रोह, 1793 भूमिज विद्रोह (प० सिंहभूमि), 1810 भुवनसिंह के नेतृत्व में पलामू में चेरो विद्रोह। 1819-20 रूद्र और कांता मुंडा द्वारा तमाड़ में मुडाओं का विद्रोह, 1834 गंगा नारायण के नेतृत्व में दूसरा संथाल विद्रोह, 1855 में सिदू-कान्हू के नेतृत्व में तीसरा संथाल विद्रोह (मोगनाडीह), 1832 बुधभगत द्वारा अंग्रेजों के विरूद्ध विद्रोह, 1833 सिंगराई और तिनराई मानकी द्वारा कोल विद्रोह, 1857 सिपाही विद्रोह (ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव, गणपत राय, शेखभिखारी की

अगुवाई), 1895-1910 बिरसा उलमूलान (उलीहातू, डोखारो बुरू), 1914 टाना भगत आंदोलन (टानाभगत के नेतृत्व में), 1915 में छोटानागपुर उन्नति समाज गठन, 1931 में किसान सभा का गठन, 1938 में आदिवासी महासभा का गठन, 1950 में आदिवासी महासभा का नामकरण झारखण्ड पार्टी, 1987 में झारखण्ड समन्वय समिति का गठन, 1991 में झारखण्ड बिल बिहार विधानसभा द्वारा पारित, 1994 में उपरोक्त विधेयक में संशोधन पर झारखण्ड क्षेत्र स्वशासी परिषद विधेयक पेश, 1995 में झारखण्ड स्वशासी परिषद का गठन और 15 नवम्बर, 2000 में झारखण्ड राज्य का गठन, जुलाई, 2000 में डोमिसाईल इश्यू मई 2003 में शिक्षक चयन में विद्रोह (सिबूसोरेन के नेतृत्व में) और तत्सम्बन्धित आगे आने वाली समस्यायें से लगाया जा सकता है।

स्वअस्तित्व व लम्बी आकांक्षाओं तथा हसरतों से युक्त तथा उनके लिए तन-मन-धन से संघर्ष के लिए उपरोक्त ऐतिहासिक लेखे-जोखे से ये साफ प्रतिबिंबित होता है कि अलग राज्य को हासिल करने के पश्चात हरेक जाति व जनजाति, जो संघर्ष में कभी भी पड़ सकती हैं। यद्यपि फिलहाल अलग राज्य हासिल हो जानें से जातिवाद के निस्पत क्षेत्रवाद सामने आ सकता है और जनता पहले क्षेत्रवाद से निवटने के लिए उन्मत प्रतीत होती है। इसीलिए क्षेत्रवाद की समस्या आसानी से जोर पकड़ने की संभावनाओं से भी इंकार नहीं किया जा सकता।

जातिवाद की आग की सूक्ष्म चिंगारी को झारखण्ड राज्य में नक्सलवादी उपद्रवियों की गतिविधियों के संक्रमण, मूलवासी और गैर-मूलवासी विवाद, धर्मविवाद तथा अन्य विवादों से हवा लगने की संभावनाओं से भी इंकार नहीं किया जा सकता।

यद्यपि क्षेत्रवाद फिलहाल मुख्य मुद्दे के रूप में सामने झलक रहा हैं परन्तु विभिन्न अन्य विवादों नक्सलवादियों के संक्रमणों तथा तत्संबंधित घटनाक्रमों का सिलसिला भी जारी रहा तो झारखण्ड क्षेत्रवाद, धर्मविवाद, नक्सलवाद और जातिवाद सभी का शिकार होते हुए अंततः जातिवाद के भंयकर दुष्परिणामी संघर्ष में फंस सकता हैं। अतः राज्य व देश के सभी बुद्धिजीवियों शुभचिंतकों को इसे न पनपने व इससे निपटने के भरसक प्रयास करने अतिआवश्यक है।

पी.डब्ल्यू.जी. नक्सलवाद

– सहा. कमा. अनिल कुमार शक्य,
पु. महानिरीक्षक कार्यालय, दक्षिणी सेक्टर



नक्सलवाद विरोधी कार्रवाईयों में भाग लेते *34* बटा. केरिपुबल के जवान

राजनैतिक क्रांति का यह आन्दोलन जो जमींदारी पद्धति को परिवर्तित करने के लिए था, वर्ष 1967 के दौरान चारू मजूमदार के नेतृत्व में नक्सलबाड़ी, पश्चिम बंगाल में शुरू हुआ। चीन के मास मिडिया द्वारा लगातार इसे ज्यादा महत्व देने के संदर्भ में ही निश्चित रूप से ज्यादा भडका। नक्सलवादी आन्दोलन के संगठनकर्ता इस आन्दोलन को उस तरीके से हटाकर चला रहे थे जैसा कि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, सी.पी.आई. (एम) तथा सी.पी. आई (एम) ने इसकी वकालत की थी। यह आन्दोलन सामान्यतः जमीन के लिए किसानों के संघर्ष के रूप में था। नक्सलवादी आन्दोलन के बाद चारू मजूमदार सी.पी.आई. (एम.एल.) के नेता तथा संयोजक बने। माओवाद को प्रयोग करने का उनका यह तरीका भारत वर्ष की ठोस स्थिति में "नक्सलवाद" कहलाया तथा इस ग्रुप के कार्यकर्ता जो इस आन्दोलन में विश्वास रखते थे "नक्सलवादी" कहलाए।

सी.पी.आई. (एम.एल.), कम्युनिस्ट तथा अन्य वामपंथी पार्टियों से भिन्न थी। शुरू में यह एक गुप्त पार्टी थी, जिसका यह विश्वास था कि यदि वैध तरीके से कार्य किया गया तो अनिवार्य रूप से इसका कार्य "रिविजनइज्म" ही होगा। इस पार्टी ने चुनाव प्रक्रिया के पूर्ण बहिष्कार की बात की तथा यह (सी.पी.आई. (एम. एल.) सशस्त्र संघर्ष के कारण भी अन्य दलों से भिन्न थी।

वर्ष 1965 तथा 1967 के बीच मजूमदार तथा उसके साथियों ने विभिन्न छोटे-छोटे किसान आन्दोलन आयोजित किए परन्तु माओवाद के साथ नलबाड़ी आन्दोलन उनका पहला बड़ा तजुर्बा था। हैदराबाद के भारत में विलय के बाद, कांग्रेस शासन

के खिलाफ तथा इससे पहले निजाम शासन के खिलाफ, तिलंगाना में 5 वर्ष तक सशस्त्र संघर्ष चीन के नक्शे कदम पर आयोजित किया गया था। तिलंगाना तथा आन्ध्रा में अविभाजित कम्युनिस्ट पार्टी की इकाई को राजनैतिक लाईन का सार यह है कि भारत वर्ष में लोकतान्त्रिक संघर्ष उसी तरह मुश्किल ही युद्ध का रूप लेगा जैसा कि चीन में लिया था।

नक्सलवादियों ने कभी भी तिलंगाना संघर्ष के ऐतिहासिक महत्व को नहीं नकारा। देश में कम्युनिस्ट आन्दोलन के इतिहास में तिलंगाना एक मील का पत्थर है। चूंकि इस संघर्ष में लगभग 3000 गांवों ने अर्थात् 1600 वर्ग मील के इलाके के 3 लाख गांवों के ज्यादातर जिला-नालगोंडा, वारंगल तथा खम्मम के थे ने गांव पंचायतों से झगड़ा करके ग्रामराज की स्थापना की। क्योंकि नक्सल विचारों के अनुसार तिलंगाना में सशस्त्र संघर्ष को वापस लेने का मतलब था भारत में कम्युनिस्ट आन्दोलन में रिविजनइज्म की जीत।

मजूमदार के सुझाव पर कम्युनिस्ट क्रान्तिकारियों की अखिल भारतीय संपर्क समिति गठित की गई, लेनिन के 100वें जन्म दिन के अवसर पर माओत्सेतुंग के विचारों के अनुसार 22 अप्रैल, 1969 में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (माले) गठित की गई। सी.पी.आई. (माले) की पहली बैठक मई 1970 में हुई।

इस बैठक में पार्टी ने दावा किया कि नक्सलवादी आन्दोलन ने भारतवर्ष में जंगल में आग का काम किया है। तथा पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, असम, त्रिपुरा, आंध्र प्रदेश, केरल तथा तमिलनाडु के किसानों ने गुरिल्ला संघर्ष प्रारम्भ कर दिया है। भारत वर्ष में सशस्त्र संघर्ष का स्थल आंध्र प्रदेश में श्रीकाकुलम बताया जाता है। सरकार भी नक्सलवाद की चुनौतियों से बेखबर नहीं थी इस आन्दोलन को कुचलने के लिए ठोस कदम उठाए गए थे।

कार्य-प्रणाली

पी.डब्लू.जी. की अत्याधुनिक रणनीति बताती है कि वे महत्वपूर्ण पुलिस अफसरों तथा राजनैतिक नेताओं को निशाना बनाते हैं। विशेषतया (तेलगु देशम पार्टी) के नेताओ को, जिससे कि उनके कैडेटों का मनोबल बढ़े तथा सरकार भी इनके खिलाप नरम रवैया बरते। अतिवादी हमेशा ही विशिष्ट राजनेताओं तथा वरिष्ठ कार्यकर्ताओं को अपहरण करने की योजना बनाते है। जिससे कि उनके नेताओं तथा साथियों को छुड़ाया जा सके तथा वी.आई.पी. व्यक्तियों को मारने के लिए उनके कानवाई पर हमला किया जा सके।



उड़ीसा के मलकानगिरी तथा रायगड़ ज़िलों में नक्सलवाद विरोधी अभियानों में भाग लेने वाले *34* बटा० के जवान एवं अधिकारी

पी.डब्लू.जी. के नेशनल लेवल फ्रंटियर संगठन है। जिनमें से मुख्य निम्न हैं :—

आंध्र प्रदेश स्टुडेंट यूनियन *(आ. प्र.)*ए तमिलनाडु रेडीकल स्टुडेंटस यूनियन *(तमिलनाडु)*, प्रगति पारा विद्यार्थी केन्द *(कर्नाटक)*, विद्यार्थी प्रगति संगठन

(महाराष्ट्र), डेमोक्रेटिक स्टुडेंट यूनियन (दिल्ली), डेमोक्रेटिक स्टुडेंट यूनियन (बिहार), रेडीकल स्टुडेंट लीग (बिहार), रिव्यूलशेनरी स्टुडेंटस फ्रंट (पंश्चिम बंगाल), रेडीकल स्टुडेंटस फ्रंट (पश्चिम बंगाल), जागरूक छात्र मोर्चा (हरियाणा), पंजाब रेडीकल स्टुडेंटस यूनियन (पंजाब), प्रोग्रेसिव स्टुडेंटस फोरम (उत्तराखंड), वप्लव विद्यार्थी संगठन (केरल), ए.आइ. एल.आर.सी. (ए-1), ए.आई.आर.एस. एफ. (ए-2), ए.आई.पी.आर.एफ (ए-3), एफ.आई.जी. (ए-4) (फोरम अगेंस्ट इम्पीरियालिस्ट ग्लोबलाईजेशन), एस.यू.सी.ओ. एम.ओ. (सब कमेटी ओन मास ओर्गनाईजेशन)

के.रि.पु.बल की भूमिका

सिविल पुलिस तथा राज्य प्राधिकारी, नक्सलवाद को डकैती की तरह ही कानून एवं व्यवस्था की समस्या समझते हैं। वे इसे इनसरजेन्सी या आतंकवाद नहीं समझते जिससे केरिपुबल को जहाँ भी वे तैनात है, सिविल पुलिस के एस.एच.ओ. पर निर्भर करते हैं।



उडीसा के मलकानगिरी तथा रायगड़ जिलों में मोटर साइकिलों पर नक्सलवाद प्रभावित क्षेत्र में गस्त करते *34* बटा० के जवान।

केरिपुबल की मुख्य भूमिका निम्न प्रकार से है :—

1. पुलिस पोस्टों को मजबूत करना। 2. पुलिस स्टेशन के जिम्मेदारी के इलाके में

पेट्रोलिंग बढ़ाना। 3. क्षेत्र में कार्यरत आतंकवादियों के आन्दोलन को कम करना। 4. जनता का सरकार में विश्वास बरकरार रखना 5. छितरे फैलाव के साथ बड़े इलाके पर काबू करना।

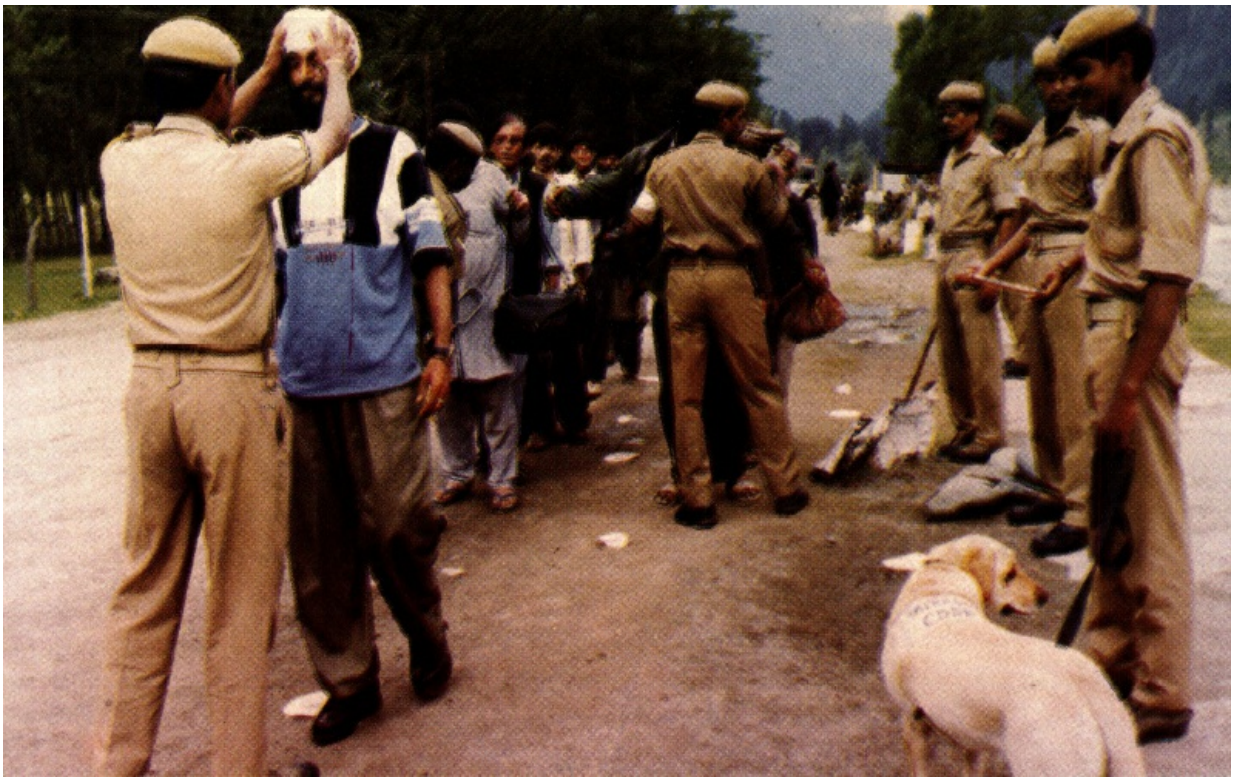
सुरक्षा बलों की उपलब्धियां

1 मई, 03 को एक विशेष सूचना के आधार पर वारंगल जिले के विशेष पुलिस दस्ते ने ए/83 बटा०, केरिपुबल के दस्ते के साथ लगभग 0630 बजे कोथागुड़ा आउटपोस्ट से 15 कि.मी. दूर करूनागैड़ी गांव के आरक्षित वनों के क्षेत्र में कोंम्बिंग ऑपरेशन किया। आपरेशन के दौरान नक्सलवादियों के साथ मुठभेड़ हुई। जिसमें प्रजा प्रतिघटाना के चन्द्रान दलम के नक्सली मारे गए। इसी बीच गुडुए तथा कोथागुड़ा से ए/83 बटा०, केरिपुबल की दो सेक्शन आ पहुंची तथा उन्होंने सिविल पुलिस के साथ इस क्षेत्र में लम्बे समय तक घेरा डालकर सर्च ऑपरेशन किया तथा वहां से 30 एम. एल.यू.एस. कारबाईन, एक 12 बोर की डी.बी.बी.एल. गन, 12 बोर के 25 राउन्ड, 30 एम.एम. के 5 राउन्ड एक 30 एम.एल. की यू.एस. मैगजीन तथा 6 किट बैग बरामद किए। नक्सलवादियों की लाशें तथा बरामद सामग्री सिविल पुलिस को सौंपी गई।

16 मई, 03 को बी/6 बटा० की दो सेक्शनों ने सिविल पुलिस के साथ पैट्रोलिंग के दौरान प्रकाशम जिले के थाना वेलडर्थी के गांव डजरेलू पाडु थान्डा में हनुमान मंदिर के पास सर्च के दौरान 9 माइन बरामद की इसके तार तथा डेटोनेटर बंधे हुए थे। उक्त सभी वस्तुएं वेलडर्थी पुलिस को सौंप दिए गए।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के साये में श्री अमरनाथ यात्रा

डी.जी.महापात्र
जन संपर्क अधिकारी



श्री अमरनाथ यात्रियों की सुरक्षा जांच करते हुए केरिपुबल के जवान

प्रत्येक वर्ष जम्मू कश्मीर में हजारों तीर्थ यात्री श्री अमरनाथ यात्रा के लिए जाते हैं। यह यात्रा आषाढ़ पूर्णिमा से श्रावण मास की पूर्णिमा तक संपन्न होती है। आतंकवादियों की धमकी, आतंकवादियों एवं प्राकृतिक आपदाओं के स्वरूप, मारे गए अनेक यात्रियो के बावजूद भी यात्रियों का श्री अमरनाथ के दर्शन का उत्साह कम नहीं हुआ है। हरेक साल श्री अमरनाथ के दर्शन के लिए लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है।

पवित्र गुफा के लिए यात्रा जम्मू से सुबह तड़के शुरू होती है और यात्री सुरक्षा बलों के संरक्षण में कानवाई में पहलगाँव जाते हैं। जम्मू से पहलगाम लगभग 260 कि०मी० दूर है और पहुंचने में लगभग 14 घंटे लगते हैं। पवित्र गुफा के दर्शन के लिए दो रास्ते हैं, एक पहलगाम होकर, दूसरा बलताल होकर। बलताल का रास्ता छोटा है परंतु खतरनाक व कठिन है जबकि पहलगाम का रास्ता लंबा है परंतु खतरनाक/कठिन कम है तथा उसका धार्मिक महत्व भी है। इस रास्ते के प्रत्येक स्थान का संबंध धार्मिक घटनाओं से जुड़ा हुआ है। पहलगाम से पवित्र गुफा में जाने में दो दिन का समय लगता है। पवित्र गुफा महान हिमालय के दक्षिणी पश्चिमी चोटी पर 12,000 फिट की ऊचाई पर स्थित है , यह कश्मीर घाटी के अनंतनाग जिले की पीर पंजाल रेंज तथा लद्दाख क्षेत्र की जनसकर रेंज एवं जम्मू क्षेत्र के डोडा जिले तक फैली है।

एतिहासिक एवं पौराणिक महत्व

अमरनाथ गुफा का भौगोलिक तथा सामरिक की दृष्टि से बहुत ही महत्त्व है। कहा जाता है कि भगवान शिव ने अपनी पत्नी माता पार्वती को इस पवित्र गुफा में जीवन एवं मृत्यु के रहस्य की गुप्त कथा सुनी थी। गुफा में बर्फ से शिवलिंग का बन जाना एक आश्चर्यजनक बात है। यह नए चंद्रमा की रोशनी में बनना शुरू होती है तथा पूर्ण रूप से दस फीट की ऊंचाई तक श्रावण मास की पूर्णिमा तक पूरी हो जाती है और उसके बाद इसका पिघलना शुरू होता है। गुफा 60 फिट लंबी, 50 फिट चौड़ी तथा 30 फुट ऊंची है। इस गुफा में लिंग केवल बर्फ से बनता है।



केरिपुबल कार्मिकों की सुरक्षा में श्री अमरनाथ यात्रा करते श्रद्धालु

पुराणों में यह उल्लेख हैं कि एक बार ऋषि नारद कैलाश पर आए और देवी पार्वती से भगवान शिव की माला में धीरे-धीरे बढ़ रहे मुण्डों के बारे में पूछा। देवी पार्वती इस बात का उत्तर देने में असमर्थ थी। जिज्ञासु पार्वती ने इस रहस्य के बारे में शिव भगवान से माला में सिरों के बढ़ने के बारे में पूछा। भगवान शिव ने बताया कि मेरी माला में इतने ही सिर हैं जितने पार्वती ने अवतार लिए हैं और पार्वती के नए अवतार के होने पर ही मेरी माला में सिर बढ़ जाते हैं।

देवी पार्वती ने भगवान शिव से अमरत्व तथा अपनी मृत्यु के बारे में जानना चाहा। भगवान शिव ने जीवन एवं मरण की कथा (अमर कथा) के बारे में बताया कि इसे

केवल जन्म-मरण से मुक्त होने वाले ही जानते हैं तथा जो जीव नाशवान हैं इस कहानी को सुनकर अमर हो जाते हैं।

भगवान शिव, देवी पार्वती के इस अमरकथा सुनाने के अनुरोध को टाल नहीं सके। अतः दोनों एक निरजन एकांतवास जगह जहां कोई भी जीव जन्तु आस पास न हो की खोज में निकल पड़े। पार्वती और भगवान शिव हिमालय के विभिन्न स्थानों पर गये। अन्त में इस पवित्र गुफा में पहुंचे जहां भगवान शिव ने देवी पार्वती को यह अमर कथा सुनाई थी।

भगवान शिव ने अपनी पहली यात्रा जिस गांव से शुरू की थी वह पहलगाँव था, इसलिए श्रद्धालुओं के लिए पहलगांव पवित्र गुफा पहला पड़ाव है। भगवान शिव ने अपने बैल को बेलगांव में ही छोड़ा था जिसका बाद में नाम बदलकर पहलगाँव कर दिया गया। पहलगॉव से चन्दनबाड़ी 16 कि०मी० है तथा वाहन से पहुंचने में 45 मिनट लगते हैं। इस छोटे से गाँव का सम्पर्क कच्ची सड़क द्वारा पहलगाँव के साथ जुड़ा हुआ है। संत लोगे में इस छोटे से गाँव का बहुत पौराणिक महत्व बताते हैं। चन्दनबाड़ी में भगवान शिव ने लिददर नदी में स्नान किया और चन्दन को(चन्दन तिलक) तथा चन्द्रमा को अपने सिर से हटाया। और चन्दनबाड़ी से चले, इसलिए इस स्थान को चन्दनबाड़ी के नाम से जानते है।

चन्दनबाड़ी के बाद पिस्तूगाँव पहुंचने के लिए 3000 मीटर कच्ची पहाड़ी पर चढ़ने के लिए 3 किलो मीटर चलना पड़ता है। जानकारों का कहना है कि जब भगवान शिव एवं पार्वती इस पहाड़ी की चोटी पर गये थे तो देवता और दानव/राक्षस आपस में लड़ते-लड़ते इस पहाड़ी के ऊपर पहुँच गये। देवताओं ने भगवान शिव से दानवों को मारने की विनती की। भगवान शिव के आशीर्वाद से देवताओं ने दानवों को मार भगाया तथा उनकी हडिडयां इकटठी कर ली। इसलिए बाद में इस घाटी का नाम पिस्सूघाटी पड़ा।

जानकार बताते हैं कि शेषनाग में भगवान शिव ने अपने शेषनाग जिसे वे हमेशा गले में लटकाए रहते थे को वहीं छोड़ा था और पार्वती को अमर कथा सुनाने के लिए जगह खोजने चल दिए थे। शेषनाग चोटी प्राकृतिक रूप से ऐसी दिखाई देती है जैसे शेषनाग कुण्डली मार कर फण को उठाये बैठा हो।

शेषनाग से 4510 मीटर की ऊंचाई पर चढ़कर महागनस टाप नामक स्थान पर पहुंचते हैं। इस जगह पर पहुँचने के लिए हर एक यात्री को जलवायु के अनुकूल चलना होता है। इस स्थान पर भगवान शिव ने अपने पुत्र श्री गणेश को अपने साथ आने के लिए मना कर वहीं ठहरने को कहा था। इसीलिए इस का नाम महागनेश टाप पड़ा जो बाद में महागनस टाप के नाम से जाना गया।

महागनेश टाप को पार करने के बाद यात्री पंचतरणी को जाते हैं जो लगभग 3810 मीटर ऊंचाई पर स्थित है, तथा शेषनाग से 12 कि०मी० दूर है। इस स्थान का बहुत ही पौराणिक महत्व है। भगवान शिव ने अपने पाँच तत्वों (पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि एवं आकाश) को वहीं पर छोड़ा था। पंचतरणी की व्याख्या उन पाँच स्थानों में की गई है

जो जीव को तारने के लिए वैयतरणी नदी को पार करना होता है।

सभी नश्वर तत्वों को पीछे छोड़कर भगवान शिव तथा माता पार्वती इस गुफा में पहुँचे, जहाँ भगवान शिव ने जीवन-मरण की कथा सुनाई थी।

इतिहास, पौराणिक, कथाएं, प्राचीन ग्रंथ तथा वास्वविकताएं सदैव अमरनाथ यात्रा के इर्द गिर्द ही घूमती हैं। परंतु हर-एक का अपना ही महत्व है। जो लोग इस पवित्र गुफा के दर्शन के लिए जाते उन्हें जीवन का सर्वोच्चतम सुख एवं शांति मिलती है।

श्री अमर नाथ यात्रा में सी०आर०पी०एफ का योगदान

सी०आर०पी०एफ श्री अमर नाथ यात्रा शान्तिपूर्ण रूप से संपन्न कराने के लिए लम्बे समय से अह्म भूमिका निभा रहा है। राज्य आज जिन चुनौतियों का सामना कर रहा है उस समय यह नहीं थी। इसलिए के०रि०पु०बल काफी कम संख्या में तैनात की जाती थी।

1997 तथा 1998 में भी केरिपुबल की 12 तथा 16 कंपनिया तैनात की गई थी परंतु 1999 में अचानक आतंकवादी गतिविधियों में बढ़ोत्तरी की वजह से इसकी तैनाती बढ़ा कर एक महिला कंपनी सहित 30 कंपनियां कर दी गयी। वर्ष 2000 में 32 कंपनियां तैनात की गयी जबकि 2001 तथा 2002 में क्रमशः 36 तथा 42 कंपनियां तैनात की गई।

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल शान्ति पूर्ण अमर नाथ यात्रा सम्पन्न कराने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। जम्मू-कश्मीर के वर्तमान सुरक्षा परिदृश्य और आतंकवादी गतिविधियों को ध्यान में रखते हुए यात्रा को सुचारू रूप से सम्पन्न कराने हेतु सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गये थे। सुरक्षा के इन इंतजामों में के.रि.पु.बल सक्रिय रूप से शामिल हुआ तथा देश के कोने-कोने से आने वाले यात्रियों को हर संभव सहायता प्रदान कराई। अमरनाथ यात्रियों की सुरक्षा-व्यवस्था के लिए के०रि०पु०बल की 44 से अधिक अतिरिक्त कम्पनियों को जम्मू और कश्मीर राज्य में लगायी गयी।

जम्मू क्षेत्र में यात्रियों के ठहरने के स्थानों पर के.रि.पु.बल. की 16 कम्पनियों को चौबिसों घण्टे यात्रियों की सुरक्षा के लिए तैनात किया गया। यात्रियों के काफिले के शुरूआती स्थान एम.ए. स्टेडियम तथा जम्मू-श्रीनगर मार्ग के संवेदनशील स्थानों पर भी के.रि.पु.बल के जवान तैनात किए गये। यात्रियों के काफिले को बल के जवान जम्मू से शैतानी नाला तथा वापसी तक अपने संरक्षण में लेकर आते थे और वापसी के दौरान भी अपनी सुरक्षा प्रदान करते थे। लगभग 200 वाहन करीब 3300 यात्रियों के साथ प्रतिदिन जम्मू के एम.ए. स्टेडियम के लिए प्रस्थान किया।



श्री अमरनाथ यात्रा के दौरान यात्रियों की सुरक्षा के लिए किसी भी खतरे का सामना करने के लिए मुस्तैद केरिपुबल के जवान

कश्मीर क्षेत्र में बनताल, पवित्र गुफा, पंचतरणी, कोसपथरी, जोजीबल, पिस्तूटॉप, पहलगाम और चंदनबाड़ी के यात्री कैम्पों में यात्रियों को इस वर्ष भी सुरक्षा व्यवस्था मुहैया कराने के लिए के.रि.पु.बल की एक महिला कम्पनी सहित बल की 28 कम्पनियां तैनात की गई। कैम्प की सुरक्षा के अतिरिक्त बल के जवान नूनवान कैम्प में जाँच पड़ताल में भी सहयोग दिया। यात्रियों को शैतानी नाले से नूनवान कैम्प तक ले जाने और वापिस लाने के लिए बल की दो कम्पनियां तैनात की गई।

के.रि.पु.बल ने यात्रा मार्ग के विभिन्न स्थानों पर अपने चिकित्सा शिविर स्थापित किए। जहाँ बल के चिकित्सक इन शिविरों में यात्रियों को मुफ्त चिकित्सा सहायता एवं जीवन रक्षक दवाईयां उपलब्ध कराई।

इस यात्रा में के०रि०पु०बल के श्वान दस्ता और बम निरोधक दस्तों की सेवाएं भी ली गई। बल द्वारा अनेक महत्वपूर्ण संवेदनशील स्थानों की समय-समय पर जाँच कर उनकी सुरक्षा सुनिश्चत की गई। यात्रियों के मार्ग दर्शन के लिए यात्रा सम्बन्धी महत्वपूर्ण सूचनाओं वाली एक पम्पलेट भी के.रि.पु.बल द्वारा मित्रता स्वरूप बांटी गई।

यह यात्रा कश्मीर की उच्च लोक परंपराओं तथा सांस्कृतिक विरासत का एक अनूठा मेल थी। पवित्र अमर नाथ गुफा राष्ट्रीय एकता का एक अजूबा उदाहरण है। इस मन्दिर के रख-रखाव में गुर्जर मुसलमानों का विशेष योगदान हैं क्योंकि वे इस गुफा के संरक्षक माने जाते हैं। उन्हीं के पूर्वजों ने इस गुफा का पता लगाया था।

खराब मौसम तथा सुसंगठित उग्रवादी संगठनों द्वारा दी गई भारी धमकियों के बावजूद के.रि.पु.बल श्री अमर नाथ यात्रा में कई वर्षों से महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। जरूरत पड़ने पर के.रि.पु.बल के जवान हमेशा कार्रवाई के लिए तैयार रहते है तथा यात्रियों को आवश्यक सुरक्षा मुहैया कराते हैं। श्रृद्धालुओं को यात्रा सफलतापूर्वक पूरी कराने में हर वर्ष सहायता प्रदान कर बल के जवान बल की उच्च परम्पराओं को कायम रखे हुए हैं।

के०रि०पु०बल- चुनौतियाँ एवं सफलता



देश के पूर्वोत्तर राज्यों के संवेदनशील क्षेत्रों में स्थिति पर नजर रखते बल के कार्मिक

पने जनक लौह पुरूष स्व० सरदार बल्लभ भाई पटेल द्वारा क्राउन रिप्रजेन्टेटिव पुलिस से सेन्ट्रल रिजर्व (केन्द्रीय रिजर्व पुलिस) के रूप में नामित तथा 158 बटा० तक विस्तारित, देश की अखण्डता को कायम रखने में बल द्वारा दिये गये सर्वोच्च बलिदानों एवं गौरवशाली परम्पराओं के इतिहास से देश का आज शायद ही कोई व्यक्ति अपरिचित होगा, चाहे पूर्वोत्तर के दुर्गम एवं नीरस वन हो, महानगरों का कोलाहल या लद्धाख की हडकंपाती सर्दी या जलता मरूस्थल, बाढ़ की विभीषिका में डूबता-उतरता कोई प्रदेश, या दंगों की आग में झुलसता कोई नगर, जलजले से नेस्तनाबूद हुआ कोई शहर, चाहे अपने को जेहाद के मुजाहिद्दीन होने का भ्रम पाले अफगानी, सूडानी, पाकिस्तानी भाड़े के आंतकवादी हो या गुमराह एवं भड़काये हुए अपने ही खाड़क/जंगज, शेर या चीते, सभी से निपटने के लिए-"केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल" सक्षम है। शायद इतिहास ही बल द्वारा की गई देश की सेवा का पूरी तरह सही मूल्यांकन करे।

के.रि.पु.बल के कदमों की ताल से "वयम रक्षामि" का जो उद्धघोष होता है, उससे आम जनता में सुरक्षा का संचार होता है, लेकिन के.रि.पु.बल आज स्वयं कई समस्याओं से जूझ रहा, रास्ता खोज रहा कि कैसे अपने राष्ट्रीय दायित्व को पूरा करते हुए अपनी भी देख-भाल की जा सके?

अत्यधिक तैनाती की समस्या

नाम अलग और काम अलग। हालांकि नाम के साथ रिजर्व जुड़ा हुआ है किन्तु पिछले कई वर्षों से बल की लगातार 98 प्रतिशत तैनात बनी हुई है, और तैनाती भी अत्याधिक गड़बड़ी वाले इलाके में। बल का नियोजित ढंग से विस्तार किया जा रहा ताकि लगभग 25 प्रतिशत तैनाती शान्ति वाले ईलाकें में भी हो सके।



श्रीनगर में *114* बटा. कोरपुबल द्वारा उग्रवादियों से बरामद किए गए हथियारों को देखते हुए पुलिस महानिरीक्षक *(*परि.*)* श्रीनगर श्री जी.एम. श्रीवास्तव

प्रभावी भूमिका

कानून-व्यवस्था राज्य का विषय है। बल की भूमिका का निर्धारण निश्चित कानूनी रूप से नहीं किया गया। इस से कभी-कभी बहुत विचित्र स्थिति पैदा हो जाती है। स्थानीय पुलिस के पास अधिकार तो होते हैं,परंतु कानून-व्यवस्था को सुधारने की अपेक्षा केरिपुबल से की जाती है। कभी-कभी गड़बड़ी वाले इलाके में स्थानीय पुलिस के कुछ लोग या तो गड़बड़ी फैलाने वाले के साथ मिल जाते हैं या उनकी सहानुभूति उनके साथ होती है या फिर किसी अन्य कारणवश प्रभावी कदम उठाने से हिचकिचाते हैं।

कुछ अपराधों आतंकवाद, विद्रोह, साम्प्रदायिता आदि जैसे को संघीय अपराध घोषित किया जाए। केन्द्रीय बलों को ऐसे अपराधों के विरूद्ध स्वयं कार्रवाई करने का कानूनी अधिकार दिए जाए। इसके लिए अलग से अदालते गठित की जाऐं। अभी सभी अधिकार स्थानीय पुलिस के पास होने से यह भय रहता है कि उनके कार्यों का स्थानीय प्रशासन से स्वीकृति नहीं मिली तो भविष्य में उन्हें कानूनी पचड़ों में उलझना पड़ सकता है।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में अराजपत्रित अधिकारियों की भर्ती राज्य पुलिस में भर्ती के एवज में की जाए तथा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में आठ साल सेवा करने के बाद उन्हें वापस राज्य पुलिस में भेजा जाये। इससे एक ओर तो "केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल" की धमनियों में निरन्तर नया रक्त प्रभावित होता रहेगा वहीं राज्य पुलिस को भी सुप्रशिक्षित राष्ट्रीय दृष्टिकोण वाले अनुभवी कार्मिकों की प्राप्ति होगी।

देश की वर्तमान हालत को देखते हुए यह निकट भविष्य में सम्भव नहीं है कि बल की तैनाती शान्ति वाले इलाके में की जाये। अतः अत्याधिक गतिशीलता से बल को अपने स्तर पर ही निपटाना होगा।

31 जुलाई, 2003 बल के सेवानिवृत्त होने वाले अधिकारियों को भावभिनी विदाई



बल के महानिदेशक श्री एस.सी. चौबे सेवानिवृति पर पुलिस महानिरीक्षक दक्षिणी सेक्टर श्री एच.सी. सूद को स्मृत्ति चिन्ह प्रदान करते हुए



बल के महानिदेशक श्री एस.सी. चौबे सेवानिवृति पर पुलिस महानिरीक्षक मध्य सेक्टर श्री जी.एस. तिवाना को स्मृत्ति चिन्ह प्रदान करते हुए



बल के महानिदेशक श्री एस.सी. चौबे सेवानिवृति पर *13* बटा. के उप कमा. श्री ओमपाल सिंह को स्मृत्ति चिन्ह प्रदान करते हुए



बल के महानिदेशक श्री एस.सी. चौबे सेवानिवृति पर *65* बटा. के सहा. कमा. श्री रामभरन सिंह को स्मृत्ति चिन्ह् प्रदान करते हुए



बल के महानिदेशक श्री एस.सी. चौबे सेवानिवृति पर महानिदेशालय के वेतन एवं लेखा कार्यालय के संयुक्त सहा. निदेशक श्री ए. थंगा राजन को स्मृत्ति चिन्ह प्रदान करते हुए

केन्द्रीय प्रशिक्षण कॉलेज–दो द्वारा "विजन" नामक पत्रिका का शुभारम्भ

केन्द्रीय प्रषिक्षण कालेज–दो कोयम्बटूर ने प्रशिक्षुओं के ज्ञानवर्धन एवं उनकी लेखन में रूचि पैदा करने हेतु त्रैमासिक "विजन" नामक पत्रिका प्रकाशित करनी आरम्भ की है। 5 जुलाई 2003 को श्री ओ.पी. सिंह, भा.पु.से. से पुलिस उप महा निरीक्षक (प्रशिक्षण) ने इस पत्रिका का विधिवत रुप से विमोचन किया है।





पुलिस उप महा निरीक्षक (प्रशिक्षण) श्री ओ.पी. सिंह, सी.टी.सी.–दो में "विजन" नामक पत्रिका का विमोचन करते हुए

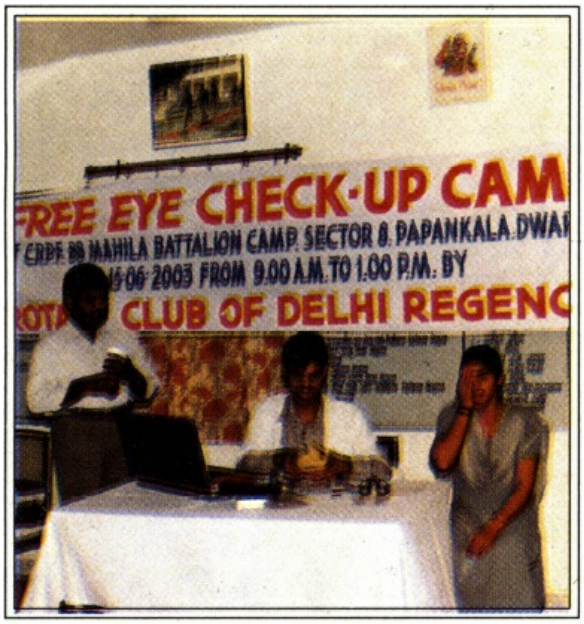
88 महिला बटालियन में मुफ्त नेत्र जांच शिविर

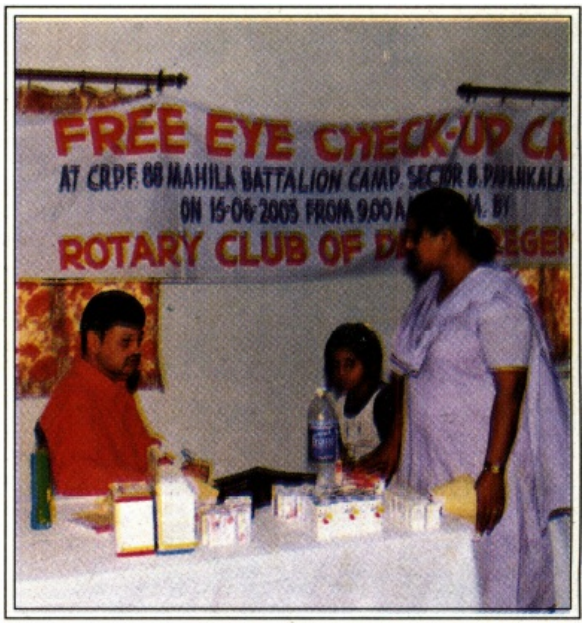
देश एवं बल की पहली महिला बटालियन 88 (म.) बटा० द्वारा 15 जून, 2003 को

रोटरी क्लब नई दिल्ली के सहयोग से मुफ्त नेत्र चिकित्सा कैम्प का आयोजन किया गया। नेत्र विशेषज्ञों की टीम ने प्रसिद्ध नेत्र चिकित्सक डा० (मेजर) रमन तुली के नेतृत्व में 162 जवानों की आँखों की जाँच की। इस कैम्प को आयोजित करने की सलाह एवं प्रेरणा पुलिस महानिरीक्षक दिल्ली रेंज श्री अजय कश्यप, भा.पु.से. द्वारा दी गई।



88 **बटा०के कार्मिकों की नेत्र जाँच करते नेत्र चिकित्सक**





88 **बटा० के कार्मिकों को मुफ्त नेत्र चिकित्सा प्रदान करते नेत्र चिकित्सक**

ग्रुप केन्द्र रामपुर में ग्रीश्म कालीन व्यावसायिक कैम्प का आयोजन

23 जून, 2003 से 15 दिन का ग्रीष्मकालीन व्यावसायिक कैम्प का आयोजन परिवार कल्याण केन्द्र, ग्रुप केन्द्र रामपुर, के सहयोग से आयोजित किया गया। इस कैम्प में महिलाओं के लिए कम्प्यूटर प्रशिक्षण, योगा, पेंटिग सौंदर्यीकरण आदि जैसे कोर्सों का प्रशिक्षण प्रशिक्षित प्राध्यापकों द्वारा चलाया जाएगा।



ग्रुप केन्द्र रामपुर के अपर पुलिस उप महा निरीक्षक श्री हरिवंश सिंह कैम्प का उद्घाटन करते हुए।





ग्रीष्म कालीन प्रशिक्षण शिविर में भाग लेती ग्रुप केन्द्र रामपुर की महिलाएं

“जम्मू–कश्मीर के बदलते हुए परिदृष्य की आहट”

– सहा० कमा० दिवाकर तिवारी,
82 वाहिनी

जैसा की होता है एक नई पार्टी के सत्ता में आने से वैसा ही हुआ, पीपुल डेमोक्रेटिक पार्टी ने जब जम्मू और कश्मीर की हुकूमत संभाली तभी से एक नये बदलाव को वहाँ की जनता ने महसूस करना शुरू कर दिया। अपने लम्बे शासन काल के बाद नेशनल कॉन्फ्रेन्स को विपक्ष की भूमिका निभाने का मौका मिला। नई सरकार ने जनता में एक नये उत्साह एवं भविष्य की आशा की नई किरण जागृत करने हेतु स्वच्छ, पारदर्शी, विकासोन्मुख सरकार देने का वादा किया और सरकार एक ऐसी राह पर चलने के लिए बाध्य हो गई जिसमें हर कदम पर कठिनाइयाँ ही हैं। राज्य की बदहाल आर्थिक स्थिति, सामाजिक संरचना एवं हर तरफ व्याप्त रक्त रंजित खेल विरासत के रूप में मिला।

राज्य सरकार ने अपनी "हीलिंग टच" नीति द्वारा कश्मीरी जनता में एक सदभाव एवं सहयोग का माहौल विकसित करने का प्रयास किया तथा अपने प्रारंभिक कार्य में उन राजनैतिक बंदियों को रिहा किया जो विगत कई वर्षों से जेल की सलाखों के पीछे थे। राष्ट्रीय स्तर पर इस फैसले का विभिन्न रूपों में कही विरोध तो कही स्वागत किया गया। सरकार ने इस नीति को आगे बढ़ाकर उग्रवाद प्रभावित राज्य में शांति स्थापित करने का एक प्रयास किया।

प्रत्येक बुद्धिमान व्यक्ति को कश्मीर की समस्या को समझने हेतु उन कारकों का विश्लेषण करना होगा जो इस समस्या के जन्म के लिए उत्तरदायी हैं। भारत एवं पाकिस्तान के बीच चलने वाली इस खींचतान का खामियाजा तो आखिरकार कश्मीरी आम जनता को स्वतंत्रता के समय से ही भुगतना पड़ा। कश्मीर का आर्थिक विकास मुख्यतः यहाँ आने वाले पर्यटकों से होने वाली आय पर निर्भर होने के कारण संस्थागत ढाचा प्राप्त करने में असफल रहा यही कारण है कि विश्व परिदृष्य की बदलती हुई आर्थिक संरचना में यह राज्य अपनी भागीदारी प्रस्तुत करने में विफल रहा। पाकिस्तान पोषित आतंकवाद ने कश्मीर के अर्थ–तंत्र को इस तरह ध्वस्त किया है कि राज्य को अपने संसाधनों से होने वाली कुल आय का 80 प्रतिशत खर्च आतंकवाद को समाप्त करने में करना पड़ रहा है। राज्य की अर्थव्यवस्था केन्द्र की सहायता पर ही निर्भर होकर रह गयी हैं। बेरोजगारी ने युवा वर्ग को पाकिस्तान समर्थक कट्टरपंथी ताकतों के समीप जाने हेतु प्रेरित किया है।



श्रीनगर की डल झील पर निगरानी करते के.रि.पु. बल के जवान



श्रीनगर के अमर सिंह कॉलेज के बाहर गस्त करते के.रि.पु. बल के जवान

सरकार युवा वर्ग की शक्ति को अब पहचानने लगी हैं तथा उन्हें राज्य की मुख्य

धारा से जोड़ने के लिए विविध विकास योजनाओं को क्रियान्वित कर रही है। इन योजनाओं का मुख्य उद्देश्य रोजगार की उपलब्धता सुनिश्चित करते हुए राज्य की आर्थिक स्थित का विकास करना है। राज्य सरकार ने अपनी योजनाओं का प्रारूप तैयार करते समय केन्द्र सरकार की रचनात्मक भूमिका को भी इसमें शामिल किया है। केन्द्र तथा राज्य सरकार प्रदेश में शान्ति पुर्नस्थापित करने हेतु अब अधिक दृढ़ संकल्प दिखाई दे रही हैं। साथ ही उन असमाजिक तत्वों के खिलाफ शक्ति का भी प्रयोग करने से नहीं चूक रही हैं जो इस शान्ति व्यवस्था के लिए खतरा उत्पन्न करते हैं। प्रदेश में शान्ति व्यवस्था एवं अमन चैन कायम करने की जिम्मेदारी अब सरकार ने के.रि.पु. बल को सौंपने का फैसला किया है। हम सदैव इस चुनौती पूर्ण दायित्व को निभाने के लिए तैयार है। हमारा हर जवान ऐसी चुनौतियों से मुकाबला करने का साहस रखता है, इसका जीता जागता उदाहरण पंजाब है। वहाँ के लोग आज भी के.रि.पु. बल का नाम श्रृद्धा से लेते है।

आज हर कश्मीरियों की आँखों में एक सपना हैं, यह सपना है उन्हीं पुराने दिनों को फिर से लाने का, जब हर तरफ शान्ति थी, खुशहाली थी। हमें ऐसे सतत् प्रयास करने होगें जिससे कि यह सपना उनकी आँखों से ओझल न होने पाए और वे के.रि.पु. बल को हमेशा याद रखे क्योकि :–

‘न हो कुछ भी सिर्फ सपने हो
तो भी हो सकती है शुरूआत,
और यह शुरूआत ही तो है
कि मेरी आँखों में भी एक सपना है।

बल की महिला शक्ति

– संउनि राकेश
03 बटा. के.रि.पु. बल



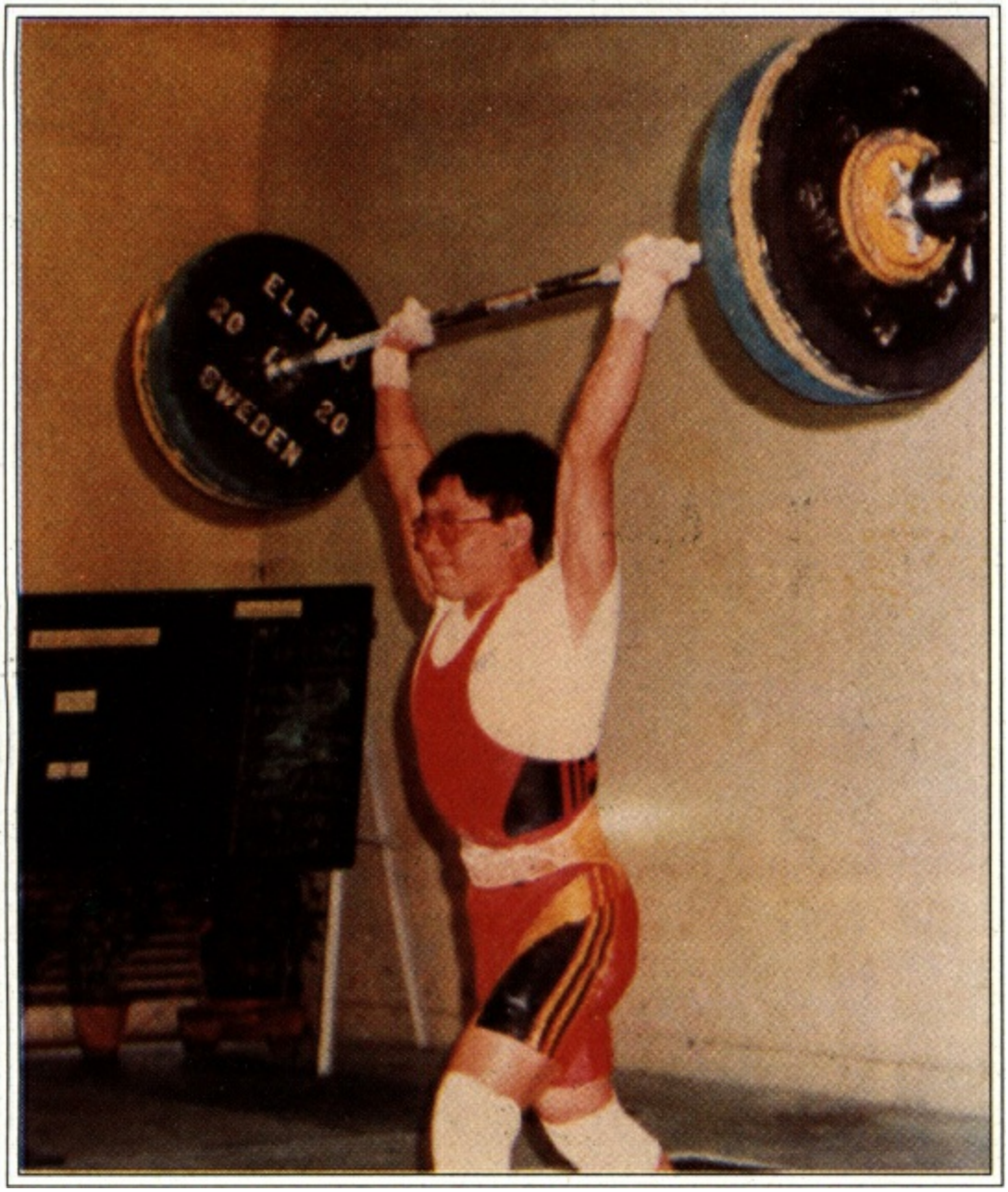
गणतंत्र दिवस परेड में राजपथ पर परेड मार्च करती के.रि.पु. बल की महिला टुकड़ी

भारत वर्ष के प्राचीन इतिहास पर नजर डाले तो ज्ञात होता है कि सदियों पूर्व से ही हमारे देश की महिलाओं ने प्रत्येक क्षेत्र में अपनी कार्यकुशलता का परिचय दिया है। चाहे वह युद्ध का मैदान हो या राजनीति का क्षेत्र हो या फिर सामाजिक कार्यक्षेत्र। महिलाओं ने सभी क्षेत्रों में उच्च स्तरीय सेवाओं, सहयोग का प्रदर्शन किया है। महिला एक बहुआयामी व्यक्तित्व की स्वामिनी है जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरूषों को प्रेरणा देती रहती है, चाहे वह माँ के रूप में हो, बहन के रूप में हो, पत्नी के रूप में हो या फिर बेटी के रूप में हो। मनुष्य के जीवन का हर एक पहलू महिलाओं से प्रेरित होता है।

महिलाओं के बहुआयामी व्यक्तित्व एवं ऐतिहासिक कार्यकलापों को देखते हुए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में भी 06 फरवरी 1986 को प्रथम महिला बटालियन खड़ी की गई जिसे 88 (म०) बटालियन का नाम दिया गया तथा अर्द्ध सैनिक बलों में महिला बटालियन खड़ी करने वाला यह प्रथम संगठन बना। यह परिवर्तन महिलाओं के समर्पण, कर्तव्यनिष्ठा एवं त्याग की भावना से भरी जीवन शैली, व्यक्तित्व को देखते हुए ही संभव हुआ। जिस उद्देश्य के लिए इस प्रथम महिला बटालियन का गठन किया गया। यह बटालियन उस उद्देश्य में पूरी तरह खरी उतरी। महिलाओं की कार्यक्षमता, कार्यकुशलता एवं कर्तव्यनिष्ठा को देखते हुए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में एक और महिला बटालियन का गठन किया गया, जिसे 135 (म०) बटालियन का नाम दिया गया।

वैसे तो महिला हर एक क्षेत्र में पुरूषों के साथ कंधा से कंधा मिला कर काम कर

रहो है तथा पुरूषों के बराबर हो हर क्षेत्र में उपलाब्धेयों को हासिल कर रहो हैं लोकेन केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में महिला बटालियन के गठन हो जाने के पश्चात् समाजिक, कानून व्यवस्था, चुनाव ड्यूटियां इत्यादि में महिलाओं ने जो समर्पणता की भावना दिखाई है और जिस कर्तव्यनिष्ठा से अपनी ड्यूटियों का निष्पादन किया हैं उसका उदाहरण कहीं अन्यत्र देखने को नहीं मिलता है। महिलाओं ने देश की अखण्डता को बनाये रखने एवं कानून व्यवस्था बनाये रखने में अदम्य साहस का परिचय दिया है। महिलाओं ने समय–समय पर अपने कर्तव्य को पूरा करने में अपने जीवन की आहुति देने में भी पीछे नहीं हटी है, जिसका जीता जागता उदाहरण 16 जनवरी, 2001 का दिन जब श्रीनगर हवाई अड्डे पर फिदायीन हमला होने पर 88 (म०) बटालियन की महिला सिपाही बिन्दु कुमरे ने वीरता एवं साहस का परिचय देते हुए अपने प्राणों की आहुति देकर उस फिदायीन हमले को नाकाम कर दिया जिसके लिए उक्त महिला कर्मी को परणोंपरान्त वीरता के लिए पुलिस पदक से सम्मानित किया गया। इसी तरह से वर्ष 2001 में संसद में हुए फिदायीन हमले में अद्भूभत वीरता एवं साहस का परिचय देते हुए 88 (म०) बटालियन की सिपाही कमलेश कुमारी ने अपने प्राणों की आहुति देकर अपने कर्तव्य को पूरा किया तथा शौर्य वीरता का परिचय देते हुए अपना जीवन बल की प्रतिष्ठा बनाये रखने में बलिदान कर दिया तथा देश के इतिहास में अपना नाम अमर कर दिया। इस वीर महिला कर्मी को भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान अशोक चक्र से नवाजा गया।



अपनी अभूत पूर्व क्षमता का प्रदर्शन करती हुई बल की भारतोलक सुश्री कुंजा रानी

महिलाओं ने बल में विभिन्न ड्यूटियों को भलीभांति निभाते हुए, खेल के मैदान में भी संगठन का नाम रोशन किया है। बल की महिलाओं ने खेलों में भी पुरूषों के एकाधिकार वाले क्षेत्रों में सेंध लगाकर अपना परिचय दिया है जिसका डंका पूरे देश में ही नहीं वरन अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी बजने लगा है। इसमें सर्वप्रथम नाम आता है सुश्री कुंजा रानी देवी का जिन्होंने राष्ट्रमंडल खेलों में पुरूषों के लिए वर्गीकृत खेल भारोत्तोलन में सेंध लगाते हुए स्वर्ण पदक हासिल किया। इसी तरह से उ०नि० शीला

और सुनेना ने आखेल भारतीय पुलिस स्पर्धाओं की भारोत्तोलन प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक प्राप्त किये हैं।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के विभिन्न कैडरों में कार्यरत महिलाओं ने इस बल को बढ़ाने में और प्रशासन को सुचारू रूप से चलाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है और देती आ रही हैं, चाहे वह मंत्रालयिक कैडर हो या आस्पतालिक या फिर जी.डी. कैडर हो, सभी क्षेत्रों में सराहनीय एवं कर्तव्यनिष्ठापूर्ण योगदान/सहयोग देती आ रही है। आज देश के प्रत्येक क्षेत्र में कानून व्यवस्था बनाये रखने प्राकृतिक आपदाओं के समय मानवीय सहायता प्रदान करने तथा अन्य महत्वपूर्ण अवसरों पर महिलाओं ने अदम्य साहस का परिचय दिया जा रहा है। सेवा भक्ति का भाव दिल में लिये, अपने–अपने परिवारों से अत्यन्त दूर वाली जगहों पर, सम्पूर्ण भाव से सेवा करने हेतु तत्परता से सेवा में लीन हैं। इनकी उपस्थिति से बल की गरिमा दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। यही कारण है कि आज महिलाओं को बल की शक्ति के रूप में देखा जा रहा है। आने वाले समय के लिए उनसे अत्याधिक आशाएँ देश ने लगा रखी है। महिलाओं के इसी सम्पर्ण भाव और कर्तव्यनिष्ठा से भरी सेवाओं ने देश में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को एक अहम स्थान दिलाया है तथा बल की गरिमा बढ़ायी है।

संक्षिप्त समाचार

उग्रवाद से जूझ रहे श्रीनगर में के.रि.पु.बल की 82 बटालियन शान्ति व्यवस्था कायम करने के लिए तैनात है। श्री नगर के बक्सी स्टेडियम में 11 से 21 जून, 2003 तक आयोजित छटी मेमोरियल फुटबाल टूर्नामेंन्ट में के.रि.पु.बल की टीम ने भाग लिया तथा हाकी जीती। विजेता टीम को ट्राफी जम्मू कश्मीर के मुख्य मंत्री श्री मुफती मोहम्मद सईद ने प्रदान की।



जम्मू–कश्मीर के मुख्य मंत्री श्री मुफ्ती मो. सईद बल के जवानों को ट्राफी प्रदान करते हुए



ट्राफी के साथ बल की विजेता टीम।

संक्षिप्त समाचार



भारतीय मुद्रा एवं हथियारों के साथ *20* बटालियन द्वारा त्रिपुरा में पकड़ा गया उग्रवादी



इन्टर बटालियन फुटबॉल टूर्नामेंट की विजेता *20* बटालियन की टीम

के.रि.पु.बल की 20 वीं बटा० त्रिपुरा में कानून एवं व्यवस्था तथा तीरथ मुख में स्थित हेमिलटन वांध, गोमती हाईड्रो प्रोजेक्ट तथा इनके कर्मचारियों की सुरक्षा एवं आतंक विरोधी कार्रवाई के लिए तैनात हैं। इस बटालियन के जवानों ने एन.एल. एफ.टी. के प्रदीप देव नाथ एवं सुखिन्द्रा त्रिपुरा नामक दो उग्रवदियों को 11 फरवरी 03 को 15700/रू० के साथ दक्षिणी त्रिपुरा के कारबुक क्षेत्र में पकड़ा। 20 वीं बटालियन अपनी भारी परिचालनिक ड्यूटियों के वाबजूद भी अपनी तैनाती के क्षेत्र में बल के कार्मिको एवं जनता के साथ आपसी सौहार्द तथा विश्वास का महौल कायम करने हेतु समय समय पर सामाजिक कार्यक्रम आयोजित करती रहती है। इस बटालियन ने स्थानीय लोगों को कलर टी०वी०, शौर्य ऊर्जा लाइट, सामुदायिक केन्द्र, स्कूल भवन तथा बच्चों के लिए खेलकूद का सामान जैसी जरूरत की वस्तुए मुहैया कराई हैं।

18 वीं बटा० की उपलब्धियाँ



हैडबॉल इन्टर बटालियन गुवाहठी रेंज टूर्नामेंट *2003* की विजेता *18* बटालियन की टीम के खिलाड़ी

के.रि.पु.बल की 18 बटालियन का गठन अप्रैल, 1968 को हुआ था। यह बटालियन देश के विभिन्न भागों में आतंकवाद तथा उग्रवाद के खिलाफ तैनात रही है। आतंकवाद के विरूद्ध अनेक तरह की मुहिम चलाई गई है तथा उसमें काफी सफलता भी हासिल की है। यह बटालियन उग्रवाद से प्रभावित क्षेत्र त्रिपुरा में 24 मई, 1999 से 15 अप्रैल 2002 तक तैनात रही। उस दौरान इस बटालियन द्वारा उग्रवादियों के खिलाफ अनेक महत्वपूर्ण अभियान चलाए गए तथा उसमें विशेष सफलताएं भी हासिल की। इस तैनाती के दौरान बटालियन द्वारा 10 कट्टर उग्रवादी मारे तथा 342 उग्रवादी (एक जिंदा एरिया कमांडर सहित) पकड़े तथा एक ए.के. 56 राइफल, तीन ए.के. 47 राईफल, दो स्टेनगन, दो कारवाईन, 22 पिस्टल–छ:, सी एम. रिवाल्वर–4, सी एम गण–19, तथा 7 हेण्ड ग्रेनेड बरामद किए गए। यह बटालियन 19 अप्रैल, 2002 से उग्रवाद प्रभवित क्षेत्र गारो हिल्स, मेघालय में तैनात है। गारो हिल्स में तैनाती के दौरान भी इस बटालियन ने अपना सफलता अभियान जारी रखा है। तैनाती से अभी तक बटालियन ने अनेक महत्वपूर्ण ऑपरेशन कर ए.एन.वी.सी. के आठ, एन. डी.एफ.वी. के तीन, पी.एल.एफ. के दो तथा यू.एल.एफ.पी. के दो उग्रवादी मारे। इसके अलावा 27 उग्रवादी पकड़े तथा उनसे

एम.ए.के. 47 राइफल–तीन, नौ एम. एम. कारवाइन, दो 20 एम पिस्टल, आठ रॉकेट लॉचर तथा चीनी हेण्ड ग्रेनेड–बरामद किए गए।

बटालियन के उपरोक्त कार्यों के लिए बल के महानिदेशक ने अपने 21 मार्च, 2003 के पत्र सं० सी–8/2002–ओप्स तथा मेघालय पुलिस के महानिदेशक ने अपने 27 फरवरी, 2003 के पत्र सं० सी–40/2000/पी टीक/156 द्वारा भूरि–भूरि प्रशंसा की है। यह बटालियन जहाँ एक तरफ अपने कर्त्तव्य परायणता दी गई जिम्मेदारियों के प्रति सतर्क एवं सजग रही है वहीं इस बटालियन के कार्मिकों ने अनेक प्रकार के सामाजिक क्रियाकलापों एवं खेलकूदों में भी बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया है। बटालियन के खिलाड़ियों ने खेल कूद में भी अनेक महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की है। जंग का मैदान हो या खेल का मैदान सफलता हासिल करना इस बटालियन के जवानों का सदैव उद्देश्य रहा है। बटालियन के जवानों का मनोबल, कर्तव्य परायणता एवं व्यवहारिक दक्षता उच्च कोटि की है।

आतंकवादियों के विरूद्ध 65 बटा. के जवानों की मुहिम तेज



***65* बटालियन के कार्मिकों द्वारा आतंकवादियों से बरामद किए गए हथियारों को देखते हुए पुमनि *(*परि*)* श्रीनगर श्री जी.एम. श्रीवास्तव एवं पुमनि *(*परि*)* श्रीनगर श्री वी.डी. टोकस**

65 बटालियन, 1980 में नीमच में खड़ी हुई। प्रशिक्षण पूरा करने पश्चात देश के विभिन्न भागों में अपनी सक्रिय ड्यूटियाँ निभाई और 2001 से इसकी सभी कम्पनियाँ उग्रवाद ग्रस्त श्रीनगर में तैनात है। जम्मू एवं कश्मीर जैसे चुनौती भरे उग्रवाद से ग्रस्त राज्य में तैनात होने के परिणाम स्वरूप इस बटालियन द्वारा 2001 एवं 2002 में कई रेड़ तथा सर्च ऑपरेशन किये तथा भारी मात्रा में हथियार, गोला बारूद तथा आतंकवादियों को पकड़ा। बटालियन वर्ष 2002 में कश्मीर क्षेत्र में तैनात सभी बटालियनों में से दूसरी परिचालनिक श्रेष्ठ बटालियन घोषित की गई। बटालियन की कुछ प्रमुख उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं।

5 मई, 2003 को सहा० कमा० श्री रमाशंकर सिंह के नेतृत्व में गुप्त एवं विश्वसनीय सूचना के आधार पर बटालियन की ए कम्पनी की एक प्लाटून तथा एस.ओ.जी. गन्धरबल के साथ अंचार गाँव का घेरा डाला एवं छिपे हुए आतंकवादियों को पकड़ने का अभियान चलाया। अंचार गाँव पहाड़ियों के बीच घिरा हुआ दलदली इलाका है। सुबह के 03:00 बजे अंधेरे में आपरेशन के दौरान ए कम्पनी ने 51 "एम.एम. मोर्टार से एक पैरा बम्ब फायर किया। इस आपरेशन में अल–बदर ग्रुप का एक आतंकवादी इजाज अहमद उर्फ तारिक पिता श्री गुलाम मोईददीन को गिरफ्तार किया तथा उनके पास एक ए०के०–47 राईफल, तीन मैंगजीन, 161 राउण्ड (आमुनेशन), एक यू०बी०जी०ए, एक यू०बी०जी०एल०, चार यू० बी० जी० एल० ग्रेनेड, तीन हैण्ड ग्रेनेड, दो डेटोनेटर, एक हैण्ड ग्रेनेड फ्यूज, एक आर.सी.डी., 64 पिका आमूनेशन तथा 20 पेन्सिल सेल बरामद किए।

इस अभियान के दौरान बरामद किए गये हथियार एवं गोला बारूद की प्रदर्शनी श्रीनगर के बक्सी स्टेडियम में लगाई गई। प्रदर्शनी में पुलिस महानिरीक्षक (परिचालन) एवं पुलिस उप–महानिरीक्षक (परिचालन) के.रि.पु.बल श्रीनगर ने इस अभियान/ऑपरेशन में शामिल कार्मिकों का मनोबल बढ़ाने के लिए 1000/– तथा 500–500 के नकद पुरस्कार प्रदान किए।

प्रकृति की सजग पहरेदार के.रि.पु.बल की 30वीं बटा.

पश्मिोत्तर अंचल के पुलिस महानिदेशक श्री कंवलजीत सिंह ने 10 जुलाई, 2003 को हलोमाजरा स्थित 30वीं बटालियन द्वारा आयोजित वृक्षारोपण अभियान, 2003 का अपने कर–कमलों से आम का पौधा लगाकर उद्घाटन किया। इस अवसर पर पुलिस उप–महानिरीक्षक चंडीगढ़ श्री अधीर शर्मा एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी

उपस्थित थे। कार्यक्रम के दौरान हलोमाजरा स्थित पश्चिमोत्तर अंचल मुख्यालय उप–महानिरीक्षक चंडीगढ़ कार्यालय एवं 30 वीं बटालियन के समस्त अधिकारी एवं कर्मचारियों ने अपने हाथों से एक–एक पौधा लगाकर वृक्षारोपण अभियान की शुरूआत की। श्री कंवलजीत सिंह ने इस अवसर पर सभी कार्मिकों को वृक्षारोपण अभियान में योगदान के लिए के बल को प्रोत्साहित ही नहीं किया बल्कि उनके पालन–पोषण एवं बड़े होने तक पूरी जिम्मेदारी निभाने की सलाह भी दी।



अपर महानिदेशक पश्चिमोत्तर अंचल श्री कंवलजीत सिंह हलोमाजरा कैम्प में पौधा लगाकर वृक्षारोपण का शुभारम्भ करते हुए

वनमहोत्सव कार्यक्रम का आयोजन 30वीं बटालियन के सौजन्य से किया गया। यह बटालियन हाल ही में जम्मू–कश्मीर क्षेत्र में चार वर्ष तक आतंकवाद से जुझते हुए अपनी बहादुरी की अनेक मिसाल कायम कर चुकी है। इस तैनाती के दौरान बटालियन के जवानों ने चार बहुमूल्य जानें गंवाई। कर्तव्य की पुकार पर मातृभमि की सेवा करते हुए बल की परम्पराओ का निर्वाह करते हुए बटा० इन वीर साथियों ने बहादुरी की जो मिसाल कायम की हैं उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। कमाण्डेन्ट श्री मनजीत सिंह के नेतृत्व में बटा. के जाबाजों को अब तक शौर्य वीरता के लिए राष्ट्रपति का एक पुलिस पदक तथा महानिदेशक के 19 प्रशंसा डिस्क से सुशोभित किया जा चुका है।



पुलिस उप महानिरीक्षक चंडीगढ़ श्री अधीर शर्मा *30* बटा. कैम्पस में वृक्ष लगाते हुए

30 वीं बटालियन की स्थापना गुजरात राज्य की एस.आर.पी.एफ. बड़ौदा 1 अप्रैल, 1968 को की गई थी। अब यह बटा. ग्रुप केन्द्र नागपुर से संलग्न और पश्चिमी क्षेत्र के प्रशासनिक नियंत्रण में रहकर चंडीगढ़ में सुरक्षा एवं कानून व्यवस्था कायम रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

पुलिस अपर महानिदेशक ने आगे कहा कि वृक्षारोपण का हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण स्थान हैं। वृक्ष प्रकृति का अभिन्न अंग हैं, पेड़ो के बिना जीवन अधूरा सा रह जाता हैं। प्रकृति के प्रति उदासीनता एवं दूरी बढ़ने के कारण वातावरण दूषित होता है

एवं अनेक समस्याओं का जन्म होता है। अधिक वृक्ष उगाने से वातावरण शुद्ध एवं स्वच्छ होता है। उन्होंने बताया कि प्रकृति के साथ हमारा अटूट रिश्ता है। ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन हमारे लिए प्रकृति के करीब आने का एक नया अवसर एवं नया प्रेरणा स्त्रोत है।

कमाण्डेन्ट 30 बटालियन ने उपस्थित अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए विश्वास दिलाया कि जब तक 30वीं बटालियन हलोमाजरा परिसर में तैनात रहेगी इन वृक्षों के पालन–पोषण में कोई कमी नहीं आने दी जाएगी। भविष्य में वृक्ष लगाने के ऐसे अभियानों के प्रयास जारी रहेगे। उन्होने स्पष्ट किया कि इस वर्ष वृक्षारोपण कार्यक्रम को 3 चरणों में पूरा किया जाएगा। जिसमे भिन्न–भिन्न प्रकार के कुल 5 हजार पौधे लगाने का लक्ष्य रखा गया है। आज प्रथम चरण के उद्घाटन के अवसर पर बटा० के कार्मिकों ने 2400 पौधे लगाए। श्री सिंह ने उपस्थित पत्रकार एवं मिडिया के प्रतिनिधियों तथा वन विभाग के अधिकारियों का उनके सहयोग के लिए धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर के.रि.पु. बल गीत की धुन बजाई गई जिसने सभी कार्मिकों का मन मोह लिया।

19वीं बटा० द्वारा सिविक एक्शन कार्यक्रम

19वीं वाहिनी के तत्वाधान में 01 जून, 2003 से विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में सप्ताह भर बहुआयामी कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

निकटवर्ती धर्मार्थ ट्रस्ट महाराणा गुलाब सिहं समाधि एवं मंदिर के प्रांगण में निर्वासित 55 सिख परिवारों के आवासीय परिसर की बटालियन कार्मिकों द्वारा साफ सफाई की गई तथा बच्चों के लिए वॉलीबाल प्रांगण बनाया गया। इसके अतिरिक्त बच्चों को खेल सामग्री वितरित करने से लेकर बाल एवं वृद्ध, नर, नारियों को एकत्रित कर उनमें बल के प्रति विश्वास पैदा करने का वेहतरीन प्रयास किया गया।

निकटवर्ती गुरूद्वारे में कार सेवा एंव महाराजा प्रताप सिंह समाधि स्थल पर मंदिर के चारों और लगभग दो एकड़ जमीन पर उगी हुई जंगली घास को साफ किया और टूटी हुई दीवारों की मरम्मत की। मंदिर के सिंहद्वार तक लगभग 100 मीटर लम्बा गाड़ी का रास्ता बनाया गया। गुलाब की कलमें निरोपित की, मंदिर का रंग–रोगन एवं प्रकाश व्यवस्था की और चारों तरफ की साफ सफाई की गई। बटालियन के जवानों ने क्षेत्र में चारों ओर वर्षों से पड़ा हुआ कूड़े–कचरे के ढेरों को नगर निगम की कचरा ढोने वाली गाड़ी में भरवाकर बाहर फिकवाया। मंदिर के पृष्ठ द्वार तक रास्ता तैयार

किया और मंदिर के अंदरूनी भाग में धुलाई–पुताई एवं यज्ञ वेदी का निर्माण तथा लकड़ी के बोर्डों पर स्वच्छता के बारे में श्लोगन लिखे।



पुलिस महानिरीक्षक (परि.) श्रीनगर श्री जी.एम. श्रीवास्तव, महाराणा गुलाब सिंह समाधी स्थल पर बने मंदिर में बल के अन्य अधिकारियों के साथ पूजा अर्चना करते हुए

मंदिर परिसर में एक बॉली–बॉल प्रांगण का निर्माण किया तथा सुरक्षा हेतु मोर्चे बनाये गये। प्रांगण की धुलाई एवं गुलाब के पौधों की सिंचाई इत्यादि की गई।

मंदिर परिसर में बैठने के लिये उचित व्यवस्था कर बटा. के समस्त अधिकारियों एवं जवानों ने शिव शंकर के विशालकाय शिवलिंग की पूजा–अर्चना की। मंदिर में दीप प्रज्वलित किया और यह परम्परा आगे भी लगातार जारी रखने की प्रतिवद्धता व्यक्त की।

पुलिस महानिरीक्षक (परिचालन), श्री जी०एम० श्रीवास्तव, भा.पु.से., श्रीनगर ने स्थानीय अधिकारियों, उनके परिवारों, स्थानीय लोगों एवं उनके परिवारों के साथ मिलकर द्वीप प्रज्वलित किया। पुलिस महानिरीक्षक द्वारा जल एवं दुग्ध से विशालकाय शिवलिंग का कलशाभिषेक किया गया।

मांदेर में विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम आयोजन हेतु गोष्ठी बनाई गई एवं भजन–कीर्तन, पूजा–अर्चना नियमित रूप से करने हेतु रूप रेखा तैयार की गई। बल कार्मिकों के सामाजिक कार्यो का स्थानीय जनता के ऊपर गहरा प्रभाव पड़ा है। वाहिनी द्वारा यह कार्यक्रम जनहित में जनता विश्वास शांति एवं भाईचारे की भावना स्थापित करने हेतु किया गया।

जूड़ो

– खजान सिंह
क्रीड़ा अधिकारी, के.रि.पु. बल



अखिल भारतीय जूडो पुलिस चैम्पियनशिप में उत्कृष्ट प्रदर्शन करता के.रि.पु. बल का जुड़ाका

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में 1981 में निहत्थी लड़ाई के रूप में जूडो खेल का शुभारम्भ हुआ था। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के दो जूडो खिलाड़ी राम निवास एवं वेद प्रकाश ने 1985 में राष्ट्रीय खेलों में भाग लिया एवं स्वर्ण पदक हासिल किये। के.रि.पु.बल ने 1987 में राष्ट्रीय जुड़ो चैम्पियनशिप में भी भाग लिया एवं अच्छा प्रदर्शन किया। अखिल भारतीय पुलिस खेलों में जूड़ों खेल वर्ष 1987 में शामिल किया गया

तथा प्रथम वर्ष में हो हुए चैम्पेयन बने। इसके पश्चात् के वर्षों में बल की जूडो टीम ने अखिल भारतीय पुलिस खेलों एवं राष्ट्रीय चैम्पियनशिप में पदक जीत कर अपना प्रभाव बनाए रखा। बल के जूडो खिलाड़ियों ने देश का प्रतिनिधित्व करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में देश के लिए अनेक पदक हासिल किये। बल ने राष्ट्र को राधेश्याम, बन्नू सिंह, तिलक थापा, के.बी. थापा, शिव कुमार, विक्रम सोलंकी, महेन्द्र सिंह, राजनाथ यादव, आर.एस. कांग, अकरम शाह, शोभनाथ, पी.के. टोकस जैसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के जूड़ो खिलाड़ी प्रदान किए। वर्ष 1988 में महिला जूड़ो टीम का बल में आगमन हुआ और बल की महिला जूड़ो खिलाड़ियों ने अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में पदक हासिल कर बल व देश का नाम रोशन किया। महिला जूडो खेल अभी तक अखिल भारतीय पुलिस खेलों में शामिल नहीं किया गया है, किन्तु बल की टीम राष्ट्रीय जूडो चैम्पियनशिप में वर्ष–2000 से चैम्पियन रह कर अपना दबदबा बनाए रखा हुआ है। बल में कृष्णा देवी, बसेरा बेगम, मेमा देवी, शान्तिवाला देवी, प्रतिमा गिरी तथा गीता कनोजिया राष्ट्र स्तर की और संगीता चौहान, परविन्दर कौर, जसवीर कौर, भारती डोगरा, वाई० लान्धोनी देवी, एच. इनाकुम्वी देवी, गोमती चानू तथा अनीता चानू ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पदक प्राप्त कर बल व देश का नाम रोशन किया। बल की महिला जुर्डिका ब्रजेश्वरी देवी एवं तोम्बी देवी ने राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करते हुए ओलम्पिक एवं जूनियर एशियन चैम्पियनशिप में भाग लिया और देश तथा बल के लिए पदक जीते।

तनाव एक महामारी

– डाक्टर निश्चल वि० यालगी,
चिकित्सा अधिकारी, 100 बटा.

तनाव आज आरोग्य शास्त्र के सामने एक बड़ी समस्या है जो पैदा तो बहुत आसानी से होता है मगर जाती बहुत मुश्किल से है। तनाव कई सारी बीमारियों को बुलावा देता है। सबसे ज्यादा फोर्स के लोग ही इसके शिकार होते हैं।

तनाव का वैसे मतलब तान (Stretch) जो मन की अस्थिरता से पैदा होता है। जब कोई आवश्यकता पूरा नहीं हो पाती है तब मानव के मस्तिष्क में तनाव पैदा होता है। ज्यादातर मानसिक बीमारियाँ तो तनाव के कारण ही पैदा होती है।

तनाव के कारण

1. खराब माहौल जगह, प्रतियोगी, पर्यावरण।

2. सामाजिक कारण :– अपने–अपने तौर–तरीकों से पालन–पोषण, समाज की जरूरतें, उसकी पूर्णता।

3. मानसिक कारण :– रहन–सहन, आदतें, सोच या कोई हादसा भी कारण बन सकता है।

4. अनुवांशिक :– कई बीमारियाँ अनुवांशिक होती है वैसे ही तनाव भी हो सकता है।

5. आर्थिक कारण :– पैसे की कमी जरूरतों का पूरा न होना।

6. व्यवसाय / नौकरी :– फोर्स के लोगों में नौकरी व्यवसाय के कारण भी तनाव अधिक पाया जाता हैं। नौकरी की जरूरतें पूरी करने में असमर्थ होने से कार्मिक तनाव ग्रस्त होते हैं। फोर्स के कार्मिकों में जो बातें तनाव पैदा करती है यह सभी भली–भाँति जानते है, फिर भी कुछ मुख्य बातें निम्न है :–

बहुत लंबे समय तक सर्तकतापूर्वक ड्यूटी पर तैनाती, कठिन जगहों पर तैनाती तथा अस्थिरता, अपनो से दूर, अर्थात घर परिवार से दूरी, खराब तथा कठिन कार्य स्थिति, छुट्टी समय पर न मिलना, बच्चों की शिक्षा में अस्थिरता।

तनाव के परिणाम

तनाव मनुष्य के पूरे शरीर पर असर करता है जिससे बहुत सी बीमारियाँ जन्म लेती है जैसे हाईपरटेन्सन, मधुमेह, हृद्य रोग, डिप्रेशन, एनक्सीटी, उदर की बीमारियाँ इत्यादि। तनाव से मनुष्य के व्यवहार में भी परिवर्तन हो सकता है जैसे गुस्सा आना, बुरी आदतें, लगन एवं निष्ठा में कमी, एकाग्रता में कमी आदि।

तनाव प्रबंधन

तनाव एक अपने आप में बीमारी हैं जो अन्य कई बीमारियों को पैदा करता है। इसलिए तनाव मुक्त रहना जरूरी है।

तनाव मुक्त होने के लिए कई तरीके बताये गये है जैसे योगा, जिसमें प्रणायाम व श्वासन या कोई मंत्र का जप करना, मनुष्य व्यवहार में बदलाव लाना एवं खेलकूद। कई बड़ी कम्पनियाँ तो अपने कर्मचारियों के लिए अलग से तनाव मुक्ति के लिए पाठ शुरू कर चुकी हैं।

तनाव से पीड़ित व्यक्ति को स्वंय ही तनाव के कारणों का खुलासा तथा उसका समाधान खोजने की कोशिश करनी चाहिए। समय–समय पर अपने स्वास्थ की एक योग्य चिकित्सक से जाँच करा लेना भी आवश्यक है।

अंत में यहाँ यह भी जानना जरूरी है कि तनाव को बुलावा देने वाले आप खुद है। और आप खुद ही इसका हल खोज सकते है, क्योंकि अगर तनाव से मुक्ती पानी है तो उसका जड़ निकालना जरूरी है। सदैव सतचित, हर्षोल्लास, शुभ विचार, नियमित नित क्रियायें, कर्त्तव्यनिष्ठा, वरिष्ठों का आदर सत्कार, आज्ञाकारिता, आत्म सम्मान की भावना, मित्रवत व्यवहार रखने से ही व्यक्ति तनाव मुक्त हो कर स्वास्थ एवं दीर्घ आयु

तक आनंदमय जीवन व्यतीत कर सकता है।

ज्योतिष का मानव जीवन पर प्रभाव तथा उपायों से लाभ

– दिनेश दास बैरागी
कार्मिक–3, महानिदेशालय

ज्योतिष शास्त्र की रचना आज से हजारों वर्ष पूर्व भारतीय महान ऋषि–मुनियों ने अपनी सूक्ष्म प्रज्ञा द्वारा की थी तथा वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि सौर मंडल में जितने भी ग्रह हैं सभी ग्रहों की रश्मियां पृथ्वी पर पड़ती हैं और इन रश्मियों द्वारा ग्रहों का शुभाशुभ प्रभाव मनुष्य पर पड़ता है। ऋषियों के अथक परिश्रम से रचा ज्योतिष शास्त्र, भारत में ही नहीं अपितु अन्य देशों में भी प्रचारित है। ज्योतिष शास्त्र एक ऐसा दीपक है जो अंधकारमय जीवन को प्रकाशमयी बना देता है। यह एक ऐसा दर्पण है जो मनुष्य के भविष्य में लगने वाले चार चाँद या कलंक को पहले ही दिखा देता है। हम इसके द्वारा जीवन के भूत, वर्तमान एवं भविष्य को देख सकते है।

गणित एवं विज्ञान, ज्योतिष के दो प्रमुख अंग है। गणित द्वारा मनुष्य के जन्म के समय से गणना एवं विज्ञान द्वारा सौर मंडल ग्रहों की स्थिति से जन्म कुंडली बनायी जाती हैं। इसके द्वारा मनुष्य के जीवन में आने वाले दुखों एवं सुखों का रहस्य आसानी से जाना जा सकता हैं। यदि नवग्रहों की व्याख्या करें तो विषयवस्तु बहुत ही गूढ एवं जटिल होगी। संक्षेप में सप्तम भाव का प्रभाव ही देखिए। कई जातक ऐसे हैं जिनकों दामपत्य (पति–पत्नी) का सुख नहीं मिलता है। जिसका प्रथम कारण है कि सप्तमेश दुसरे, छठे या बारहवे भाव में बैठा है तो उस जातक को पत्नी/पति के सुख की कमी रहेगी। दूसरा कारण सप्तमेश या भाव पर शत्रु ग्रह की दृष्टि होगी तो भी जातक को दामपत्य सुख में कमी रहेगी। तीसरा कारण जिसमें मंगल ग्रह का विशेष योगदान होता है क्योंकि मंगल भी सूर्य की भांति अग्नि ग्रह है। स्वाभाविक है कि आग जहाँ भी होगी जलायेगी। अतः मंगल भी जिस भाव में बैठता है या जिस भाव को देखता है उस पर दुष्प्रभाव डालता है। परन्तु उच्च का मंगल जिस भाव में बैठता है उस भाव को नुकसान नहीं पहुँचाता है। साथ ही मेष और वृश्चिक राशि पर मंगल की दृष्टि अधिक हानिकारक नहीं होती है।

यदि किसी की जन्म कुडली में मंगल प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम या द्वादश भाव में बैठा है तथा इन भावों में शनि नहीं हैं तो जातक पूर्णतः मंगली कहा जायेगा ऐसे

जातक को मंगली पत्नी ही चाहिए। परन्तु संयोगवश मंगली नहीं मिली एवं गुण भी 27 से कम मिलते हैं तो उस जातक को पत्नी सुख में कमी, परस्पर मतभेद वाद विवाद चलता रहेगा। अधिकांशतः मामलों में विधुर/विधवा योग पाया जाता है। मंगली जातक को अग्नि (विद्युत) तथा विष (अनुचित औषधियों) से सतर्क रहना चाहिए। मंगली जातक को भूलकर भी मूंगा धारण नहीं करना चाहिए। उपाय स्वरूप मंगलवार व्रत रखें, मंगलवार को लाल वस्त्र धारण करें, हनुमान जी को सिंदूर चढ़ा कर लडडू चढ़ावे।

इन सब तथ्यों से हटकर गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरित मानस में यह उल्लेख किया है कि

“होइ है सोई जो राम रचि राखा।
को करि तरक बढावहि साखा”

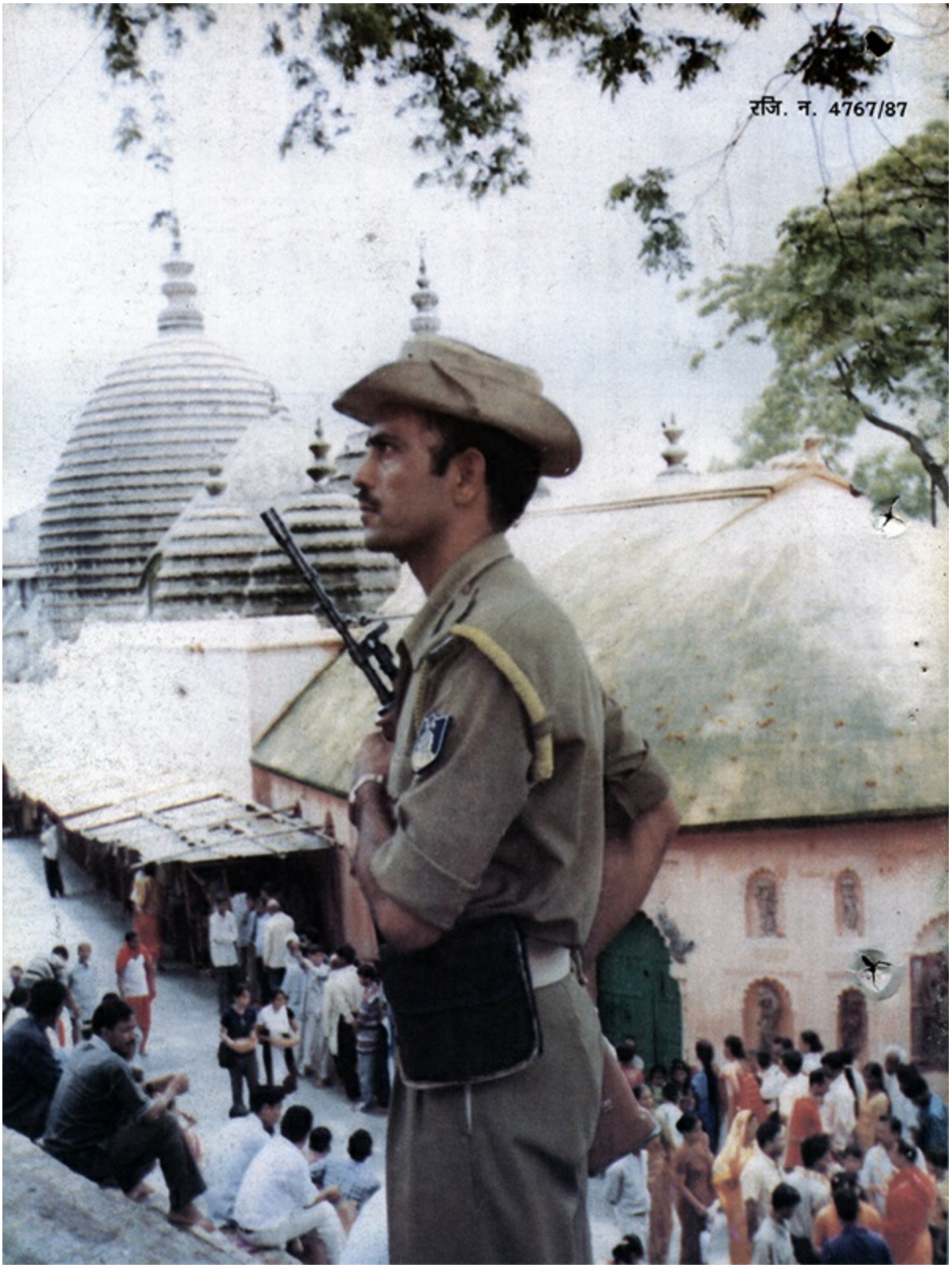
अतः मनुष्य को सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर अपने कर्म करते हुए जीवन यापन करना चाहिए।



स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल रोहिणी में छात्रों द्वारा बनाई गई वस्तुओं की प्रदर्शनी को देखती हुई सीआरपीएफ वाइब्ज वेलफेयर एसोसिएशन की अध्यक्षा श्रीमती कंचन चौबे



श्री अमरनाथ यात्रा के दौरान यात्रियों की सुरक्षा जाँच करती के.रि.पु. बल की महिला कर्मी


रजि. न. 4767/87

सी. आर. पी. एफ.

समाचार

30 सितम्बर, 2003

हिंदी विशेषांक





संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति के सदस्यों का राजभाषा निरीक्षण के लिए आगमन पर स्वागत करते पुलिस महानिरीक्षक (परि.) जम्मू श्री वी.बी. सिंह



संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति के माननीय सदस्यों को स्मृत्ति चिन्ह भेट करते हुए रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र-*IV* हमहमा (श्रीनगर) के अपर पुलिस उप महानिरीक्षक/ प्राचार्य श्री टी.एस. ढिल्लन



सी.आर.पी.एफ. समाचार

खण्ड-16 अंक-6
20 सितम्बर, 2003
8 आश्विन, शक 1925

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
रणबीर सिंह

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं यूनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशालय के.रि.पु. बल ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से
डी.जी. महापात्र

कम्पोजिंग एवं प्रिंटिग
सी.आर.पी.एफ. प्रेस नई दिल्ली-110072

सम्पादकीय सलाहकार मण्डल अध्यक्ष
हिमांशु कुमार, अपर महानिदेशक

सदस्य

विक्रम श्रीवास्तव, महानिरीक्षक (कार्मिक एवं मुख्यालय)
एम.एस. रावत, उप महानिरीक्षक (कार्मिक)
डी.एन.एस. बिष्ट, उप महानिरीक्षक (परिचालन)
सी.बी. मैथ्यू, अपर उप महानिरीक्षक (प्रशि.)
प्रवीण कुमार, उप वित्तीय सलाहाकार
एम.एस. नेगी, कमान्डेंट (एम.टी.)
डी.जी. महापात्र, जनसम्पर्क अधिकारी

मांणे भूषण प्रसाद, हिंदी अधिकारी

इस अंक में

- सम्पादकीय
- महानिदेशक का राजभाषा संदेश
- हिंदी को अधिक सक्षम और लोकप्रिय बनाया जाए
- हमें अपनी राजभाषा में काम करने पर गर्व होना चाहिए
- राष्ट्र भाषा राष्ट्र की प्रतीक होती है
- राजभाषा हिंदी तथा इसके उत्थान में हिंदी भाषियों की भूमिका
- इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की भाषा का बदलता स्वभाव
- हिन्दी का सरलीकरण
- विश्वभाषा "राजरानी हिंदी"
- पश्चिमी सेक्टर द्वारा कर्मचारियों को हिंदी सिखाने का अनूठा प्रयास
- राष्ट्रभाषा "हिन्दी" उन्नत के शिखर पर

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

-संपादक

सम्पादकीय

हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है। इसका जितना उत्थान, विकास हो, राष्ट्र उतना ही गौरवान्वित होगा। सितंबर का महीना आते ही सरकारी कार्यालयों में हिंदी को बढ़ावा देने के प्रयासों में तेजी लाई जाती है। इसी महीने हम हिंदी दिवस और हिंदी सप्ताह भी मनाते हैं। इस दौरान बार-बार इस बात पर जोर दिया जाता है कि हिंदी को प्रोत्साहन देने की जरूरत है।

हिंदी की ग्राह्यता पूरे विश्व में बेमिसाल है। विश्व की किसी अन्य भाषा में यह गुण नहीं मिलता। हर चार कोस के बाद इसका स्वरूप बदल जाता है। मेरठ की हिंदी और लखनऊ की हिंदी, हैदराबाद की हिंदी और पटना की हिंदी, कहीं भी देखिए हिंदी स्थानीय स्वरूप में ढली लिपटी मिलेगी। न यह हैदराबाद में अपरिचित बनकर पहुंचती है न लखनऊ व पटना में, हर जगह यह अपने लिए जगह बनाती आई है।

विश्व की महानतम भाषाएं, ग्राह्यता का गुण न होने के कारण कालांतर में लुप्त होती चली गई हैं। आज वैदिक, संस्कष्त, लैटिन, ग्रीक, हिब्रू भाषाएं केवल इतिहास की धरोहर हैं, जबकि हिंदी युगों-युगों से आज भी जनमानस की भाषा है, बस समय-समय की आवश्यकता के अनुरूप यह अपना स्वरूप बदलती रही है। यह आज भी जन जन की भाषा है। किंतु अंग्रेजों के भारत में आगमन के साथ ही अंग्रेजी भी हमारे यहां फैशन एवं आधुनिकता का प्रतीक बनकर घुसपैठ कर गई और बुरी तरह से हमारे से चिपट कर रह गई है। हम हिंदी प्रेमी जरूर हैं, लेकिन हमारा यह प्रेम अंग्रेजी का विरोधी नहीं है। हम अंग्रेजी के वैज्ञानिक स्वरूप, उसके अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप की प्रशंसा करते हैं, उसे सम्मान देते हैं। लेकिन उसे यह सम्मान देने के लिए हिंदी को पद्च्युत करने के हम खिलाफ हैं। दरअसल हिंदी के मुकाबले अंग्रेजी की वकालत करने वाले यह भूल जाते हैं कि हिंदी विश्व की सशक्ततम भाषाओं में से एक है। उसे अपने विकास के लिए किसी प्रोत्साहन की आवश्यकता नहीं है। जैसा कि अक्सर जलसों और सभाओं में कहा जाता है। दरअसल हिंदी हमारी प्राथमिकताओं में नहीं है। यदि हम हिंदी को प्रोत्साहन देने की अपेक्षा उसे प्राथमिकता देने पर जोर दें तो संभवतः हिंदी पर हमारा यह बड़ा उपकार होगा। जिस दिन हम समझ गए कि हिंदी को प्रोत्साहन नहीं, प्राथमिकता चाहिए, उस दिन शायद हिंदी के नाम पर चलने वाले प्रोत्साहन कार्यक्रमों की आवश्यकता ही नहीं होगी। इस संबंध में हम नेताजी सुभाष चंद्र बोस द्वारा हिंदी के बारे में व्यक्त किए गए उनके विचारों की ओर ध्यान दिलाना चाहेंगे :-

“अगर आज हिंदी भाषा मान ली गई है तो वह इसलिए नहीं कि वह किसी प्रांत विशेष की भाषा है, बल्कि इसलिए कि वह अपनी सरलता व्यापकता तथा क्षमता के कारण सारे देश की भाषा है ”।

डॉ.जौ. महापात्र

“महानिदेशक का राजभाषा संदेश”



‘देवनागरी लिपि में लिखी हिन्दी को संविधान के अनुच्छेद *343(1)* के अनुसार भारत की राजभाषा घोषित किया गया है। इस दिवस का विशेष महत्व प्रत्येक व्यक्ति को उसके कर्तव्य-बोध की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए है। अतः हम इसे केवल औपचारिता मात्र न समझें, बल्कि राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के लिए इसे अपने-अपने कर्तव्य-बोध की अनुभूति के रूप में ग्रहण करें।

सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए कोई समस्या आड़े नहीं आती है, बल्कि समस्या आती है अपनी परतंत्र मानसिकता की। अतः सर्वप्रथम हमें अपनी मानसिकता को अविलंब बदलने की आवश्यकता है किन्तु जो अंग्रेजी में काम करने के आदी हैं, उन्हें अपना अभ्यास बदलना कठिन व असुविधाजनक लगता है। इसका एक दूसरा पहलू यह भी है कि लोगों के मन में यह बात घर कर गई है कि जो व्यक्ति अंग्रेजी लिखता है या बोलता है, वह अधिक शिक्षित या सभ्य है। इसका दुष्परिणाम यह हो रहा है कि जिस व्यक्ति को अंग्रेजी का ज्ञान कम है, वह भी अंग्रेजी में ही लिखना अपनी शान समझता है। अतः मैं आज इस दिवस पर आप सभी से अनुरोध करता हूं कि राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए हमने जो निर्णय लिये हैं, उनका कड़ाई से पालन किया जाए। मैं चाहूँगा कि अधिकारी वर्ग इस दिशा में पहल करें और हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य करके अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को भी प्रेरित करें।

हिन्दी में काम करने के लिए दृढ़ इच्छा शक्ति होना बहुत जरूरी है, क्योंकि

जहां चाह होती है वहां राह तो स्वयं ही बन जाती है। हम हिंदी में ही सोचें और हिंदी में ही लिखें तथा इस सिद्धांत को अपना आदर्श बना लें, तो हमें हिंदी में काम करने में कोई कठिनाई या समस्या नहीं होगी तथा हिंदी की प्रगति में स्वयं ही तेजी आ जाएगी।

हिंदी आज भारत की भाषा ही नहीं है, अपितु विदेशों में भी इसका प्रचार-प्रसार बढ़ रहा है। इसलिए विश्व के हिंदी प्रेमी चाहते हैं कि विश्व के दूसरे नंबर की भाषा हिंदी, संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बने क्योंकि इस में सभी क्षमताएं तथा आवश्यक तत्व मौजूद हैं।

यह कैसी विडंबना है कि हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा होते हुए भी इसके प्रचार-प्रसार के लिए हमें "हिंदी पखवाड़ा एवं हिंदी दिवस" मनाना पड़ रहा है। आइए हम सब इस वर्ष हिंदी पखवाड़ा नहीं बल्कि हिंदी वर्ष मनाने का संकल्प ले तथा केवल प्रतियोगिताओं में बैठकर प्रोत्साहन पाने तक ही इसे सीमित न रखें अपितु हिंदी में काम करके देश का गौरव बढ़ाएं। मैं, इस सुअवसर पर बल के सभी सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

जय हिन्द।

14* सितम्बर, *2003

(एस.सी.चौबे)
महानिदेशक,के०रि०पु०बल

हिंदी को अधिक सक्षम और लोकप्रिय बनाया जाए

(वैश्वीकरण एवं हिंदी पर राष्ट्रीय सम्मेलन)

डॉ० मुरली मनोहर जोशी

केन्द्रीय मानव संसाधन और विकास मंत्री डॉ० मुरली मनोहर जोशी ने समय के अनुसार हिन्दी को अधिक सक्षम और लोकप्रिय बनाने का आह्वान किया है। डॉ० जोशी केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद और केन्द्रीय हिंदी निदेशालय के संयुक्त

तत्वाधान में आयोजित **वैश्वीकरण एवं हिंदी** पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन किया। स्थानीय भाषा और संस्कृति के लिए भूमंडलीकरण को एक बड़ी चुनौती बताते हुए डॉ जोशी ने कहा कि भूमंडलीकरण के इस दौर में जहां लगातार अंग्रेजी का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है, वहीं हिंदी सहित अन्य स्थानीय भाषा और संस्कृति को लगातार चोट पहुंच रही है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिंदी को बढ़ावा देने का आह्वान करते हुए डॉ० जोशी ने कहा कि आज अंग्रेजी इन्टरनेट की भाषा ही बनी हुई है, जिसके कारण दुनिया भर में स्थानीय भाषाएं कमजोर हुई हैं और इन्टरनेट एक भाषा और एक जैसी संस्कृति के प्रसार का माध्यम बन गया है। उन्होंने कहा कि आज स्थिति यह है कि उपभोक्ता सामानों के प्रसार-प्रचार का माध्यम अंग्रेजी या अंग्रेजियत ही है।

देश में हिंदी की स्थिति की चर्चा करते केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री ने कहा कि आज भी देश की न्यायपालिका में अधिकांश कार्य अंग्रेजी में ही हो रहा है और सामान्यतः प्रतियोगी परीक्षाएं अंग्रेजी में ही आयोजित की जा रही हैं। उन्होंने कहा कि हमें इन स्थितियों को बदलना होगा। डॉ० जोशी ने कहा कि यदि शुरूआती स्तर पर प्रशासन में सरकारी कामकाज मूल रूप से हिंदी में किया जाने लगे तो उसका प्रभाव निश्चित रूप से सकारात्मक होगा और हिंदी एक सक्षम भाषा के रूप में ओर आगे बढ़ सकेगी।



विज्ञान भवन में आयोजित हिंदी पर राष्ट्रीय महासम्मेलन के उद्घाटन समारोह में केंद्रीय मानव संसाधन मंत्री मुरली मनोहर जोशी व लक्ष्मीमल सिंघवी

इस अवसर पर राज्य सभा के सदस्य और कानूनविद डॉ० लक्ष्मीमल सिंघवी ने हिंदी की समृद्ध परंपरा का उल्लेख किया तथा हिंदी को विज्ञान और तकनीक भाषा बनाने पर बल दिया ताकि नए दौर में भी हिंदी को उसका उचित स्थान प्राप्त हो सके।

इससे पूर्व समारोह में केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री डॉ० मुरली मनोहर जोशी ने बंगला-हिंदी-अंग्रेजी कोश, चीनी-कोश पोलिश-हिंदी वार्तालाप शब्दावली का लोकार्पण किया। इस अवसर पर उन्होंने एक नई वेबसाइट **राजभाषा डॉट कॉम** की भी शुरूआत की।

साभार (फोटो दैनिक जागरण)

“हमें अपनी राजभाषा में काम करने पर गर्व होना चाहिए”

- हिमांशु कुमार,
अपर महानिदेशक,के०रि०पु०बल



हिंदी में सर्वाधिक काम काज निपटने के लिए शुरू की गई अन्तर कार्यालय चल शील्ड योजना की ट्राफी

बल के अपर महानिदेशक श्री हिमांशु कुमार से ग्रहण करते हुए जन सम्पर्क अधिकारी श्री डी.जी. महापात्र

'चौदह सितम्बर 1949 को भारत के संविधान में हिन्दी भाषा को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया, लेकिन उसके साथ ही यह प्रावधान भी रखा गया कि जब तक सरकारी कामकाज हिन्दी में नहीं होने लगेगा अर्थात् लोग हिन्दी में सरकारी काम-काज करने में अभ्यस्त नहीं हो जाते, तब तक सरकारी काम-काज में अंग्रेजी का भी प्रयोग होता रहेगा। लेकिन आज 55 वर्षों के पश्चात भी हिन्दी भाषा सरकारी काम-काज में अपना वह स्थान नहीं बना सकी जिसकी कल्पना उस समय संविधान निर्माताओं ने की थी। इसका क्या कारण है? अगर हम ईमानदारी और निष्पक्ष रूप से इस प्रश्न का उत्तर ढूंढेगें तो पाएंगे कि अंग्रेजी भाषा के प्रति तथाकथित बुद्धिजीवी वर्ग में दासता की प्रकृति एवं उसी अनुपात में हिंदी भाषा के लिए हीनता की भावना ही इस स्थिति का कारण है।

जब हम घर से लेकर बाजार तक का सारा वार्तालाप/कारोबार हिन्दी में बिना किसी शब्दकोष या अनुवाद के कर सकते हैं तब यह समस्या सरकारी काम-काज करने में ही आड़े क्यों आती है? संभवतः हमारी विपरीत सोच, हिन्दी प्रयोग को बढ़ावा देने में शिथिलता तथा अपनी राजभाषा के प्रति सकारात्मक मानसिकता का अभाव है। ये ही वो अड़चने हैं जिनसे उबरने में हम अब तक असफल रहे हैं। हममें से कई ऐसे हैं जो यह मानते हैं कि अंग्रेजी बोलने-लिखने से व्यक्तित्व में श्रेष्ठता आती है और काफी हद तक यह सही भी है। पर इसके साथ यह भूल जाना कि राजभाषा व राष्ट्रभाषा से हमारी अस्मिता जुड़ी है पूरी तरह निंदनीय है। लोग कहते है कि अंग्रेजी में पत्राचार करना सरल है। वास्तव में एक अरसे से सरकारी कामकाज में लगातार अंग्रेजी के प्रयोग से हमारे मस्तिष्क रूपी संगणक (कम्प्यूटर) में मात्र कुछ पत्र तथा शब्दों का एक सीमित कोष स्थापित हो जाता है और हम इन शब्दों को घुमा फिराकर प्रयोग कर सभी सरकारी काम-काज अंग्रेजी में कर लेते हैं। यदि हम इस प्रणाली को हिन्दी में कम्प्यूट्रीकृत कर लें तो हम आसानी से हिन्दी में सरकारी काम-काज करने लगेगें। आवश्यकता अभ्यास की है, अभ्यास करने से हिन्दी में काज-काज करना अत्यंत सरल हो जायेगा। हिन्दी में काम करने से हमारे अन्दर न सिर्फ आत्म गौरव की भावना को बल मिलेगा बल्कि आम जनता के साथ हमारा संपर्क भी अधिक सहज हो जाएगा। हिन्दी एक सरल व सुबोध भाषा है। फादर कामिल बुल्के ने भी लिखा है "शायद ही संसार की कोई ऐसी विकसित भाषा होगी जो हिन्दी की तरह अभिव्यक्ति में सरल हो"

कुछ लोग हिन्दी को एक क्लिष्ट भाषा मानते हैं जो आसानी से समझ में नहीं आती। लेकिन वास्तविकता इससे उल्टी है। न कोई भाषा और न कोई शब्द क्लिष्ट होता है। बार-बार प्रयोग करने से क्लिष्ट शब्द भी आसान लगने लगते हैं। हॉ यह अवश्य है कि विशुद्ध वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दों जैसे रेडियो, रिफाइनरी, कम्प्यूटर, इंजन, रडार इत्यादि शब्दों को उसी रूप में हिन्दी में स्वीकार किया जाए

क्यों‌के मूल हिन्दी में इन्हें लिखने से अथ का अनथ भी हो सकता है।

पहले जिन कम्प्यूटरों तथा इलेकट्रॉनिक उपकरणों पर हिन्दी में कार्य करना संभव नहीं था अब हमारे वैज्ञानिकों ने इन उपकरणों तथा यंत्रों पर हिन्दी में कार्य करना संभव बना दिया है। अब ऐसे-ऐसे इलेक्ट्रॉनिक यंत्र उपलब्ध हैं जिन पर हिन्दी में दो लाख शब्दों को स्टोर कर शब्दकोष की तरह इस्तेमाल किया जा सकता है। वर्तनी संबंधी अशुद्धियों को दूर करने के लिए भी कई सॉफ्टवेयर विकसित किये गये हैं जिन पर मात्र एक मिनट में 1000 शब्दों की वर्तनी संबंधी त्रुटियॉ निकाली जा सकती हैं। अब हमारे पास हिन्दी भाषा में अनेक वर्ड प्रोसेसर भी उपलब्ध हैं। कहने का मतलब यह है कि वे सभी सुविधाएं जो अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध थी अब हिन्दी में भी उपलब्ध हैं और हिन्दी भी अंग्रेजी की भॉति अब एक पूर्ण रूप से साधन सम्पन्न भाषा बन चुकी है। तकनीकी एवं वैज्ञानिक शब्दावली आयोग ने हमारी सुविधा के लिए तकनीकी एवं वैज्ञानिक शब्दों को सरलीकृत कर हिन्दी में कर दिया, वो भी ऐसी हिन्दी जो सभी आसानी से पढ़ सकें व लिख सकें। इससे राजभाषा के प्रयोग एवं सरकारी काम-काज को हिन्दी में करने में सहायता मिलेगी।

हममें से अधिकतर लोग भूल गए हैं कि आजादी से पहले भी सरकारी काम-काज में हिन्दी का प्रयोग प्रचलित था। देशी रियासतों का राज-काज हिन्दी में ही चलता था। राज्यादेश हिन्दी में जारी किये जाते थे। एशिया में समस्त व्यापार हिन्दी में होता था। उस समय भारत के सभी लोगों में बोल-चाल व व्यवहार की भाषा हिन्दी ही थी न कि अंग्रेजी। यही नहीं स्वतंत्रता संग्राम में संलिप्त देशवासियों को एक सूत्र में बांधने में हिंदी भाषा का अमूल्य योगदान था। यह बड़ी विडम्बना है कि आज जब हम स्वतंत्र हैं और हिंदी को राजभाषा का संवैधानिक दर्जा प्राप्त है तो हम इसमें काम करने में क्यों कतराते हैं। पं० जवाहर लाल नेहरू ने 1958 में मद्रास में एक सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा था “यह बड़े दुख की बात है कि हमें अपना सरकारी काम-काज एक विदेशी भाषा में करना पड़ रहा है। मुझे बहुत शर्म आती है जब मैं विदेशों में अपने ही देशवासियों से अंग्रेजी या विदेशी भाषा में बात करता हूँ”।

देश के एक सबसे बड़े, सबसे पुराने अर्द्धसैनिक बल के सदस्य की हैसियत से, जिस बल के जवानों ने देश की एकता एवं अखण्डता बनाये रखने में मिसालें कायम की है, हमें संकल्प लेना होगा कि राजभाषा को सुदृढ़ एवं सशक्त बनाने में भी किसी से पीछे नहीं रहेंगे। जैसे दुश्मनों से देश की एकता एवं अखण्डता को हमनें सुरक्षित रखा है, उसी तरह हम राजभाषा की गरिमा बनाए रखने के लिए भी सत्त एवं कारगर प्रयास करेंगें। यह प्रयास होगा हिन्दी में सरकारी काम काज कर विदेशी भाषा के वर्चस्व को कम करना।

राष्ट्र भाषा राष्ट्र की प्रतीक होती है

- **डी. जी. महापात्र**
जन सम्पर्क अधिकारी

जननी जन्म भूमिस्य
स्वर्गादपि गरीयसी

माँ के समान मातृभूमि सुख देने वाली होती है, इसलिए दोनों की महानता को स्वर्ग से भी बढ़कर आंका गया है। जिस प्रकार हम माता और मातृभूमि के सम्मुख श्रद्धा से नत-मस्तक होते हैं उसी प्रकार राष्ट्रभाषा भी वन्दना के योग्य है।

वर्तमान समय में राष्ट्रीय एकता का अहम स्थान है क्योंकि आज चारों ओर राष्ट्रीय एकता को खण्डित करने के स्वर मुखरित हो रहे हैं। राष्ट्रीय एकता से ही कोई भी देश एक राष्ट्र के रूप में जीवित रह सकता है। आज भारत विश्व का सबसे बड़े लोकतंत्र में गिना जाता है। किन्तु यह हमारी विडम्बना है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के 55 वर्ष बीत जाने के बाद भी हम देश की राजभाषा को वो स्थान नहीं दिला सके जिसकी वह अधिकारिणी है।

प्रत्येक प्राणी को सम्पर्क के लिए एक भाषा की जरूरत होती है। समाज में रहते हुए एक दूसरे से संबंध बनाने के लिए मनुष्य किसी भाषा या बोली को अपना माध्यम बनाता है और उसी भाषा द्वारा वह अपने भावों एवं विचारों को दूसरों तक पहुंचाता है। भाषा का जन्म समाज से ही होता है। भाषाहीन समाज की तो कल्पना भी नहीं की जा सकती। विचारों के सम्प्रेषण के समय व्यक्ति अपनी भाषा के माध्यम से अपनी सस्कृति विश्वास एवं आस्थाओं को दूसरों तक पहुँचाता है। मनुष्य अपनी बात जितनी आत्मीयता एवं गहराई के साथ अपनी भाषा के माध्यम से सम्प्रेषित कर सकता है। उतनी किसी अन्य भाषा के द्वारा नहीं कर सकता।



ग क्षेत्र में हिंदी के उत्कृष्ठ कार्यान्वयन के लिए ग्रुप केन्द्र पल्लीपुरम के हिन्दी अनुवादु पी.पी. सुनील को प्रशस्ति पत्र प्रदान करते केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री आई.डी. स्वामी

भाषा मानव भाव की अभिव्यक्ति का एक प्रमुख साधन है, जिसके अभाव में वह शून्य है। व्यापक रूप में विचार विनियम के साधनों को भाषा कहा जाता है। भाषा, ज्ञान प्राप्ति का एक प्रमुख साधन भी है। भाषा से ही किसी जाति या समाज का अस्तित्व सुरक्षित रहता है, किन्तु भाषा पैतृक सम्पत्ति नहीं वरन् अर्जित सम्पत्ति है। भाषा का अर्जन अनुकरण द्वारा होता है। भाषा का कोई अंतिम स्वरूप नहीं, वह चिरपरिवर्तनशील है। मानव सभ्यता एवं संस्कृति के विकास में भाषा का बहुत बड़ा योगदान रहा है। इसलिए ऐ पैई नामक विद्धान ने कहा है भाषा एक कहानी है। महर्षि पंतजलि ने यह परिभाषा इस प्रकार व्यक्त की है :- भाषा वह व्यापार है जिसमें हम वर्णनात्मक या व्यक्त शब्दों के द्वारा अपने विचार प्रकट करते हैं।

हमारे देश में सौ से भी अधिक भाषाएँ एवं बोलियॉ बोली जाती हैं उनमें से कई भाषा तो साहित्य की दृष्टि से बहुत समृद्ध हैं जैसे बंगला, तमिल, तेलगू, गुजराती, मराठी इत्यादि किन्तु फिर भी अगर सम्पूर्ण रूप से गणना की जाए तो हिन्दी भाषी

प्रदेशों का क्षेत्र सबसे विस्तृत है। हिन्दी भाषा की लिपि का सरल एवं सुबोध रूप शीघ्र ही समझ में आने वाला है। यूँ तो भारत की सभी भाषाओं को एक सूत्र में बांधे रखती है और आज संस्कृत की भांति हिन्दी भी देवनागरी लिपि द्वारा अन्य भाषाओं के साथ-साथ तालमेल बनाए बैठी है।

उत्तरी-पूर्व भारत की सभी भाषाएँ-असमिया, मणिपुरी, उड़िया, बांग्ला, कश्मीरी, पंजाबी, गुजराती, मराठी, कुंकणी, हिन्दी तथा सिन्धी भाषाओं में स्पष्ट ही निकट संबंध है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह सभी भाषाएँ एक ही माँ की बेटियाँ है और उनके रगों में एक खून बहता है। इनमें से यदि किसी एक भाषा का ज्ञान प्राप्त हो तो थोड़े प्रयास के साथ अन्य भाषाओं को समझा जा सकता है। चार दक्षिणी भाषाओं - कन्नड़, तेलगू, तमिल और मलयालम की स्थिति कुछ भिन्न है। इन भाषाओं का वैदिक अथवा संस्कृत भाषा की तरह सीधा संबंध नहीं है। किन्तु देश की दीर्घ साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परम्परा की एकता के फलस्वरूप यह सभी भाषाएँ संस्कृत से अधिक प्रभावित हुई हैं। आज इन दक्षिणी भाषाओं में संस्कृत शब्दों की इतनी बहुलता है कि यह सभी भाषाएँ उत्तरी भारत की भाषाओं के निकट प्रतीत होती हैं। अतः हमारे लिए यह अत्यन्त विवेकहीन होगा कि हम भारत की किसी एक भाषा को मातृभाषा तथा दूसरी भाषा को परायी एवं उसके बोलने वालों को विदेशी माने। भारतीय भाषाएं बुनियादी तौर पर एकता की माध्यम होनी चाहिए, घृणा का कारण नहीं।

प्रत्येक राष्ट्र की अपनी एक निजी भाषा होती है। जिसे राष्ट्रभाषा का नाम दिया जाता है। उस भाषा को देश की अधिकांश जनता जानती, समझती अथवा बोलती है। इसी भाषा का प्रयोग प्रशासनिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक कार्यों में प्रमुख रूप में किया जाता है। जिस प्रकार कोई भी व्यक्ति दूसरे की आत्मा उधार लेकर जीवित नहीं रह सकता उसी प्रकार कोई भी राष्ट्र विदेशी भाषा के सहारे जीवित नहीं रह सकता। राष्ट्रभाषा के बारे में अपने विचार प्रकट करते हुए कविवर रविन्द्रनाथ टैगोर ने कहा था कि भाषा कोई छाता या ओवरकोट नहीं जिसे माँग माँग कर अपना काम चलाया जा सके। यह किसी भी राष्ट्र की निजी भाषा होती है जिसका उद्गम उस देश में हुआ हो। जिसका उस देश कि संस्कृति सभ्यता एवं साहित्य से गहन संबंध हो, जो बोलने समझने में सरल हो और जिसके बोलने वाले देश में अधिकांश पाए जाते हों, वही उस राष्ट्र की निजी भाषा होनी चाहिए और इस निजी भाषा की उन्नति की बात साहित्य के आधुनिक युग के अग्रदूत हरिश्चन्द्र ने की है :

निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा उन्नति के मिटे न हिय को शूल ।

इस कसौटी के अनुसार हिन्दी ही भारत की राष्ट्रभाषा एवं संपर्क भाषा बन सकती है। हिन्दी को किसी ने राष्ट्रभाषा बनाया नहीं, वह तो उस सिंह की तरह भारत की राष्ट्रभाषा बनी है जो अपने पौरूष एवं पराक्रम से वन का राजा कहलाता है।

हिन्दी राष्ट्रभाषा ही भारत स्वतंत्र होने से पूर्व भारत की सम्पर्क भाषा थी। अब भी भिन्न-भिन्न प्रान्तों के लोग जब परस्पर सम्पर्क में आते हैं तो वे एक दूसरों की प्रान्तीय

भाषा नहीं समझते हैं। ऐसे समय में वे किसी भाषा का आश्रय लेते हैं जिसका थोड़ा बहुत ज्ञान उन दोनों को होता हैं।

हिन्दी को राजभाषा मानने से कदापि मेरा यह तात्पर्य नहीं कि हम अन्य देशी या विदेशी भाषाओं को बिल्कुल भुला दें। दूसरी भाषाओं का ज्ञान भी अत्यन्त आवश्यक है। हमें उन भाषाओं के समृद्ध साहित्य एवं वैज्ञानिक विकास को जानने के लिए हमें उन भाषाओं का ज्ञान होना चाहिए, किन्तु इस का तात्पर्य यह भी नहीं है कि हम अपनी राष्ट्रभाषा को भूल जाएं। ऐसा किया तो भाषा के ज्ञान से हम अपने ही देशवासियों /समाज के लोगों के बीच अजनबी बने रहेंगें। यदि हम अपनी ही भाषा को नहीं जानते तो हम अपने ही कम पढ़े-लिखे परिवार वालों से बात तक नहीं कर पाएँगें। उनके अपने प्रति विचारों को अपने मन में ही संजोये रखेंगे और उदघटित नहीं कर पायेंगे।

हिन्दी को अन्य भाषाओं के समीप लाने के लिए इसमें कुछ सरल शब्दावली का प्रयोग करके, इसे एक हिन्दुस्तानी भाषा का रूप प्रदान किया जा सकता है। किन्तु राष्ट्र की उन्नति के लिए हमें हिंदी भाषा को जानना ही होगा अन्यथा हम अपनी संस्कृति, साहित्य एवं महानता से हाथ धो बैठेंगे। राष्ट्र भाषा ही किसी भी राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधने वाला सूत्र होती है।

राजभाषा हिंदी तथा इसके स्थान में हिंदी भाषियों की भूमिका

- नि (हि.अ.) मोहन चन्द्र पाण्डे
बिहार सेक्टर



सरकारी कामकाज में हिंदी का उत्कृष्ट कार्यान्वयन करने के लिए शिमला में आयोजित राजभाषा सम्मेलन में संयुक्त सचिव राजभाषा श्री आर.एल. गुप्ता से राजभाषा शील्ड प्राप्त करते हुए ग्रुप केन्द्र बनतलाव (जम्मू) के अ. पुलिस उप महानिरीक्षक श्री ओम दयाल माथुर

14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा द्वारा हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया और संविधान पारित होने पर 26 जनवरी, 1950 से यह लागू हुई। तब से लगातार हिंदी के उत्थान तथा इसकी प्रगति हेतु व्यक्तिगत तथा सरकारी स्तर पर प्रयास किये जा रहे हैं। सरकारी स्तर पर राजभाषा के विकास के लिए राजभाषा अधिनियम 1963 तथा राजभाषा नियम 1976 बनाये। विभिन्न प्रकार की प्रोत्साहन योजनायें चलाई गयी। सरकारी कार्मिकों को राजभाषा का प्रयोग करने पर अनेक प्रकार के लाभ दिये गये, जिसके परिणामस्वरूप हिंदी की स्थिति में कुछ सुधार हुआ है। किन्तु यदि समय के साथ इसकी तुलना करें तो यह प्रगति सन्तोषजनक नहीं कही जा सकती, जिसके कई कारण गिनाये जा सकते हैं। उन कारणों में अंग्रेजी साहित्य का समृद्ध होना, भारतीयों द्वारा अंग्रेजों को अपना आदर्श मानना, चिकित्सा व तकनीकी शिक्षा का हिंदी में उपलब्ध न होना तथा हिंदी का रोजगारपरक न होना मुख्य कारण हैं। समय के साथ अब स्थिति बदली है। हिंदी का साहित्य समृद्ध हुआ है, तकनीकी, चिकित्सा व कम्प्यूटर शिक्षा वर्तमान में हिंदी में उपलब्ध है, लोगों में विदेशी भाषा की अपेक्षा अपनी भाषा में रूचि बढ़ी है तथा सरकार द्वारा हिंदी को रोजगारपरक बनाया गया है। आज आवश्यकता इस बात की है कि लोगों को हिंदी में

उपलब्ध संसाधनों व सामग्री के संबंध में जानकारी उपलब्ध करायी जाये ताकि अधिकाधिक लोग इस भाषा की खूबियों से परिचित हों। वह अपनी आवश्यकता के अनुरूप सामाग्री हिंदी में प्राप्त कर सकें।

अंग्रेजी एक समृद्ध भाषा है। मेरा स्पष्ट मत है कि आज के समय में जबकि पूरा विश्व एक बाजार की तरह सिमट गया है, अनेक भाषाओं का ज्ञान जरूरी है, उनमें अंग्रेजी प्रमुख है। मैं आपको यह कभी नहीं कहूँगा कि आप अंग्रेजी न पढ़ें, न सीखें। आप इसका प्रयोग बड़े शौक से करें, किन्तु कहाँ पर? इसका प्रयोग हमकों वहाँ पर करना चाहिए, जहाँ हम अपनी भाषा से काम नहीं चला सकते। यदि मैं हिंदी भाषी हूँ तो मैं अपना कार्य हिंदी भाषा में सहजता से कर सकता हूँ, जिस रूप में चाहूँ। अपने भावों की अभिव्यक्ति कर सकता हूँ। तब मुझे अंग्रेजी की शरण में जाने की क्या आवश्यकता है। आज जबकि देश की अधिकांश जनता को टी०वी० व संचार माध्यमों से हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है तब हम क्यों न इसका अधिक से अधिक प्रयोग अपने नित कार्यों एवं व्यवहार में प्रयोग करें।

सरकारी क्षेत्र में कार्य करने वाले अधिकारियों/कार्मिकों का यह विशेष दायित्व बनता है कि वह अपना कार्य हिंदी में करें। वैसे भी प्रत्येक व्यक्ति को अपनी भाषा, सभ्यता व संस्कृति पर गर्व होना चाहिए। हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार श्री भारतेन्दु हरिश्चन्द ने लिखा भी है :-

“निज भाषा उन्नत अहै, सब भाषा को मूल।

बिन निज भाषा प्रेम के, मिटे न हिय को शूल।

दूसरों की नकल कर हम अपने अस्तित्व को अधिक समय तक कायम नहीं रख सकते। अंग्रेजी में कहावत भी है **“Between two stools, one fell to the ground”** अतः हमको अपने देश की भाषा, सभ्यता और संस्कृति को ही सच्चे मन से अपनाना होगा।

हिंदी की प्रगति में हिंदी भाषियों की भूमिका अहम् है, किन्तु हिंदी भाषियों को यह बात नागवार गुजरेगी, यदि मैं यह कहूँ कि हिंदी की प्रगति की जो रफ्तार ढीली है, उसकी जिम्मेदारी हिंदी भाषियों की है। प्रत्येक हिंदी भाषी की यह विशेष जिम्मेदारी है कि वह अपनी भाषा का विकास करे। अपने आस-पास जो अहिंदी भाषी लोग हैं, उन्हें हिंदी का ज्ञान करायें, वे स्वयं अपना कार्य हिंदी में कर हिंदी के पक्ष में माहौल तैयार करें। जहाँ तक सरकारी कार्यालयों में हिंदी की प्रगति का सवाल है। यह कार्य बड़ी तेजी से किया जा सकता है। हिंदी दिवस के अवसर पर प्रत्येक हिंदी भाषी अधिकारी/कार्मिक के मन में यह संकल्प ले कि अपने आस-पास हिंदी के पक्ष में वातावरण तैयार करे और इसकी प्रगति में अपना योगदान दे, तो आप पायेगें कि हिंदी की प्रगति का चक तेजी से चलने लगेगा। आइये, हम अब हिंदी को आगे बढ़ाने का संकल्प लें तभी राष्ट्र की प्रगति एवं निर्माण होगा।

जय हिंद।

जय हिंदी।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की भाषा का बदलता स्वभाव

- कुमुद शर्मा



ग्रुप केन्द्र, नागपुर के स.उ.नि. (म.) कुमार गौरव नगर कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष आयकर आयुक्त से हिंदी में उत्कृष्ठ कार्य करने लिए प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए

भूमंडलीकरण की प्रक्रिया में उच्च प्रौद्योगिकी और संचार माध्यमों की साम्राज्यवादी, वर्चस्ववादी, सर्वग्रासी आधुनिकता ने तीसरे विश्व के देशों की भाषा और संस्कृति के सम्मुख संकट खड़ा कर दिया है। भूमंडलीकरण के दौर में बहुराष्ट्रीय कंपनियों के प्रवेश ने राष्ट्रीय और क्षेत्रीय भाषाओं पर अँग्रेजी का वर्चस्व कायम करने की दिशा में बढ़-चढ़कर अपनी भूमिका निभाई है।

भूमंडलीयकरण का वाहक बना मीडिया अंग्रेजी शब्दों की भरमार से निर्मित नए

नियम को हिंदी को प्राथामेकता दे रहा है। पाश्चेमी चिंतकों के साथ कुछ भारतीय विद्वान भी इस हिंदी को समर्थन दे रहे हैं। एक प्रसिद्ध अमेरिकी समाजशास्त्री का कहना है, "हमें भाषा के प्रयोगों को छोड़कर टेलीविजन पर उसी भाषा के कार्यक्रम देने चाहिए जो जहाँ पर कार्यक्रम दिखाए जा रहे हैं, उस स्थान विशेष की भाषा हो, न कि वहाँ की मानक भाषा, क्योंकि मानक भाषा से दर्शकों का कुछ लेना-देना नहीं होता। रेडियो ने प्रारंभ से लेकर आज तक इसी भाषा को चलाया है। आज की सामाजिक प्रतिबद्धता में कथा चित्र का महत्व तभी आएगा, जब उसमें आदमी के आम-बोल चाल की भाषा का परिवर्तनीय बिंब-विधान, प्रयोजनमूलक प्रयोग स्थायी रूप से रहेगा।" डेनियल डिफो भी बोलचाल की भाषा का पक्ष लेते हैं क्योंकि उसकी पहुँच साधारण व्यक्ति तक होती है। 'उपयुक्त भाषा शैली वही है जिसे साधारण व्यक्ति भी समझ सके।

इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों चाहे रेडियो हो, टी.वी. हो या फिल्में, उसमें ऐसी भाषा की आकांक्षा रखना तो वांछनीय है जिसमें भावों को, विचारों को शक्तिशाली ढंग से वहन करने की क्षमता हो, जो श्रोताओं और दर्शकों के अंतर्मन में गहरे उतरकर उन्हें सुनाए या दिखाए जाने वाले कार्यक्रम की मूल संवेदना तक पहुँचा सकें। जो देश की करोड़ों-करोड़ जनता को कई स्तरों पर शिक्षित कर सके, उनका स्वस्थ मनोरंजन कर सके, उनके पास सूचनाओं का निर्बाध प्रवाह पहुँचा सके, लेकिन इस कोशिश में यदि वह अपनी मौलिकता, अपनी गरिमा खो बैठे-यह वांछनीय नहीं हो सकता, होना भी नहीं चाहिए।

संचार क्रांति और सूचना विस्फोट के युग में भूमंडलीकरण की ऑधी में शक्तिशाली देशों की साम्राज्यवादी भूमिका हमारी भाषा की शक्ति और स्वाभाविकता का हरण कर ले, यह स्वीकार्य नहीं है।

आज तकनीकी वर्चस्व और भूमंडलीय परिप्रेक्ष्य के दबाव में जनसंचार के इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों ने एक अलग ढंग की हिंदी विकसित की है जिसका अपना अलग मिजाज है, अपनी अलग ही चाल है। इस हिंदी ने एक नया व्याकरण गढ़ा है। नए परिवेश में भाषा की नई चाल-ढाल को ऊपरी तौर पर असंगत नहीं ठहराया जा सकता क्योंकि 'संप्रेषण की प्रकृति कोई निश्चित सैद्धांतिक कार्य पद्धति नहीं बल्कि मनुष्य की क्रियाशील कार्यों एवं अंतःप्रेरणाओं को समझती हुई निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। अतः भाषा अपने युग की स्थितियों और प्रेरणाओं के अनुसार बदलती आई है। आज संचार क्रांति, आंकिक(डिजिटल) क्रांति के युग में भी वह तीव्रगति से बदलाव की ओर बढ़ी है। जनसंचार माध्यमों ने उसे व्यापक आधार दिया है। इस आधार पर उसका स्वरूप किस तरह गढ़ा जा रहा है, यह विश्लेषण का विषय है।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में संप्रेषण कार्य मूलतः समाचार, मनोरंजन और मूल्य-प्रेषण से संबंधित है। भूमंडलीकरण के सहारे बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने जो वर्चस्व भारत में स्थापित किया है उससे संचार माध्यमों ने विज्ञापन को संप्रेषण का, प्रचार का महत्वपूर्ण माध्यम बना दिया है। विज्ञापन के जरिए केवल कंपनियों के उत्पाद का

प्रचार ही नहीं हो रहा है बल्कि ये उपभोक्तावादी संस्कृति की जड़ें फैलाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। ये भी इक्कीसवीं सदी की हिंदी को 'नवाचार' दे रहे हैं। अतः मीडिया की भाषा पर होने वाले विचार-विमर्श में 'विज्ञापनों' को विश्लेषण से परे नहीं किया जा सकता है।

टेलीविजन पर दूरदर्शन सहित विभिन्न चैनल हिंदी के समाचार बुलेटिन, समाचार विश्लेषण और मनोरंजन प्रधान कार्यक्रम (जिनमें धारावाहिक, फिल्मों पर आधारित कार्यक्रम तथा फिल्में समाहित) दिखाते हैं। कार्यक्रमों के मध्य में थोड़े-थोड़े सुनिश्चित अंतराल पर व्यावसायिक कंपनियों के विज्ञापन प्रसारित किए जाते हैं। रेडियो पर भी कार्यक्रमों की बाध्यता को बखूबी समझते हैं। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ भी इस सच्चाई को समझ गई हैं कि विदेशी माल को हिंदुस्तानी बाजार में फैलाने के लिए हिंदी जरूरी है। इसलिए उनके विज्ञापन भी हिंदी में होते हैं, लेकिन सर्वथा नए किस्म की हिंदी में। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की भाषा के बदलते हुए स्वभाव को मनोरंजन, सूचना और विज्ञापन के विश्लेषणों में समझा जा सकता है।

<u>विज्ञापन की भाषा</u> : यद्यपि 'विज्ञापन के प्रत्येक दृश्य में प्रतीक गुण, परिस्थिति, मूल्य और संदर्भ के प्रयोग से व्यंजित अर्थ की अभिव्यक्ति होती है।' लेकिन उसमें 'कॉपी अपील', शब्द संरचना या वाचिक संदेश से प्रभावोत्पादकता आती है। विज्ञापन की भाषा प्रचार का महत्वपूर्ण हथियार बनती है।

विज्ञापन-निर्माता विज्ञापन में दृश्य-बिंबो, प्रस्तुतिकरण के साथ विज्ञापन की भाषा को कलात्मकता देकर उसे जीवंत और शक्तिसंपन्न बनाने की कोशिश करते हैं। भाषा को कलात्मक स्वरूप देने में कई बार विज्ञापन में भाषिक विचलन आ जाता है। कभी शब्द नया बनकर निकलता है तो कभी वाक्य विन्यास में गद्य व्याकरण की जगह कविता की स्वच्छंदता आ जाती है, और कभी सामान्य बोलचाल की भाषा के दबाव में अंग्रेजी तथा आंचलिक शब्दों के भार से दबी हिंदी सामने आती है।

व्याकरण के अनुशासन को तोड़ काव्यात्मक स्वरूप में ढलती भाषा के कुछ उदाहरण हैं :-

धुलाई का **Hero** मैल को कर दे **Zero** ।

पड़ोसी की जले जान आपकी बढ़े शान।



ग्रुप केन्द्र नागपुर के द्वितीय कमान अधिकारी एवं राजभाषा अधिकारी श्री ए.के. नार्जारी सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने के लिए मुख्य अतिथि महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी विश्व विद्यालय के भू. पूर्व उप कुल पति श्री असित सिन्हा से ट्राफी ग्रहण करते हुए

ये दिल मॉगे **More** आह।

अंग्रेजी के वर्चस्व को ढोते विज्ञापन

No रूखापन, **No** चिपचिपाहट।

Simplicity में अद्‌भुत शक्ति है। शुक्र है आज की भगदौड़ की जिंदगी में कुछ तो **Simple** है, यही है **Right Choice Baby Life** हो तो ऐसी।

खा ओ **Britannia fifty fifty, very-very, tasty-tasty** अब बच्चे **nappy** मैं भी **happy I Love you** रसना।

ठंडा ठंडा **Cool Cool Mango fruity, fresh and juicy Effect** सही **Side effect** नहीं। डिटॉल **The hundred percent sure**

Super शक्ति मेरी **big** सुरक्षा।

दांतो में दर्द है। नया **tooth paste try** किया।

हिंदी में अंग्रेजी या अंग्रेजी में हिंदी के समिश्रण से तैयार विज्ञापन वस्तुतः हिंदी-अंग्रेजी अभिसारी' शैली के अंतर्गत विश्लेषित किए जा सकते हैं। श्रव्य-दृश्य माध्यमों में शब्द की शक्ति असीम होती है। शब्द बड़ी जल्दी पाठक तक पहुँचकर अर्थ को खोलता है। विज्ञापनों में बोलचाल की भाषा का तर्क देकर अँग्रजी में हिंदी और हिंदी

में अँग्रेजी मिलाने की संस्कृति को कुछ वर्ग ने स्वीकार तो कर लिया गया, लेकिन भाषा के अशिष्ट प्रयोग को पचा पाना मुश्किल होता है। अशिष्ट भाषा का प्रयोग किसी विशिष्ट पात्र के चरित्र को उतारने के लिए अनिवार्य हो सकता है। लेकिन अशिष्ट भाषा किसी विज्ञापन की अनिवार्यता नहीं हो सकती, लेकिन इधर इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से प्रसारित होने वाले विज्ञापनों में अशिष्ट भाषा और लहजा साफ सुना जा सकता है। कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं-

'तू आदमी है या अंडा,

ठंडा मतलब कोका कोला।'

'ताऊ, साधारण नमक से लालच मत कर।'

विज्ञापन का लक्ष्य उत्पाद या विज्ञापित वस्तु की विशेषता को अभिव्यंजना कौशल से दर्शाना है। उत्पाद की 'विशेषता' विज्ञापन निर्माण का मूल बिंदु होती है। अतः विज्ञापन के संदेश संरचना में विशेषणों का प्रयोग विज्ञापन की भाषा का महत्वपूर्ण घटक बनता है। विज्ञापनों में कभी एक, कभी दो और कभी-कभी तीन विशेषणों का प्रयोग करके वस्तु के प्रति उपभोक्ता के मन में उसे क्रय करने की आकांक्षा को उत्पन्न किया जा सकता है। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर विज्ञापन कंपनियाँ विज्ञापन की 'कॉपी अपील' में विशेषणों का सहारा लेती हैं। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं-

एक अनोखे सुविधाजनक ट्यूब पैक में साफ, स्वस्थ और डेंड्रफ रहित बालों के लिए क्लिनिक स्पेशल शैंपू।

दूध सी सफेदी निरमा से आए

रंगीन कपड़ा भी खिल-खिल जाए।

झंडू पंचारिष्ट-पाँच औषधियों वाला पाचन टॉनिक।

फेयर एंड लवली गोरेपन की क्रीम।

दाँतों को चाहिए सुरक्षा। सुपर शक्तियुक्त।

उपभोक्ताओं के ध्यानाकर्षण के लिए विज्ञापन में जितना ध्यान दृश्य की गुणवत्ता पर होता है उतना ध्यान भाषा से व्यंजित होने वाले अर्थ पर भी होता है। उस वांछित अर्थ की अभिव्यक्ति हेतु विज्ञापन की भाषा को गढ़ते समय कई बार भाषिक चतुराई से काम लिया जाता है, भाषा के व्याकरण से नहीं। भाषा व्याकरण खाँचे में बैठे या न बैठे लेकिन उसमें ध्यानाकर्षण की शक्ति अवश्य होनी चाहिए। इसलिए आज विज्ञापनों की भाषा कहीं अँग्रजी के प्रयोग से, कहीं काव्यात्मक भाषा के माध्यम से, कहीं विशेषणों पर बल देकर और कहीं बोलने के लहजे से उपभोक्ताओं के आकर्षण का केंद्र बन रही है। बच्चों की दुनिया में भाषा के चातुर्य से निकले विज्ञापन लोकप्रिय तो होते हैं, लेकिन वे हिंदी भाषा के स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद नहीं होते।

मनोरंजन : संचार माध्यमों के उद्देश्य की सूची में लोगों का मनोरंजन करना भी समाविष्ट है। टी.वी. और रेडियो के मनोरंजन संबंधी कार्यक्रमों में धारावाहिक,

वृत्तचित्र, संगीत, नाटक, कहानी, हिंदी फिल्में, क्विज, आदि की चर्चा होती है।

टी.वी के मनोरंजन प्रधान हिंदी कार्यक्रमों की अँग्रेजी से गहरी मित्रता है। इसलिए वह उसे साथ लिये चलती है। अंग्रेजी से अपनी प्रगणता स्थापित करती हुई नए किस्म की हिंदी टी.वी और रेडियो के कार्यक्रमों में व्यापक प्रसार पा रही है। टी.वी. पर प्रसारित होने वाले धारावाहिकों पर यदि दृष्टि डालो तो उनके अधिकांश धारावाहिकों के उच्च मध्यवर्गीय या मध्यवर्गीय पात्र जो उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं वे 'इंग्लिश' बोलते हैं, हिंदी नहीं।

इसे संकर**(Hybrid)** भाषा भी कहा जा सकता है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में प्रसारित विज्ञापनों के साथ-साथ प्रधान कार्यक्रमों में इस दोगली भाषा को सम्मान दिलाने की कोशिश जारी है। आज हिंदी धारावाहिक के किसी पात्र द्वारा लगातार चार-पाँच वाक्य अँग्रेजी में बोलना नई बात नहीं है। यह कहीं पात्र की माँग है तो कहीं बहुराष्ट्रीय कंपनियों के फैलाए मायाजाल की माँग।

स्टार टी.वी., एम. टी.वी., सोनी तथा जी. टी.वी. और मैट्रो चैनल पर प्रसारित होने वाले अनेक धारावाहिकों में हिंदी-अँग्रेजी के सम्मिश्रण के तरह-तरह के अनुपात देखे जा सकते हैं। कभी-कभी हिंदी उर्दू के साथ-साथ आंचलिक, क्षेत्रीय या स्थानीय भाषाओं के शब्दों के प्रयोग से भी अपना श्रृंगार करती है।

फिल्मों पर आधारित कार्यक्रमों में अंग्रेजी का दबदबा अन्य कार्यक्रमों की अपेक्षा ज्यादा देखने को मिलता है। हिंदी की फिल्मों से नाम कमाने वाले, हिंदी के बलबूते वैभव बटोरने वाले फिल्मी सितारे जब टी.वी. के परदे पर हिंदी कार्यक्रमों में सम्मानपूर्वक बुलाए जाते हैं तो वे हिंदी इस तरह बोलते हैं जैसे हिंदी बोलने में उन्हें गहरी मानसिक मुशक्त करनी पड़ रही हो या फिर वे हिंदी के ज्ञान से अनभिज्ञ हों। अंग्रेजी दासता और अंग्रेजी मोहमाया का जीता-जागता रूप इन कार्यक्रमों में देखा जा सकता है।

मनोरंजन प्रधान कार्यक्रमों के अंतर्गत 'एंकर' या कार्यक्रम का संचालन करने वाली बालाएँ तो भाषा प्रयोग में कमाल की टूट-फूट, अभद्रता एवं अशिष्टता को दरशाती हैं। 'कमजोर कड़ी कौन' में नीना गुप्ता द्वारा बड़े ही अशिष्ट अंदाज में कहा जाने वाला 'अब आप जा सकते हैं। नमस्ते।' बच्चों को उसी अंदाज में बड़ों से बातचीत करने की तमीज सिखा रहा है। मनोरंजन प्रधान कार्यक्रमों और फिल्मों की हिंदी और शब्दावली समाज को प्रभावित कर रही है।

आज वे टी.वी. से ही बात-बात पर हिंसात्मक तेवर दिखाने के साथ-साथ अशिष्ट और अमर्यादित भाषा का प्रयोग भी सीख रहे हैं। मनोरंजन प्रधान कार्यक्रम हिंदी को व्यापक आयाम देने की क्षमता रखते हैं। लोग अच्छी हिंदी से किस तरह प्रभावित होते हैं इसका उदाहरण 'कौन बनेगा करोड़पति' का प्रसारण है। इस कार्यक्रम में एक आम भारतीय ने पैसे का मायावी जाल भले ही बुना हो, लेकिन इसने हिंदी के प्रति लोगों के मन में खोए हुए आदर को जगाने का काम किया। लोग अमिताभ बच्चन की परिष्कृत हिंदी मानक हिंदी पर बाग-बाग हो जाते थे। लोगों के बीच इस तरह के

वाक्य सुने जा सकते थे 'कितनी अच्छी हिंदी बोलता है।'

मनोरंजन प्रधान कार्यक्रमों में मानक हिंदी की जगह व्याकरण के चौखटे के बाहर की हिंदी को अपनाया जा रहा है। आज टी.वी. से कार्य-व्यवहार की प्रेरणा ग्रहण करने वाले बच्चों पर इस परदे पर दिखाए जाने वाले कार्यक्रमों का असर बहुत गहरा होता है क्योंकि जनमाध्यम समाजीकरण के अभिकरण के रूप में कार्य करते हैं। ऐसी हिंदी को अपनाया जा रहा है जो विदेशी परिधान में अपने मूल स्वरूप को छुपाते हुए आई है जो अंग्रेजी भाषा के मुहावरों और उसके वाक्य विन्यास में अपनी अलग किस्म की पहचान है। यह बदलाव मात्र, परिस्थिति और काल के कारण नहीं है, यह भूमंडलीकरण की आँधी की देन है।

सूचना संबंधी कार्यक्रम : जनसंचार के माध्यम रेडियो, टी.वी., अखबार सूचना को संग्रहीत और संप्रेषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भूमंडलीकरण की प्रक्रिया ने सूचना समाज की जरूरतों को बदल दिया है। आदमी में सूचनाओं की भूख को बढ़ा दिया है। सूचनाओं के महत्व ने इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया के समाचार जगत को बदलकर रख दिया है। इस बदलाव में उसकी भाषा भी बदली है। हलाँकि बदलाव का प्रतिशत मनोरंजन प्रधान कार्यक्रमों के अनुपात में कम है।

रेडियो और टी.वी. के समाचार बुलेटिन राष्ट्रीय और अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर सूचनाओं को श्रोताओं और दर्शकों तक पहुँचाते हैं। दूरदर्शन और रेडियो के समाचार-प्रसारण में मानक हिंदी पर बल दिया जाता है, लेकिन टेलीविजन बहुराष्ट्रीय कंपनियों की कृपा से विभिन्न चैनलों के हिंदी सामचार बुलेटिनों में हिंदी के तमाम भ्रष्ट प्रयोग कभी-कभी हिंदी भाषा के स्वाभिमान पर गहरी चोट करते प्रतीत होतें हैं। जब कोई समाचार वाचिका अँग्रेजी लहजे में हिंदी समाचार पढ़ते हुए बीच-बीच में फाइनेंस मिनिस्टर, प्राइम मिनिस्टर, ट्रेन, एक्सीडेंट, रेजिगनेशन, इंटरनेशनल मार्केट, एजूकेशन जैसे शब्दों का बहुतायत में प्रयोग करती है तो किसी को भ्रम हो सकता है अँग्रेजी की समृद्धता और हिंदी की दरिद्रता का।

आज भूमंडलीय बाजार ने इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में हिंदी के कुछ शब्द बड़े स्वाभाविक रूप में गूँथ दिए हैं, जैसे-इंटरनेशनल मार्केट, मल्टीनेशनल कंपनी, प्राइवेटाइजेशन, इंटरनेशनल ब्रांड, कोलेबोरेशन। इलेकट्रॉनिक मीडिया का हर शब्द बड़ी तीव्र गति से श्रोता या दर्शक तक पहुँचाकर उसे प्रभावित करने की भरपूर शक्ति समेटे हुए है। इसलिए मीडिया से जुड़े लोगों का यह उत्तरदायित्व है कि वे भाषा की स्पष्टता, मौलिकता और शालीनता का ध्यान रखें, लेकिन अंर्तराष्ट्रीय चैनलों से प्रसारित होने वाले कार्यक्रम यह जिम्मेदारी शायद ही उठाएँ। वे ऐसी भाषा को जन्म दे रहे हैं जो 'हिंदी, अँग्रेजी की खिचड़ी है जिसमें कभी अंग्रेजी का अनुपात ज्यादा होता है तो कभी हिंदी का। इन चैनलों द्वारा मानो विशेष लटकों-झटकों के साथ अँग्रेजी शब्दों के मायाजाल में पिरोई हिंदी समाज में स्वीकृत करवाने का अभियान चलाया जा रहा हो। समाज में ऐसी ही हिंदी प्रसार पा रही है, प्रचलन में आ रही है जिस पर पं. विद्यानिवास मिश्र ने बहुत अच्छी टिप्पणी की है -

“अँग्रेजी के बघार के बिना हिंदी बड़ी गँवारू लगती है, मगर यह बघार केवल शब्दों के उधार तक सीमित रहती तो कोई बात नहीं थी। कुछ हद तक हिंदी बाहर के शब्दों को पचाने की क्षमता रखती है, परंतु अब अँग्रेजी के वाक्य-विन्यास ने हिंदी को जकड़ रखा है, अंग्रेजी का मुहावरा हिंदी में अनूदित होकर आ रहा है।”

कुल मिलाकर आज इलेकट्रॉनिक मीडिया में बाजार की भाषा का आक्रामक प्रभाव को ग्रहण करती, व्याकरण के चौखटे को तोड़ती और नए शब्द संसार और वाक्य विन्यास को लेकर गढ़ी हुई अपनाई जा रही है।

साभार इस्पात भारती

सरकारी कामकाज में हिंदी का सर्वाधिक प्रयोग करने वाले बल के कार्यालयों को शील्ड तथा प्रशस्ति पत्र



पुलिस उप महानिरीक्षक कार्यालय पटना को वर्ष 2000-2001 के क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार के लिए चुना गया। क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु शील्ड तथा प्रमाण पत्र प्रदान कर इस कार्यालय को सम्मानित किया गया। राजभाषा से संबंधित शील्ड तथा प्रमाण पत्र इस कार्यालय के प्रशासनिक अधिकारी श्री जगदीश प्रसाद ने 26 मार्च, 2003 व 27 मार्च 2003 को गुवाहाटी में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में प्राप्त किए।



पूर्वी और पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए 26 तथा 27 मार्च, 2003 को दो दिवसीय संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन गुवाहाटी में आयोजित किया गया। पूर्वोत्तर क्षेत्र के कार्यालयों में हिंदी में उत्कृष्ठ कार्य करने के लिए ग्रुप केन्द्र, इम्फाल को प्रथम पुरस्कार दिया गया। पूर्वोत्तर क्षेत्र में वर्ष 2000-01 के दौरान हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने के लिए प्रथम स्थान प्राप्त करने पर ग्रुप केन्द्र की ओर से राजभाषा शील्ड/प्रशस्ति पत्र ग्रुप केन्द्र, इम्फाल के निरीक्षक (हिन्दी अनुवादक) अब्दुल बारी ने ग्रहण किया।



दक्षिणी सेक्टर हैदराबाद को भारत सरकार, के राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा हिंदी के उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिए केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों की श्रेणी में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार 21 एवं 22 मार्च 2003 को नई दिल्ली स्थित विज्ञान भवन में आयोजित संयुक्त श्रेत्रीय राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह में उप प्रधान मंत्री श्री लाल कष्ण आडवानी द्वारा प्रदान किया गया। पुरस्कार पुलिस महानिरीक्षक दक्षिणी सेक्टर की ओर से निरीक्षक/हिंदी अनुवादक ने ग्रहण

किया।

इस वर्ष सरकारी कामकाज में राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने के लिए महानिदेशालय द्वारा लागू की गई "सर्वोत्तम सेक्टर" राजभाषा शील्ड उत्तरी सेक्टर, केरिपुबल, नई दिल्ली को 1 अक्टूबर, 2001 से 31 जुलाई, 2002 तक की अवधि में सर्वाधिक काम हिन्दी में करने तथा राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए सर्वोत्तम सेक्टर घोषित किया गया, 20 सितंबर, 2003 को महानिदेशालय, केरिपुबल, नई दिल्ली में आयोजित हिन्दी दिवस के अवसर पर बल के अपर महानिदेशक, श्री हिमांशु कुमार द्वारा उत्तरी सेक्टर के पुलिस महानिरीक्षक श्री पदमन सिंह, को "सर्वोत्तम सेक्टर" राजभाषा रनिंग शील्ड से सम्मानित किया।



केरिपुबल के बिहार सेक्टर को राजभाषा के क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्व क्षेत्र) राजभाषा विभाग कोलकाता द्वारा वर्ष 2000-01 के लिए पूर्व क्षेत्र के अर्न्तगत "क" क्षेत्र में आने वाले कार्यालयों में से बिहार सेक्टर कार्यालय को "प्रथम" घोषित किया तथा 26 से 27 मार्च, 2003 तक गुवाहाटी(असम) में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में बिहार सेक्टर को राजभाषा शील्ड तथा प्रमाण पत्र प्रदान किए गये। राजभाषा शील्ड तथा प्रमाण पत्र श्री एम.एल.गुप्ता, संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली ने प्रदान किए।



स्वतंत्रता दिवस पर के०रि०पु०बल के 42 कार्मिक पुलिस पदकों से सम्मानित

57वें स्वतंत्रता दिवस 2003 के अवसर पर भारत के राष्ट्रपति ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 42 कार्मिकों को उनकी सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक तथा विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति के पुलिस पदकों से सम्मानित किया।

राष्ट्रपति ने बल के 5 अधिकारियों एवं जवानों को विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति के विशिष्ट सेवा पुलिस पदक जबकि 37 अधिकारी व जवानों को सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक से सम्मानित किया। पदक प्राप्त करने वाले अधिकारी एवं जवान निम्न प्रकार हैं :-

विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक



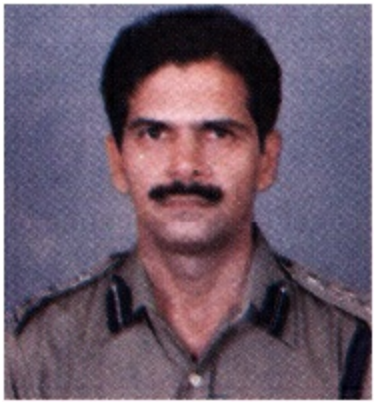
श्री एच.के. सरीन (पु०म०नि० द्रुत कार्य बल)



श्री वी.बी. सिंह (पु०म०नि० जम्मू)



श्री राजदीप सिंह पु०म०नि०) उत्तरी पूर्वोत्तर सेक्टर शिलांग)



श्री के. मधुसुधन (कमाण्डेंट एस.डी.जी., नई दिल्ली)

श्री के आर. शर्मा (कमाण्डेंट 153 बटा०)

सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक :-



श्री अधीर शर्मा (पु०म०नि० चंडीगढ़)



श्री ए.एस. सिद्धु *(*अ०पु०उ०म०नि० परि० महानिदेशालय*)*



श्री के.के.जोरदार *(*अ०पु०उ०म०नि०. ग्रु०केन्द्र रॉची*)*



श्री डेर्यल डीसेना कमाण्डेण्ट *(129* बटा०*)*



श्री एम.एस.अहमद अली कमाण्डेंट*(143* बटा०*)*



श्री सी.जे.एस.हीरा कमाण्डेंट *(*कार्यालय डी.आई.जी रामपुर*)*



श्री वी.के. शर्मा कमाण्डेंट *(152* बटा०*)*



श्री ए.एम. मोहम्मद, कमा० *(145* बटा०*)*



श्री रमेश चंद्र,कमा० *(*आ.सु.ए.*)*



श्री के०आर० यादव कमा०*(*कार्यालय पु०उ०म०नि० हैदराबाद*)*



डा० एस के मिश्रा*(*मु चि.अ. जम्मू*)*



श्री एच.पी.एस. भुल्लर, द्वितीय कमान अधिकारी*(129* बटा०*)*



श्री गुरुदेव सिंह, उप कमा०*(76* बटा०*)*



श्री आर.के.बहुगुणा,उप कमा०*(111* बटा०*)*



श्री ओम प्रकाश सहा० कमा०*(66* बटा०*)*



प्रशा०अधि० सुरेश प्रसाद ग्रुप केन्द्र पिजोर*)*



प्रशा०अधि० एल.आर. चंद्रडू (ट्रेनिंग महानिदेशालय)



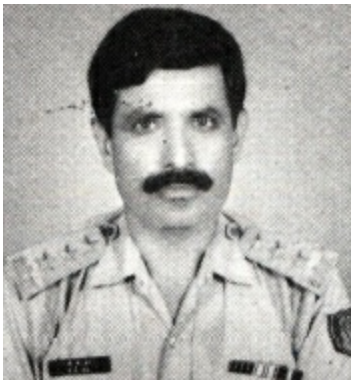
सू०मे०/पी०ए० चाकू मैथाई (कार्यालय पु०म०नि० जम्मू)



कार्यालय अधिक्षक डी. सैथूमाधवन (ग्रुप केन्द्र गॉधीनगर)



सू०मे० मेहर चंद*(90* बटा०*)*



निरीक्षक पवन कुमार झा*(53* बटा०*)*



नि० एपी द्विवेदी*(52* बटा०*)*



उप निरीक्षक ज्ञान चंद*(25* बटा०*)*



उ०नि० कशमीर सिंह*(*ग्रुप केन्द्र खटखटी*)*



उ०नि० एम. गंगाधरण*(*आर.टी.सी-चेन्नई*)*



उ०नि० महावीर प्रसाद*(119* बटा०*)*



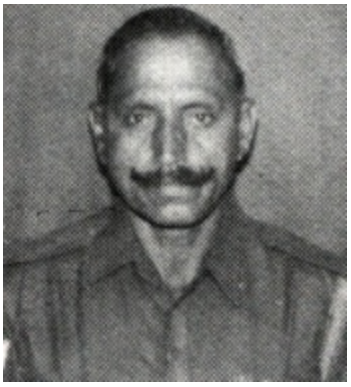
उ०नि० गणपत लाल बटा०*)*



उ०नि०/आरमोर्र सेवा सिंह *(*ग्रुप केन्द्र बनतलाब*),*



फार्मासिस्ट बी.पी. सिन्हा *(*कंपोजिट अस्पताल जम्मू*)*,



हवलदार शेर सिंह*(148* बटा०*)*,



हव०/चालक मो० इस्माईल कुंजू *(86* बटा०*)*

श्री एम. करूणाकरण,कमा० (45 बटा०)

श्री जो.पो. वांशेष्ट, द्वि. क. अधिकारी (ग्रुप केन्द्र मोकामाघाट)
उ०नि० रामधर प्रसाद (141 बटा०)
उ०नि० आर.ए.खान (सी.टी.सी.-कोयंबटूर)
हव० पी. भास्करण(44 बटा०),
सिपाही प्रभू सिंह(40 बटा०)।

स्वतंत्रता दिवस पर के0रि0पु0बल के 25 अधिकारियों एवं जवानों को शौर्य वीरता के पुलिस पदकों से सम्मानित



सहा.कमा. आर. के. गुप्ता, *10* बटा.

57वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर महामहिम राष्ट्रपति ने के0रि0पु0बल के 25 अधिकारियों एवं जवानों को जम्मू-कश्मीर तथा देश के उत्तरी पूर्वी भागों में आतंकवाद एवं उग्रवाद विरोधी कार्रवाई में वीरता का उत्कृष्ट प्रर्दशन करने के लिए शौर्य वीरता के पुलिस पदक प्रदान किए।

बल के चार जवानों को राष्ट्रपति के शौर्य वीरता के पुलिस पदक मरणोपरांत प्रदान किये गए हैं जबकि बल के 21 अधिकारी एवं जवानों को वीरता के पुलिस पदक प्रदान किए गए हैं। पदक प्राप्त करने वाले अधिकारियों एवं कार्मिकों के नाम इस प्रकार हैं : –

राष्ट्रपति के शौर्य वीरता पदक

स्व0 उ0नि0 जोगिंदर सिंह-98 बटा0, स्व0 हव0 नेत राम-98 बटा0, स्व0 हव0 सतनाम सिंह-36 बटा0 तथा स्व0 हव0 वी.एम.त्रिपाठी-36 बटा0 ।

वीरता के पुलिस पदक

उप कमा0 श्री ए.के. बाजपेई-48 बटा, उप कमा0 श्री वी.पी.सिंह-51 बटा0, सहा0कमा0 श्री पी.ए.दूबे-24 बटा0, सहा0कमा0 श्री आर. के.गुप्ता-39 बटा, सहा0कमा0 श्री राजीव यादव-128 बटा, निरीक्षक रामबीर गुप्ता-112 बटा0, निरीक्षक संजय कुमार-32 बटा, उ0नि0 नारायण सिंह-48 बटा0, उ0नि0 बी.एस. नेगी-122 बटा0, हव0 रेवत सिंह-128 बटा0, हव0 काबुलीचरण मेहरी-41 बटा, हव0 मोहम्मद कलामुद्दीन-119 बटा0, सिपाही संजय कुमार-128 बटा0, सि0 रिचिपाल सिंह-51 बटा0, सि0 हरीशचंद्र रामचंद्र जादव-122 बटा0, सि0 बलदेव सिंह-22 बटा0, सि0 रविन्द्र सिंह चोहान-41 बटा0, सि0 सुनील हाजरा-79 बटा0, सि0 निसार अहमद-24 बटा0, सि० विनय कुमार-24 बटा0 तथा सि0 महेश सिंह-119 बटा0 ।

हिन्दी के विकास में अपना अभूतपूर्व योगदान देने के लिए सम्पूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्र में स्थित केन्द्रीय तथा राज्य सरकार के कार्यालयों में 124 बटा. केरिपुबल ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। 26 मार्च 2003 से 27 मार्च, 2003 तक गुवाहाटी में आयोजित संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में सम्पूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्र तथा केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सम्मेलन में 124 बटा0 द्वारा राजभाषा के विकास के लिए किए गए अभूतपूर्व प्रयासों के लिए भूरी-भूरी प्रशंसा की गई तथा सम्पूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्र में द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर बधाई दी तथा साथ ही एक शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

हिन्दी का सरलीकरण

– रौना

यह एक विडम्बना है कि जब कभी हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए सभा आयोजित की जाती है, गोष्ठियाँ या सेमीनार आयोजित की जाती है, वक्ता प्रायः अपने भाषण में इस बात पर अवश्य जोर देते हैं कि सरल हिन्दी का प्रयोग किया जाना चाहिए। क्लिष्ठ और संस्कृतनिष्ठ हिन्दी के प्रयोग के कारण ही हिंदी पिछड़ रही है। इस संबंध में यह कहना है कि अपनी भाषा सदैव सरल होती है। 80% से अधिक भारतीय अच्छी हिंदी जानते हैं। उनके लिए हिंदी बहुत सरल है क्योंकि हिंदी उनकी अपनी भाषा है। अंग्रेजों के लिए अंग्रेजी, जापानियों के लिए जापानी, चीनियों के लिए चीनी सरल भाषा है। क्योंकि ये उनकी अपनी भाषा हैं। किन्तु भारत में मात्र दो प्रतिशत व्यक्तियों ने अपने-अपने स्वार्थवश लोगों में ऐसी भ्रांति भर दी है कि हिंदी एक क्लिष्ठ भाषा है उसको समझना बड़ा कठिन है। अतः हिंदी अंग्रेजी का स्थान नहीं ले सकती है।

जो हिंदी के सरलीकरण की बात करते हैं उनका मत है कि हिन्दी का प्रयोग करते समय अंग्रेजी या अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दों का भी प्रयोग किया जाए चूंकि इस समय भारत में दो प्रतिशत अंग्रेजीदा व्यक्तियों का वर्चस्व व्याप्त है। अतः हम अंग्रेजी के बारे में देखेगें कि यह भाषा हिंदी के मुकाबले कितनी सरल है। अंग्रेजी व्याकरण की दृष्टि से, उच्चारण की दृष्टि से, शब्द अर्थ की दृष्टि से एक भ्रामक भाषा है। उच्चारण की दृष्टि से देखें - chemistry और camel, but और put, see sea, riot, right, rite और write आदि। इन शब्दों के उच्चारण और स्पेलिंग्स में कितनी भिन्नता है। समानार्थी शब्दों में भिन्नता देखिये। Jail और Prison का अर्थ है जेल या कारागार या कैद। यदि Jail के साथ er जोड़ दिया जाए तो Jailer(जेलर) हो जाएगा और यदि Prison के साथ er जोड़ दिया जाए तो Prisoner अर्थात जेली या कैदी हो जायेगा। अतः अंग्रेजी का कोई एक सूत्र नहीं है। इसके विपरीत हिंदी भाषा की लिपि अर्थात देवनागरी लिपि की सबसे प्रमुख वैज्ञानिकता है इसके उच्चारण और लेखन में एकरूपता है। किसी भी संपूर्ण लिपि में एकरूपता, निश्चितता, स्पष्टता, यंत्र योग्यता, सुसाध्यता, सुंदरता तथा गत्यात्मकता आदि विशेषताएं होनी चाहिए।

देवनागरी लिपि में इन सभी विशेषताओं का समावेश है। हिंदी की देवनागरी लिपि है और यह लिपि भाषा के उच्चारण के अनुरूप ही लिखी जाती है। इस लिपि में कोई भी वर्ण लुप्त नहीं होता है अर्थात् प्रत्येक वर्ण का उच्चारण होता है जबकि अंग्रेजी में ऐसा नहीं है। यह उच्चारण एवं लेखन में साम्य होना के कारण वर्तनी की भी कोई समस्या नहीं होती है।

स्वतंत्रता आन्दोलन में देश के पूरब, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण भाग के सभी नेताओं ने भाग लिया था। उस समय स्वतंत्रता के दीवाने देशभक्तों की संपर्क भाषा हिंदी ही थी। हिंदी के माध्यम से ही सबको सूचनाएं दी जाती थी जबकि उस समय अंग्रेजी हुकूमत थी और सभी काम काज अंग्रेजी में ही होते थे। जब अंग्रेजी राज में हिंदी सभी लोग समझते थे, लिखते-पढ़ते थे तो अब स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद हिंदी

क्लिष्ठ कैसे हो गयी। इसे और कुछ नहीं बल्कि हमारी मानसिकता का दिवालियापन ही कहा जाएगा।

प्रत्येक भाषा की अपनी अलग प्रकृति होती है, स्वरूप होता है, संरचना होती है। यदि किसी भाषा में दूसरी भाषा के शब्दों को अनावश्यक रूप से ठूंसा जाए तो उस भाषा का स्वरूप, प्रकृति उसी प्रकार नष्ट हो जाएगी जिस प्रकार यदि एक मूर्तिकार मोर की मूर्ति बनाते समय मोर का नीचे का हिस्सा तो मोर का ही बनाए और उसकी गर्दन के ऊपर का हिस्सा सारस का बना दे तो न वह मूर्ति मोर की मानी जाएगी और न सारस की मानी जाएगी। इसका तात्पर्य यह है कि हिन्दी भाषा के सरलीकरण के नाम पर अन्य भाषाओं के शब्दों का अनावश्यक रूप से प्रयोग करें तो वह न ही हिंदी रहेगी और न अंग्रेजी, या फारसी या अरबी या उर्दू आदि भाषाएं ही रहेंगी। प्रत्येक भाषा का स्वरूप, प्रकृति यहां तक कि भाषा का अस्तित्व ही नष्ट हो जाएगा।

भाषा कोई भी कठिन नहीं होती है। यदि आवश्यकता है तो शब्दों का प्रयोग प्रचलन में लाना है। Telephone अंग्रेजी का एक प्रचलित शब्द है। इसका हिन्दी पर्याय बना दूरभाष। प्रारंभ में दूरभाष का प्रयोग बड़ा अस्वाभाविक लगता था। किंतु इस दूरभाष शब्द का प्रयोग अब बहुत लोगों द्वारा किया जा रहा है। अब यह शब्द बहुत सहज प्रतीत होता है भाषण देते समय प्रायः लोग कामरेड शब्द का प्रयोग करते हैं। यदि कामरेड के स्थान पर साथी शब्द का प्रयोग किया जाए तो यह बोलने तथा समझने में बहुत ही सरल और उपयुक्त शब्द है। क्या हम साथी जैसे सरल शब्द को छोड़कर कामरेड शब्द का प्रयोग करके हिंदी को सरल बनाएंगे। हमारा यह प्रयास वास्तव में बहुत ही अप्राकृतिक होगा। अंग्रेजी का Technology इतना आसान शब्द नहीं है फिर भी प्रचलन में है क्योंकि इसका प्रयोग काफी समय से हो रहा है। इसका हिंदी पर्याय प्रौद्योगिकी पहले इतना प्रचलन में नहीं था किन्तु अब इस शब्द का प्रचलन बढ़ता जा रहा है और धीरे-धीरे यह शब्द लोगों के अभ्यास में आने से स्वतः सरल हो गया है। इस प्रकार अंग्रेजी के अनेक कठिन शब्द हैं जिसका आम आदमी के लिए उच्चारण करना भी कठिन होता है किंतु अंग्रेजी 200 वर्ष से हमारे ऊपर राज कर रही है। अत: अंग्रेजी के कठिन शब्द भी सुनते-सुनते या लिखते-पढ़ते सरल महसूस होते हैं। अतः भाषा कोई कठिन नहीं है। शब्द का जितना अधिक प्रयोग होगा शब्द उतना ही सरल और सहज प्रतीत होगा।

भाषा के शब्द-भंडार को बढ़ाने के लिए निःसंदेह दूसरी भाषा के भी प्रचलित शब्दों को लिया जाता है। हिन्दी में भी अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दों को लेकर इसके शब्द भंडार को बढ़ाया गया है। अंग्रेजी के भी ऐसे शब्दों को हिंदी भाषा में जोड़ा गया है जो पूरी तरह रच-पच गए हैं। युद्ध के दौरान अंग्रेजी शब्द कोटा, परमिट, राशन ब्लैकआउट आदि हिन्दी में रच-पच गए हैं और ये शब्द जाने पहचाने लगते हैं। हमारा यह कहना नहीं है कि हिंदी में जो विदेशी शब्द प्रचलन में आ गए हैं उनका बहिष्कार किया जाए। बटन, कोट, चाकू, छुरी, कैंची आदि घरों में प्रयोग किए जाने वाले शब्द अन्य भाषाओं से आए हैं किंतु ये शब्द हिंदी के ही हो गए हैं। इसी प्रकार

बस, टिकेट, स्टेशन प्लेटफार्म आदि भी हिंदी के ही शब्द बन गए हैं। किंतु जान-बूझ कर हिंदी में अंग्रेजी या अन्य भाषाओं के शब्दों की सरलता के नाम पर घुसपैठ अवांछनीय है। निश्चितकालीन के स्थान पर बेमियाद, विश्वास को यकीन, खेद को अफसोस, प्रसन्नता को खुशी, घृणा को नफरत, सहन को बर्दाश्त, स्वीकार को कबूल, वेशभूषा को पोशाक, आशा को उम्मीद, प्रबन्ध को इन्तजाम आदि कहना सर्वथा त्याज्य होना चाहिए और इस प्रवृति को रोकना चाहिए। प्रचलित सरल हिंदी शब्दों के स्थान पर अन्य भाषाओं के शब्दों के प्रयोग से यह मिथ्या धारणा बनती है कि हिंदी में शब्दों की कमी है।

भाषा संस्कृति का निर्माण करती है, संस्कार देती है, रिस्ते बनाती है। यदि सरलीकरण के नाम पर अंग्रेजी रिश्तों को अपनाया जाए तो रिश्तों की पहचान करना ही कठिन हो जाएगा। प्रत्येक देश, समाज के रिश्ते भिन्न होते हैं। अंग्रेजों का समाजिक गठन भारतीय सामाजिक ढांचे से बिलकुल भिन्न हैं। अंग्रेजी में अंकल शब्द प्रायः प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रयोग होता है किंतु भारत में अंकल शब्द से हमारे रिश्तों का मान ही नहीं होगा। आजकल अंग्रेजीदां व्यक्तियों ने हमारे रिश्तों को ही समाप्त कर दिया है। आज मामा, चाचा, ताऊ, या फूफा, मौसा आदि शब्दों के लिए प्रायः अंकल कहने से यह पता ही नहीं चलता है कि जिस व्यक्ति को अंकल कहा जा रहा है वह मामा है या चाचा, ताऊ या फूफा है। इस प्रकार ऑन्टी शब्द से मामी, चाची, बूआ, ताई, मौसी आदि शब्दों से रिश्तों की पूरी कल्पना नहीं होती है। ब्रदर-इन-लॉ के प्रयोग से यह स्पष्ट नहीं होता है कि व्यक्ति बहनोई, साला और साढू में से किस रिश्ते में है। अगर सरलीकरण के नाम पर अंकल या ब्रदर-इन-लॉ जैसे शब्दों का प्रयोग प्रचलन में रहा तो संभव है हमारी आगे आने वाली पीढी के बच्चों को मामा, फूफा, मौसा, ताऊ, बहनोई, साला या साढू जैसे शब्द बड़े कठिन दिखाई देंगे और इनका अर्थ समझने के लिए शब्दकोशों का सहारा लेना पड़ेगा।

वास्तव में भाषा का मुख्य तात्पर्य यह है कि जो भी हम लिख रहे हैं या बोल रहे हैं वह दूसरों की समझ में आना चाहिए। अतः लिखते या बोलते समय हमको दूसरों की सुविधा का भी ध्यान रखना पड़ता है। आजकल दूरदर्शन, रेडियो से हिन्दी में प्रसारित कार्यक्रमों को देश की 90% जनता देखती है और समझती है। जब दूरदर्शन पर हिंदी में प्रसारित कार्यक्रमों को पढ़ा और अनपढ़ तथा प्रत्येक राज्य का व्यक्ति देख सकता और समझ सकता है तो हम कैसे कह सकते हैं कि हिंदी कठिन है। जहां भी हिंदी का विरोध हुआ है या हो रहा है वह केवल राजनीति से प्रेरित है या 2% अंग्रेजीदां व्यक्तियों ने हिंदी के विरूद्ध एक भ्रांतिपूर्ण वातावरण तैयार कर दिया है।

मातृभाषा कभी कठिन नहीं होती है। यदि भाषा अनुदित होगी तो नैसर्गिक भाषा की अपेक्षा अधिक कठिन होगी यदि हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद किया जाए तो अनुदित अंग्रेजी भाषा मूल अंग्रेजी की अपेक्षा कठिन महसूस होगी। इसी प्रकार अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद किया जाए तो भी अनुदित हिंदी भाषा कठिन लगेगी चाहे हमारी मातृभाषा हिंदी हो या अंग्रेजी। अतः यदि हम अपने कामकाज में हिंदी भाषा

का प्रयोग मूल रूप में करें तो हिंदी भाषा के कठिन या क्लिष्ठ होने का प्रश्न ही नहीं उठता है। अनुदित भाषा कठिन होने के कई कारण होते हैं। एक तो अनुवादकों को विषय वस्तु का पूरा ज्ञान नहीं होता है। अतः उनको बार-बार शब्दकोशों का सहारा लेना पड़ता है। शब्दकोश से प्रायः अनुवादक बोझिल शब्दों का ही प्रयोग कर बैठते हैं। परिणामस्वरूप अनुदित भाषा, चाहे अंग्रेजी भाषा हो या हिंदी भाषा कठिन महसूस होने लगती है।

दूसरे अनुवादक को मूल भाषा का और अनुवादित भाषा का पूरा ज्ञान होना चाहिए। दोनों भाषाओं में पूरी मास्टरी होने पर और विषय वस्तु का ज्ञान होने पर अनुवादित भाषा मौलिक तथा मूल भाषा प्रतीत होगी। अत: यदि अनुवाद में कुछ मौलिक सिद्धान्तों का ध्यान रखा जाए तो अनुवादित भाषा भी सरल एवं मूल भाषा जैसी ही प्रतीत होगी। अनुदित भाषा कठिन होने का एक विशेष कारण यह भी है कि कोई दस्तावेज अंग्रेजी हिन्दी दोनों भाषाओं में भेजना होता है तो अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद करने पर अनुवादकों को बहुत कम समय मिलता है और अनुवादक पर हिंदी में जल्दी अनुवाद करने के लिए वरिष्ठ अधिकारियों का दबाव बना रहता है। अतः जल्दी-जल्दी में अनुवादित भाषा कठिन हो जाती है प्रायः अधिकारीगण समझते हैं कि अनुवाद करना बहुत ही आसान है और चन्द मिनटों में अनुवाद हो जाएगा। किंतु अनुवाद कार्य ही सबसे कठिन कार्य है। अनुवाद करते समय मूल भाषा की आत्मा को टोहना पड़ता है, उसमें आत्मसात होना पड़ता है फिर मूल भाषा के अर्थ को अनुदित भाषा में परिवर्तित करना होता है। यह तभी संभव है जब मूल भाषा और अनुदित भाषा की मास्टरी हो अन्यथा अनुवादित भाषा एक अटपटी और क्लिष्ट भाषा प्रतीत होगी, क्योंकि उससे संप्रेषण सही नहीं होगा। जो भाषा सही संप्रेषण नहीं करती है वह लोगों को पसंद नहीं आती है। यदि हम कार्य को मूल रूप से हिंदी में करें तो यह पूरे विश्वास से कहा जा सकता है कि भाषा में क्लिष्टता बिलकुल नहीं दिखाई देगी। अतः हिन्दी को मल भाषा के रूप में प्रयोग किया जाना चाहिए न कि अनुवाद की भाषा के रूप में।

भारत में सैंकड़ों वर्षों से अंग्रेजी का वर्चस्व रहा है। अतः प्रारंभ में हिंदी में कार्य करने में अवश्य थोड़ी कठिनाई हो सकती है, क्योंकि हिंदी में कार्य करने का अभ्यास नहीं है। किंतु इसका यह अर्थ तो नहीं कि हम अब भी अंग्रेजी पर निर्भर रहें जबकि हिंदी एक सशक्त और बहु प्रचलित भाषा है। आज विश्व में हिंदी का चीनी भाषा के बाद दूसरा स्थान है जबकि अंग्रेजी तीसरे स्थान पर है। हम प्रारंभ में गलती कर सकते हैं, भूल कर सकते हैं लेकिन हमको अपनी भाषा में ही काम करने पर गर्व होना चाहिए। इस संदर्भ में महात्मा गांधी की निम्न पंक्ति युक्ति संगत हैं :–

“यदि हिन्दी बोलने में भूले हो, तो भी उनकी कतई चिन्ता नहीं करनी चाहिए। भूलें करते-करते भूलों को सुधारने का अभ्यास हो जाएगा, पर भूलों की चिन्ता न करने की सलाह आलसी लोगों के लिए नहीं, वरन् मुझे जैसे भाषा सीखने के इच्छुक अव्यवसायी सेवकों के लिए है।”

"संस्कृतानेष्ठ हिन्दी कठिन है, यह मत है उर्दूदां लोगों का। हिन्दी-उर्दू के व्याकरण में कोई अन्तर नहीं हैं, अतः इस वर्ग का असंतोष व्याकरण को लेकर नहीं शब्द भंडार को लेकर है। इसके लिए देश, जनता प्रजातंत्र जैसे शब्द कठिन हैं, मुल्क, आवाम, जम्हूरियत सरल हैं।

हिंदी को कठिन कहने वाला दूसरा वर्ग अंग्रेजीदां लोगों का है इन्होंने अंग्रेजी पढ़ी ही इसलिए कि वह शासन की भाषा रही। ये दफ्तर की भाषा की बनी बनाई लीक पर चलने के आदी हो गये हैं। हिंदी शब्दों के प्रयोग में जो थोड़ा-बहुत प्रयास अपेक्षित है, वह उन्हें कष्टकर प्रतीत होता है। इनके लिए देश/मुल्क, जनता/आवाम, प्रजातंत्र/जम्हूरियत सभी कठिन हैं, कन्ट्री पब्लिक, डेमोक्रेसी ही आसान है, इसलिए उनका आग्रह है कि अंग्रेजी के शब्द यथावत् हिन्दी में अपना लिए जाएं। इस प्रकार कठिनाई एक नहीं, जो अरबी-फारसी के शब्दों को सरल मानते हैं, उन्हें अंग्रेजी शब्दों से संतोष नहीं होगा और जो अंग्रेजी शब्दों के अभ्यासी हैं, उनकी कठिनाई अरबी-फारसी शब्दों से दूर नहीं होगी।

वास्तव में भाषा कोई कठिन नहीं है आवश्यकता है भाषा के प्रति मानसिकता की, सीखने की लगन की, लिखने-पढ़ने के अभ्यास की। जब तक हिंदी के प्रति लोगों की मानसिकता में परिवर्तन नहीं होगा, लोग हिंदी में कार्य करने पर गौरव महसूस नहीं करेंगे। तब तक हिंदी संविधान में राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित होने पर भी अंग्रेजी के सामने टिक नहीं पाएगी और स्थिति वही बनी रहेगी जो पचास वर्षों से हम देख रहे हैं। यही कारण है कि चंद अंग्रेजीदां व्यक्ति किसी न किसी बहाने हिंदी को नकारने की बात करते हैं ताकि सरकार और समाज में उनका वर्चस्व बना रहे। यह घोर चिंता का विषय है कि हम स्वतंत्रता के 56 वर्षों के बाद भी हिंदी को अपना स्थान नहीं दिला पाए हैं। इस पर सभी हिंदी प्रेमियों, साहित्यकारों, सरकारी कर्मचारियों, अधिकारियों और देशवासियों को अविलम्ब ध्यान देना चाहिए। अपनी भाषा के प्रयोग के संबंध में भारतेन्दु हरिश्चन्द की निम्नलिखित पंक्तियां बहुत सटीक हैं :–

"निज भाषा उन्नति अहै सब
उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के
मिटत न हिय को शूल।"

साभार-संचार समन्वय

राजभाषा नीति के उत्कृष्ठ कार्यान्वयन के

लिए पूर्वोत्तर सेक्टर को शील्ड तथा प्रशस्ति पत्र





पूर्वोत्तर सैक्टर, के०रि०पु०बल शिलांग को शील्ड केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का पूर्वोत्तर सैक्टर कार्यालय प्रकृति की अनुपम सुन्दरता से परिपूर्ण सुदूर उत्तर-पूर्वी राज्य मेघालय की राजधानी शिलांग में स्थित है। अतिवृष्टि के लिए विश्व-विख्यात यह

प्रदेश मेघों का आश्रय स्थली है। यहाँ पूरे वर्षभर वर्षा होती रहती है। घने जंगल इस प्रदेश की अमूल्य धरोहर हैं। यहाँ की स्थानीय भाषा खासी और गारो तथा राजकीय भाषा अंग्रेजी है। अहिन्दी भाषी राज्य में स्थित पूर्वोत्तर सैक्टर कार्यालय की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन और अनुपालन में अहम भूमिका रही है। इस सेक्टर के सभी अधीनस्थ कार्यालय अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में ही स्थित हैं। इनमें राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन एवं प्रगति पर भी सैक्टर कार्यालय द्वारा निगरानी रखी जाती है और आवश्यक मार्गदर्शन किया जाता है। सरकारी कामकाज में हिंदी की प्रगति बढ़ाने और अधिकारियों एवं कर्मचारियों में प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने हेतु इस सैक्टर के अधिनस्थ कार्यालयों के लिए अलग से एक "यूनिट शील्ड योजना" लागू की गई है। हिन्दी के कार्य-कलापों में योगदान देने के लिए उदारतापूर्वक पुरस्कार प्रदान किया जाता है। यहाँ तैनात कर्मियों को हिंदी संबंधी अपेक्षित प्रशिक्षण दिलाया जा चुका है। हिन्दी में कार्य करने की सुविधा हेतु सेक्टर मुख्यालय में 7 देवनागरी टाइपराइटर तथा 2 द्विभाषी कंप्यूटर उपलबध हैं। यहाँ लगभग 50 प्रतिशत से अधिक स्टाफ अहिन्दी भाषी है फिर भी लगभग 61 प्रतिशत सरकारी कार्य हिन्दी में सम्पन्न किया जा रहा है। मेघालय, अरूणाचल प्रदेश और असम राज्यों में तैनात केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की यूनिटों का परिचालनिक निरीक्षण नोट तथा सेक्टर के अधीनस्थ कार्यालयों एवं यूनिटों के प्रशासनिक निरीक्षण/भ्रमण नोट हिन्दी में तैयार करके निर्गत किए जाते हैं। राजभाषा नीति के उत्कृष्ट निष्पादन हेतु इस मुख्यालय को 27 मार्च, 2003 को गुवाहटी में सम्पन्न उत्तर-पूर्वी राज्यों के संयुक्त क्षेत्रीय सम्मेलन और 25 जून, 2003 को शिलांग में सम्पन्न नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति की छमाही बैठक में शील्ड प्रदान करके सराहा गया। सरकार की नीति के अनुरूप ही राजभाषा हिंदी का प्रयोग प्रेरणा एवं प्रोत्साहन के माध्यम से बढ़ाया जा रहा है।

- प्रस्तुति-नि. (हि.अ.) महीपाल सिंह

विश्वभाषा "राजरानी हिंदी"

- स0उ0नि0 (मं) योगेन्द्र प्रसाद,
102 बटालियन, केरिपुबल

भारत एक विशाल देश है जिसमें अनेक विविधताओं के होते हुए भी अदभुत एकता पाई जाती है। किसी देश में प्रजातंत्र की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि उस देश का राजकाज उसकी जनता की भाषा में हो। इसी बात को ध्यान में रखकर ही हमारे संविधान में 18 प्रांतीय भाषाओं को मान्यता दी गई है तथा देश का राजकाज

चलाने के साथ-साथ केन्द्र व राज्यों के बीच संपर्क बनाये रखने की भूमिका निभाने का दायित्व हिंदी को सौंपकर 14 सितंबर, 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया। यह सर्वविदित है कि भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343(1) में हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया गया है। भारत के नागरिक होने के नाते भारतीय संविधान के तहत लिए गए सभी संकल्पों का पूरा-पूरा पालन करना हमारा सांविधिक दायित्व है।

भारत एक सर्व सत्तासंपन्न गणराज्य है। यहाँ का संविधान बहुमत का सम्मान और अल्पमत की सुरक्षा का उत्तरदायित्व ग्रहण करता है। अतः बहुमत और अल्पमत को अपनी सीमाओं का अतिक्रमण नहीं करना चाहिए। हम समस्त देशवासी संविधान के प्रति निष्ठावान है। इसी के साथ ही राष्ट्रभाषा जिसे भारतीय संविधान स्वीकृत कर चुका है उसकी उपेक्षा भी पिछले 53 वर्षों से जनता नहीं जननायक करते आ रहे हैं। इसका मुख्य कारण है कि हमारे जननायक संकुचित क्षेत्रियता की सीमा से न तो मुक्त हैं और न ही क्षेत्रीय जनरूचि को राष्ट्रीय जनरूचि तक पहुंचाने में समर्थ हैं। हिंदी संसार की परमशक्तिशाली भाषाओं में से एक है। सबसे बड़ी बात यह है कि हिंदी में इस देश की मिट्टी की सुगंध विद्यमान है।

हिंदी भाषी कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिलाने और हिंदी कार्यशालाओं में टिप्पण, प्रारूप लेखन के हुनर में अभ्यस्त करा देने के बाद भी हिंदी का कार्यान्वयन सुनिश्चित नहीं हो पाता है। लोग सोचते रहते हैं कि “बिल्ली के गले में घंटी कौन बाँधे”। नीचे वाले ऊपर वालों का मुँह देखते हैं और ऊपर वाले नीचे वालों से हिंदी में टिप्पण की अपेक्षाएं करते हैं। “गंगा ऊपर से बहती है” और इसीलिए पूरे वेग से हहराती हुई भारत के एक बहुत बड़े भू-भाग को अपनी अमृत धारा से आप्लावित करती है। इसलिए हिंदी की गंगा ऊपर से ही बहनी चाहिए। वरिष्ठ अधिकारियों के पहल करते ही अधीनस्थ कर्मचारी स्वयं हिंदी में कामकाज करना शुरू कर देंगें।

सचेतन प्राणियों में अपने को अभिव्यक्त करने की एक स्वाभाविक प्रवृति होती है। इस प्रवृति को तृप्त करने के लिए अभिव्यक्ति के कई माध्यम अपनाये जाते हैं, जिनमें संकेत, कहन और लेखन प्रमुख हैं। कहा जाता है कि प्रारंभिक अवस्था में मनुष्य भी संकेतों से काम लेता था। परंतु जिस दिन से उसने बोलना सीखा तब भाषा रूप ग्रहण करने लगी। किसी भी भाषा का प्रारंभिक स्वरूप बोली का ही होता है। दरअसल, बोली ही विकास क्रम में विकसित होकर भाषा हो जाती है। हमारे इस विशाल देश में 1652 बोलियाँ और 200 भाषाएं हैं। यह अंग्रेजी भाषा विज्ञानी जार्ज ग्रियरसन का मत है। किसी भी भाषा को हम प्रथमतः दो श्रेणियों में बांट सकते हैं-बोलचाल की भाषा और साहित्य की भाषा। बोलचाल की भाषा जनभाषा का संस्कार लिए रहती है। इसलिए इसमें सरलता, सहजता और बोधगम्यता होती है, किंतु साहित्यक भाषा में शब्द एवं शैली का सौंदर्य, अर्ध, गांभीर्य तथा अभिव्यक्ति की व्यंजनात्मकता व लक्षणिकता आदि निहित रहते हैं।

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद जब सरकारी कामकाज को अपनी भाषा के माध्यम से

करने का सवाल सामने आया तो समस्त भारतीय भाषाओं में जनपरम्परा, सहज सम्प्रेषण-शक्ति एवं सरलता के कारण हिंदी की संघ की राजभाषा के लिए चुनी गई। इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि हिंदी साहित्यक गरिमा की दृष्टि से अन्य भारतीय भाषाओं से श्रेष्ठ है या अन्य भारतीय भाषाओं से यह प्राचीनतम है। बल्कि सही बात तो यह है कि कुछ भारतीय भाषाओं की परंपराएं हिंदी से भी अधिक प्राचीन, प्रांजल एवं समृद्ध हैं, किंतु हिंदी के साथ जन-भाषा की जो सहज साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परंपरा जुड़ी है वह अन्य भारतीय भाषाओं में कम है। इसी जन परंपरा के कारण तुलसीदास से लेकर महर्षि दयानंद सरस्वती और महात्मा गांधी तक के मुनि-श्रृषियों ने अपने-अपने विचारों को जन-मानस तक पहुँचाने के लिए हिंदी को अपनाया था। भारतीय संविधान के निर्माताओं के समक्ष राजभाषा के लिए हिंदी का चयन करते समय अपने पूर्वज मुनि-श्रृषियों की यही मान्यता धरोहर के रूप में जुड़ी थी। दरअसल किसी भी राष्ट्र की प्रत्येक भाषा वहाँ की राष्ट्रभाषा है। हिंदी हमारे देश में एक ऐसी भाषा है जो सदियों से जन-जन को जोड़ने का कार्य करती आई है। इसी जन-परंपरा का अनुभव करते हुए आधुनिक भारत के प्रथम राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने सन् 1918 में कहा-"इस विशाल राष्ट्र के जन समुदाय के हृदय को जोड़ने के लिए एक ऐसी सशक्त, सामान्य और सर्वमान्य भाषा चाहिए जो समस्त भारतीयों की भारतीयता की भावनाओं में "गंगा की पवित्र धारा" की तरह रस-संचार कर सके। यह दायित्व हिंदी को ही सौंपा जा सकता है।

हिंदी साधारण जनता की भाषा है। जनता के लिए ही उसका जन्म हुआ था और जब तक अपने को जनता के काम की बीच बनाए रहेगी, जनहित के आत्मबल का संचार करती रहेगी तब तक उसे किसी से डर नहीं है। वह अपने आपकी भीतरी शक्ति के बल पर बड़ी हुई है यह लोक सेवा के महान व्रत के कारण बड़ी हुई है। और यदि अपनी मूल शक्ति के श्रोत को भूली नहीं तो निःसंदेह शक्तिशाली होती जाएगी। यह विरोधों और संघर्षों के बीच पली है। उसे जन्म के समय ही मार डालने की कोशिश की गई थी, पर वह मरी नहीं क्योंकि उसकी जीवन शक्ति का अक्ष्य श्रोत जनहित है। वह किसी राजशक्ति की अंगुली पकड़कर यात्रा तय करने वाली भाषा नहीं है, अपने भीतरी शक्ति से आसन अधिकार करने वाली अद्वितीय भाषा है। श्रृवण की वाणी को कंठ की वाणी बनने में देर नहीं लगती। आकुमारी हिमालय और अरूणाचल से गोवा तक हिंदी का क्षेत्र विस्तार "विश्व के भाषा-इतिहास" की अदभुत घटना है। अंग्रेजी थोपने के लिए विलायती संतों को जाने कितने अरब रूपये खर्च करने पड़े और सूरज न डूबने वाले अंग्रेज–साम्राज्य में अंग्रेजी लादने के लिए शताब्दियों की कोशिश के बावजूद दो सौ वर्षों की अवधि में कुल 2 प्रतिशत लोगों तक ही अंग्रेजी भाषा पहुँच सके, वह भी विकृत रूप में। देश के आजादी के कुल पाँच दशकों के अन्दर छिट-पुट विरोधों के बावजूद तराई से सागर तक हिंदी फैल जाना हिंदी की असीम आत्मशक्ति का परिचायक है।

इस देश की महादेशीयता का अनुभव करते हुए विश्व कवि रविन्द्रनाथ ठाकुर ने गाया था-"महामानवेर सागर तीरे" भारत महामानव समुद्र है। समुद्र सबकुछ

आत्मसातकर सकता है। गंदगी उसे छू नहीं सकती है। कवि संतोषानंद ने कितना सही कहा है -**"हिंदी हिंद महासागर है, हिंदी कंचनजंघा है, खेत-खेत को सींच रही यह जन गण की गंगा।" अमीर खुसरो (सन् 1255-1324) ने कहा है कि "हिंदी हिन्दोस्तान की तूती है।"** इस प्रकार से हिंदी न तो वर्ग विशेष की धरोहर है और न सत्ता विशेष की संपदा बल्कि यह तो युग-युग से भारतीय जन-चेतना की जीवित सहज वाणी है। भाषा के क्षेत्र में हिंदी सचमुच महासागर है।

हिंदी के वास्वविक अस्तित्व में आने का समय है बारहवीं शताब्दी। हिंदी के निर्माण में अनेकों का योगदान स्मरणीय है। महाराष्ट्र के संत नामदेव एवं ज्ञानदेव आदि ने अभिव्यक्ति का सार्थक माध्यम हिंदी को चुना। श्री गुरू नानक देव द्वारा समर्थित एवं सम्मानित संत गुरू वाणियों का संग्रह व्यापक हिंदी भाषा की विविध शक्ल से युक्त गुरु ग्रंथ साहब कदाचित पहला धर्मग्रन्थ है जिसने हिंदी को इतना बड़ा सम्मान प्रदान किया। संत तुकाराम ने एवं गुजरात के नव सुधारवादी स्वामी दयानंद ने हिंदी को जनता के निकट पहुँचाने का माध्यम माना। "सत्यार्थ प्रकाष हिंदी में है। 15वीं शताब्दी में स्वामी रामानंद और स्वामी वल्लभाचार्य सुदूर दक्षिण से भक्तिध्वज लेकर उत्तर भारत में आये और वाणी का प्रचार हिंदी में किया।

वल्लभाचार्य के पुत्र शिष्य गोकुल नाथ ने हिंदी में वार्ता लिखी। नरसी मेहता और सूरदास की विचारधारा का मिलन कोई आकस्मिक बात न थी, उड़िया कवि ब्रजनाथ बडजेना ने हिंदी में "गुण्डिचाजिजे" की रचना की। सन् 1818 में ब्रह्म समाज की स्थापना हुई और राजा राम मोहन राय बंगाल से ब्रह्म-यात्रा प्रारंभ कर पूणे पहुँचे। वहां से उन्होंने संस्कृति का माध्यम छोड़कर हिंदी को ब्रहमवाणी का गौरव प्रदान किया। गांधी जी ने सपना देखा था – "एक राष्ट्रभाषा हिंदी हो, एक हृदय हो भारत-जननी।" उन्होंने हिंदी को अपनाया और हिन्दुस्तानी हिंदी में अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। महाप्रयाण के दिन उन्होंने एक विदेशी पत्रकार को संदेश दिया और कहा कि "यह प्रचार कर दो कि गांधी अंग्रेजी नहीं जानता।" उन्होंने यह इसलिए कहा था कि हिंदी भारतीय हृदय की वाणी है। हिंदी भारत-भारती में भारतीय आत्मा मुखरित होती है। आन्ध्र प्रदेश, केरल, तमिलनाडु, कन्नड़, उड़िया, असमिया एवं गुजराती भारतीय भाषाओं की वाणी हिंदी में मुखरित हो। गांधी जी का वह संगम साहित्य, तेलगू का अवधान साहित्य, मलयालम का मणिप्रवालम, पंजाबी का रम्याख्यान, मराठी का पवाडा, गुजराती का फाग, बंगला का मंगल गीत? असमिया का बरंजगीत, उड़िया का चम्पु-चउपदी, उर्दू की गजल, हिंदी के भक्तिपद, भारतीय साहित्य उपवन के सुरभित पुष्प हैं। उनकी गरिमा और सरलता क्या कभी अंग्रेजी में अनुवादित होकर आ सकती है? यही तो भारत की उदार महानता है। सब रहें और पल्लवित तथा पुष्पित हों।

प्रस्तुत प्रसंग में मानक हिंदी पर भी दो शब्द लिखना जरूरी है। आपको मालूम है, हिंदी अखिल भारतीय स्तर की भाषा बन चुकी है और इसे इस रूप में लाने का श्रेय सरकार को कम और भारतीय जनता को ज्यादा जाता है। दक्षिणी हिंदी सरकार ने

नहीं बनायी, जनता ने बनाई, बम्बइया हिंदी किसी प्रशासनिक आयोग की टकसाली उपज नहीं है।

भारत के बाहर थोड़ी बहुत हिंदी बहुत सारे देशों में बोली और समझी जाती है किन्तु कुछ ऐसे देश भी हैं जहाँ हिंदी को भारत से भी अधिक आदर एवं आत्मीयता प्राप्त है इनमें मारीशस, सूरीनाम, फिजी, कनाड़ा, गुयाना, त्रिनीदाद, थाईलैण्ड आदि प्रमुख हैं। भारत के बाहर, इनके अतिरिक्त लगभग सौ विश्व विद्यालयों में किसी न किसी रूप में हिंदी का अध्ययन-अध्यापन हो रहा है। केवल अमेरिका के शिकागो, कैलिफोर्निया, कोलंबिया, वाशिंगटन, तिबर्जिनिया, टेक्सास इत्यादि 10 विश्व विद्यालयों में हिंदी पर शोध कार्य चल रहा है।

प्राकृतिक सुषमा से परिपूर्ण षड्-ऋतुओं का संगम स्थल, कल-कल करती नदियाँ और विशाल समुद्रों की सीमा "ख" रेखा से बँधा हिमालय जैसे महान पहाड़ियों का स्वामी "भारतवर्ष" हमारी प्रिय मातृभूमि है। मातृभूमि जिसके रज में लोट-लोट कर हमने अपना बचपन बिताया, घुटने के बल पर चलना सीखा, जिसके अन्न एवं जल का पान करके हम उसके आंगन में क्रीड़ा करके सामर्थावान बने, वह स्वर्ग से भी सुन्दर पृथ्वी हिंदुस्तान की है। यहाँ यह भी कहना बिल्कुल ही सटीक होगा कि -

- जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें
रसधार नहीं वह हृदय नहीं वह पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।

"जननी जन्म भूमिस्य
स्वार्गादयपि गरीयसी"

अर्थात माँ के समान मातृभूमि भी सुख देने वाली होती है, इसलिए उन दोनों की महानता को स्वर्ग से भी बढ़कर आंका गया है। जिस प्रकार हम माता और मातृभूमि के सम्मुख श्रद्धा से नत-मस्तक होते हैं उसी प्रकार राष्ट्रभाषा भी वन्दना के योग्य है।

जब भारत के शासन की बागडोर संभालने की जरूरत पड़ती है या दायित्व मिलता है तब चाहे दक्षिण भारत के भू.पू. प्रधान मंत्री पी.वी. नरसिम्हाराव हो, या श्री देव गौड़ा हों या फिर इटली मूल की श्रीमती सोनिया गांधी हो, सभी को हिंदी, यानी भारत की भाषा सीखनी पड़ती है, क्योंकि इसी भाषा के माध्यम से भारत देश की जनता को उनकी भाषा में ही बताया सकता है। इतिहास साक्षी है कि खासतौर से चुनावी दौर में राष्ट्रीय पार्टियों के राजनेताओं द्वारा जो भाषण दिये जाते हैं क्या वे अंग्रेजी में होते हैं? क्या जनता से वोट अंग्रेजी में मांगे जाते हैं? इन सबका उत्तर एक ही है कि नहीं। तब फिर प्रश्न उठता है कि जब देश के दबी, कुचली, गूँगी तथा सभी जनता की भाषा अंग्रेजी नहीं है तब सरकारी काम काज अंग्रेजी में क्यों ? यह एक विचाराणीय प्रश्न है।

भाषा बहता नीर है। उसे बांधकर रखने से उसमें सड़ांध आ जाती है। अत: भाषा के खिड़की-दरवाजे सदैव खुले रहने चाहिए ताकि बाहर से स्वच्छ वायु एवं जीवन-

संचारेणा किरणें आती रहें। जो भाषा अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण कर उन्हें अपनी आत्मा के अनुकूल ढालने का सामर्थ्य रखती है वह सदैव जीवंत भाषा बनी रहती है। अंग्रेजी इसी कारण विश्व भर में अद्वितीय है। सौभाग्य से हिंदी की पाचनशक्ति भी बड़ी अच्छी है और आये दिन उसमें लगातार वृद्धि हो रही है। अंग्रेजी के अनेक तकनीकी शब्दों को ज्यों का त्यो ग्रहण कर अपनी आत्मा के अनुकूल बनाने में हिंदी ने जिस कुशलता और क्षमता का परिचय दिया है उससे यह स्वयं सिद्ध है कि हिंदी अपनी अभिव्यक्ति शैली के कारण शीघ्र ही सार्वभौमिक स्वरूप को ग्रहण कर पूरे विश्व में आदर की निगाह से देखी जाएगी। इसलिए यहां कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि यदि राष्ट्रभाषा के साथ साथ विश्वभाषा भी बन सकती है।

जब कोई व्यक्ति बोल नहीं पाता है तो उसे लोग गूँगा कहते हैं। जब कोई सुन नहीं पाता है तो उसे लोग बहरा कहते हैं। जब कोई चल नहीं पाता है तो उसे लोग लंगड़ा या अपाहिज कहते हैं। परंतु जब अपनी खुद की भाषा हो और मुक्त कंठ स्वर हो, बोलने की क्षमता हो, तो क्या उसे भी गूँगा कहेंगे ? इसका सहज उत्तर होगा नहीं। तब, जब राष्ट्र की भाषा हिंदी है और देश की जनता उसी भाषा में बोलती है, तो यह कहना उचित होगा कि “क्या भारत गूँगा है ?” तथा इन सब के बावजूद अंग्रेजी की वकालत करना कहाँ तक उचित होगा।

भारतीय प्रजातंत्र एवं स्वयं को सुदृढ़ बनाने के लिए हिंदी अपनाएं, क्योंकि

1. राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है। कोई भी देश अपनी राष्ट्रीय भावनाओं को अपनी भाषा में ही अच्छी तरह व्यक्त कर सकता है।

2. भारत में अनेक उन्नत और साहित्य समृद्ध भाषाएं हैं, किन्तु हिंदी सबसे विस्तृत क्षेत्र में सबसे अधिक लोगों द्वारा बोली और समझी जाने वाली भाषा है।

3. हिंदी केवल हिंदी भाषियों की ही भाषा नहीं रही, अब यह समूची भारतीय जनता की अभिव्यक्ति का माध्यम बन चुकी है।

4. सवोच्च सत्ता प्राप्त भारतीय संसद ने देवनागरी में लिखी जाने वाली हिंदी को राजभाषा स्वीकार किया है। यह भारत की समस्त जनता का निर्णय है।

5. संसार की सभी भाषाओं में चीनी और अंग्रेजी के बाद हिंदी ही विशाल जन समूह की भाषा है।

6. प्रादेशिक भाषाएं तथा राष्ट्रभाषा हिंदी एक-दूसरी की पूरक हैं।

7. हिंदी का प्रचार राष्ट्रीयता का प्रचार है। इसे प्रेमपूर्वक अपनाना प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है।

8. राष्ट्र की एकता के लिए जैसे एक राष्ट्र भाषा का होना आवश्यक है। देवनागरी लिपि में वे सभी गुण मौजूद है जो किसी भी वैज्ञानिक लिपि में होने चाहिए। अतः समस्त प्रादेशिक भाषाओं की एक लिपि देवनागरी लिपि हो।

9. अंग्रेजी को बनाए रखना हमारी राष्ट्रीय प्रतिष्ठा के खिलाफ है। वह हमारे देश में रहने वालों के बीच एक दीवार है। कौन कहता है यहां अंग्रेजी बोलने वालों की संख्या ज्यादा है ? यहां अंग्रेजी जानने वालों से कई गुना संख्या हिंदी जानने, समझने और बोलने वालों की है।

10. 21 वीं सदी के भारत में 'हिंदी को अपनाइए इसे अपना बनाए और देश का मान बढ़ाइए'

"मातृभाषा परित्यज्य ये-भाषामुपासते
तत्र यान्ति हिते भाषा यत्र सूर्यो न भासते। "

अर्थात जो अपनी मातृभाषा का त्याग कर अन्य भाषा का आश्रय लेता है ऐसे देश या राष्ट्र का जीवन सदा के लिए अंधकारमय हो जाता है और वहां कभी स्वतंत्रता या ज्ञान का सूर्य प्रदीप्त नहीं होता।

- नि. (हि.अ.) नागराज द्विवेदी
ग्रुप केन्द्र, पुणे

देवनागरी लिबास लिए
सत्यप्रेम की पावनता लिए
इक पावन मिठास लिए
मधुर शब्दों की आस लिए
पूर्ण श्रृंगार किए
प्रिय की ताक लिए
सूने से मोड़ पर खड़ी
तिरस्कृत भाव लिए
विरह की अग्नि में तपती
अपनों की निगाहों को तरसती
कितनी मधुर हो तुम
और अपनी सी

फिर क्यों तुम्हें अपमान मिला
और मिली रूसवाई भी,
कोई तो सराहे इसे
कोई तो अपनाए इसे
कोई तो कहे इससे
हाँ सबसे प्यारी हो तुम
कोई तो स्वीकारे इसे
हाँ हमारी दुलारी हो तुम
न कहे कोई
पर मैं कहूँगा सबसे
ऐ मेरी राजभाषा हिन्दी
हम देंगे दुलार तुझे
बहुत सहा विश्वासघात तूने
अब सौ जन्मों का प्यार देंगें
तुम्हें अपनाया है
तुम्हारे होके रह जाएंगें
प्रण करते हैं
इस संसार में तुझे
तेरा सम्मान दिला कर रहेंगें
जय हिन्दी, जय हिन्द

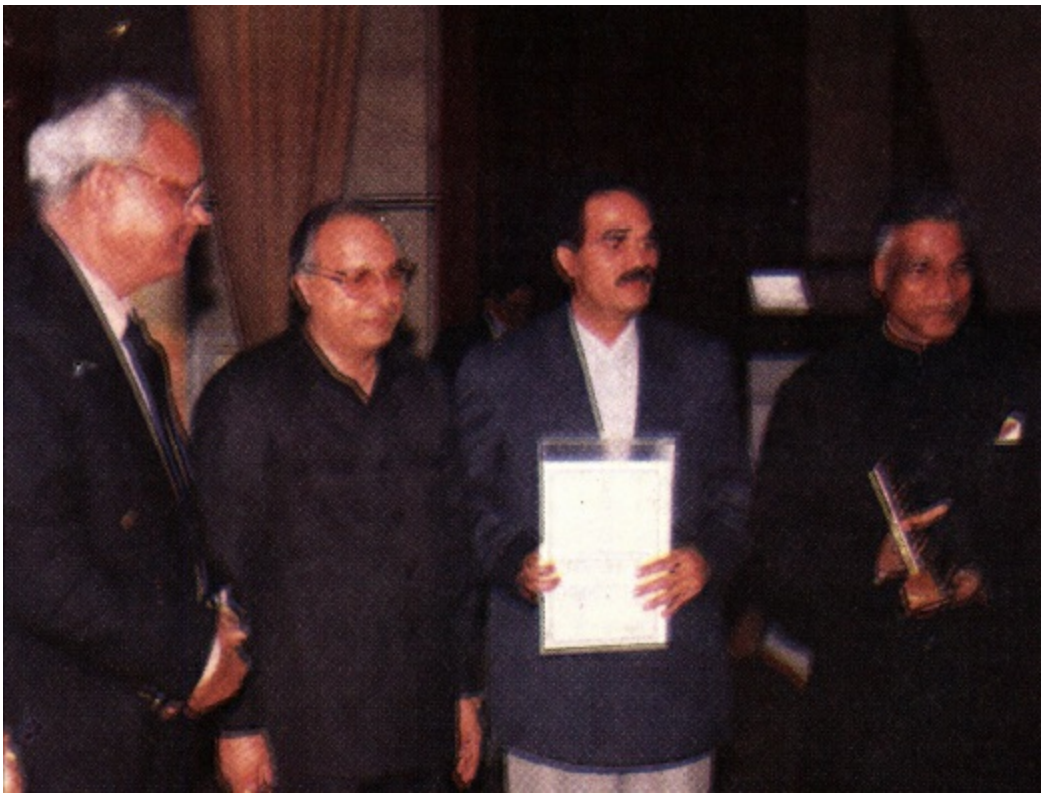
सरकार की राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन के लिए बल के कार्यालयों को शील्ड तथा प्रशस्ति पत्र



61 बटालियन के0रि0पु0बल को सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए वर्ष 2001-02 के लिए केन्द्र सरकार के कार्यालयों, बैंक, उपक्रम तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों को दिए जाने वाले क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कारों के लिए 61 बटा को दक्षिणी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, बेंगलूर द्वारा प्रथम स्थान प्रदान किया गया तथा माननीय उप प्रधान मंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी ने 21 मार्च, 2003 को नई दिल्ली स्थित विज्ञान भवन में ट्राफी प्रदान की तथा कमाण्डेंट 61 बटालियन को उनके सराहनीय प्रयास के लिए प्रशस्ति पत्र भी प्रदान किया।



ग्रुप केन्द्र, पल्लीपुरम, तिरूवनंतपुरम, नराकास का एक सक्रिय सदस्य है, जिसमें कुल 102 सदस्य स्थापनाएं हैं। विगत चार वर्षों की भांति इस वर्ष भी सभी सदस्य स्थापनाओं को पीछे छोड़ते हुए वैजयंति शील्ड प्राप्त की। ग्रुप केन्द्र, पल्लीपुरम को नराकास, तिरूवनंतपुरम द्वारा प्रायोजित ट्राफी भूतपूर्व अपर सचिव श्री बाबूपाल ने प्रदान की।



ग्रुप केन्द्र, बनतलाब (जम्मू) को राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने देने के लिए की दिशा में वर्ष 2000-01 की अवधि में उत्कृष्ठ कार्य करने के लिए गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग, द्वारा ग्रुप केन्द्र बनतलाब को उत्तर क्षेत्र के "क" क्षेत्र की श्रृखला में "प्रथम पुरस्कार" के लिए चुना गया। राजभाषा शील्ड एवं प्रमाण पत्र 27 सितम्बर, 02 शिमला में आयोजित राजभाषा सम्मेलन में प्रदान किया। शिमला विश्व विद्यालय के वाइस चांसलर ने ग्रुप केन्द्र बनवलाब के अपर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री ओम दयाल माथुर को राजभाषा शील्ड एवं गृह मंत्रालय के संयुक्त सचिव (राजभाषा) ने निरीक्षक (हिंदी अनुवाद) धर्मसिंह को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया।



ग्रुप केन्द्र, जमशेदपुर को वर्ष 2001-2002 के लिए पूर्वी क्षेत्र के अन्तर्गत “क” क्षेत्र में स्थित कार्यालयों में हिंदी का सफल कार्यान्वयन के लिए प्रथम पुरुस्कार के लिए चयन किया गया तथा 26 व 27 मार्च, 2003 को पूर्वी एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रों के गुवाहाटी में आयोजित संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में हिंदी उत्कृष्ट कार्य करने के लिए शील्ड तथा उक्त अवधि के राजभाषा अधिकारी को प्रमाण-पत्र प्रदान किया। इस अवसर पर शील्ड तथा प्रमाण पत्र श्री एम.एल. गुप्ता, संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय नई दिल्ली ने ग्रुप केन्द्र जमशेदपुर के प्रशासन अधिकारी श्री के. रवीन्द्रनाथन, को शील्ड प्रदान की।

पश्चिमी सेक्टर द्वारा कर्मचारियों को हिंदी सिखाने का अनूठा प्रयास

पुलिस महानिरीक्षक, पश्चिमी सेक्टर मुख्यालय में 31 मार्च, 2003 को 11:00 बजे राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही स्टेशन बैठक पुलिस महानिरीक्षक, श्री

ए0के0माथुर, पांश्चमी सेक्टर की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में पांश्चमी सेक्टर तथा 102 बटा0 द्रु0का0ब0 के अधिकारी एवं कर्मचारियों भाग लिया। बैठक में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन एवं उसकी प्रगति की समीक्षा की गई। इसके समापन के तुरंत बाद एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता का मूल प्रयोजन कर्मचारियों को खेल-खेल में हिन्दी के प्रति आकृष्ट कर उन्हें हिंदी में कामकाज करने के लिए प्रेरित करना था।

प्रतियोगिता में 20 कार्मिकों ने 10 युग्म (जोड़ियों) में हिस्सा लिया। प्रत्येक जोड़ी में एक हिंदी भाषी और एक अहिन्दी भाषी कार्मिक को शामिल किया गया। प्रश्नोत्तरी में छः चक्रों में समायोजित करके पूछा गया। आम तौर पर काम में आने वाले अंग्रेजी शब्दों के हिंदी अर्थ, मुहावरे, पर्यायवाची शब्द, विलोम शब्द इत्यादि पर आधारित प्रश्नों के अलावा प्रत्येक अहिन्दी भाषी प्रतियोगिता से बारी-बारी से किसी एक विषय पर पाँच-पाँच वाक्य हिंदी में बोलने के लिए कहा गया। प्रतियोगिता अत्यंत मनोरंजक तरीके से सम्पन्न हुई तथा प्रथम तीन प्रतियोगी युग्मों के समान अंक होने के कारण अतिरिक्त प्रश्न पूछ कर प्रथम, द्वितीय व तृतीय का निर्धारण किया गया। बाकी प्रतियोगियों को सांत्वना पुरस्कार दिये गये। स्वयं पुलिस महानिरीक्षक ने प्रश्नोत्तरी के प्रश्न बनाये व प्रश्नकर्ता के रूप में प्रतियोगिता का संचालन किया।

कार्यक्रम के दौरान जलपान की व्यवस्था की गई। आगामी दिनों में इस प्रकार की प्रतियोगिताओं को किस प्रकार आयोजित किया जाए इस विषय पर भी चर्चा की गई। पुलिस महानिरीक्षक ने सभी को हिंदी साहित्य व व्याकरण की पुस्तकें पुस्तकालय से प्राप्त कर अधिक से अधिक संख्या में पढ़ने का सुझाव दिया। तथा प्रोत्साहन स्वरूप पुरस्कार दिये जाने की घोषणा की।

इसी तरह ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, पुणे द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए कई कार्यक्रम वर्ष भर आयोजित किए गए। वर्ष 2003 की दूसरी तिमाही हिंदी के लिए उपलब्धि भरा तिमाही रहा। इस दौरान श्रुत लेख में स्थानीय भाषा पर भाषण, हिंदी निबंध प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया गया तथा इसमें भाग लेने वाले कार्मिकों में से श्रेष्ठ प्रर्दशन करने वाले कार्मिकों को प्रोत्साहन स्वरूप पुरस्कार दिए गए। 27 जून, 03 को एक हिंदी प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम का आयोजन निराले ढंग से किया गया। इस प्रतियोगिता में दस युग्मों के रूप में कार्मिकों ने भाग लिया जो छः दौर में सम्पन्न हुआ तथा श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान रहे। चार युग्मों (आठ कार्मिकों) को नकद पुरस्कार देकर पुरस्कृत किया गया। इस तरह के हिंदी प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम से हिंदी व अहिंदी भाषी कार्मिकों के लिए काफी उत्साह, ज्ञानवर्द्धक व रोचक रहा। इसकी एक प्रमुख विशेषता यह रही कि इसमें भाग लेने वाले प्रत्येक युग्म में से एक हिंदी भाषी तथा एक अहिंदी भाषी प्रतियोगी था। इसी तरह आगे भी विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करने का ग्रुप केन्द्र का प्रस्ताव है।

राजभाषा के क्षेत्र में मध्य, उत्तरी तथा बिहार सेक्टर की उपलब्धियां



भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, उत्तर क्षेत्र गाजियाबाद द्वारा हिमाचल प्रदेश, विश्वविद्यालय शिमला में 27 सितंबर 2002 को आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिए क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार वर्ष 2000-2001 हेतु "क" क्षेत्र (कार्यालय) का "प्रथम" पुरस्कार पुलिस महानिरीक्षक, मध्य सेक्टर, केरिपुबल लखनऊ कार्यालय को प्रदान किया गया। पुरस्कार वितरण समारोह में प्रोफेसर एस.डी.शर्मा, उप कुलपति हिमांचल प्रदेश, विश्वविद्यालय ने कमाण्डेंट श्री रणजीत सिंह को प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया। इस अवसर पर श्री एम.एल. गुप्ता संयुक्त सचिव राजभाषा विभाग व उत्तर एवं दिल्ली क्षेत्र के अन्य कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों के वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित थे।



हिन्दी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए मध्य सेक्टर को प्रशस्ति पत्र 26 फरवरी, 2003 को लखनऊ नगर स्थित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अर्धवार्षिक बैठक में केन्द्रीय सरकार एवं सार्वजनिक उपक्रमों के 138 कार्यालयों ने भाग लिया। बैठक में राजभाषा कार्यान्वयन हेतु मध्य सेक्टर के अधिकारियों/कर्मचारियों के प्रयास की अत्यन्त प्रशंसा की गई तथा राजभाषा की प्रगति के लिए मध्य सेक्टर द्वारा आयोजित हिंदी कार्यशाला की सराहना करते हुए प्रशस्ति-पत्र से सम्मानित किया।

राष्ट्रभाषा 'हिन्दी" उन्नत के शिखर पर

- स.उ.नि. (मं) बबन कुमार
102 बटालियन, आर.ए.एफ.

प्रत्येक भाषा स्वभाव से विकाशशील होती है, विकासशील भाषा जीवंत होती है। जिसमें विकास की दौड़ जितनी तीव्र और सरल होती है, उसकी उन्नति भी उनती ही त्वरित होती है। विकास रहित भाषा मृत होती है। अतीत में अनेक भाषाएं मर चुकी हैं। इसका ज्वलंत उदाहरण संस्कृत भाषा है। व्याकरण के कठोर नियमों से

अनुशासित संस्कृत भाषा को गाते एकाएक ठप्प सी हो गई, अपंग हुई और मर गई। इसका तात्पर्य स्पष्ट है-जो भाषा व्याकरण के नियमों से जनता की उच्चारण-रूचि और व्यवहार की वास्तविकता की परवाह किये बिना जकड़ जाती है, उसकी यही दुर्गति होती है। हिन्दी का व्याकरण बहुत सरल है। हर बदलते परिप्रेक्ष्य में वह कदम से कदम मिला कर चलता है। अब भाषा-विकास की दो दिशाएं हैं-एक ओर वह प्रौढ़ होती चलती है और दूसरी ओर उसका प्रसार बढ़ता है। हिन्दी एक विकासशील भाषा है। हमने देखा है कि हिन्दी अपने अंतरंग का विकास करती चल रही है और उसे व्यापक स्वीकृति दिनों दिन मिलती जा रही है। आप ऐसा कदापि न समझें कि व्यापक स्वीकृति ने उसकी गुणात्मकता का ह्रास किया है। हर भाषा के गुणात्मक विकास की दो धाराएँ हैं-(1) साहित्य के क्षेत्र में प्रौढ़ता को प्राप्त होना एवं (2) ज्ञानात्मक साहित्य का सृजन एवं उसकी अभिव्यक्ति की क्षमता बढ़ाना। आधुनिक सभ्यता का चरित्र है। सब कुछ मतलब के चक्कर में है। अद्यतन/अपतन यांत्रिक और तकनीकी सभ्यता ने हमें इसके सिवा दिया ही क्या? मनुष्य पूँजी और व्यावसायिकता की दृष्टि से भाषा का मूल्यांकन करता है। हिन्दी अब तक पूरे देश में न शिक्षा का माध्यम बन सकी है और न ही प्रशासन में पूर्णतः अंग्रजी का स्थान ले सकी है। दूसरे शब्दों में उसे उसके सम्मान से उन लोगों ने वंचित रखा है जो अंग्रेजी परस्त हैं और आज भी मन से विलायती ढंग से जीते हैं। वे अपनी असलियत खुल जाने की आशंका से भयभीत रहते हैं। उन भ्रष्ट लोगों की दुरभिसंधि ने ही आज तक हिन्दी को तकनीकी, विधि और आयुर्विज्ञान से दूर रखा है।

भाषा विकास का एक मार्ग अनुवाद भी है। श्रोत भाषा का अनुवाद चलाते-चलाते अपनी भाषा की एक आदत सी पड़ जाएगी एवं भाषा का एक समृद्ध साहित्य भी तैयार हो जाएगा। यह धारणा कुछ हद तक ठीक है। तकनीकी, वैज्ञानिक और औद्योगिक युग में क्या अनुवाद को आधार मानकर चलना ठीक है? क्या हम नकल ही करेंगे, हम इतने नादान हैं, क्या हममें मौलिकता नहीं है? भाषा विकास के लिए मौलिक चिंतन अपेक्षित है। लक्ष्यभाषा को उस ढंग से सवारना है जैसा आज का आधुनिक समाज चाहता है। इसका दूसरा पहलू भी है, हिन्दी समृद्ध होकर यांत्रिक, औद्योगिक व्यावसायिक क्षेत्रों में व्यवहारक्षम हो जाने पर भी विश्व की हैसियत की समृद्ध भाषाओं से सार ग्रहण करना भी उतना ही आवश्यक है। सूक्ष्म गहन और जटिल भावों की अभिव्यंजना की कला किसी भी भाषा से ग्रहण की जा सकती है। भाषा विकास को प्रथम चरण में शब्द बनाए जा रहे हैं जिसके कारण मौलिक शब्द कम आ रहे हैं। इसका एक कारण तो यह है कि हिन्दी और अंग्रेजी के बीच की व्यावहारिक दूरी हिन्दी और भारतीय भाषाओं के बीच की दूरी से अपेक्षाकृत कम है। जब तक भारतीय भाषाएं एक दूसरे के करीब नहीं आती तब तक मौलिक शब्द भण्डार का निर्माण नहीं हो सकेगा। यह भी महत्वपूर्ण बात है कि किसी भाषा की संपन्नता उसकी शब्दावली पर अथवा शब्दकोश पर निर्भर नहीं करती बल्कि संपन्नता उसकी आत्मीकरण की अंतः शक्ति मानी जाती है। हिन्दी ने गत 55 वर्षों में यह कर दिखाया है कि उसमें वह शक्ति है। हिन्दी में विभिन्न पारिभाषिक शब्दावली निर्माण में

संस्कृत के उपसर्गों, प्रत्ययों, धातुओं के योग से लाखों शब्द बनाये गये हैं, पर सम्पूर्णतः संस्कृत के ऊपर आधारित होने के कारण उनकी व्यावहारिकता पर संदेह किया जाने लगा है। सन् 1971 में पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण का काम समाप्त कर लिया गया था। इसके विभिन्न खण्ड हैं। जैसे-विज्ञान खण्ड, मानविकी खण्ड, आयुर्विज्ञान खण्ड, इंजीनियरी खण्ड, कृषि, प्रशासन आदि। कुल निर्मित शब्द संख्या पौने चार लाख है। हिन्दी भाषी प्रदेशों में अनेक आंचलिक बोलियाँ हैं, जैसे-बृज, बुंदेली, कन्नौजी, खड़ी, हरियाणवी, अवधी, छत्तीसगढ़ी, मालवी, मेवाली, मारवाड़ी, मैथाली, मगही, भोजपुरी आदि। भारत की अस्सी प्रतिशत जनता इन बोलियों को व्यवहार में लाती हैं।



हिंदी के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए नगर कार्यान्वयन समिति नीमच की अध्यक्षा से शील्ड व प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए *4* सिंगनल बटा. के कमांडेन्ट श्री के.के. जोरदार

आज हिन्दी सभी प्रकार के विचारों की समर्थ वाहिनी बन चुकी है और बोलने वालों की संख्या को देखते हुए यह विश्व की चार प्रमुख भाषाओं में से एक बन चुकी है।

“इदम् अन्धः तमः कृत्य जायेत्
भुवनः त्रयम् यदि शब्दाह्यं

ज्योतेरासंसारम न दीप्यत”

(त्रिभवन अन्धकार पूर्ण हो जाता है यदि शब्द नामक दीपक की ज्योति सारे संसार को प्रकाशित नहीं करती)।

“एकः शब्दः सम्यक् ज्ञातः सुष्ठ

प्रयुक्तः स्वर्ग लोके काम धुक् भवति”

अर्थात् (एक शब्द का सम्यक् ज्ञान और सुष्ठ प्रयोग स्वर्ग और संसार दोनों में कामधेनु के समान फलदायक है)।

इसलिए भारतेन्दु जी ने कहा है कि यदि कोई व्यक्ति सोचने विचारने का कार्य अपनी भाषा में करता है तो वह सही और सटीक सोच सकता।

“पढ़ो लिखो कोउ लाख बिध, भाषा बहुत प्रकार।

पै जबहीं कछु सोचिहो निज भाषा अनुसार।”

अतः हम निष्कर्ष के रूप में कह सकते हैं कि हिन्दी के उन्नति में ही भारतवर्ष की उन्नति निहित है, इसलिए प्रत्येक भारतवासी के लिए हिन्दी सीखना अपने आप में स्वभाविक रूप से अनिवार्य है।

“हमारी अभिलाषा”

जन गण-मन की प्यारी भाषा।
अभिव्यक्ति की न्यारी भाषा।
हिन्दी है, हमारी राजभाषा।
स्वतन्त्रता सेनानियों की भाषा।
कोमल हृदय कवियों की भाषा।
हिन्दी है, हमारे हृदय की भाषा।
अनेकता में एकता की भाषा।
भाई-चारे और सम्पर्क की भाषा।
हिन्दी है, हिन्दुस्तान की भाषा।
हमारी, आपकी और राष्ट्र की भाषा।
चन्दन जैसी महकती ओजस्वी भाषा।
हिन्दी है, स्वावलम्बियों की भाषा।

वीर जवानों, बलिदानियों की भाषा।
हिन्दवासी के हृदय में अलख जगाने की भाषा।
हिन्दी है, राष्ट्र भक्तों/राष्ट्र प्रेमियों की भाषा।
सुरभित-पुष्पित पुलकित भाषा।
जन-जन की प्रेरणामयी भाषा।
हमारी अभिलाषा, हिन्दी हो संसार की भाषा।

- स0उ0नि/मं ए.के.सिंह
ग्रुप केन्द्र, इलाहाबाद

ग्रुप केन्द्र, के0रि0पु0बल, लखनऊ को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा प्रदान की गयी शील्ड का वितरण नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, लखनऊ की 49वीं अर्द्धवार्षिक बैठक 26 फरवरी, 2003 को केन्द्रीय औषधि अनुसन्धान संस्थान में किया गया, जिसमें लखनऊ स्थित केन्द्रीय सरकार एवं सार्वजनिक उपक्रमों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। 138 सदस्य कार्यालयों द्वारा हिंदी प्रगति की दिशा में किये गये प्रयासों/कार्यों के मूल्यांकन के आधार पर इस ग्रुप केन्द्र को "सप्तम" स्थान प्राप्त हुआ और पुरस्कार स्वरूप एक ट्राफी एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया जिसे कार्यालय प्रमुख की तरफ से ग्रुप केन्द्र के प्रतिनिधि श्री बच्चू सिंह, सहायक कमाण्डेंट एवं निरीक्षक/हिंदी अनुवादक महावीर प्रसाद ने संयुक्त रूप से राजभाषा विभाग के उप निदेशक डॉ0 आर0बी0सिंह से प्राप्त किया।

"हिंदी को अपनाना होगा"

हिंदी दिवस मना रही है जनता हिन्दुस्तान की,
जिनको अब तक पता नहीं है हिन्दी के सम्मान की।
सुबह से लेकर शाम तक जिनपे अंग्रेजी की छाया है,
हिन्दी की बागडोर हमने उन्हीं को थमाया है।
विद्यालय से दफतर तक बस अंग्रेजी की माया है,
राजनीति के दाव पेंच ने हिन्दी को भुलाया है।

50 वर्षों की आजादी में हिन्दी बनी गुलाम है,
अंग्रेजी मिली विरासत में तब भारत बना महान है।
जब अंग्रेजी भरती किलकारी और हिंदी रोया करती है,
तब भारत माँ के सिने से आहें निकला करती है।
यदि बचाना हिन्दुस्तान है तो हिन्दी को अपनाना होगा,
कुछ कानून बनाने होंगे और कुछ को हटाना होगा।

- सउनि गोपाल सिंह
81 बटा., केरिपुबल



सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल रोहिणी की छात्रा बल के महानिदेशक श्री एस.सी. चौबे, को स्कूल के छात्रों द्वारा तैयार किया हेडीक्राफ्ट का पात्र एवं गुलदस्ता भेट करती हुई



23 अगस्त, *2003* को बल के उत्तरी सेक्टर द्वारा डेट अस्पताल आर. के. पुरम, नई दिल्ली में आयोजित रक्तदान शिविर में रक्त देने से पूर्व रक्त की जांच कराती बल की महिला कर्मी



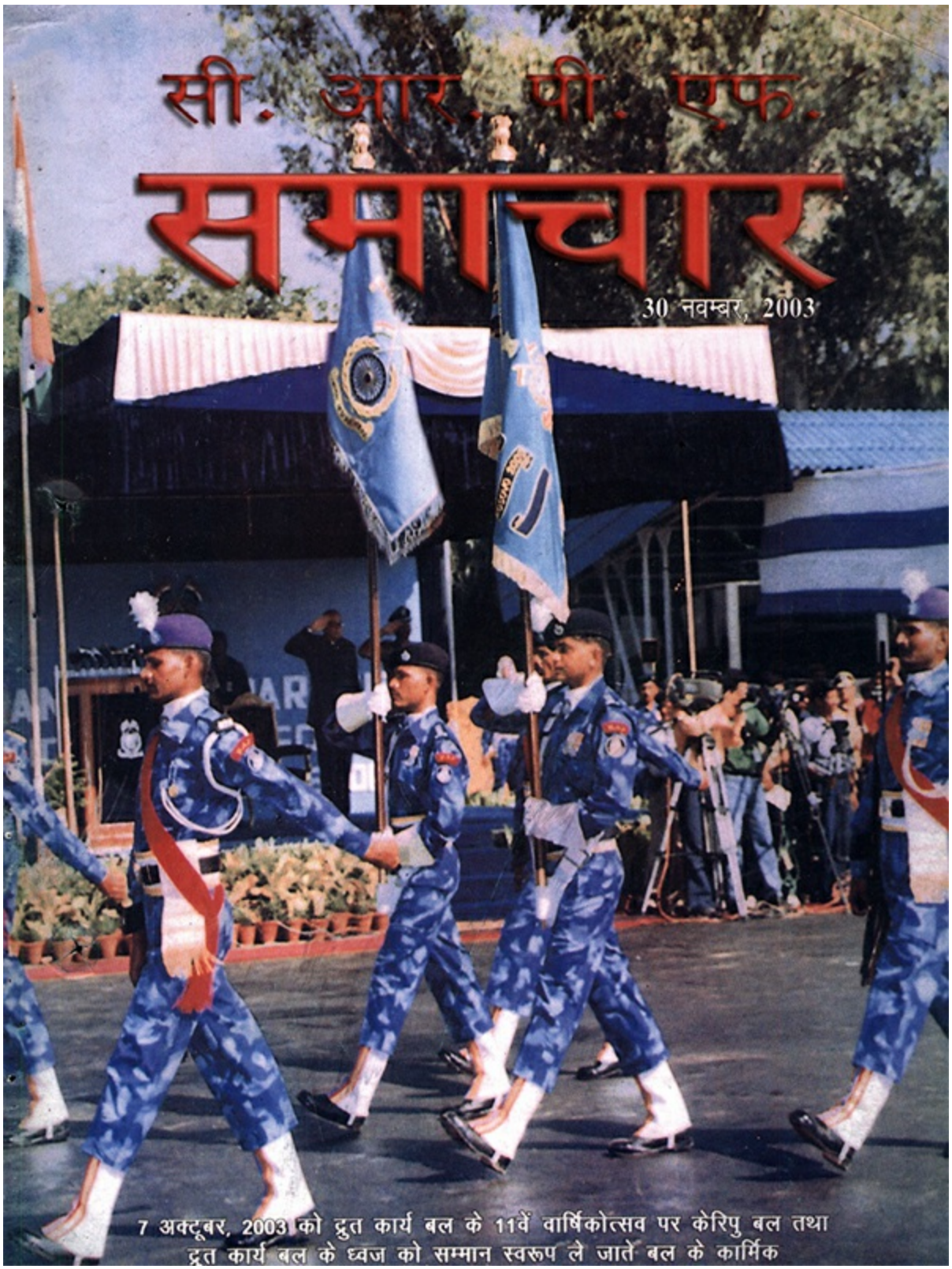
रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र–चार हुमहुमा(श्रीनगर) का राजभाषा संबंधी निरीक्षण करते संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति के माननीय सदस्यगण ।



सी. आर. पी. एफ.

समाचार

30 नवम्बर, 2003



7 अक्टूबर, 2003 को द्रुत कार्य बल के 11वें वार्षिकोत्सव पर केरिपु बल तथा द्रुत कार्य बल के ध्वज को सम्मान स्वरूप ले जाते बल के कार्मिक



द्रुत कार्य बल के *11*वें वार्षिकोत्सव पर मुख्य अतिथि उप प्रधानमंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी को स्मृति चिन्ह भेंट करते केरिपु बल के महादिनेशक श्री एस.सी. चौबे



सी.टी.सी. दो कोयम्बटूर *(*तमिलनाडु*)* में दीप प्रज्वलित कर ट्रेनिंग एवं ऑप्स सेमिनार का उद्घाटन करते हुए केरिपु बल के महानिदेशक श्री एस.सी. चौबे



सी.आर.पी.एफ. समाचार

खण्ड-16 अंक-7
30 नवम्बर, 2003
9 अग्रहायण, शक 1925

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
रणबीर सिंह

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं यूनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशालय के.रि.पु. बल
ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स
लोधी रोड, नई दिल्ली-110003
की ओर से
डी.जी. महापात्र

कम्पोजिंग एवं प्रिंटिग
सी.आर.पी.एफ. प्रेस
नई दिल्ली-110072

सम्पादकीय सलाहकार मण्डल अध्यक्ष
हिमांशु कुमार, अपर महानिदेशक

सदस्य

विक्रम श्रीवास्तव, महानिरीक्षक (कार्मिक एवं मुख्यालय)
आर.के. शर्मा, महानिरीक्षक (सम्भरण एवं निर्माण)
ए.पी. माहेश्वरी, उप महानिरीक्षक (प्रशि.)
एम.एस. रावत, उप महानिरीक्षक (कार्मिक)

डॉ.एन.एस. बिष्ट, उप महानिरीक्षक (परिचालन)
सी.बी. मैथ्यू, अपर उप महानिरीक्षक (प्रशि.)
आर.के. गौड़, अपर उप महानिरीक्षक (सम्मरण)
प्रवीण कुमार, उप वित्तीय सलाहाकार
डी.जी. महापात्र, जनसम्पर्क अधिकारी
जॉन ए. मैथ्यू उप कमा. (परिचालन)
मणि भूषण प्रसाद, हिंदी अधिकारी

इस अंक में

- धार्मिक स्थलों की सुरक्षा में केरिपु बल
- त्रिपुरा का आतंकबाद एवं सुरक्षा बलों की तैनाती
- शहरी क्षेत्र में गश्त
- सफल ऑप्स कैसे संभव हो
- कश्मीर से कामाख्या
- केरिपु बल की “इन्ट्रानेट सीलो” कम्प्यूटरीकरण परियोजना शुरू

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

–संपादक

धार्मिक स्थलों की सुरक्षा में के0रि0पु0बल

दलजीत सिंह,
उप महानिरीक्षक,रामपुर



जम्मू के श्रीरघुनाथ मन्दिर में सुरक्षा ड्यूटी पर तैनात *52* बटा. केरिपु बल के जवान

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, देश के अर्ध सैनिक बलों में सबसे बड़ा एवं पुराना बल है। इस बल की स्थापना जुलाई, 1939 में क्राऊन रिप्रेजेनटेटिव पुलिस के रूप में नीमच में हुई थी। नीमच (मध्य प्रदेश) इसकी जन्मस्थली है। वर्तमान में इसकी 153 बटालियनें हैं जो देश के विभिन्न भागों में सुरक्षा व्यवस्था हेतु तैनात हैं। केरिपुबल को 28 दिसंबर, 1949 को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के रूप में पुनर्गठित किया गया था। केरिपुबल की प्रमुख डयूटियां आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था कायम करना, राष्ट्र-विरोधी आंतरिक गतिविधियों के विरूद्ध विधि सम्मत कार्रवाई करना, आतंकवाद विरोधी कार्रवाई, साम्प्रदायिक ताकतों के विरूद्ध कार्रवाई करने के साथ-साथ धार्मिक स्थलों

की सुरक्षा करना भी है।

हमारा देश दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है, अतः इसका भाषा, धर्म, जाति आदि सम्बंधी विवादों से घिरा रहना स्वाभाविक है। मौजूदा हालात इस हद तक बिगड़ चुके हैं कि आये दिन जाति धर्म एवं संप्रदाय विशेष के व्यक्ति परस्पर झगड़ा करते हैं। जहां हम अपने पड़ौसी मुल्कों द्वारा फैलाये जा रहे आतंकवाद से जूझ रहे हैं वहीं कुछ विदेशी ताकतों के बहकाये में आये हमारे कुछ चन्द भाई लोग देश के बिखराव में संलिप्त हो गये हैं। इन हालातों ने अब इतनी विषम स्थिति धारण कर ली है कि इन्सान तो एक तरफ रहा अब लोग अपने विरोधी के धर्मस्थलों को भी निशाना बनाने से नहीं चूक रहें हैं। धार्मिक स्थान चाहे किसी भी जाति, धर्म, संप्रदाय से संबंधित क्यों न हो, वह प्रत्येक व्यक्ति के लिये आदरणीय एवं पूज्यनीय होता है, इसको लक्ष्य बनाकर नागरिकों को विभाजित कर उनके मन में अलगाव पैदा कर हिंसा का सहारा लेते हुए देश को खण्डित करने का कुचक्र चलाना ठीक नहीं है। आज धार्मिक स्थलों की सुरक्षा करना दुनिया के इस सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश में सबसे बड़ी जिम्मेदारी बन गई है। धार्मिक स्थल असामाजिक तत्वों, धर्म विरोधी ताकतों तथा आतंकवादियों के लिए किसी भी घटना को अंजाम देने के लिए सबसे सुगम व आसान लक्ष्य होते हैं जिस पर हमला करके लोगों की अस्मिता तथा धार्मिक भावनाओं पर कुठारघात पहुंचाते हैं। इस प्रकार की गतिविधियों से जातिगत दंगा तथा एक-दूसरे धर्म के प्रति नफरत फैलाना ही इनका मुख्य उद्देश्य है ताकि देश के विकाश को रोका जा सके।

केरिपुबल आज विभिन्न विवादित तथा गैर विवादित धार्मिक स्थलों राम जन्मभूमि/बाबरी मस्जिद, अयोध्या, कृष्ण जन्मभूमि, शाही ईदगाह मस्जिद मथुरा काशी-विश्वनाथ मंदिर, ज्ञान व्यापी मस्जिद वाराणसी आदि जैसे स्थलों की सुरक्षा का दायित्व निभा रहा है। इन विवादित धार्मिक स्थलों को लेकर विभिन्न राजनैतिक, गैर राजनैतिक एवं साम्प्रदायिक दलों में भी सरगर्मियां है। जहां इतने बड़े लोकतंत्र में लोक शक्तियां इन धार्मिक स्थलों के प्रति इतनी संवेदनशील हों वहां यह अनुमान लगाना सहज नहीं होगा कि इनकी सुरक्षा में लगी केरिपुबल के कंधों पर कितनी बड़ी जिम्मेदारी है। केरिपुबल की विभिन्न बटालियनें इनकी सुरक्षा के लिए तैनात हैं। केरिपुबल इसमें कड़ी चौकसी बरतने के साथ-साथ परिसर में आये श्रृद्धालुओं/नागरिकों की सुरक्षा, संदिग्ध व्यक्तियों पर कड़ी निगाह रखना, स्थल की निगरानी तथा उसके ढांचे की सुरक्षा, किसी पर्व अथवा उत्सव पर कानून व्यवस्था कायम रखते हुये उन्हें मनाये जाने तक विशेष कड़ी चौकसी जैसी सामान्य डयूटियां करना है। इसके अतिरिक्त असामाजिक तत्वों द्वारा ढांचों की तोड़-फोड़, फिदायीन हमलों से सतर्कता, धार्मिक उन्मादता के शिकार व्यक्तियों की सुरक्षा एवं बचाव तथा धार्मिक स्थलों की स्थिति यथावत बनाये रखने में आज केरिपुबल को कड़ी मेहनत करनी पड़ रही है। देश के दुश्मन से सीमा पार जाकर आर-पार लड़ा जा सकता है, क्योंकि सीमापार के पहनावे व भाषा आदि के आधार पर उसको पहचाना जा सकता है, परन्तु जो दुश्मन हमारे घर में पैदा हो गए हैं, उन्हें पहचानना कठिन कार्य है। इसी

घर के अन्जान, अपारेचेत, आभेन्न तथा छिपे दुश्मनों की बुरी नजर व बदनेयत से धार्मिक स्थलों को बचाना, इनकी सुरक्षा करना केरिपुबल का दायित्व बन गया है। आये दिन मनाये जाने वाले पर्व, धार्मिक उत्सव, जूलूस, जलसों आदि में छिपे दुश्मन की कारगुजारियों के लिये तत्परता हेतु कठिन परिस्थितियों में भी अपनी दृढ इच्छा शक्ति, कुशल नेतृत्व, देश के लिए मर मिटने का जज्बा, डयूटी के लिए सदैव तत्परता एवं सतर्कता, शत्रु के लिए काल-स्वरूप तथा सेवा-भक्ति के लक्ष्य पर अडिग केरिपुबल के जवानों की उपस्थिति ही उनकी कुचेष्टाओं पर पानी फेर सकती है। हम आम तौर पर सुरक्षा व्यवस्था के लिए तैनात अपने जवानों को कुछ हिदायतें एवं निर्देश देते हैं जिनका विवरण इस प्रकार है :-

परिसर में किसी भी प्रकार की आपत्तिजनक सामग्री न ले जाने देना, परिसर में किसी भी तोड़-फोड़ की घटना/कार्रवाई को क्रियान्वित न होने देना, परिसर में आने जाने वाले हर दर्शनार्थी पर चौकसी रखना, परिसर में आस-पास अवांछनीय अथवा संदिग्ध व्यक्ति के दिखाई देने पर स्थानीय पुलिस को सूचित करना अथवा जैसी भी परिस्थिति हो कार्रवाई करना, धार्मिक उत्सवों/पर्वों के समय विशेष चौकसी रखना तथा भीड़ को सही प्रकार से नियंतित्र करना, परिसर की सुरक्षा में तैनात अन्य एजेंसियों के साथ तालमेल बैठाकर सुरक्षा कायम करना तथा किसी भी प्रकार की आकस्मिक घटना होने पर उस पर यथोचित कार्रवाई करना आदि।

हालांकि हम पूरी मुस्तैदी से इन धार्मिक स्थलों की सुरक्षा व्यवस्था में लगे हुए हैं फिर भी इसमें कुछ सुधार की आवश्यकता है। बल की सेवाएं लेने वाली राज्य सरकार बल के कार्मिकों के लिए आवश्यक मूलभूत सेवाएं उपलब्ध कराए, स्थानीय प्रशासन/पुलिस तथा गुप्तचर एजेंसियों की वायरलैस सुविधा "एकीकृत" होनी चाहिए ताकि इसका समय पर समुचित उपयोग किया जा सके क्योंकि दूरभाष सुविधा सुस्त तथा असुरक्षित है। धार्मिक स्थलों की सुरक्षा के लिए अलग से एक विशेष कोर्स/ पाठयक्रम चलाया जाना आवश्यक है ताकि स्थलों की सुरक्षा व्यवस्था में लगे कार्मिकों को प्रशिक्षण देकर और सुधार लाया जा सके। स्थानीय प्रशासन/पुलिस तथा गुप्तचर एजेन्सीयों के साथ बैठकें, विचार मन्थन, कार्य की समीक्षा, सुरक्षा का पुनरीक्षण आदि निश्चित तौर पर लाभकारी होगा।



गुवाहाटी के कामाख्या मन्दिर पर सुरक्षा ड्यूटी हेतु तैनात *122* बटा. केरिपु बल का जवान

सतर्कता, कड़ी निगाहें, सही उद्देश्य, सेवा के प्रति समर्पण भाव, कर्तव्य परायणता ही हमारे दायित्व को सही रूप से निभाने में मदद करता है। साथ ही केरिपुबल सुविधा/असुविधाओं के फेर में न पड़ते हुए कठिन सेवा, कर्तव्य परायणता के साथ कठिन परिस्थितियों में भी देश की बहुमूल्य धरोहरों का सम्मान व देश की अखण्डता के लिए इसी प्रकार निरंतर प्रयत्नशील रहेगा ऐसा हमें विश्वास है।

सी. आर. पी. एफ. सदा अजय।
भारत माता की जय।

त्रिपुरा का आतंकवाद एवं सुरक्षा बलों की तैनाती

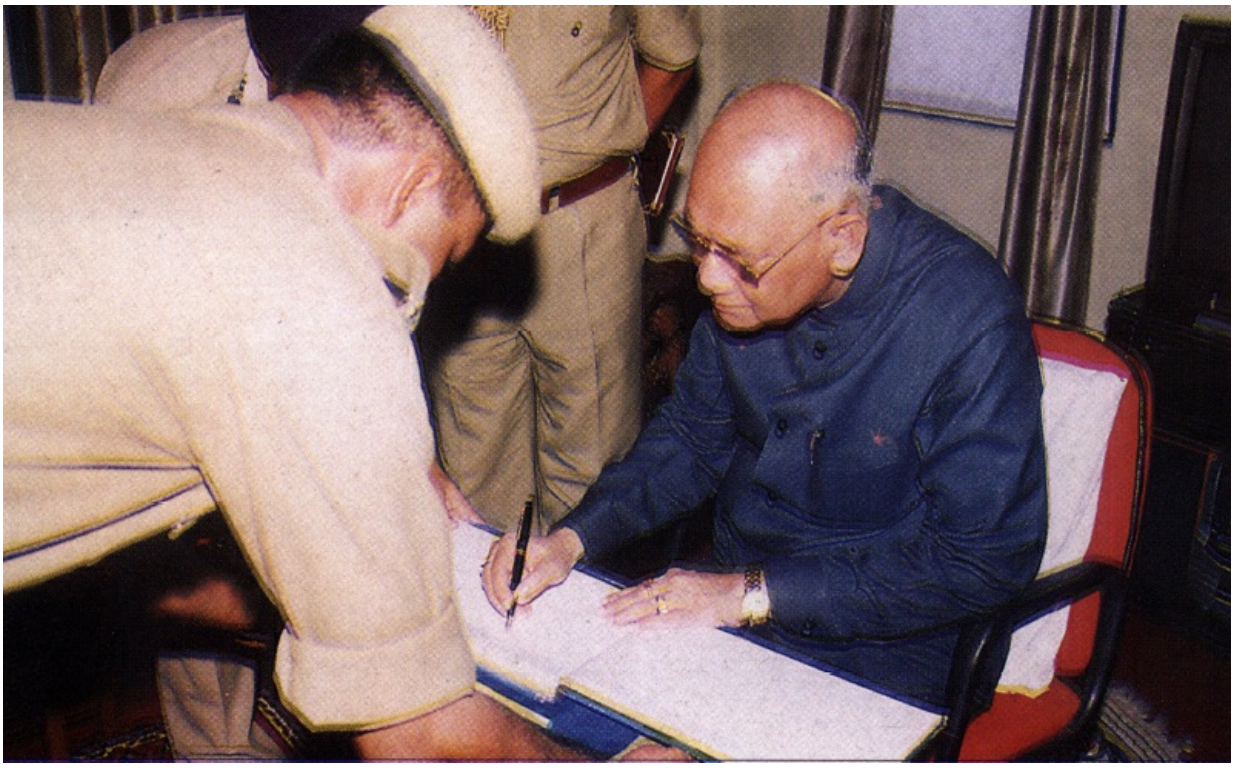
1947 में देश विभाजन के समय बड़े पैमाने पर पश्चिमी पाकिस्तान,(अब बंगलादेश) से बंगाली हिन्दू परिवार वहां से भागकर त्रिपुरा राज्य में आकर बसे। सन् 1951 तथा 2001 के आंकड़ों से पता चलता है कि जनजाति तथा बंगाली जनसंख्या के प्रतिशत में काफी अंतर है। सन् 1951 में त्रिपुरा राज्य की कुल आबादी का मात्र 37.23 प्रतिशत जनजातीय लोग थे एवं सन् 2001 के आंकड़ों के अनुसार मात्र 31.67 प्रतिशत जनजातीय लोग निवास करते हैं।

त्रिपुरा राज्य पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण जनजातीय वर्ग ज्यादातर शहरों में न रहकर पहाड़ों व गांवों में रहते हैं, जिसके कारण इस वर्ग में अशिक्षा एवं बेरोजगारी की समस्या बनी हुई है। इन लोगों में विकास की ओर अग्रसर होने की मानसिकता/इच्छा शक्ति दयनीय है। राजनैतिक स्तर पर भी इस वर्ग की कोई खास पकड़ नहीं है, इस कारण इनकी आवश्यकता को सही ढंग से उठाने वालों का अभाव है। इसके अलावा कुछ ऐसे कारण हैं जो त्रिपुरा राज्य में उग्रवाद को पनपने में सहायक रहे :-

- जनजातीय लोगों एवं बंगालियों के बीच संघर्ष
- अपनी अलग पहचान की चाहत
- बंगलादेश की अंतर्राष्ट्रीय सीमा
- विदेशी सहायता
- मौलिक/मूल अधिकारों का हनन
- जनजातीय लोगों द्वारा अलग राज्य की मांग

सामाजिक सहयोग

वैसे जो व्यक्ति उग्रवाद का रास्ता अपनाये हुए हैं या इसका इख्तियार करते हैं, वे साधारण तौर पर उसी समाज के होते हैं जो मानसिक और आर्थिक रूप से परेशान होते हैं। परंतु वे इतना साहस नहीं जुटा पाते कि वे हथियार/शस्त्र उठा ले। लेकिन वह पूरी तरह से हथियार बन्द लोगों का हर प्रकार से समर्थन करते हैं। इक्के-दुक्के व्यक्ति ऐसे भी हैं जो पीड़ित होने पर भी उग्रवाद का रास्ता अपनाना नहीं चाहते हैं।



त्रिपुरा के राज्यपाल महामहिम श्री डी.एन. सहाय *111* बटा. केरिपु बल के विजिट के दौरान विजिटर्स पुस्तिका में हस्ताक्षर करते हुए।



111 वीं बटा. की विजिट के दौरान बटा. के अधिकारियों एवं जवानों के साथ त्रिपुरा के राज्यपाल श्री डी.एन. सहाय

स्थानीय जनता की प्रतिक्रिया :—

वर्तमान में स्थानीय जनता उग्रवाद को सहयोग नहीं देना चाहती है।
वे सरकार द्वारा चलाये गए प्रत्यार्पण, प्रोत्साहन एवं पुनर्वास योजना तथा उसके प्रति की गई कार्रवाई का स्वागत करते हैं।

बल की परिचालनिक उपलब्धियां :—

बल द्वारा की गई प्रतिक्रियात्मक कार्रवाईयों के दबाव में आकर अब त्रिपुरा में काफी संख्या में उग्रवादियों ने आत्मसमर्पण किये हैं। भारी संख्या में उग्रवादी एवं उनके सहयोगी अत्याधुनिक हथियारों के साथ पकडें गए हैं। अब अगवाह/अपहरण करने की घटनाओं में कमी आई है।

2002 से अबतक की परिचालनिक उपलब्धियां :—

वर्ष 2002 से जून 2003 तक 19 उग्रवादीयों ने सुरक्षा बलों के सामने आत्मसम्पर्ण किया तथा उनसे 6 ए०के०सीरिज राइफल, दो एस.एल.आर, 25 देशी गन, एक कारबाईन, एक चाइनीज राइफल, एक देशी बंदूक, 8 एम.एम. मोर्टार, एक पिस्टल/रिवॉल्वर छ: हथगोला, 1154 गोला बारूद, 22 मैगजीन, एक लांचिंग ट्यूब, एक डेटोनेटर, 70 ग्राम विस्फोटक, एक इगनीटर सेट, एक वायरलेस सेट, 6010 बंगलादेशी मुद्रा आदि हथियार तथा गोला बारूद बरामद किए है। इस अवधि के दौरान 12 उग्रवादी मारे गए, 3 उग्रवादी घायल हुए तथा 69 उग्रवादी पकड़े गए। उग्रवादियों द्वारा पकड़े गये 462 तथा 6 अपहरित व्यक्ति छुड़ाये गए।

बल के जवानों ने सघन कार्रवाई कर उग्रवादियों से 6 ए.के. सीरिज राइफल, एक ए.के.47 राइफल, चार एस.एल.आर, एक कारबाईन, 14 रिवाल्वर/पिस्टल, 32 देशी गन (बंदूक), 3 पाइप गन बैरल, 6 ग्रेनेड, 3 डेटोनेटर, 3 देशी बम, 715 ग्राम विस्फोटक, 703 जिन्दा कारतूस, 2,39,476/- रूपये की धनराशि, 5,582/-बंग्लादेशी टका, 19,200/- रूपये के जाली नोट तथा वोटिंग मशीन जब्त की।

सफल ऑप्स कैसे संभव हो ?

वियज पाल सिंह
उप कमाण्डेंट-143 बटालियन

सी० आई० ऑप्स हमारी डयूटी का एक महत्वपूर्ण अंग है जो काफी हद तक एरिया की बनावट, उसकी टैरीन तथा हालात आदि पर निर्भर करता है। वैसे तो

प्रत्येक क्षेत्र में कार्य करने का आनंद मिलता है परंतु ऑपरेशन एरिया में उग्रवादियों की गतिविधियों पर विशेष नजर रखकर उन्हें पकड़ने में जो विशेष आनंद मिलता है उसकी बात ही कुछ अलग है। यदि विशेष उत्साह और रूचि लेकर उग्रवादियों की गतिविधियों पर बारीकी से नजर रखी जाए तो ऐसा हो ही नहीं सकता कि सफलता हासिल न हो। हॉ शुरू में अवश्य सम्पूर्ण जानकारियाँ एकत्र करने में कुछ समय लग सकता है, परंतु एक बार अचीवमेंट शुरू होने के बाद पूछताछ आदि से अनेकों सूत्र मिलते रहेंगे और सूचनाओं का खजाना दिन-प्रतिदिन बड़ता जाएगा। ऑपरेशन में विशेष सफलता प्राप्त करने के लिए मोटी-मोटी जानकारी निम्न प्रकार से है:—

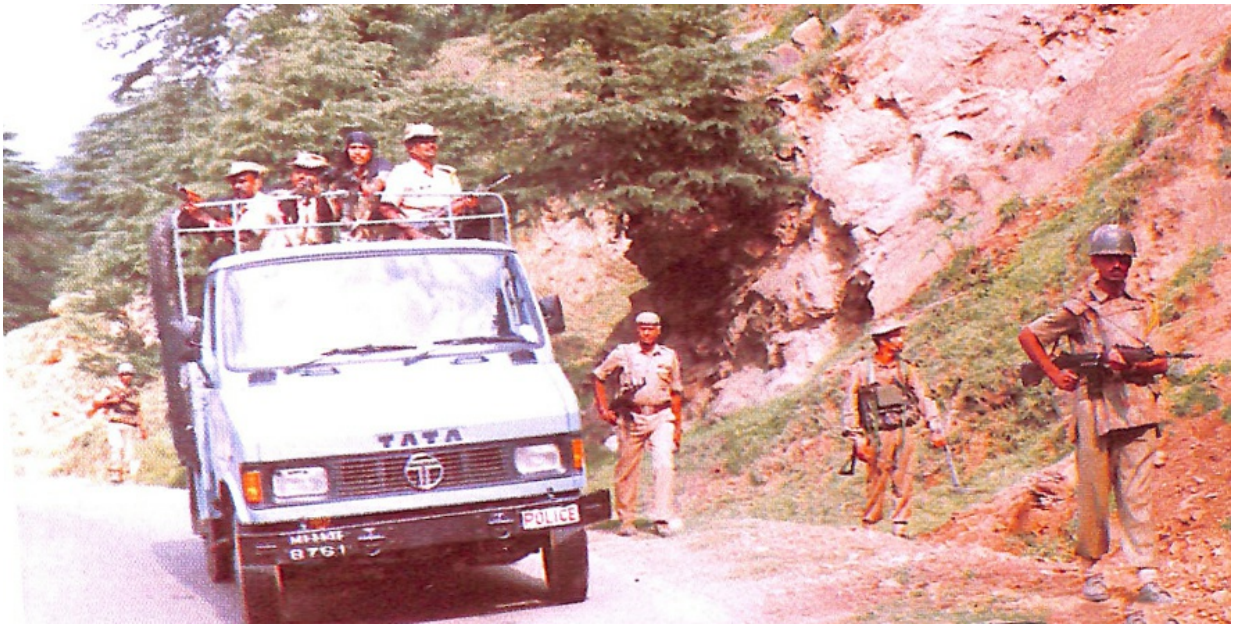
विशेष ऑप्स बैंक नोट बुक का गठनः अपने क्षेत्र की विशेष जानकारी हासिल करने के लिए हमें विशेष रूप से उस इलाके का अध्यन कर वहां से प्राप्त जानकारियों को एक नोट बुक में दर्ज करना होगा। तभी सफल ऑपरेशन संभव हो सकेगा। अपने एरिया जिसका कि हमें दायित्व सौंपा गया है, उस भाग में लगे अलग-अलग कैंप और उनकी अलग-अलग संपूर्ण जानकारी का सूक्ष्म इतिहास एक नोट बुक में दर्ज कर उग्रवादियों संबंधी पूर्ण जानकारी जैसे उनके नाम, पता, दैनिक क्रिया-कलाप, नियमित संचलन का चार्ज(डीईएम) एरिया का संक्षिप्त स्केच(खाखा), रूकने के ठिकाने, सहायक व्यक्तियों के पते आदि नोट किए जाए। ध्यान रहे कि यह एक अच्छी प्रकार की डायरी होनी चाहिए जिसमें अन्य बातें बिल्कुल ना लिखी जाएं। यदि विशेष प्रयत्न करके एक अच्छी डायरी तैयार कर ली जाती है तो यह डायरी नहीं बल्कि रात्री में रोशनी देने वाली बड़ी टार्च की तरह आपको उग्रवादियों तक पहुंचने का विशेष जरिया साबित होगी और समझिये कि आपकी सफलता का आधा कार्य पूरा हो चुका है।

विशेष उत्साह और रूचिः ऑप्स कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए विशेष प्रयत्न, उत्साह और रूचि से कार्य करना बहुत जरूरी है। अधिकतर सदस्य इसे आम कार्य समझकर खाना-पूर्ति दिखावा या केवल अपना फर्ज निभाते हैं। यदि आप कभी रूचि से और फिर कुछ समय बाद सुस्ती से कार्य करेंगे तो सफलता हाथ नहीं लग सकती। जिसमें विशेष उत्साह और रूचि होगी उसके मन में हर समय परिचालन से संबंधित ही विचार मंथन हाते रहेंगे, जिस प्रकार दूध के मन्थन से मक्खन निकलता है उसी प्रकार ऑप्स कार्य में विचार मन्थन से भी सफलता रूपी मक्खन अवश्य प्राप्त होगा।

निडरता से कार्य करनाः ध्यान रहे जितना हम आगे बढ़ेगें उग्रवादी पीछे हटते जायेंगे और जितना हम सिकुड़ते जाएंगे, उग्रवादी हम पर उतने ही हावी होते जाएंगें, और वो दिन दूर नहीं होगा जब हमें कोई नुकसान उठाना पड़ सकता है। यदि उग्रवादियों पर हम छा जाएंगें और उन्हें एक जगह नहीं रूकने देगें तो शीघ्र ही हमारी जिम्मेदारी के ईलाके में आने से वे कतरायेंगें। इससे वहां की जनता पर आपका विश्वास बढ़ेगा और वे अधिक से अधिक सूचनाएं आपको देने के लिए आगे आयेंगें।



माता वैष्णो देवी मन्दिर की सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लेते जम्मू कश्मीर के महामहिम राज्यपाल लेफ्टीनेन्ट जनरल (सेवानिवृत) श्री एस.के. सिन्हा एवं केरिपु बल के अधिकारी



पूर्वोत्तर क्षत्र में आर.ओ.पी. ड्यूटी करते केरिपु बल के जवान

मात्र फर्ज अदा करने के लिए ऑप्स ना करें: आमतौर पर यह महसूस किया गया है कि ज्यादातर बल के अधिकारी अपनी जिम्मेदारी के इलाके में अपनी बटालियन की कैजुअल्टी नहीं होने देने को मध्यनजर रखते हुए डयूटियां करते हैं। उनका कहना है कि ऑप्स एरिया में दो-तीन साल ठहरने के दौरान यदि बटालियन का कोई नुकसान नहीं हुआ तो इससे ज्यादा उपलब्धि और क्या होगी। जब कमाण्डरों में इस प्रकार की बातें घर कर जाती है तो वे ऑप्स एरिया में उन्नति नहीं कर पाते हैं और उनकी अनेको कमियां आपने आप सामने आ जाती है। यहां तक देखा गया है कि अनेको ऑप्स मात्र दर्शाये ही जाते हैं वास्तव में होते ही नहीं हैं, उनमें भी अनेको त्रुटियां होती हैं। मात्र रोड़ मार्च जैसी घिसी-पिटी रीति पूरी कर ऑप्स की औपचारिकता निभा दी जाती है। अतः यह जरूरी है कि माज फर्ज अदा करने के लिए ऑप्स ना किया जाए बल्कि समय-समय पर सोच-विचार से विभिन्नताएं लाकर हर संभव सफलता प्राप्त करने की कोशिश के साथ ऑप्स किया जाए।

धोखा (डिसीव) देकर ऑप्स जानकारी हासिल करना:

नई-नई योजना बनाकर इस प्रकार से ऑप्स करने चाहिए जिनमें तरह-तरह के धोखे हों ताकि उग्रवादी आसानी से बुने गए जाल में फंस जाए। उदाहरण के तौर पर एक सेक्सन को उसी एरिया जैसी देखने में लगे सिविल ड्रेस में रहे और पीछे कुछ दूरी पर वर्दी प्लाटून रहे, अम्बुस में दो प्लाटून एक साथ मिलकर भेजे जायें। कुछ समय बाद एक प्लाटून वापस आ जाए, परंतु दूसरी वहीं बैठी रहे देखने वालों को धोखा होना चाहिए कि संपूर्ण डयूटी वापस चली गई, जबकि उसका आधा हिस्सा वहां उपस्थित रहेगा, जिस एरिया में सुबह से शाम तक ऑप्स किया है उसी एरिया में रात्री एम्बुस लगायें। आमतौर से यह एरिया रात्री में खाली रहता है और उग्रवादियों का अनुमान है कि जिस एरिया की अच्छी प्रकार से जांच कर ली है तो वहां 3-4 दिन फोर्स नहीं जाती है। अत: वहां हरकतें बढ़ जाती हैं खाली हाथ वालों को जाने दिया जाये यदि किसी विशेष रास्ते पर जहां उग्रवादियों की हरकत ज्यादा होती है, वहां इस प्रकार छुपाव हासिल किया जाये कि दिखाई ना दे और खाली हाथ वालों को जाने से रोका ना जाए, ऐसा करने से हथियार के साथ-साथ उग्रवादी भी वहां फंस जाएगें। क्योंकि आगे खाली हाथ से उन्हें रोका नहीं गया था तथा उन्होंने उनका रास्ता सही समय पर अडवांस जारी रखा तथा अंबुस में फंस गए, गांव सर्च के बाद एक-एक सेक्सन शकरे रास्तों पर अम्बुस लगाएं और बाकी फोर्स वापस चली जाए। आमतौर पर गांव सर्च के बाद उग्रवादी जानकारी हासिल करने के लिए उस गांव में आते हैं, उन्हें धोखा देकर एम्बुस में फंसाया जा सकता है, मूव करते समय ऑप्स एरिया में आगे वाले गाईड को दूर की देखभाल करते हुए चलना चाहिए। क्योंकि उस एरिया में छुपे उग्रवादी दूर से ही हमें देखकर छुप जाते हैं। इस प्रकार के अनेकों तरीके अपनाएं जा सकते हैं। सोच विचार एवं आपसी जानकारी से समय-समय पर मौके और हालात को देखते हुए अनेकों तरीके ईजाद किये जा सकते हैं।

आने वाली कठिनाईयों से परेशान नहीं होना, बल्कि समस्या को हल किया

जाए : अलग-अलग राज्यों में, समय अनुसार विभिन्न कठिनाइयाँ आती हैं। इसका यह अर्थ नहीं निकालना चाहिए कि ऑप्स में रूकावटे आ गई हैं, बल्कि सोच समझ कर समस्या का समाधान व रास्ता निकाला जाए तो अवश्य ही कोई न कोई तरकीब जरूर निकल आएगी जैसे:— भाषा नहीं जानना : भाषा जानने वाले सदस्य को साथ रखा जा सकता है। भिन्न-भिन्न गांव वालों से बात करने पर अनेकों क्षेत्रीय भाषा या कम जानने वाले लोग मिल सकते हैं। रास्ते नहीं जानना : जब एक बार किसी गांव में जाते है तो चारों तरफ के रास्तों विशेष तौर पर मूल रास्तों का नक्शा बनाकर डायरी में रिकार्ड कर लिया जाए। इसी प्रकार अनेकों अन्य बातें हो सकती हैं, परंतु उनका समाधान निकालना कोई मुश्किल नहीं है।

उग्रवादियों की तमाम आदतों को जानकार ऑप्स करें : भिन्न-भिन्न राज्यों में भिन्न-भिन्न उग्रवादी ग्रुप अलग-अलग और नई-नई रणनीति का प्रयोग करते हैं। उन सभी बातों की जानकारी अवश्य होनी चाहिए जैसे : चौराहों पर हरी टहनी डालना ताकि उग्रवादी ग्रुप के प्रत्येक व्यक्ति को मुवमेंट के दौरान यह मालूम हो जाये कि इस चौराहे से उसके आदमी किस दिशा में गए हैं और वे भटकने से बच सके।

प्लाटून का हर सदस्य इंटेलीजेन्स प्राप्त करे और अपने प्लाटून कमाण्डर को बताये क्योंकि पेट्रोलिंग के दौरान हर सदस्य का लगाव किसी सिविलियन से जरूर होता है। स्थानीय लोगों से ज्यादा से ज्यादा बातचीत की जाए।

प्रत्येक प्लाटून कमाण्डर और मुख्यालय कंपनी जिम्मेदारी के इलाके को विभाजित करके एरिया सौंप दिया जाए। वैसे तो पूरे कंपनी के एरिया को देखेंगे परतु जिम्मेदारी में दिए गए एरिया पर विशेष ध्यान रखें।



स्थानीय लोगों में विश्वास कायम रखने के लिए सामाजिक कार्यक्रम आयोजित करते बल के कार्मिक।

"जी" ब्रांच में केवल लोकल भाषा जानने वाले हो और काफी मात्रा में हो। इसकी नफरी बढाकर दोगुनी कर दी जाए, ब्रीफिंग और डी-ब्रीफिंग अवश्य हो। अच्छा काम करने वालों को पुरस्कार देते रहना चाहिए। सूचना के आधुनिक तरीके अपनाए जाये और ज्यादा से ज्यादा खबरें प्राप्त करके तुरन्त छापा मारें जाए। यों सफलता पर सफलता प्राप्त करते रहे। ऑप्स के लिए पूरे एवं महत्वपूर्ण दस्तावेज होने चाहिए जैसे-सर्वे मैप, उग्रवादियों की फोटो, हल्के सूक्ष्म दूरबीन आदि। जगह-जगह सूचना देने वालो सिविल व्यक्ति नियुक्त करने और उनसे लगातार संपर्क बनाये रखना चाहिए। उचित समय पर ऑप्स करना चाहिए। आने-जाने के ऐसे रास्ते अपनाए जहां उग्रवादियों को शक ना हो कि इधर से फोर्स आ सकती है तभी हम आपरेशनल अभियानों में भारी सफलता अपना बिना नुकसान उठाए प्राप्त कर सकते हैं।

शहरी क्षेत्र में गश्त

स.कमा. **एन.एस. राठौर,** 23 बटा.



शहरी क्षेत्र में गश्त करते केरिपु बल के जवान

बदलते परिवेश में आज सरकार, सशस्त्र सेनायें, पुलिस तथा सरक्षा बल जिसमें केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल भी शामिल है, उग्रवादियों तथा आतंकवादियों से निपटने हेतु विभिन्न तरह के अभियानों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। सीमित संसाधनों के चलते प्रत्येक व्यक्ति को व्यक्तिगत रूप से सुरक्षा देना संभव नहीं है, ऐसे में प्रभावी गश्त द्वारा न केवल आदमी के दिल में सुरक्षा की भावना पैदा की जा सकती है बल्कि सुरक्षा बलों की विभिन्न पोस्टों के बीच पड़ने वाले रास्ते भी सुरक्षित किये जा सकते हैं।

गश्त क्या है? : बल की किसी भी टुकड़ी के सुनियोजित ढंग से घूमने तथा उग्रवादियों/आतंकवादियों/अवांछनीय तत्वों को समाज विरोधी कार्रवाई करने से रोकने को ही गश्त कहते हैं।

उद्देश्यः सरकारी संपत्ति एवं लोगों की सुरक्षा करना, अपराधियों की गतिविधियों पर नजर रखना, लोगों का विश्वास जीतकर सूचना प्राप्त करना, समाज विरोधी तत्वों की गतिविधियों को कम करना, अचानक नाके बदलना, मौका मिलने पर कैसा भी आपरेशन कर देना, इलाके की जानकारी एवं अपना प्रभाव बनाना।

वर्तमान में 23 बटा. जम्मू-कश्मीर राज्य में आन्तरिक सुरक्षा एवं कानून व्यवस्था

बनाये रखने हेतु कार्यरत है बारामुल्ला जैसे घने शहरों में गश्त के समय घनी आबादी, बाहरी आवागमन, ऊंची इमारतें, व्यस्त बाजार, तंग गलियाँ जैसी कुछ समस्याएं भी सामने आती हैं।

ऐसे में आतंकवादी तत्वों को भीड़ से अलग कर पहचानना बड़ा मुश्किल है। फिर भी इन समस्याओं पर बेहतर जानकारी हासिल करके वांछित सफलता पाई जा सकती है, जैसे - छुपाव की जगह, विद्रोहियों की पहचान, मिलाप के साधन, पुख्ता खबरें, कमाण्डर का नियंत्रण।

गश्त के लिए निर्धारित क्षेत्र को बांटना चाहिए ताकि इलाके का चप्पा-चप्पा जाना जा सके।

गश्त के प्रकार : पैदल तथा वाहन द्वारा गश्त। गश्त के संचलन के समय ब्रिफिंग, फारमेशन सुरक्षा, रास्ता, डी. ब्रिफिंग खतरा या फायर होने पर कार्रवाई आदि बाते ध्यान रखनी चाहिएं

आतंकवादी/उग्रवादियों के खिलाफ प्रभावी गश्त का प्रयोग एक अचूक नुस्खा है। जरूरी है कि हम अपनी गश्त पार्टी को इस तरह का प्रशिक्षण दें ताकि जरूरत पड़ने पर बिना समय गंवाये, यह पार्टी घेरा लगा सके, सर्च कर सके, नाका लगा सके तथा अम्बुश लगाकर सूचनानुसार कार्रवाई कर वांछित परिणाम प्राप्त कर सके।

कश्मीर से कामाख्या

स. कमा. **अनिल गुप्ता,**
122 बटा.

पहले त्रिपुरा और श्रीनगर में जबरदस्त परिचालनिक सफलताओं के बाद वर्ष 2002 में असम में तैनाती 122 बटालियन के लिए एक भिन्न अनुभव था। जहां श्री नगर में मागम जैसी बिरान जोखिम भरी पोस्ट की करीब 18 साल बाद स्थापना आतंकवादियों के लिए एक चेतावनी थी। वहीं असम में बिल्कुल भिन्न परिस्थितियों में गुवाहाटी से लेकर असम के अंतिम जिले धेमाजी और जुनाई तक फैली करीब 650 कि0मी0 की तैनाती मिली। इतना विस्तार और भिन्नता के बावजूद 122 बटालियन के जवान हर सौंपे गए कार्य को पूर्ण दक्षता एवं समर्पण के साथ करने में सफल रहे।

परिणामतः 2003 मई में 122 बटालियन को गुवाहाटी क्षेत्र की नोडल बटालियन का दायित्व सौंपा गया और 122 बटालियन के कमाण्डेंट श्री जी.आर.भट को नोडल अधिकारी को जिम्मेदारी सौंपी गई। 650 कि0मी0 दायरे में फैली बटालियन की सभी कंपनियां गुवाहाटी क्षेत्र में सिमट आई। असम सचिवालय, विधान सभा, राजभवन,

रिजर्व बैंक तथा कामख्या जैसे महत्वपूर्ण स्थलों की सुरक्षा के साथ-साथ पूरे उत्तर पूर्व के व्यापार केन्द्र कहे जाने वाले फैन्सी बाजार,पान बाजार और ए.टी रोड़ जैसे इलाके में 122 बटालियन की निगरानी में आ गये।

गुवाहाटी पूरे पूर्व का गेटवे कहा जाता है। संपूर्ण गुवाहाटी क्षेत्र में के.रि.पु.बल. की सभी यूनिटों की तैनाती और उनके परिचालनिक दायित्व की जिम्मेदारी एक महत्वपूर्ण कार्य है। यहां की कोई भी हलचल संपूर्ण उत्तर पूर्व को प्रभावित करती है। चाहे वह रेल संपर्क हो, हवाई संपर्क हो या फिर राज्यपाल या मुख्य मंत्री का संचलन, हर जगह, हर स्थान पर व्यवस्था करते के.रि.पु.बल के जवान गुवाहाटी निवासियों को सुरक्षा और शांति का आभास दे रहे हैं।

ब्रहमपुत्र नदी के दोनों ओर बसा गुवाहाटी शहर कामरूप जिले का एक हिस्सा है। और कामरूप जिले के अंतिम छोर पर मेघालय की पहाड़ियों के बीच कटोरे नुमा समतल स्थल पर रानी गांव में स्थित है 122 बटालियन का मुख्यालय। कश्मीर की बर्फीली वादियों के बाद असम और मेघालय के घनघोर मेंघों की गरजना और धुआधार बारिश के बीच अजारा से रानी गांव तक का करीब 8-10 कि0मी0 का सफर प्रकृति के साथ मानव के सहचर्य का अनूठा अनुभव है। इसी मार्ग पर सांयकाल और रात्रि काल में 122 बटालियन के जवानों की आर.ओ.पी. मार्ग से गुजरने वालों के दिलों में सुरक्षा के साथ-साथ पहाड़ियों की तलहटी में बसे ठेठ असमी गांवों से गुजरते मार्ग पर एक नयनाभिराम दृश्य भी प्रस्तुत करती है।

नोडल एजेन्सी का दायित्व अपने आप में कई जिम्मेदारियों को लिये हुए है। चाहे वह पूरे उत्तर पूर्व से गुवाहाटी मेडीकल कालेज अस्पताल में आने वाले गंभीर रूप से घायल जवान या मरीज हो, पूरे उत्तर पूर्व में बटालियनों या कंपनियों के संचलन का समन्वय हो, मुठभेड़ों में घायल या शहीद हुए कार्मिकों के पार्थिव शरीरों को हवाई मार्ग से उनके गृह क्षेत्रों को भेजने की व्यवस्था हो, 122 बटालियन हर दायित्व को पूर्ण जिम्मेदारी और संपूर्ण समर्पण के साथ निभा रही है।



जम्मू में स्थित मुख्यमंत्री निवास की सुरक्षा ड्यूटी के लिए तैनात केरिपु बल के जवान

खीर भवानी से कामख्या और कश्मीर से कामरूप तक का सफर 122 बटालियन की कामयाबी की दास्तान कह रहा है, यह दास्तान अभी जारी है, इसकी कई मंजिले और अभी बाकी हैं।

65 वीं बटा. के सफल ऑपरेशन

65 बटालियन की ई कम्पनी की एक प्लाटून ने श्री रमाशंकर सिंह सहायक कमा0 के नेतृत्व में एस0ओ0जी0 गन्दरबल के साथ वारपस के जंगल एरिया में आतंकवादियों को पकड़ने के लिए कार्डन एवं सर्च ऑपरेशन चलाया, सर्च के दौरान आतंकवादियों ने सुरक्षा बलों पर स्वचालित हथियारों से गोलाबरी की। सुरक्षा बलों द्वारा की गई जवाबी कार्रवाई में लश्करे ए तोयबा ग्रुप के तीन आतंकवादी मारे गए जिनमें से एक ही पहचान अबू जावेद पाकिस्तान निवासी के रूप में की गई। इस कार्रवाई में एक ए0के0-47 राइफल, एक ए0के0-56 राइफल, एक पिस्टल चाईनीज,

छः ए0के0-56/47 राइफल की मैगजीन, 130 ए0के0-47 की गोलियां, छः पिस्टल की गोलियां, एक पिस्टल की मैगजीन, छः हैण्ड ग्रेनेड तथा एक रेडियों सेट आदि गोला बारूद जप्त किए।

25 जुलाई, 2003 को इसी बटालियन की ई कम्पनी की एक प्लाटून ने गुप्त एवं विश्वसनीय सूचना के आधार पर सहायक कमा0 रमाशंकर सिंह के नेतृत्व में एस0ओ0जी0 गन्दरबल की एक प्लाटून के साथ राकी सलोरा ग्राम में आतंकवादियों को पकड़ने के लिए एक विशेष अभियान चलाया। ऑपरेशन के दौरान टी0जे0आई0 ग्रुप के पाकिस्तान प्रशिक्षित दो आतंकवादियों मोहम्मद युसूफ मीर जिला कमाण्डर टी0जे0आई0 एवं जावेद अहमद कालू को दो ए0के0-56 राइफल, दो ए0के0-56 राइफल की मैगजीन, 207 ए0के0-47 राइफल की गोलियां, एक वायरलेस सेट, दो हथगोला, दो आई.ई.डी. आदि हथियारों एवं गोला बारूद के साथ गिरफतार किया गया।



65 बटा. द्वारा बरामद किये गये हथियारों को दिखाते अधिकारी व जवान

29 जुलाई-2003 को इ कम्पनी को एक प्लाटून ने गुप्त एवं विश्वसनीय सूचना मिलने पर सहायक कमा0 रमाशंकर सिंह के नेतृत्व में हकनार के जंगल एरिया में एस0ओ.जी0 गन्दरबल एवं 5 आर0आर0 के साथ मिलकर आतंकवादियों को पकड़ने के लिए एक सर्च ऑपरेशन चलाया। इस ऑपरेशन में आतंकवादियों के छुपे हुए संभावित ठिकानों की घेरा बन्दी कर सर्चिंग की गई। सर्चिग के दौरान घना जंगल होने के कारण आतंकवादी भागने में सफल हुए, लेकिन बाद में उनके ठिकानों की तलाशी ली गई, जहां से एक यू0बी0जी0एल0, पांच यू0बी0जी0एल0, एक हैण्ड ग्रेनेड, दो डेटानेटर, 25 किलो ग्राम आर डी.एक्स., 125 ए.के.47 राइफल की गोलियां, एक रिमोट कंट्रोल, एक जिलेटिन रॉड आदि हथियार एवं गोला बारूद बरामद किए गए।

कविता

हमारी राजभाषा

देवनागरी लिबास लिए
सत्यप्रेम की पावनता लिए
इक पावन मिठास लिए
मधुर शब्दों की आस लिए
पूर्ण श्रृंगार किए
प्रिय की ताक लिए
सूने से मोड़ पर खड़ी
तिरस्कृत भाव लिए
विरह की अग्नि में तपती
अपनों की निगाहों को तरसती
कितनी मधुर हो तुम
और अपनी सी
फिर क्यों तुम्हें अपमान मिला
और मिली रूसवाई भी,
कोई तो सराहे इसे
कोई तो अपनाए इसे
कोई तो कहे इससे

हॉ सबसे प्यारी हो तुम
कोई तो स्वीकारे इसे
हॉ हमारी दुलारी हो तुम
न कहे कोई
पर मैं कहूॅगा सबसे
ऐ मेरी राजभाषा हिन्दी
हम देंगे दुलार तुझे
बहुत सहा विश्वासघात तूने
अब सौ जन्मों का प्यार देंगें
तुम्हें अपनाया है
तुम्हारे होके रह जाएंगें
प्रण करते हैं
इस संसार में तुझे
तेरा सम्मान दिला कर रहेंगें
जय हिन्दी, जय हिन्द

-उप नि० (म्) अतुल शर्मा
कामकि 3/(संगठन)
अनुभाग, केरिपु बल महानिदेशालय

136वी बटा. की परिचालनिक उपलब्धियां



136 बटा. के समक्ष आत्मसमर्पण करने वाले अल्फा उग्रवादी

136बटालियन एवं उसकी छः कंपनियां आसाम राज्य के नलबाड़ी जिले में मई, 2002 से उग्रवाद निरोधक कार्रवाइयों में जिला प्रशासन के सहयोग हेतु तैनात हैं। तैनाती के दौरान बटालियन द्वारा 52 उल्फा कार्यकर्ताओं को पकड़ कर जिला पुलिस के सुपुर्द किये लेकिन एक बड़ी सफलता तब मिली जब एक-एक करके पॉच उल्फा उग्रवादियों द्वारा स्वयं आत्मसमर्पण कर दिया गया। इन उग्रवादियों से 22 रिवाल्वर, एक देशी पिस्टल, दो सिगनल कारटेज लाल रंग का, एक एच0ई0नंबर, 36, एक हैण्ड ग्रनेड, चार डेटोनेटर,9 एम0एम0 राइफल के 10 राउण्ड, आधा कि0ग्रा0 विस्फोटक, दो एच0ई0बंब, एक दो इंच मोर्टार आदि हथियार एवं गोला बारूद बरामद किए। पकड़े गए आतंकवादियों की सहायता से अन्य ऑपरेशनों में भी चार देशी पिस्तौल, 22 डेटोनेटर, 36 एच0ई0 बम्ब, दो हैण्ड ग्रेनेड, एक इगनेटिंग प्लेयर, दो देशी बम्ब, 21 राउण्ड, आधा कि0ग्रा0 विस्फोटक बरामद किए गये तथा जिला पुलिस को सौंप दिये गये।

इस समारोह में पुलिस उप महानिरीक्षक (परिचालन),केरिपुबल, बोगाईगाँव, श्री ए0पी0 माहेश्वरी, जिला उपायुक्त एवं पुलिस अधीक्षक जिला नलबाड़ी और बटालियन के सभी अधिकारी एवं जवान उपस्थित थे। जिला प्रशासन ने श्री एस०पी०एस० नागर, कमाण्डेंट 136 बटालियन एवं अन्य सभी अधिकारियों तथा जवानों को धन्यवाद दिया जिन्होंने जिले में कार्यरत उल्फा उग्रवादियों को मुख्य धारा में लाने में सहयोग प्रदान किया।

संशोधन



श्री के. के. जोआरदार अ. पु. महा. ग्रु. के. रांची

स्वतंत्रता दिवस पर करिबल के *42* कार्मिक पुलिस पदकों से सम्मानित शीर्षक के अंतर्गत माह सितम्बर *2003* के अंक में प्रकाशित पृष्ठ संख्या *21* पर "सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक" कालम में श्री के. के. जोआरदार अपर पुलिस महानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र, रांची के नाम के बाक्स में त्रुटी वस कमान्डेंट प्रथम सिगनल बटालियन श्री ए. एस. वर्मा का फोटो लग गया था जिसके लिए खेद हैं।

–संपादक

पश्चिमी सेक्टर द्वारा व्यावसायिक कार्यशाला का आयोजन



घरेलू उपयोग की वस्तुएं बनाने का डेमो देते व्यावसायिक विशेषज्ञ

कल्याणकारी योजनाओं के अंतर्गत बल कार्मिकों, उनके परिवार के सदस्यों एवं उन पर आश्रितों की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए पश्चिमी सेक्टर द्वारा घरेलू उत्पाद से जुड़ी वस्तुओं का व्यावसायिक ज्ञान उपलब्ध कराने के लिए 9 अगस्त, 2003 को 1100 बजे एकता विहार, नवी मुंबई में एक व्यावसायिक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें मुंबई के एक व्यावसायिक विशेषज्ञों को मानदेय पर आमंत्रित किया गया। इस कार्यशाला में ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, गांधीनगर, नागपुर, पुणे, 102 बटा0 आरएएफ के प्रतिनिधियों तथा पश्चिमी सेक्टर कार्यालय के अधिकारी/कार्मिक एवं उनके परिवार के सदस्यों ने भाग लिया। कार्यशाला का उद्घाटन श्रीमती रागिनी माथुर ने किया। मुम्बई के व्यावसायिक विशेषज्ञ श्री रमेश मैशेरी ने अपने अन्य सहयोगियों के सहयोग से चरणबद्ध जानकारी दी तथा उत्पाद-सामग्री को बनाकर दिखाया और संबंधित यंत्रों की जानकारी दी। यंत्रों की प्रदर्शनी भी लगाई गई। उत्पाद सामग्री की चरणबद्ध प्रदर्शनी इस प्रकार से लगाई गई: **प्रथम चरण** :- छोटी मोमबत्ती, बड़ी मोमबत्ती, रंगीन मोमबत्ती एवं चोकोर मोमबत्ती बनाना। **दूसरा चरण**:- सुगंधित अगरबत्ती, मच्छर निवारक अगरबत्ती, मच्छर भगाने की मैट को पुनः चार्ज करना। **तीसरा चरण**:-गहरा सुगंध(सेंट), सुगंध छिड़कने वाली बोतल(स्प्रे), रूम फ्रेशनर तैयार करना, इत्तर बनाना। **चौथा चरण**:- भूरा फिनाइल तैयार करना, सफेद सुगंधित फिनाइल बनाना। **पांचवा चरण**:- चित्र/फोटो परतीकरण (लेमीनेशन) करना।

इस कार्यशाला का सभी अधिकारियों, कार्मिकों, प्रतिनिधियों एवं परिवार के सदस्यों ने इसका भरपूर लाभ उठाया तथा यंत्रों को खरीदने का प्रस्ताव भी किया।

समय समय पर उक्त व्यावसायिक विशेषज्ञ से परामर्श एवं संपर्क की सुविधा की व्यवस्था उपलब्ध कराई गई है। प्रथम चरण में ग्रुप केन्द्र गांधीनगर, नागपुर एवं पुणे को मोबत्ती, अगरबत्ती तथा फिनाइल बनाने हेतु यह योजना लागू कर दी गई है।

52वी अखिल भारतीय पुलिस तैराकी तथा क्रासकंट्री चैम्पियनशिप



4 किमी. की व्यक्तिगत क्रॉसकंट्री प्रतिस्पर्धा के विजेता केरिपु बल के उप नि. उपेन्द्र कुमार को स्वर्ण पदक प्रदान करते बल के अपर महादिनेशक श्री हिमांशु कुमार

नई दिल्ली के डा0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी (तालकटोरा) स्वीमिंग पूल काम्पलेक्स में 6 सितंबर, 2003 को संपन्न हुई 52वीं अखिल भारतीय पुलिस तैराकी एवं क्रास कंट्री प्रतिस्पर्द्धा की आल ओवर चैंपियनशिप केरिपुबल(सी.आर.पी.एफ) के तैराकों ने जीती।

प्रतिस्पर्धा में भाग लेने वाली टीमों की परेड की सलामी उप प्रधानमंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी ने ली तथा समापन समारोह में ट्राफी तथा पुरस्कार प्रदान किये। पिछले महीने बार्सिलोना(स्पेन) में संपन्न हुए विश्व पुलिस तथा फायर गेमों में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की टीम के उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए श्री आडवाणी ने प्रशंसा की।

4 कि0मी0 क्रास कंट्री चैंपियनशिप की ट्राफी के0रि0पु0बल ने जीती जबकि 12 कि0मी0 की ट्राफी सी0सु0बल को मिली। हाई बोर्ड डायविंग तथा स्प्रींग बोर्ड डायविंग की ट्राफी भी के0रि0पु0बल को मिली। श्री आडवाणी ने वाटर पोलो चैंपियनशिप ट्राफी भी केरिपुबल को प्रदान की। इस प्रतिस्पर्धा में केरिपुबल के निरीक्षक दीपक कुमार को सर्वश्रेष्ठ तैराक घोषित किया गया। तैराकी की राज्य पुलिस श्रेणी की चैंपियनशिप ट्राफी पंजाब पुलिस ने जीती।

सूचना ब्यूरो के निदेशक तथा अखिल भारतीय पुलिस खेलों के अध्यक्ष श्री के. पी. सिंह ने चैंपियनशिप के समापन की घोषणा की तथा के0रि0पु0बल के महानिदेशक श्री एस.सी.चौबे ने अतिथियों का स्वागत जबकि आयोजक समिति के सचिव श्री ओ.पी.सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

6 दिसम्बर, 2003 में संपन्न हुई 200 मीटर की बटरफलाई प्रतिस्पर्धा में केरिपुबल के निरीक्षक अमर मुरलीधरन ने स्वर्ण पदक प्राप्त किया जबकि केरिपुबल के ही निरीक्षक दीपक कुमार सिंह ने 400 मीटर की मिडले व्यक्तिगत प्रतिस्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता। इसके अलावा 50 मीटर की फी स्टाइल प्रतिस्पर्धा में केरिपुबल के निरीक्षक एलविस अली हजारिका ने स्वर्ण पदक जीता। इस चैम्पियनशिप का उदघाटन 1 सितम्बर, 2003 को केन्द्रीय खेल एवं युवा मामलों के मंत्री श्री विक्रम वर्मा ने किया था।



*52*वीं अखिल भारतीय पुलिस तैराकी एवं क्रॉसकंट्री चैम्पियनशिप में केरिपु बल के निरीक्षक दीपक कुमार को सर्वश्रेष्ठ तैराक की ट्रॉफी प्रदान करते उप प्रधानमंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी



*52*वीं अखिल भारतीय पुलिस तैराकी एवं क्रॉसकंट्री चैम्पियनशिप के उद्घाटन के अवसर पर शुभकामना संदेश पत्रिका का विमोचन करते केन्द्रीय खेल एवं युवा मामलों के मंत्री श्री विक्रम वर्मा एवं बल के महानिदेशक श्री एस.सी. चौबे

11वीं वर्षगांठ पर उप प्रधानमंत्री द्वारा आरएएफ को राष्ट्रपति का ध्वज प्रदान

साम्प्रदायिक दंगों से लेकर प्राकतिक आपदाओ के कारण उत्पन्न संकटकालीन स्थिति से निपटने के लिए द्रुत कार्य बल को बखूबी जाना जाता है। 7 अक्टूबर,2003 को द्रुत कार्य बल(आर.ए.एफ.) की 11वीं वर्षगांठ के अवसर पर द्रत कार्य बल तथा केरिपुबल के अधिकारियों एवं जवानों को संबोधित करते हुए उप प्रधान मंत्री श्री लाल कष्ण आडवाणी ने कहा कि राष्ट्रपति का ध्वज प्रदान करना इस बल की बहुमूल्य सेवा को उचित मान्यता प्रदान करना है जिसका कि यह बल हकदार है।

बल की भूमिकाओं की प्रशंसा करते हुए उप प्रधान मंत्री ने कहा कि यह बल का केवल वार्षिकोत्सव ही नहीं बल्कि बल के जीवन तथा इतिहास का एक स्वर्णिम दिन है जो इसे देश में शांति एवं सदभाव बनाए रखने में किए गए उल्लेखनीय योगदान के लिए मिला है।

दंगा निरोधक विशिष्ट शाखा द्रुत कार्य बल ने हमेशा से ही जब भी इसकी सेवाओं की किसी त्रासदी से निपटने में जरूरत पड़ी, इसने एक अच्छी मिशाल कायम की है और आपदा के दौरान जीरो रिस्पोंस समय का अनुपालन करते हुए घटना स्थल पर पहुंचकर पीड़ितों को बचाव एवं राहत प्रदान कर अपने नाम को सही रूप में चरित्रार्थ किया है।



बल के वरिष्ठ अधिकारियों से मुख्य अतिथि उप प्रधानमंत्री श्री एल.के. आडवाणी का परिचय कराते महानिदेशक श्री एस.सी. चौबे



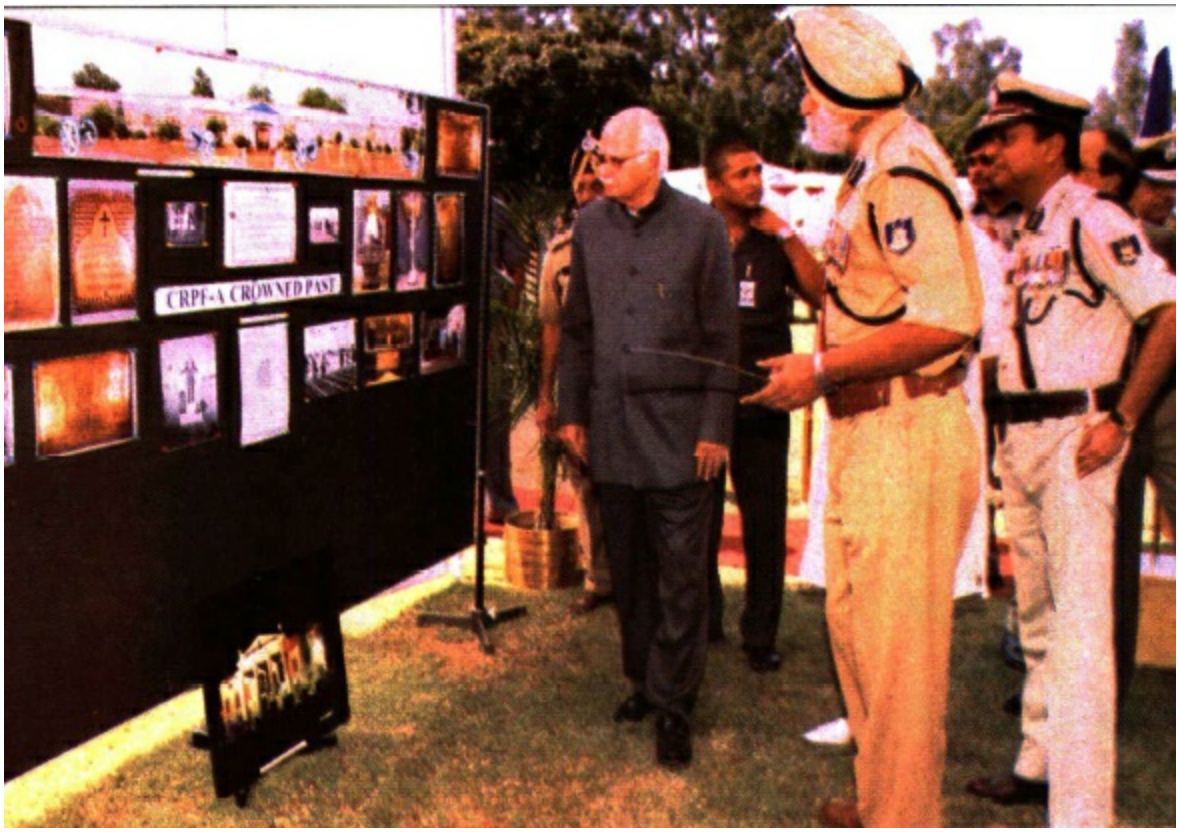
ग्रुप केन्द्र, झडोदा कलां में आयोजित परेड की सलामी लेते उप प्रधानमंत्री श्री एल.के. आडवाणी



*11*वीं वर्षगांठ पर द्रुत कार्य बल को राष्ट्रपति का ध्वज प्रदान करते उप प्रधानमंत्री श्री एल. के. आडवाणी

श्री आडवाणी ने बल की कल्याण निधि के लिए एक करोड़ रूपये का अनुदान देने की घोषणा की तथा भव्य परेड का निरीक्षण एवं सलामी ली। केरिपुबल के महानदेशक श्री एस.सी.चौबे ने कहा कि द्रुत कार्य बल ने साम्प्रदायिक दंगों से निपटने में एक साफ-सुथरी एवं निष्पक्ष छवि बनाई है। इसने गुजरात, उड़ीसा तथा

अन्य कई प्रान्तों में आपदाओं के दौरन आपदा प्रबन्धन मे विशेष रूप से नाम कमाया है। बल ने संयुक्त राष्ट्र से भी हैती तथा कोसोवो में शांति मिशन के रूप में कई पदक / सम्मान प्राप्त किए हैं। इस अवसर पर केन्द्रीय श्रम मंत्री श्री साहिब सिंह वर्मा सहित विभिन्न अर्द्धसैनिक बलों के भूतपूर्व एवं वर्तमान प्रमुख तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।



*11*वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में द्रुत कार्य बल द्वारा लगाई गई फोटो प्रदर्शनी को देखते हुए उप प्रधानमंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी



परेड कमांडरों तथा बल के वरिष्ठ अधिकारियों के बीच मुख्य अतिथि उप प्रधानमंत्री श्री एल.के. आडवाणी एवं केन्द्रीय श्रम मंत्री डा. साहिब सिंह वर्मा

बल में हिन्दी दिवस समारोह

किसी भी देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने में भाषा एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है और भारत में यह भूमिका हिंदी ही निभा सकती है। क्योंकि देश की 85 प्रतिशत आबादी यह भाषा बोलती और समझती है। 19 सितंबर, 2003 को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल मुख्यालय में हिन्दी दिवस पर आयोजित एक विशेष समारोह में बल के अपर महानिदेशक श्री हिमांशु कुमार ने अधिकारियों और कार्मिकों का आहवान किया कि सरकारी काम-काज में अधिकाधिक हिन्दी का प्रयोग करने से विभिन्न क्षेत्रों में विकाश को गति तो मिलेगी ही साथ ही देश की एकता

एवं अखण्डता भी मजबूत होगी। उन्होंने आशा व्यक्त की भविष्य में बल का अधिकांश कार्य हिन्दी में होने लगेगा।



हिन्दी में सर्वाधिक कार्य करने के लिए गोपनीय शाखा के अनुभाग अधिकारी श्री यू.डी. पांडेय को प्रशस्ति पत्र प्रदान करते अपर महानिदेशक श्री हिमांशु कुमार

श्री कुमार ने इस मौके पर विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले प्रतियोगियों को पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र भी प्रदान किये। अधिकाधिक सरकारी काम-काज में हिंदी का प्रयोग करने के लिए सर्वश्रेष्ठ सेक्टर तथा अनुभाग रंनिग शील्ड प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। उत्तरी सेक्टर के.रि.पु.बल ने वर्ष 2003 की सेक्टर तथा महानिदेशालय की प्रशासन एवं जन संपर्क शाखा ने संयुक्त रूप से अन्तर अनुभाग शील्ड जीती।



सरकारी काम काज में अधिकाधिक हिन्दी का प्रयोग करने के लिए महानिदेशालय की जनसंपर्क एवं प्रशासन-3 अनुभाग के प्रतिनिधियों को संयुक्त रूप से रनिंग शील्ड प्रदान करते अपर महानिदेशक श्री हिमांशु कुमार

पुलिस उप महानिरीक्षक, डा० ए.पी. माहेश्वरी ने राजभाषा संदेश पढ़ा। हिंदी अधिकारी श्री मणि भूषण प्रसाद ने बल में हिंदी की प्रगति की रिपोर्ट से अवगत कराया जबकि पुलिस महानिरीक्षक(कार्मिक एवं मुख्यालय) श्री विक्रम श्रीवास्तव ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

इस मौके पर सी.आर.पी.एफ. समाचार का हिन्दी विशेष अंक भी जारी किया गया।



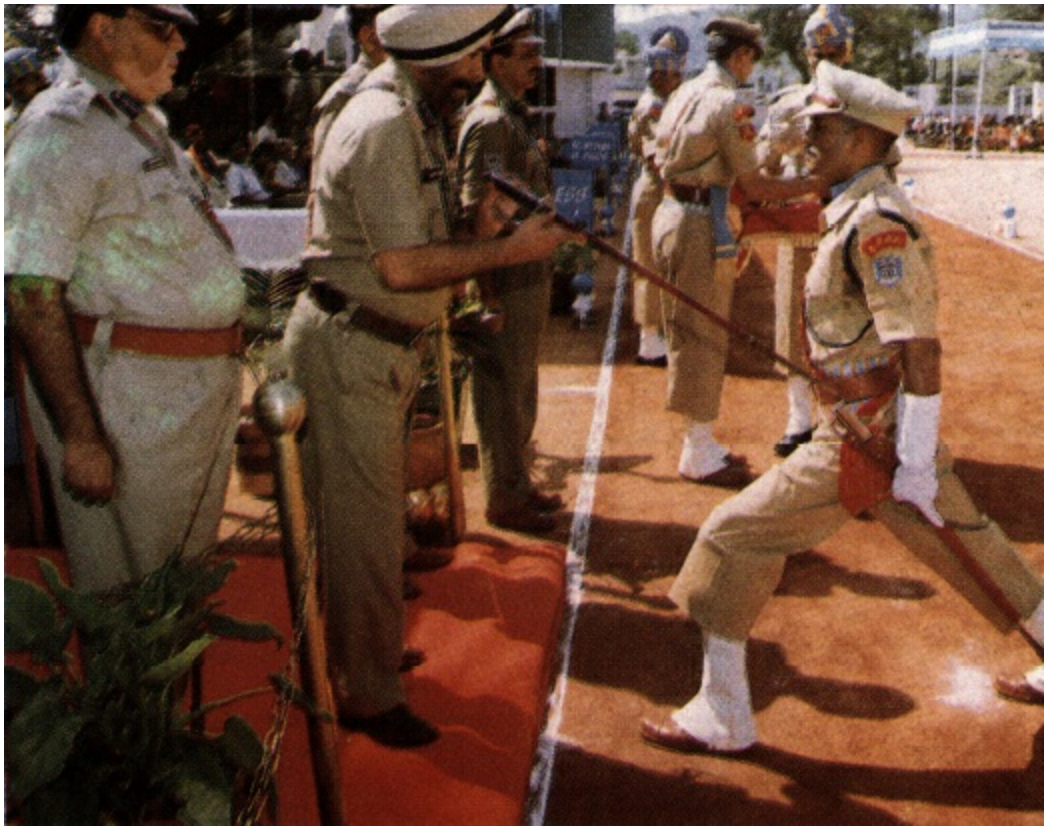
सरकारी कामकाज में सर्वाधिक हिन्दी का प्रयोग करने के लिए अन्तर सेक्टर की रनिंग शील्ड केरिपु बल के उत्तरी सेक्टर ने जीती ,हिन्दी दिवस पर बल के अपर महानिदेशक श्री हिमांशु कुमार से शील्ड प्राप्त करते उत्तरी सेक्टर के अपर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री एम.एस. अग्रवाल



हिन्दी दिवस पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कार विजेता कर्मचारियों के मध्य अपर महानिदेशक श्री हिमांशु कुमार एवं दाएं हिन्दी अधिकारी श्री मणि भूषण प्रसाद

केरिपु बल ने साम्प्रदायिक एवं अन्य उपद्रवों में निष्पक्ष भूमिका निभाने में ख्याति हासिल की है।

- कंवलजीत सिंह



आई.एस.ए. मांउट आबू में विभागीय प्रविष्ट परीक्षा द्वारा चयनित राजपत्रित अधिकारियों की परेड में स कमां विनोद रावत को स्वोर्ड ऑफ आनर प्रदान करते अपर महानिदेशक पश्चिमोत्तर अंचल श्री के.जे. सिंह

30 सितम्बर, 2003 को आंतरिक सुरक्षा अकादमी में तीसरे बैच के विभागीय प्रविष्ट राजपत्रित अधिकारियों की दीक्षांत परेड को संबोधित करते हुए, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के अपर महानिदेशक, श्री कंवलजीत सिंह ने प्रशिक्षण में मानवाधिकारों की रक्षा करने का आवाहन किया और कहा कि यह पुलिस कर्मचारियों का मुख्य

कर्तव्य है।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के इतिहास के बारे में विस्तार से बताते हुए श्री कंवलजीत सिंह ने कहा कि संवेदनशील क्षेत्रों में साम्प्रदायिक एवं अन्य उपद्रवों में निष्पक्ष भूमिका निभाने में इस बल ने ख्याति हासिल की है और सबसे भरोसेमंद पुलिस फोर्स के रूप में प्रतिष्ठा अर्जित की है। एक भूमिका से दूसरी भूमिका को तत्परता से करने तथा कानून-व्यवस्था बनाये रखने के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया है। संयुक्त राष्ट्र सेना की मदद के लिए भारत से बाहर हैती, अंगोला, मौजांबिक, कोसोवो आदि देशों में तैनाती के दौरान भी के.रि.पु.बल ने काफी नाम कमाया है। श्रीलंका में भारतीय शांति सेना के रूप में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

श्री सिंह ने श्री विनोद रावत, सहायक कमा० को 'स्वोर्ड ऑफ ऑनर' सर्वोत्तम प्रशिक्षु अधिकारी का प्रदान किया। आंतरिक और बाह्य प्रशिक्षण में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर क्रमशः सहायक कमा० दीपक रोहिल्ला व सहायक कमा० कमांडेंट दीपक खंडेलबाल को ट्राफियां प्रदान की। जबकि प्रिंसिपल कप फार परेड कमांडर' का पुरस्कार सहायक कमा० भूप किशोर शर्मा को प्रदान किया गया।

सहायक कमाण्डेंट दीपक रोहिल्ला, अशीश कुमार और उत्तम बनर्जी को अकादमी में आयोजित निबंध प्रतियोगिता में क्रमशः रू.5000, रू.3000 व रू.2000 राशि का नकद पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

दीक्षांत परेड के अवसर पर बोलते हुए अकादमी के प्रिंसिपल श्री अतुल कुमार माथुर, पुलिस महानिरीक्षक ने कहा कि अब तक 1287 सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारी इस अकादमी में प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं। 1088 पुलिस अधीक्षक व जिलाधीश एवं विभिन्न राज्यों/बलों के 2200 उप पुलिस अधीक्षक भी इस गौरवमयी अकादमी से आंतरिक सुरक्षा संबंधी प्रशिक्षण ग्रहण कर चुके हैं। उन्होंने बताया यह अकादमी के.रि.पु.बल. के अधिकारियों के 'प्रोमोशनल कोर्सो' का भी लगातार आयोजन कर रही है।

25 सप्ताह के कठिन और चुनौतीपूर्ण प्रशिक्षण के बाद यह बैच, जम्मू-कश्मीर और पूर्वी-उत्तरी राज्यों में तैनात अपनी-अपनी बटालियनों में उग्रवाद व उपद्रवों से निपटने के लिए पूरी तरह से सक्षम है।

के०रि०पु०बल द्वारा कल्याण मेला और प्रदर्शनी का आयोजन

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की तीन दिवसीय कल्याण मेला और प्रदर्शनी का आयोजन 10 से 12 अक्टूबर, 2003 तक सी०पी०डब्ल्यू०डी० पार्क, सेक्टर 12, आर. के.पुरम, नई दिल्ली में किया गया। इस प्रदर्शनी/मेला का उद्घाटन 10 अक्टूबर, 2003 को प्रातः 11 बजे उप प्रधानमंत्री श्री एल.के.आडवाणी की धर्म पत्नी श्रीमती कमला आडवाणी ने किया तथा समापन 12 अक्तूबर, 2003 को सी.आर.पी.एफ आफीसरस वाइव्ज वेल्फेयर एसोसियेशन की अध्यक्षा श्रीमती कंचन चौबे ने किया।



फीता काटकर केरिपु बल प्रदर्शनी एवं मेले का उदघाटन करती मुख्य अतिथि श्रीमती कमला आडवाणी

प्रदर्शनी/मेले में पूरे देश में फैले लगभग 30 ग्रुप केन्द्रों द्वारा अपने-अपने क्षेत्रों की प्रमुख वस्तुओं तथा परिवार कल्याण केन्द्रों द्वारा तैयार की गई वस्तुओं की स्टाल लगाई गई थी। आम जनता के लिए प्रदर्शनी/ मेले में प्रवेश निःशुल्क था। इस प्रदर्शनी/ मेले से होने वाली आय का उपयोग विकलांगों बच्चों तथा शहीद हुए कार्मिकों की विधवाओं के कल्याण कार्यक्रमों के लिए किया जाता है।



परिवार कल्याण केन्द्रों में कार्यरत महिलाओं को श्रेष्ठ महिला कर्मकार का पुरस्कार प्रदान करती हुई श्रीमती कंचन चौबे

दिल्ली में इस तरह इंटर सेक्टर स्तर पर आयोजित होनें वाली यह नौवीं परिवार कल्याण प्रदर्शनी थी।



मुख्य अतिथि श्रीमती कमला आडवाणी प्रदर्शनी में लगी वस्तुओं को देखते हुए



सीआरपीएफ आफीसर्स वाइव्ज वेलफेयर एसोसिएशन की अध्यक्षा श्रीमती कंचन चौबे समापन समारोह में सर्वश्रेष्ठ परिवार कल्याण केन्द्र की ट्राफी ग्रुप केन्द्र, हैदरबाद के अपर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री रतनाकर रमन को प्रदान करती हुई।

बल मुख्यालय में गांधी जयन्ती समारोह का आयोजन

गांधीजी को भारत के ही नहीं बल्कि विश्व के लोग कभी नहीं भूल पांएगे। 2 अक्तूबर, 2003 को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के स्टाफ कैंप में आयोजित 134वीं गांधी जयंती के अवसर पर एक विशेष समारोह में के.रि.पु.बल के महानिदेशक श्री एस.सी.चौबे ने राष्ट्रपिता को भावभिनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि देश को विदेशी शासन से स्वतंत्रता दिलाने में गांधीजी द्वारा की गई महान सेवाओं तथा बलिदान को हमेशा याद किया जाएगा।

श्री चौबे ने आगे कहा कि गांधी जी ने सारे संसार को यह दिखा दिया कि बिना किसी हिंसा का सहारा लिए आजादी प्राप्त की जा सकती है। उन्हें शांति, सत्य एवं मानवता का प्रतीक बताते हुए कहा कि उन्होंने देश के करोड़ों लोगों को इक्टठा कर असहयोग आंदोलन, नमक सत्याग्रह तथा भारत छोड़ों आंदोलन जैसे तीन बड़े क्रांतिकारी अहिंसात्मक के आंदोलन चलाए।



गांधी जयंती के अवसर पर बल के चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों को उपहार प्रदान करते महानिदेशक श्री एस.सी. चौबे



डी.जी. स्टाफ कैम्प, आर.के. पुरम, नई दिल्ली में आयोजित गांधी जयंती समारोह के दौरान राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को श्रद्धा सुमन अर्पित करते अपर महानिदेशक श्री हिमांशु कुमार

इस अवसर पर श्री चौबे ने के.रि.पु. बल के चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों को उपहार भेंट किये। उप महानिरीक्षक डा० ए.पी. माहेश्वरी ने स्वागत जबकि महानिरीक्षक श्री विक्रम श्रीवास्तव ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। देश के सभी भागों में स्थित केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के अन्य कार्यालयों/संस्थानों में भी गांधी जयंती मनायी गयी। अशांत कोसोवो में कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन के तहत तैनात वहां द्रुत कार्य बल के 120 सदस्यों की टुकड़ी ने भी गांधी जयंती मनायी।

सी०आर०पी०एफ० पब्लिक स्कूल रोहिणी का वार्षिकोत्सव

शैक्षणिक संस्थानों को अपनी गतिविधियाँ इस प्रकार संचालित करनी चाहिए जिससे इस महान देश के भविष्य, विद्यार्थियों में छिपी प्रतिभा उजागर हो सके तथा उन्हें

अपने आप को विकसित करने का मौका मिले। सी.आर.पी.एफ पब्लिक स्कूल के वार्षिकोत्सव के अवसर पर 30 सितंबर, 2003 रोहिणी में बोलते हुए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के अपर महानिदेशक श्री हिमांशु कुमार ने विद्यार्थियों का आहवान किया कि वे भारत को विकसित, संपन्न एवं सुदृढ़ राष्ट्र बनाने के लिए कार्य करें। इस अवसर पर श्री हिमांशु कुमार ने स्कूल के विद्यार्थियों के लिए एक कंप्यूटर लेब का भी उद्घाटन किया।



स्कूल के वार्षिकोत्सव पर “श्री कृष्ण नृत्य” नाटिका प्रस्तुत करते हुए छात्र छात्राएं



रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले छात्र छात्राओं के साथ बल के अपर महानिदेशक श्री हिमांशु कुमार एवं प्राचार्य श्री सूरज प्रकाश

इससे पूर्व विद्यालय के प्राधानाचार्य श्री सूरज प्रकाश ने स्कूल की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की तथा स्कूल के प्रबंधक एवं पुलिस उप महानिरीक्षक (प्रशा.) डा० ए.पी. माहेश्वरी ने भी इस मौके पर अपने विचार व्यक्त किये। श्रीमती अंजना कुमार ने मेधावी विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किये तथा स्कूल पत्रिका सृजन का विमोचन भी किया। स्कूल के विद्यार्थियों द्वारा इस अवसर पर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।



सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल के वार्षिकोत्सव पर स्कूल पत्रिका "सृजन" का विमोचन करती हुई श्रीमती अंजना कुमार



स्कूल के शक्ति हाउस को आल राउन्डर की ट्रॉफी प्रदान करती हुई श्रीमती अंजना कुमार

अनमोल वचन

- उत्तम प्रशिक्षण ही जवानों का सबसे बड़ा कल्याण है।
- प्रशिक्षण से अनुशासन का जन्म होता है और अनुशासन ही प्रत्येक संस्था का बुनियाद होता है। अतः किसी भी संस्था की बुनियाद को मजबूत रखने के लिए प्रशिक्षण आवश्यक है।
- दुनिया में ऐसा कोई पैमाना नहीं बना है और न ही कोई मापने वाला यंत्र जो मॉ की ममता, पृथ्वी की सहन शक्ति तथा शहीद की शहादत को माप सके।
- मृत्यु उसी की होती है, जो स्वयं के लिए मरता है, देश के लिए मरने वाला शहीद कहलाता है।
- विद्या के समान दूसरा कोई धन नहीं है, सत्य के समान कोई तप नहीं है।
- असफलता केवल यह सिद्ध करती है कि सफलता का प्रयत्न पूरे मन से नहीं हुआ।
- ईश्वर पर विश्वास न करने वाला ही नहीं, वह भी नास्तिक है जो अपने उपर विश्वास नहीं करता है।
- सज्जन व्यक्ति नारियल के समान होते हैं, जो बाहर से कठोर और अंदर से कोमल। इसके विपरीत दुर्जन व्यक्ति बेर के समान होते हैं, जो बाहर से कोमल लेकिन अंदर से कठोर।
- मनुष्य का आभूषण रूप है, रूप का आभूषण गुण है, गुण का आभूषण ज्ञान है एवं ज्ञान का आभूषण नम्रता एवं क्षमा है।
- उच्च विचार रखने वालों का बुरी संगति कुछ नहीं बिगाड़ सकती, जिस प्रकार चंदन के वृक्ष में भुजंग का वास होता है, लेकिन उस पर भुजंग के विष का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
- सच बोलने का सबसे बड़ा फायदा यह है कि बोलने के बाद यह याद नहीं रखना पड़ता है कि क्या बोला था।
- उन्हें मत सराहो जिन्होंने अनीति पूर्वक सफलता पाई हो और संपत्ति कमाई हो।
- सचिव, गुरू और वैद्य ये तीनों यदि राजा के भय से उसके अनुकूल प्रिय वचन बोलते हैं तो उस राजा का राज्य, धर्म और शरीर तीनों नष्ट हो जाते हैं।
- मंदिर तोड़ दो, मस्जिद तोड़ दो, गिरिजा तोड़ दो गुरूद्वारा तोड़ दो, तब भी ईश्वर तुम्हें माफ कर देंगे, लेकिन किसी का दिल तोड़ने वाले को वे कभी माफ नहीं करते हैं, क्योंकि उसमें साक्षात ईश्वर का वास होता है।
- जिसने पहली अवस्था में विद्या, दूसरी अवस्था में धन, तीसरी अवस्था में पुण्य नहीं कमाया, वह चौथी अवस्था अर्थात बुढ़ापे में कुछ नहीं कर सकता।
- सार्थक और प्रभावी उपदेश वह है जो वाणी से नहीं आवरण सप्रस्तुत किया जाता

है।

- अग्नि में राग द्वेष नहीं है , उसके पास जो जाता है, उसकी ठंड दूर होती है, अन्य की नहीं। इसी प्रकार जो ईश्वर की शरण में जाता है, उसका बंधन कटता है, अन्य का नहीं। जिसके चित्त में राग द्वेष है उसे ईश्वर की कृपा प्राप्त नहीं होती।
- हर पर्वत पर मणि नहीं मिलती, हर हाथी के मस्तक में मोती नहीं मिलता, हर वन में चंदन के वृक्ष नहीं मिलते इसी प्रकार सज्जन व्यक्ति भी विरले ही मिलते हैं।
- दूसरों को नसीहत का पाठ पढ़ाने वाले यदि स्वयं उस पर अमल करना शुरू कर दें तो इस संसार को स्वर्ग बनते देर नहीं लगेगी।

- प्रमोद कुमार शुक्ला
उप निरीक्षक आशु०
107 बटा० द्रुत कार्य बल

(कविता)

मंजिल की राह

जब मंजिल तुमने तय करली है,
तो क्यों पीछे हटते हो तुम।
है कुछ ऐसी बातें तुममें, है कुछ ऐसी हिम्मत,
करो चुनौती को तुम स्वीकार,
बढ़ाओं कदमों का चलते रहो तुम।
रुकने का तुम नाम न लेना,
ठोकर खाकर खुद ही संभलना,
चलते और बस चलते रहना।
मंजिल कितनी भी गहरी हो,
ऐसे ही हार न मानना,
गलतियों को ढूँढ-ढूँढ कर,
अपने आप को सुधारना।
जितना चलना है उसस ज्यादा चलो,
नजरिया अपना सुधार लो,
मोके बार-बार नहीं आते,

तैयार रहो तुम, हर चुनातो को स्वीकार करो तुम।
दुनिया साथ न दे तो भी,
डर है किस बात का,
डगमगाने न दो कदम,
चाहे आंधी या हो पवन।
देखना तुम्हारी कोशिश क्या रंग लाएगी,
सितारा बनकर चमकोगे तुम,
एसी बहार जरूर आयेगी।

संगीता दयिहा
कक्षा-10, सी.आ.पी.एफ. पब्लिक स्कूल
जवाहर नगर, रंगारेड्डी

जिंदगी

चार दिन की है जिंदगी,
कभी हॅसना कभी रोना जिन्दगी,
कॅाटो की सेज है जिन्दगी
फूलों का ताज है जिन्दगी
पाने का नाम है जिन्दगी
खोने का भय है जिन्दगी
दोस्तों का साथ है जिन्दगी
दुशमनी का खेल है जिन्दगी
खुशियों के साथ गम है जिन्दगी
अपने पराए का मेल है जिन्दगी
हर अंदाज में जीना है जिन्दगी
कुछ कर दिखलाना है जिन्दगी।

नवनीता रानी
हिन्दी अध्यापिका
सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल

जवाहर नगर, रंगारेडडी।

आंतरिक सुरक्षा अकादमी द्वारा सद्भावना दौड़ का आयोजन

आन्तरिक सुरक्षा अकादमी, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने और सभी सम्प्रदायों के बीच सद्भावना बढ़ाने हेतु सद्भावना दौड़ का आयोजन किया। यह दौड़ अकादमी प्रांगण से डाकघर, चपरासी लाईन, आर्य समाज मन्दिर, बुद्ध पार्क, नक्की झील, पोलोग्राउंड, तिब्बत मार्मिट, चाचा म्युजियम, विक्टोरिया होटल से गुजरते हुए अकादमी ग्राउंड में समाप्त हुई।

इस दौड़ में 35वें बैच के प्रशिक्षु अधिकारी (सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारी), तीसरे बैच के विभागीय प्रवृष्टि राजपत्रित अधिकारी, संकाय अधिकारी, अधीनस्थ अधिकारी और अन्य रैंक के कर्मचारियों ने भाग लिया।



आंतरिक सुरक्षा अकादमी, माउंट आबू द्वारा आयोजित सद्भावना दौड़ को झंडी दिखाकर रवाना करते उप

महानिरीक्षक श्री अनूप सिंह राठौड़

पुलिस उप महानिरीक्षक श्री एस.एस. राठौड़, ने दौड़ को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। इस अकादमी में 20 अगस्त, 2003 से स्वर्गीय प्रधान मंत्री राजीव गाँधी के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में खेल, फोटग्राफी प्रतियोगिता एवं दौड़ आदि कार्यक्रमों का आयोजन भी किया। इससे पहले 20 अगस्त, 2003 को पुलिस उप महानिरीक्षक श्री ए.एस. राठौड़, द्वारा अकादमी के प्रांगण में सभी संकाय अधिकारियों, प्रशिक्षु अधिकारियों एवं अन्य रैंक के सभी कर्मचारियों को सद्भावना शपथ दिलाई गई।



सद्भावना दौड़ में भाग लेते आंतरिक सुरक्षा अकादमी के अधिकारी एवं जवान

संक्षिप्त समाचार

एन.सी.टी.एस.सी. नई दिल्ली से जुड़ी संस्था 'राष्ट्रीय विज्ञान केन्द्र' ग्वालियर (मध्यप्रदेश) में 9 से 12 सितंबर, 2003 तक राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षकों का सम्मेलन हुआ। समस्त देश से लगभग 300 शिक्षक इसमें आमंत्रित थे। सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल, जवाहर नगर के गणित, विज्ञान एवं कंप्यूटर के चुने गए चार

अध्यापकों ने इस सम्मेलन में अपने बहुमूल्य 'पेपर प्रेजेंटेशन' एवं आधुनिक अध्यापन विधि का प्रदर्शन विज्ञप्ति पत्र एवं मॉडल प्रस्तुत किए। इस चार दिवसीय कार्यशाला में छात्रों में 'वैज्ञानिक तकनीक से पहुंच' की सरल विधियों पर प्रकाश डाला गया। विद्यालय की गणित की अध्यापिका ने रंगीन वर्गाकार आकृतियों द्वारा (a+b)2 जैसे गणितीय फार्मूलों का सफल प्रदर्शन किया। विज्ञान की अध्यापिका ने "मां की गोद में" विषय पर अपने कार्यों का प्रदर्शन किया। समाज-विज्ञान तथा कप्यूटर के अध्यापकों ने शिक्षण पर मल्टीमीडिया का प्रभाव सिद्ध करके दिखाया।



भोपाल में आयोजित राष्ट्रीय स्तर की सेमीनार में गणित का प्रदर्शन करती हुई सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल, जवाहर नगर की अध्यापिका श्रीमती ए. प्रवीन

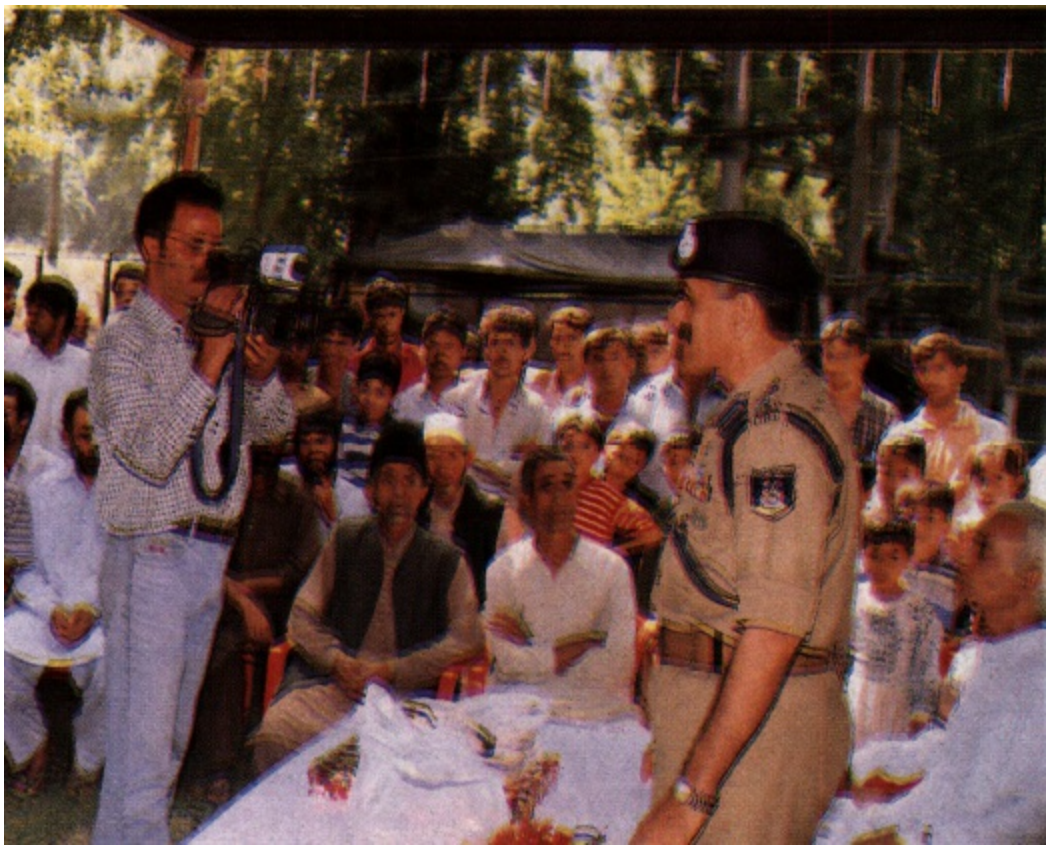


सिगनल ग्रुप केन्द्र रांची में फीता काटकर सद्भावना दौड का शुभारम्भ करती हुई श्रीमती ममता जोआरदार

सिगनल ग्रुप केन्द्र/ केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय (दूरसंचार), के०रि०पु०बल, राही में पूर्व प्रधान मंत्री स्व० राजीव गांधी के जन्म दिवस के उपलक्ष में 19 अगस्त से 5 सितंबर 2003 तक सद्भावना एवं साम्प्रदायिक समरसता पखवाड़ा का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों के साथ सद्भावना दौड भी आयोजित की गई।

संक्षिप्त समाचार

आम जनता व पुलिस के बीच सद्भाव एवं समन्वय का वातावरण पैदा करने के उद्देश्य से 16 व 17 अगस्त, 2003 को 55 बटालियन ने बचरू गांव में पीर बाबा मो० मकई के सालाना वर्ष पर बटालियन की तरफ से जवानों व अधिकारियों की ओर से कमाण्डेंट श्री एल.आर. सिधरा ने सदभावना स्वरूप चादर चढ़ाई। इस अवसर पर बचरू गांव के स्कूली बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।



55 बटालियन के कमांडेट श्री एल.आर सिधरा साम्प्रदायिक सौहार्द स्वरूप स्थानीय लोगों से वार्तालाप करते हुए।



ग्रुप केन्द्र बंगलौर द्वारा मेन्टेन की गई गुलाब वाटिका

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर मैसूर हार्टीकल्चर सोसाईटी, लालबाग, बंगलौर द्वारा एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें बंगलौर शहर में रखरखाव किए जा रहे बागीचों, लॉन, हर्बल बागीचों की जांच पड़ताल की गई तथा ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, बंगलौर द्वारा रखरखाव किए गए हर्बल गार्डन तथा स्टोर ब्लाक के लॉन को सर्वश्रेष्ठ बगीचा घोषित किया गया। 13 अगस्त, 2003 को एक रंगारंग कार्यक्रम में कर्नाटक सरकार के बागवानी मंत्री श्री एम. शिवन्ना ने विजेता को पुरस्कार प्रदान किए। इस समारोह में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को आठ विभिन्न पुरस्कार प्रदान किए गए।



ग्रुप केन्द्र, गांधी नगर के अपर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री पूरन सिंह मुख्य अतिथि केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री हरेन पाठक को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए।

ग्रुप केन्द्र गांधी नगर में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री हरेन पाठक ने क्वाटर गार्द में राष्ट्रीय झंडा फहराया तथा परेड की सलामी ली। श्री पाठक ने ग्रुप केन्द्र की विभिन्न संस्थाओं जैसे परिवार कल्याण केन्द्र, अस्पताल आदि का भ्रमण किया तथा कैम्पस में वृक्षारोपण किया।



गुप केन्द्र, गुवाहाटी के अपर पुलिस उप महानिरीक्षक रमेश चन्द्र शिक्षक दिवस पर स्कूल के शिक्षाकों को सम्मानित करते हुए।

ग्रुप केन्द्र गोहाटी में 5 सितंबर, 2003 को केन्द्रीय विद्यालय गुवाहाटी तथा मोन्टेशरी स्कूल द्वारा बड़ी धूम-धाम से शिक्षक दिवस मनाया गया। ग्रुप केन्द्र गुवाहाटी के अपर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री रमेश चंद्र इस समारोह में मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर छात्रों के अविभावकों को भी आमंत्रित किया गया। मुख्य अतिथि ने श्रेष्ठ शिक्षकों का सम्मान किया तथा शिक्षा जगत में उनके द्वारा किए गये योगदान की सराहना की। इस अवसर पर विद्यालय के बच्चों द्वारा रंगा-रंग कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए।



मध्य सेक्टर, केरिपु बल की भारोत्तोलन प्रतियोगिता टीम के विजेता खिलाड़ी

9वीं अंतर बटालियन मध्य सेक्टर, केरिपुबल भारत्तोलन प्रतियोगिता 23 से 26 जून, 2003 तक आयोजित की गई जिसमें 8,33,25,130 बटालियन एवं ग्रुप केन्द्र रामपुर/ इलाहाबाद की टीमों ने भाग लिया। सभी खिलाड़ियों ने खेल भावना से खेलते हुए अपने उच्च कौशल का प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता में मेजबान टीम 8 बटा० 59 अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान पर रही। 33 एवं 130 बटालियनें 29 अंक प्राप्त कर संयुक्त रूप से द्वितीय स्थान पर रही। जबकी हवलदार कृष्ण चन्द ने 165 कि०ग्रा० का भार उठाकर बेस्ट प्लेयर का खिताब जीता।



वृक्षारोपण करते हुए जम्मू-कश्मीर के वन राज्य मंत्री श्री ठाकुर पूरण सिंह एवं ग्रुप केन्द्र, बनतलाब के अधिकारी एवं जवान

31 जुलाई से 5 अगस्त, 2003 तक ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, बनतलाब में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। 31 जुलाई, 2003 को मुख्य अतिथि श्री ठाकुर पूरण सिंह जी, माननीय राज्य वन विभाग मंत्री, जम्मू एवं कश्मीर, श्री स्टाली कॉन्स्टेंटाइन, पुलिस उप महानिरीक्षक, जम्मू रेंज, श्री ओम दयाल माथुर, अपर पुलिस उप महानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र, बनतलाब एवं उच्चाधिकारियों एवं जवानों ने केन्द्रीय विद्यालय बनतलाब एवं ग्रुप केन्द्र परिसर में वृक्षारोपण किया। इस अवसर पर केन्द्रीय विद्यालय के बच्चों ने पर्यावरण एवं वृक्षों की महत्ता को उजागर करते हुए रंगा-रंग कार्यक्रम प्रस्तुत किये।



130 बटा. केरिपु बल द्वारा लगाई प्याऊ पर पानी पीता एक राही

130वीं बटालियन, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने मथुरा में समाज सेवा कार्यक्रम के तहत भारतीय खाद्य निगम गणेशपुरा, वर्किंग वुमेन्स हास्टल, नवादा कैम्प के सामने पीने के पानी की व्यवस्था की ताकि भीषण गर्मी में आने जाने वाले प्यासे लोग अपनी प्यास बुझा सकें। साथ ही आस-पास के जानवरों के लिए भी पानी उपलब्ध कराया। बटालियन के इस प्रयास को जिला प्रशासन तथा आस-पास के लोगों ने सराहा।

के०रि०पु०बल की "इन्ट्रानेट सीलो" कम्प्यूटरीकरण परियोजना शुरू

देश के विशालतम एवं प्राचीनतम केन्द्रीय अर्धसैनिक बल केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने पूर्ण कंप्यूटरीकरण की ओर एक बड़ा कदम उठाया है और "इन्ट्रानेट सीलो" नामक एक अभिनव एवं उद्यमपरक परियोजना आरंभ की है। इस अवसर पर 3 नवंबर, 2003 को बल मुख्यालय में उपस्थित प्रतिष्ठित सभा को संबोधित करते हुए

केन्द्रीय गृह सचिव श्री एन० गोपालास्वामी ने कहा कि पिछले दशक में कंप्यूटरों के क्षेत्र में हुई उन्नति से कुलीन वर्ग के लोगों की जीवनशैली एवं कार्यशैली में आमूल-चूक परिवर्तन आया है। सौभाग्यवश सूचना प्रौद्योगिकी भारत में भी क्रान्ति लाई है और इसे अपनाने से हमें भी अत्यधिक लाभ हुआ है।

भारत सरकार द्वारा सूचना प्रौद्योगिकी से संबंधित नीति की घोषणा किए जाने से पूर्व ही कंप्यूटरीकरण की पंच वर्षीय योजना बनाने के लिए श्री गोपालास्वामी ने बल के अधिकारियों एवं जवानों को बधाई देते हुए कहा कि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने कंप्यूटरीकरण के संबंध में दूरदर्शिता दिखाते हुए इस प्रौद्योगिकी को अपना कर इसका पूरा लाभ उठाया है। उन्होंने आगे कहा कि "मैं केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की प्रशंसा करता हूं कि इसने बल में विभिन्न स्तरों पर पर्याप्त कंप्यूटर संस्कृति का विकास ही नहीं किया बल्कि डाटा संग्रहण संबंधी बेहतर प्राथमिक कार्य भी किया है जिससे कि यह सुनिश्चित हो कि "सीलो" का पहले ही दिन से प्रयोग किया गया।"

इस अवसर पर केरिपुबल के महानिदेशक श्री एस०सी० चौबे ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि इन्ट्रानेट परियोजना बल के इतिहास में वस्तुतः एक क्रान्तिकारी घटना है। विभिन्न स्तरों के अधिकारियों द्वारा किसी भी समय, किसी भी स्थान पर केवल कुछ बटन दबाने से ही सुसंगत एवं संसाधित सूचना की जानकारी हासिल कर उस पर निर्णय देने की अपनी गुणवत्ता में वृद्धि द्वारा बल की प्रभावशीलता में पर्याप्त वृद्धि होगी। इससे कार्यालय में दैनिक काम-काज में लगी पर्याप्त जन-शक्ति की बचत होगी तथा इस जन-शक्ति का सदुपयोग उन क्षेत्रों में किया जा सकेगा जहां केवल जवान ही कार्य कर सकते हैं और उनके कार्यों को मशीन द्वारा नहीं किया जा सकता।



केरेपु बल मुख्यालय, नई दिल्ली में इन्ट्रानेट सीलों को शुरूआत करते भारत सरकार के गृहसचिव श्री एन. गोपालास्वामी

उप महानिरीक्षक (संचार) ब्रिगेडियर(सेवानिवृत्त) जे०एस० साहनी, और एन०आई०आई०टी० टैक्नालोजी के अध्यक्ष श्री अरविन्द ठाकुर ने इस परियोजना का कंप्यूटरीकृत प्रस्तुतीकरण प्रस्तुत किया। केरिपुबल के अपर महानिदेशक श्री हिमांशु कुमार ने धन्यवाद प्रस्ताव ज्ञापित किया।

देश में आई सूचना प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने वर्ष 1997 में बल के संपूर्ण कंप्यूटरीकरण के लिए पंच वर्षीय योजना तैयार की थी और तदुनसार भारत सरकार ने आरंभिक चरण में एकीकृत अनुप्रयोग साफ्टवेयर के विकास हेतु 1.39 करोड़ रूपये की संविदा प्रदान की थी। अब, सरकार ने पहले चरण में महानिदेशाल, सेक्टर मुख्यालयों(महानिरीक्षक कार्यालयों), रेंज मुख्यालयों (उप महानिरीक्षक कार्यालयों) तथा ग्रुप केन्द्रों के सभी कार्यालयों में लागू की जाने वाली "इन्ट्रानेट सीलो" परियोजना हेतु हार्डवेयर एवं नेटवर्क के लिए कुल 39.07 करोड़ रूपये की स्वीकृत प्रदान की है। जुलाई, 2004 तक पूर्ण होने वाले आगामी चरण में इस परियोजना का विस्तार फील्ड में कार्यरत केरिपुबल की बटालियनों तक किया जाएगा।



उप प्रधानमंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी की धर्मपत्नी श्रीमती कमला आडवाणी दीप प्रज्वलित कर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की कल्याण प्रदर्शनी एवं मेला का उद्घाटन करती हुई।



इस वर्ष के सर्वश्रेष्ठ परिवार कल्याण केन्द्र, ग्रुप केन्द्र हैदराबाद के अपर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री रत्नाकर रमण को ट्रॉफी प्रदान करती हुई केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के अधिकारियों की पत्नियों की एसोसिएशन की

अध्यक्षा श्रीमती कंचन चौबे

रजि. न. 4767/87



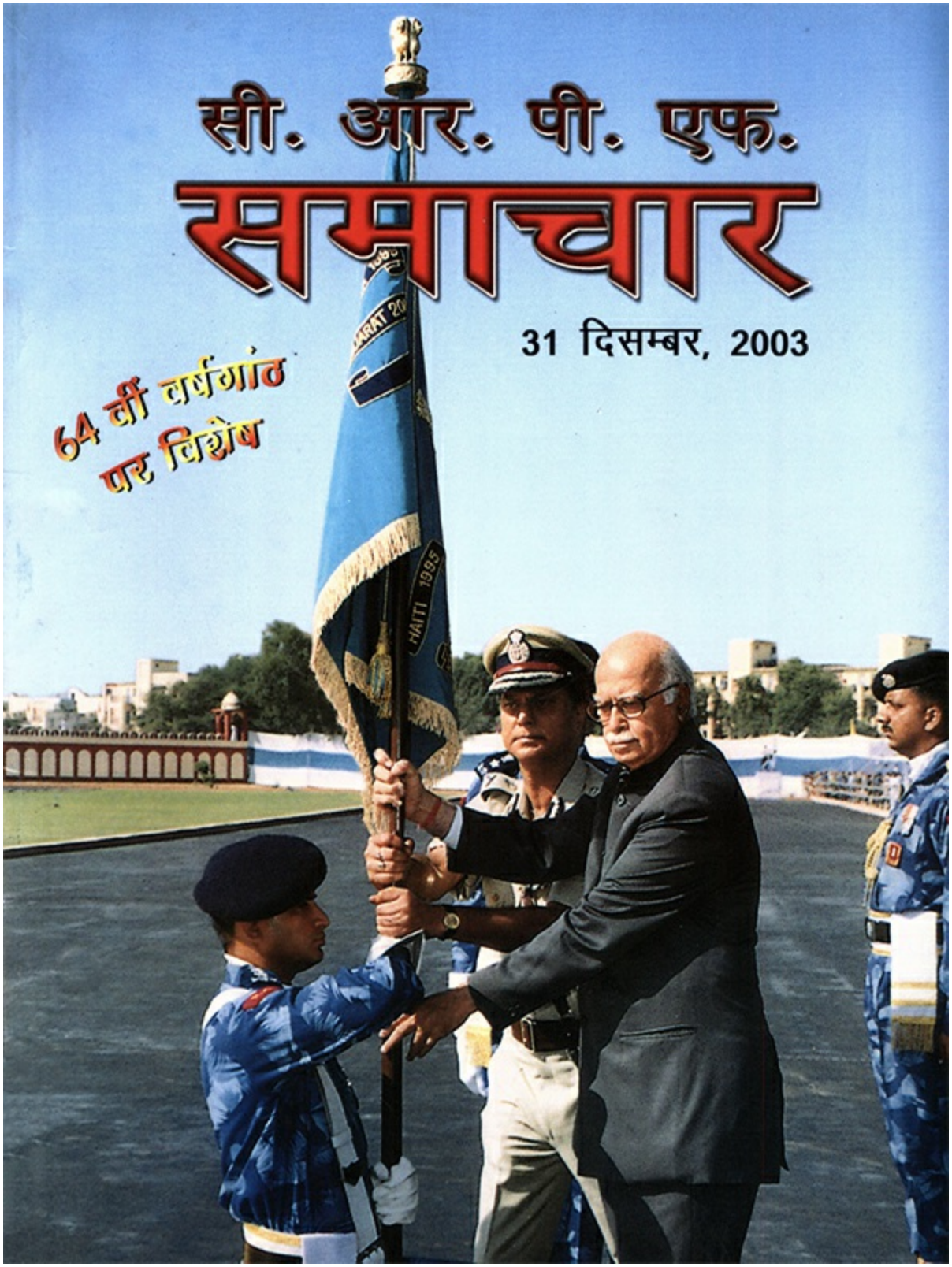
शिक्षक दिवस पर आयोजित एक समारोह में
नृत्य प्रस्तुत करतीं ग्रुप केन्द्र, गुवाहाटी के मान्टेसरी स्कूल की छात्राऐं।

सी. आर. पी. एफ.

समाचार

31 दिसम्बर, 2003

64 वीं वर्षगांठ
पर विशेष





सरदार पोस्ट पर शहीद हुए जवानों के सम्मान में बल मुख्यालय में रखे रज-कलश पर *9* अप्रैल, *2003* को शौर्य दिवस के अवसर पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि देते हुए केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री हरेन पाठक



बल मुख्यालय में स्वचालित "इन्ट्रा नेट सेलो" कम्प्यूटरीकरण की परियोजना का शुभारम्भ करते केन्द्रीय गृह सचिव श्री एन. गोपालास्वामी



सी.आर.पी.एफ. समाचार

खण्ड-16 अंक-8
31 दिसम्बर, 2003
10 पौष, शक 1925

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
रणबीर सिंह

चित्र
फोटो अनुभाग के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं यूनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशालय के.रि.पु. बल ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से
डी.जी. महापात्र

कम्पोजिंग एवं प्रिंटिग
सी.आर.पी.एफ. प्रेस नई दिल्ली-110072

सम्पादकीय सलाहकार मण्डल अध्यक्ष
हिमांशु कुमार, अपर महानिदेशक

सदस्य

विक्रम श्रीवास्तव, महानिरीक्षक (कार्मिक एवं मुख्यालय)
आर.के. शर्मा, महानिरीक्षक (सम्भरण एवं निर्माण)
ए.पी. माहेश्वरी, उप महानिरीक्षक (प्रशासन)
डी.एन.एस. बिष्ट, उप महानिरीक्षक (परिचालन)
एम.एस. रावत, उप महानिरीक्षक (कार्मिक)
सी.वी. मैथ्यू, अपर उप महानिरीक्षक (प्रशिक्षण)
आर.के. गौड, अपर उप महानिरीक्षक (सम्भरण)
प्रवीण कुमार, उप वित्तीय सलाहाकार

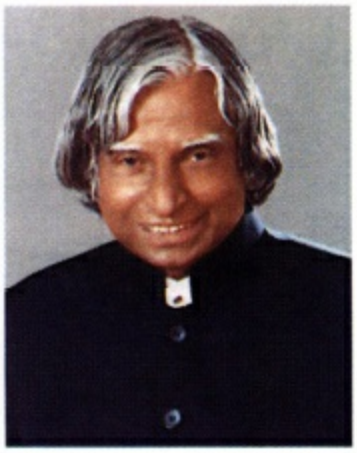
डॉ.जी. महापात्र, जनसम्पर्क अधिकारी
जोन ए. मैथ्यू, उप कमांडेन्ट (परिचालन)
मणि भूषण प्रसाद, हिंदी अधिकारी

इस अंक में

- शुभ कामना सन्देश
- CRPF : The peace keepers of the nation
- CRPF : The sentinel of peace
- Salam CRP
- CRPF Beyond the Frontiers
- CRPF : On the march of modernisation
- CRPF in its new avtar : A protector of enviornment
- Intranet Selo
- Terrorism and Human Rights
- Unit Training
- Cop Scan
- Mahila Bn in CRPF – An asset to the force
- Success is mainly attitude
- जम्मू-कश्मीर में के.रि.पु. बल
- उत्तर पूर्व में के.रि.पु. बल
- केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में खेल
- सामुदायिक विकास-एक नया परिप्रेक्ष्य
- विद्यालय का वह अविस्मरणीय दिवस

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

–संपादक



सत्यमेव जयते

राष्ट्रपति
भारत गणतंत्र
PRESIDENT
REPUBLIC OF INDIA

MESSAGE

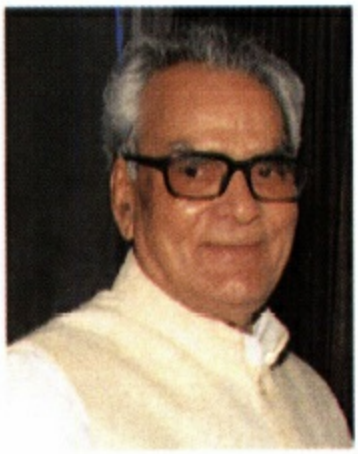
I am happy that the Central Reserve Police Force is celebrating its 64th Anniversary on December 28, 2003.

The CRPF is contributing commendably to the task of combating insurgency and extremism in the country. The personnel of this paramilitary force have displayed high standards of professional competence and devotion to duty. I am confident that the CRPF would continue to work with dedication and commitment in the service of the nation.

On this occasion, I extend my warm greetings and felicitations to all ranks of the Central Reserve Police Force and their families and wish the Anniversary celebrations all success.

(A.P.J. Abdul Kalam)

New Delhi
December 19, 2003.



सत्यमेव जयते

उप–राष्ट्रपति, भारत, नई दिल्ली
VICE-PRESIDENT OF INDIA
NEW DELHI

MESSAGE

I am happy to know that Central Reserve Police Force is celebrating its 64th Anniversary on December 28, 2003. My greetings to all ranks of the CRPF and their families

The contribution of Central Reserve Police Force towards the nation's fight against insurgency in different parts of the country and safeguarding the unity and integrity of the country has been well recognised. The personnel of the force in all these years of service to the nation have made their countrymen proud by their valour and professionalism. In the years ahead, the CRPF, I am sure shall continue to serve the nation with exemplary courage and commitment.

My best wishes.

(BHAIRON SINGH SHEKHAWAT)

New Delhi
15th December, 2003



सत्यमेव जयते

प्रधान मंत्री
Prime Minister

MESSAGE

I am happy to know that the Central Reserve Police Force (CRPF) is celebrating its 64th Anniversary on December 28, 2003.

The CRPF has successfully faced secessionist, terrorist and communal forces in some of the most difficult and trying situations. This is testimony to the courage and dedication of the members of the Force, who have always carried out their duties and responsibilities with competence and loyalty. I am confident that the CRPF will continue to serve the nation well, in the future.

On this special occasion, I extend my best wishes to all members of the

CRPF and their families.

(A.B. Vajpayee)

New Delhi
December 13, 2003



सत्यमेव जयते

L. K. ADVANI
DEPUTY PRIME MINISTER

MESSAGE

I am very happy to learn that Central Reserve Police Force is celebrating 64th Anniversary on 28th December, 2003.

Raised in the year 1939, the CRPF has been playing a significant role in safeguarding the internal security and maintaining law and order in various parts of the country. Its history is a story of glorious traditions and sacrifices. The Units of the force incessantly move from East to the West or from North to the South to quell a communal riot at one place or fight insurgency and terrorism at the another. The Force has been rendering a very useful service to the country in the peaceful conduct of elections all over the country. The Rapid Action Force, a specialized wing of the CRPF

which has proved its effectiveness in controlling communal riots and rendering valuable assistance during rescue and relief operations at the time of natural and man-made calamities, has been conferred the President's Colour this year in recognition of its service.

On this happy occasion, I convey my best wishes to the members of the Force and their families.

L. K. Advani

(L.K. ADVANI)



सत्यमेव जयते

मंत्रिमंडल सचिव
CABINET SECRETARY
NEW DELHI

13th December, 2003

MESSAGE

I am extremely happy to learn that the Central Reserve Police Force (CRPF) is celebrating its 64th anniversary on December 28, 2003.

Since its inception, the CRPF has been playing a pivotal role in maintaining internal security in different parts of the country. The Force performs an extremely arduous task in that it fights the enemy within and secures the citizens of India against the nefarious activities and designs of criminals, saboteurs and terrorists.

Known for valour, discipline and devotion to duty, a large number of brave soldiers of the CRPF have laid down their lives so that their compatriots may live in peace. The Force has also won numerous gallantry

and distinguished service awards since its raising.

On this joyous occasion, I extend my warm greetings and felicitations to all men and officers of the Force and their families.

(Kamal Pande)
Cabinet Secretary



सत्यमेव जयते

गृह सचिव
HOME SECRETARY
भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA

North Block
New Delhi.

12 December 2003

MESSAGE

It gives me immense pleasure in extending my warm greetings and felicitations to all ranks of Central Reserve Police Force (CRPF) and their families on the occasion of 64th Anniversary of the Force. I am happy to know that CRPF would be organizing a Conference of Senior Officers on professional issues and important regimental functions.

The CRPF is rendering yeoman service to the Nation and has won many laurels in fighting terrorism and extremism. The personnel of this elite force have been discharging their onerous responsibilities with devotion and commitment and have maintained the high tradition of the Force. The entire country is proud of their valuable service.

I have no doubt that Officers and men of the Force will achieve greater heights of excellence and professionalism in their mission in the days to

come.

N. Gopalaswami)

महानिदेशक की ओर से



केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल अपनी गौरवशाली राष्ट्रसेवा के चौसठ वर्ष पूरे कर रहा है।

इस 64 वर्ष के कार्यकाल में राष्ट्रसेवा के पर्थ पर इस बल ने अनेकों कीर्तिस्तंभ खड़े किये हैं जोकि स्वयं में अद्वितीय हैं, चाहे वो 'हाट स्प्रिंग्ज' या सरदार पोस्ट पर खूनी जंग लड़ने का अवसर हो अथवा आतंकवाद/उग्रवाद/नक्सलवाद ग्रस्त क्षेत्रों में विद्रोहियों अथवा उग्रवादियों से मुकाबला करने के क्षण हों। इस बल के जवानों ने उच्च कोटि की परम्परा, सेवा-भक्ति, कर्त्तव्यनिष्ठा एवं समर्पण भाव को जीवित रखते हुए राष्ट्र की अस्मिता पर आँच नहीं आने दी है। यहां तक कि प्राकृतिक आपदाओं में राहत प्रदान करने, साम्प्रदायिक उन्माद की भीषण अवस्थाओं में शांति स्थापित करने, सामान्य चुनाव सम्पन्न कराने इत्यादि दायित्वों के निर्वहन में भी इस बल की भूमिका सदैव अहम रही है। वर्ष 2003 में इस बल ने माह फरवरी तथा माह दिसम्बर में कई प्रदेशों में शांतिपूर्ण एवं निष्पक्ष चुनाव सम्पन्न कराने में भरपूर योगदान दिया है। इस वर्ष अमर नाथ यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं की सुरक्षा का पावन उत्तरदायित्व भी इस बल ने हर वर्ष की भांति ब-खूबी निभाया है। विगत 5 वर्षों की तुलना में इस वर्ष त्रुटि-विहीन एवं दुर्घटना रहित सुरक्षा व्यवस्था का मूल श्रेय इस बल को प्राप्त हुआ है।

साम्प्रदायिक दंगों से जूझने एवं प्राकृतिक आपदाओं से निपटने में निपुण केन्द्रीय रिजर्व पुलिस के विशिष्ट बल "आर०ए०एफ०" की विगत 11 वर्षों की उत्कृष्ट एवं समर्पित सेवा का सम्मान करते हुए महामहिम राष्ट्रपति जी ने 7 अक्टूबर, 2003 को आर०ए०एफ० को ध्वज प्रदान कर राष्ट्र की ओर से बल को सुशोभित किया।

उल्लेखनीय है कि कश्मीर तथा उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में व्याप्त संघर्ष पूर्ण वातावरण में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की अधिकांश इकाईयां वर्षों से देशद्रोही तत्वों से लोहा ले रही हैं और उनके सभी मनसूबों को नाकामयाब करती आयी हैं। वर्ष 2001 में संसद

पर हुए हमले तथा वर्ष 2002 में जम्मू में रघुनाथ मान्देर में हुए फिदायनी हमलों के प्रत्युत्तर में प्रदर्शित इस बल के जवानों की बहादुरी एवं सामर्थ्य से कौन परिचित नहीं है। हाल ही में देश के कई भूभागों में नक्सलवादियों ने भी आतंकपूर्ण वातावरण उत्पन्न कर दिया है। उनसे जूझने में भी इस बल के अधिकारियों एवं जवानों ने कोई कसर नहीं छोड़ी है। आतंकवादियों तथा राष्ट्र विरोधी तत्वों द्वारा अपनाये जा रहे सभी तरीकों को विफल करने में यह बल निपुण है, चाहे वह विस्फोटकों का प्रयोग हो या फिदायनी हमले अथवा विकसित शस्त्रों का प्रयोग। बल की धर्मनिरपेक्ष छवि एवं त्रुटि-रहित सेवाओं को दृष्टिगत रखते हुए भारत सरकार ने इस बल को सम्पूर्ण आन्तरिक सुरक्षा का दायित्व भी सौंपने का निर्णय लिया है।

आधुनिकीकरण में यह बल पीछे नहीं रहा है। शस्त्रों, उपकरणों, साज-सज्जा, वाहनों एवं संचार व्यवस्था से लेकर कम्प्यूटर-नियंत्रित व्यवस्थाओं के उपलब्ध स्वरूपों को सम्यक रूप में अपनाने में इस बल ने पहल की है। इसी वर्ष 3 नवम्बर को केन्द्रीय गृह सचिव ने स्वचालित कम्प्यूटर इन्टर नेट प्रोजेक्ट "सैलो" का शुभारम्भ किया। वर्ष 2003, जिसे "ई-गवरनेंस" वर्ष भी घोषित किया गया, की यह विशिष्ट उपलब्धि रही है।

1939 में एक बटालियन के रूप में प्रारम्भ यह बल विकास की अभूतपूर्व ऊँची छलांग लगाकर शीघ्र ही वर्तमान में 154 बटालियनों से निकट भविष्य में 200 से भी ऊपर की नफ़री पार कर लेगा। गुणवत्ता एवं आकार, दोंनों में यह बल विशालतम रहेगा। राष्ट्र स्तर पर ही नहीं अपितु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी संयुक्त-राष्ट्र मिशन के अन्तर्गत कोसोबो में इस बल के अधिकारी एवं जवान अपने कर्त्तव्यों के प्रति समर्पित हैं। इस बल की महिला बटालियन भी दक्षता, कौशल एवं ख्याति में पीछे नहीं रही है। जहां एक ओर आताताइयों से मुकाबला करने में प्राणों की बाज़ी तक उन्होंने लगाई है, वहीं खेलों की राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय स्पर्धाओं में इस बल के खिलाड़ियों के रूप में के०रि०पु०बल के इन सितारों ने हमें अग्रिम पंक्ति में ला खड़ा किया है। हमें अपने इन सभी साथियों पर गर्व है।

कर्त्तव्य-पथ पर अंतिम सांस तक डटे रहने की परंपरा हमें विरासत में मिली है। अतः हमें इस परंपरा को बनाए रखना है। बल के इतिहास को एक नजर देखते हुए मैं यह कह सकता हूँ कि हमारा एक-एक जवान अपने दायित्व के सफल निर्वाह के लिए प्रतिबद्ध है। सफलता हमारी है, इसमें हमें तनिक भी संदेह नहीं है। इस मौके पर मैं बल के सभी सदस्यों और उनके परिवारों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

जय हिंद।

(एस० सी० चौबे)
महानिदेशक केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल

CRPF : THE PEACE KEEPERS OF THE NATION

– D.G.MOHAPATRA
PRO, CRPF



Officers and jawans paying tribute at the Martyrs Memorial at Hot Spring (Ladakh)

The Central Reserve Police Force (CRPF) has its origin on 27th July, 1939 at Neemuch as the Crown Representative's Police. The primary task of the force was to help the Princely States to preserve "Law and Order". The Force was also utilised for guarding the German and Italian detenues, tackling of the Hur menace in 1942, anti-dacoity operations in Central India etc.

The Independence of the country marked an important watershed in the life of the Force which was renamed as the Central Reserve Police by an Act of Parliament on 28 December, 1949.

This Act constituted the CRPF as one of the Armed Forces of the Union. Sardar Valiabhbhai Patel, the then Union Home Minister visualised a multidimensional role for it in tune with the changing needs of the newly independent nation. The Force was presented colours on 19th March 1950 by Sardar Patel.

FOR THE PRIDE OF THE MOTHERLAND

As the demand continued to increase, the Force grew in size. The work of the CRPF detachments at Bhuj, Pepsu and Chambal Ravines, attracted notice of the authorities and praise from the people. It was the CRPF which bore the brunt of the first onslaught of the Chinese at Hot Springs (Ladakh) on October 21, 1959 when a small CRPF patrol was ambushed and over-whelmingly out-numbered by the Chinese. In the ensuing skirmish, as many as 10 CRPF men laid down their lives for the Mother land. Their Martyrdom on October 21 is observed throughout the country as the 'Police Commemoration Day'.



Dr. K.R. Narayanan, the then President giving away "Ashok Chakra" award posthumously to husband of Late CT(M) Kamlesh Kumari of CRPF (inset)

A small contingent of 2nd Bn CRPF repulsed the 3500 men strong Pakistani Brigade attack on 9th April, 1965 at Sardar Post in Gujarat in

which 34 Pakistani soldiers were killed. In the skirmish six valiant CRPF men laid down their lives at the call of duty. The day is being observed as 'Day of Valour' in the Force.

In Srilanka, two CRPF Battalions and one Company of Mahila Battalion were deployed as a part of the IPKF. The first major offensive of the LTTE was directed against the CRPF in which the Force lost four men. This and other encounters found the CRPF men successfully repelling the attacks launched by the LTTE in an unconventional warfare.

The brave jawans of the Force had a day of testing their mettle when a suicidal attack was done on Parliament House on December 13, 2001. In exchange of fire between the CRPF and militants that continued for about 30 minutes, all the five militants were eliminated. Woman Constable Kamlesh Kumari while showing exemplary courage and presence of mind sacrificed her life at the call of duty. The both houses of Parliament including the Prime Minister and Home Minister have applauded the role of CRPF jawans in the operation. One Ashok Chakra (posthumously) and 4 Shaurya Chakra were presented to the brave CRPF Jawans.

During 2002, role of CRPF in liquidating two militants who sneaked into the Raghunath temple at Jammu has been commended by one and all. Besides timely action at Akshardham (Gujarat) temple during militant attack saved hunderds of lives which has earned high appreciation from all quarters.

The history of CRPF is a saga of sacrifice and sustained dedication to national integration, unity and maintenance of peace in the country. The CRPF has made its presence felt all over the country. Whether it is external danger, insurgency, communal clashes or natural calamities, the Force is always there to protect the lives of the citizen. The Force has always done justice to the confidence posed by the Government and the people.

EXPANSION AND MODERNISATION

According to **'One Border – One Force'** as envisioned by the Committee on Kargil and the recommendations of the Group of Ministers, the process of taking over the counter insurgency role by CRPF has already begun phase wise. The CRPF has already replaced 05 Battalions of BSF in Manipur and replacement of BSF Battalions in Jammu & Kashmir has also

started. This progressive taking over would be completed by 2005 and to meet this demand CRPF is raising 64 new Battalions. 17 Bns have already been raised during last two years and this year the recruitment process has already started to raise 22 new battalions.

With raising of 25 new battalions next year, the strength of CRPF battalions is going to be more than 200 battalions which would entitle the Force to be the largest Para-Military Force in the World.

Besides the above the Govt. of India has sanctioned to establish 8 more Group Centres increasing its number to 38. The Force has eight Training Institutions, three Base Hospitals and one Composite Hospital. It is the only Para Military Force in the Country which has two Mahila Battalions.

For gearing up the Force to fight insurgency independently, CRPF has taken up a five year modernisation plan and has started improving its weaponry, equipment, mobility, communication system and training at a cost of Rs. 543 crores.

Since intelligence has a major role in counter insurgency operations, therefore CRPF is setting up its own intelligence apparatus on the line of other Para-Military and Police Force for which the CRPF personnel are being now trained.



Shri A.B. Vajpayee, the Prime Minister felicitating CRPF Jawans who foiled the Fidayeen attack

on Parliament

The CRPF has an unique experience in tackling suicide attacks in J&K where this new phenomenon came into being during 2000 beginning with attack at BSF HQ at Bandipara. Militants achieved lot of publicity at National and International level from this and hence they made it a continuous process. To counter it, CRPF has taken number of measures and successfully nullified the attacks. It goes to the credit of CRPF that probably it is the only Force in J&K, where Fidayeens could not get away after entering its camp?.



A Proud Moment: Sardar Vallabhbhai Patel presenting colours to CRPF - the Peace Keepers of the Nation on March 19, 1950

During last 17 months, CRPF has achieved a major success in respect of CRPF-Militant casualty ratio in the State of J&K. During June 2002, this ratio was 1:6 whereas the same shows further improvement in October 2003 standing at 0:11.

The benefit from the advent of Information Technology, CRPF has taken a major step towards total computerisation of CRPF and has recently launched the first phase of a project 'Intranet Selo' at a cost of Rs.41 crores. This covers all offices from Directorate General to Group Centres. The project would be extended down to CRPF battalions in the field in the next phase which is to be completed by July 2004.

The bulk of CRPF Companies (88%) are deployed in Jammu and Kashmir, North-Eastern Region and Left Wing Extremism affected States to quell the insurgent activities and to maintain law and order. In the line of duty, as many as 1300 brave soldiers of the Force have laid down their lives during last six decades.

During the last 15 years beginning from 1988, CRPF has killed 4233 extremists and apprehended 44156. The Force has recovered 22827 major arms and 485060 rounds of ammunition.

Conduct of elections without deploying CRPF perhaps can no longer be thought of. The role of CRPF in smooth conduct of free and fair elections is well known and hence there is always demand for deployment of the Force. During the State Assembly Elections in Chaattisgarh, MP and Delhi in Dec 2003, CRPF deployed 140 Companies besides playing the role of all Forces Co-ordinator.

The CRPF also extends its assistance for socially useful works in the form of free medical camps at different places in which patients in thousands are checked and given medicines free of cost. A record number of blood donations were made by officers and men of the CRPF in blood donation camps organised by different Battalions of CRPF.

RAF – ACTING FAST

The Rapid Action Force (RAF), formed on October 7,1992 to deal with communal riots and riot like situations, had made its impact and won

confidence of the people from the very beginning. **Its mere presence has a preventive effect on a riot situation. During 2002, their contribution in quelling riot and providing rescue and succour to the victims in Gujarat has been applauded by all sections of people.** In normal times, RAF Battalions carry out exercises to familiarise themselves with the ground situations, so that they have the full cooperation of the people while tackling a situation. They have given a credit-worthy performance to the full satisfaction of the State Governments and also earned high appreciation from the public and the media by their effective and firm handling of the situation.

RAF also plays a vital role in peaceful organisation of various fairs and festivals like the Muharram, Shivaji Jayanti, Ganesh Chaturthi, Car Festival of Lord Jagannath and Dashahra etc. held in different parts of the country. RAF personnel assist the local administration in carrying out rescue and relief operations during natural calamities and providing medical aid to the victims. Their yeoman service during the earthquake at Jabalpur(MP) & Gujarat, super cyclone in Orissa, plague in Surat and Landslide in Sikkim are still alive in memory of people of the States concerned. **In recognition of its services the President of India has been pleased to honour the Force with Colour, which was presented by the Dy. Prime Minister Shri L.K.Advani on its 11th Anniversary.**



Shri L.K. Advani, the Dy. Prime Minister giving away the 52nd All India Police Aquatic Championship trophy to CRPF.

ENVIRONMENT

The CRPF has undertaken the job of massive tree plantation and planted trees in lakhs in various parts of the Country. In Orissa, Barbera Forest (about 24000 hectares) was adopted by CRPF during 1994 for preservation and protection of flora and fauna. It has been able to check effectively the illegal felling of trees and poaching of wild life. Forest wealth worth more than Rupees One Crore has been recovered by vigilant CRPF personnel from the miscreants.

TRAINING

The CRPF has its own Academy – Internal Security Academy at Mount Abu (Rajasthan) to provide basic and in-service training not only to the officers of CRPF but also to officers from other Police Forces in the country and abroad. A Counter-Insurgency and Anti-terrorist training school at Dayapur, Silchar (Assam) trains personnel in these areas. There are three Central Training Colleges at Neemuch (Madhya Pradesh), Avadi (Tamil Nadu) and Nanded (Maharashtra). These institutions organise training courses for officers and other ranks of the CRPF and also of State Police Forces. Besides, there are four Recruits Training Centres at Neemuch (Madhya Pradesh), Avadi (Tamil Nadu), Pallipuram (Kerala) and Srinagar (J&K). These institutions organise basic and follow up training for the officers and men of the Force. A CRPF Academy is coming up at Kadarpur (Haryana) for which development of infrastructure is under progress. Subjects concerning Human Rights have been included in the syllabi of basic training, in-service and promotional courses. Directions in the form of do's and dont’s on Human Rights have been formulated and issued down to the individual level.



Humane Face : CRPF extending helping hand in Pulse Polio drive

SPORTING SPIRIT

Many a bright star has shone on the sports firmament of the CRPF during the last few decades. Names of Arjuna Award winner like G.S.Randhawa, Hari Chand, R.S.Bal,Khazan Singh and Kunjarani who are CRPF's gifts to the world of sports shall always be remembered with pride, not only by the officers and men of the CRPF but by all sports lovers in the world.

While CRPF men excelled in the field of sports, CRPF women have also come to the forefront and emulated the feat of the men. Asst. Commandant Miss N.Kunjarani Devi hailing from Manipur has been instrumental in popularising the sports of weightlifting amongst women. CRPF sports persons like Jeevan Jyothi, N.Laxmi, Raja Ram Tokas, Tilak Thapa, Paramjit Singh and Rigzen Angmo also have shown outstanding performance at National and international levels in different fields.

AWARDS

Since its inception, the CRPF has earned I George Cross, I Ashok Chakra, I Vir Chakra,4 Shaurya Chakra, I Padmashri, 3 Kings Police Medals for Gallantry, 49 President's Police and Fire Service Medals, 101 President's Police Medals for Gallantry, 143 President's Police Medals for Distinguished Service, 533 Police Medals for Gallantry, I393 Police Medals for Meritorious Service, 4 Vishist Seva Medals, I Yudh Seva Medal, 5 Sena Medals, 77 Prime Minister's Police Medal for Life Saving, One Jeevan Raksha Padak and 5 IPMG.

The CRPF has all India composition. In every sub-units of the CRPF, there are men from all religions and from all parts of the country. **It is in the true sense a National Force. The national and secular composition of the Force is its strength.** It is because of this reason that the people have total faith in its performance and efficacy. Upholding its motto, "Service and Loyalty", the CRPF pledges to meet all these challenges with determination and perform effectively its role as the 'Peace Keepers of the Nation'.



Dr. A.P.J. Abdul Kalam, President interacting with Shri Sukhjinder Singh, IGP, CRPF during his visit to Tripura last month



Shri S.C. Chaube, DG, CRPF calling on Shri Bhairon Singh Shekhawat, Vice President

NATION PAYS HOMAGE TO MARTYRS OF 13Th DECEMBER, 2001



Shri L.K. Advani, Dy. PM paying tribute to the heroes on the occassion of the 2nd anniversary of Fidayeen attack on Parliament House



Smt Sushma Swaraj, Union Minister of Parliamentary Affairs paying respects on 13th Dec, 2003



Shri S.C. Chaube, DG, CRPF paying homage to the Martyrs



Brave nine security personnel who sacrificed their lives in foiling the Fidayeen attack on Indian Parliament were solemnly remembered by the Nation

CRPF : THE SENTINEL OF PEACE

– D.R. Kaarthikeyan,
Former : DG, NHRC,
Director, CBI and Spl. DG, CRPF



Battle of Sardar Post (Rann of Kutch)

Sixty four years may be a long period in the life of an individual, but it is only a small step in the long life of any institution, particularly a glorious and purposeful organization like the Central Reserve Police Force.

Years of my association with CRPF convince me that in it's short span it has already established as an unique versatile, dynamic, patriotic and most

dependable force. It's achievements are many in different theatres of operations.

Whether it is as part of Indian Peace Keeping Force in Sri Lanka, Anti Terrorist operations in J&K, Anti Insurgency operations in the North East or anti extremist operations in Naxalite infested areas of Andhra Pradesh and other areas in Dandakaranya region, CRPF has proved itself as more than equal to the task.

Recently when I was in Israel, the police and military officers were surprised to hear from me that a single force could undertake so many different variety of challenging assignments, which are normally performed in many countries by entirely different organisations and forces raised, trained and equipped for those purposes.

The unique features of this force which are not found in any other para military force are Rapid Action Force and Mahila Battalion. Mahila Battalion in it's seven years of existence has proved itself as competent and reliable as any other battalion consisting only of men. Their exemplary devotion to duty combined with tact and firmness has been appreciated by the civil, state and army authorities.



Shri A.B. Vajpayee, the Prime Minister inspecting the 60th CRPF Anniversary Parade at New Delhi

CRPF is a national force in the true sense of the term, with adequate representation from all States and Union territories. Its secular character and composition is ensured by recruiting personnel from various faiths and denominations.

All static institutions like Group Centres and Training Institutions have places of worship for all major religions. Even battalions in remote places have common prayer facilities for followers of all religions. All major religious festivals are celebrated by every one in perfect harmony, understanding and mutual respect.

The force is equipped with State of Art weaponry and communication equipments. Training is constantly updated to enable the force to effectively counter the challenges posed by Extremists, Insurgents, Terrorists and even foreign mercenaries in different terrains, climates and altitudes.

While the personnel are trained and equipped to deal with insurgency and terrorism, they are also constantly impressed upon the need for recognising, protecting and respecting Human Rights.

Rapid Action Force is the most sought after armed force in any communal situation, where they have always performed their duties effectively and impartially. The very arrival and presence of Rapid Action Force has infused confidence in the minds of the people in communally affected areas. This force, an essential component of CRPF was honoured recently with “Colour” by the President of India during its 11th anniversary celebrations.

This country has seen wanton destruction of forests. Since independence almost half of the forest coverage has been lost. The consequence is that many parts of the country do not get timely and adequate monsoon rains. Shortage of water is going to be the biggest constraint on development, progress and peace. CRPF has always realized the vital importance of aforestation. Hundreds of thousands of trees have been raised in all the campuses of CRPF. They inspire the rest of the population to stop illegal felling of trees and poaching of wild lives and motivate them to raise forest wealth for the good of the nation.



CRPF men patrolling somewhere in North-East

The services of CRPF during natural calamities like earthquake and floods as well as it's contribution in the field of Sports and Athletics is widely appreciated by the community at large.

Contingents of CRPF have been deployed in many countries for peace keeping operations of the United Nations. Their impeccable conduct, devotion to duty and efficiency have been commended by international organizations and observers.

Because of the adaptability, efficiency, versatility and acceptability of this force in any situation in any part of the country, there is increasing demand for deployment of this force from every part of this country to meet various serious situations, irrespective of the political complexion of the government of the day in various States and Union territories.

Hence, the government has decided to considerably augment the strength of this force. When the ongoing expansion is completed, CRPF will be the largest para military force in the country.

All this glory has been achieved after immense sacrifice and following strict discipline, code of conduct and meticulous observance of Human

Rights. The force has received highest number of medals and rewards.

CRPF affectionately and appropriately called the “Peace Keepers of the Nation”/the “Sentinel of peace” has lived up to its motto, “Service and Loyalty” to the Nation.

As Sardar Vallabh Bhai Patel, India’s first Home Minister, popularly celebrated as the Iron Man of India observed, CRPF has been “A stabilizing influence wherever any threat to security manifested itself”.

“SALAM CRP”

– George C. Podipara
Ex-IGP, CRPF

Ileft CRPF 2 years back, after being in the Force for 34 odd years. It is but natural memories of life in the Force remain vivid after serving the Force for such a long period. During my tenure in the Force, I often had been talking with very old officers and men who left the Force decades back. I was touched to note the glow of pride in their faces and happiness with which they recounted their experiences while serving the Force.

What makes life in the Force so fascinating and its impressions literally ever lasting in one’s memory? I attribute this fascination to various challenges faced by one during one’s existence in the force, the biggest of which of course was the uncertainty. **A veteran of the Force while serving in a RAF Bn in Delhi once mentioned that he was not sure where he was going to spend that night. So uncertain was the tenure of any one’s life in the Force.**



Dr. A.P.J. Abdul Kalam President awarding Shaurya Chakra to CT Santosh Kumar of CRPF who was instrumental in liquidating the Fidayeen attack on Parliament

The next major challenge was the changing roles one was called upon to play. It was like a man changing to various modes in a day's life. Early morning hours may find him an ardent devotee to his God, or a fitness faddist. Later hours of the day find him a dedicated worker busy earning his bread. In the evening he converts himself as a keen sports man or an artist

pursuing his aesthetic aspirations. During nights he assumes the role of a romeo, a dedicated family man or a serious student following his intellectual pursuits. Similarly a member of the Force finds himself chasing extremists and terrorists in the remote terrains of the North East or J & K. Next day he may rush to the peninsular regions to handle a public agitation or a strike. Shortly thereafter he may find himself involved in handling an ethnic clash or communal riots in the sensitive districts of Gujarat or U.P. He has to wear different apparels and carry different types of weapons and equipments to handle such varied roles. These uncertain and frequent changes often leave him a highly bewildered person.



Shri L.K. Advani, Dy. Prime Minister at the 11th RAF Anniversary held at New Delhi on 7th Oct, 2003

Another fascinating feature has been the varied exposures one experienced while serving the Force. A person deployed in the humid and thickly populated Southern States suddenly find himself located in the North East with its vast expanses of thinly populated lands. **From the cold mountain terrain of J & K, Force personnel are brought to the desert terrains of Rajasthan or to the extended plains of Bihar at a day's notice. Dealing with people of different ethnicity with their varied**

customs, costumes and languages is another variety of experience thrust upon the personnel of the Force. CRPF men also gets the opportunity to witness, if not celebrate, various festivals of this vast country. His initial exposure may be to the Bihu Festival of Assam, to be followed by the Baisakhi of Punjab. A Keralite familiar with his Onam suddenly finds himself in the midst of a Holi celebration with colours and water sprinkled on him, and forced to take a sweet drink often mixed with bhang. He also gets an occasion to witness the Lakshmi Pooja of Bengal or Ganesh Festival of Maharashtra. CRPF men become experts in overseeing the arrangements for the Chariot processions of Puri and Ahmedabad and Tajia-processions of Lucknow. Elections in India, the biggest democratic exercise of the world, also becomes a colourful festival of all sections of the society actively and vociferously participating in the lively election campaigns. Here too CRPF plays a key role.



Shri S.M. Krishna the Chief Minister of Karnataka at the passing out parade of recruits held at GC, CRPF Bangalore this year

Another kaleidoscopic nature existence in the force had been the frequent changes of one's superiors and authorities of States which requisition the services of CRPF. Needless to state, based on experiences and challenges faced in the past, their expectations from the officers and men of the Force vary. While many of them consider the Force highly professional and an essential element in their scheme of things, few others consider them as another police contingent to play the number game in handling situations.

Such varied experiences and exposure over long periods bring in a type of philosophy among the ranks of the Force. Be it a very Senior Officer or a low ranked Constable, the philosophy thus arrived at by them is almost similar in its outlook and approach. While a limited number of them take an indifferent if not pessimistic view of the scenario they are called upon to handle, the vast majority tends to apply their rich experience and expertise acquired over the years to become a useful instrument for the borrowing state and a dependable bunch of subordinates for their seniors. It is my impression that it is the men who adapt and adjust to new situations much faster than the Officers. **The great traditions evolved by the Force like loyalty and devotion are more from contributions of the constabulary than of the Officers. And these traditions act as a strong bond among them and they come to each other's help with least hesitation whenever one is faced with serious problems.** These traditions and this bond helped the Force to silently but meaningfully serve the country. A Senior Police Officer once remarked during a high level seminar that the CRPF was the only Force, which stood between the country and its total disintegration. He was of course exaggerating. However CRPF made effective contributions towards this end from the challenging situations the country faced; - be it the Rann of Kutch aggression of 1965, naxilite violence of the Seventies, communal riots of the Eighties, the Punjab imbroglio, the over 50 years conflicts in the North-East etc.

Mr. Gowri served as a Deputy Commandant in 3rd Bn during the Sixties. He once wrote a poem titled "CRP MAHAN HAI". The description still fits this great Force. It converted me from a youth of impulsive idealism to a contented adult. I salute you.



Shri Harin Pathak, the Union Minister of State for Home enquiring about the well-being of a jawan under treatment at GC Hospital, CRPF Gandhinagar



Lt Genl (Retd) Shri S.K. Sinha, Governor of J & K accompanied by 63 En, CRPF Commandant Shri M.S. Raghava during his visit to Mata Vaishno Devi Shrine



Shri D.C. Dey, DIGP (Ops) CRPF Tripura presenting a memento to Shri D.N. Sahay, the Governor of Tripura during his visit to CRPF establishment



Shri Manik Sarkar, the Chief Minister of Tripura inaugurating CRPF Fete at 1st Bn, CRPF,

CRPF BEYOND THE FRONTIERS

– Mohsen Shahedi,
DC (Legal)

"I have felt that we are burdening the CRPF a lot. In a way it reflects the trust we place on the CRPF and efficiency with which you (CRPF) perform your role."



RAF men in Haiti

These remarks were made by late Shri Rajiv Gandhi, Former Prime Minister of India. No wonder, the trust and efficiency in performance has graduated the peace keepers of nation to the envious position of becoming international peacekeepers.

CRPF has established an image of professionalism, in tackling large - scale public disturbances without any prejudice or partial feelings. RAF is

the special task force within CRPF which specializes in dealing with riots and situations akin to riots. In international peacekeeping when UN takes up the responsibility of establishing peace and order and rebuilding economy of a war ravaged country which has faced the trauma of armed rebellion and civil war making it emotionally fragile, national feeling gives way to factional patronage. The aim of UN peace keeping force is to assuage their bruised feelings and bring them to one platform from where they can work together for betterment of their country and humanity. To carry out this onerous task the need for the forces is to reorient and train themselves to adapt to the changed scenario.

UN Peacekeepers have to perform an array of diverse duties including guarding of vital installations, escorting and guarding of prisoners, protective patrolling, mobile and vehicular check post, reinforcement and operational backup to civilian police in responding to threats to public order and crowd control, strategic reserve capable of deployment at short notice and border duty as well.

To undertake this very sensitive task the Forces need to have the capabilities of management of crowd control and civil unrest through non-lethal weapons and tactics and use of minimum force /firearms in extreme situations. Self sufficiency in terms of transportation including light armoured vehicles with capabilities to perform independent preventive patrols, information gathering and rapid deployment of crowd control elements are essential requirements. This needs a liaison/interpretation capabilities in the working language of mission i.e. English for the Indian troops.



Shri S.C. Chaube, DG, CRPF addressing the 1st Batch of 5th Kosovo Contingent in a briefing session in New Delhi

To have the required capabilities for the mission the troops / personnel need to be especially trained in basic individual and collective crowd control techniques with special attention for weapons training, maneuver and negotiation. The knowledge of the Rules of Engagement for a mission is a must to prevent major aberrations. Besides basic map reading and communication skills, minor awareness and knowledge on the geographical, historical and cultural back ground including the origin of current situation of a mission state is an added advantage.

Through its unique resilience, devotion to duty imbibing the very spirit of the motto "service and loyalty" CRPF/RAF has credited to itself with the distinction of efficient handling of United Nations Mission in Haiti in 1994 where private armed militia engaged the country in severe political crisis resulting in thousands of executions and wide spread violation of human rights and that in Kosovo since May 2000 where a long standing historical, systematic violation of civil, political and human rights has in turn led to an escalating pattern of violence and retaliation.

Mission Kosovo has been very different from other situations. The ethno national conflicts that emerged on the territory of former Yugoslavia have

become a test for the international community's ability to prevent, mitigate and resolve conflicts in the post-Cold War period. Many different international security organizations, state representatives and prominent individuals have paraded through the Yugoslav successor states for several years in search of a solution. For that purpose, a variety of methods, techniques and mechanisms for conflict management were activated with minor success. The failure of the international community to a great extent was the consequence of its inability to understand the complexity of the Balkan legacies and the logic of the current developments. Having lack of global view on the Balkan conflicts, all international factors took a role of firemen, putting out a fire after the fire. The missing link in their actions has been the lack of awareness that all Balkan conflicts were deeply interrelated and interdependent. The other missing link was the lack of conceptual thinking and practice of conflict prevention and conflict management. In this background the mission in Kosovo and the deployment of the forces to restore peace and order there was a historical one. It was the first deployment of a Police unit in the history of UN Mission. All previous missions had been military missions. **RAF became a part of the history of UN by virtue of its deployment in Pristina, the capital of Kosovo in May 2000. Since then there has been no turning back. Indian SPU has carved out a niche for itself by professional competence second to none.** A noteworthy accomplishment has been its efforts in organizing games and sports on a big platform involving the civilians which has not only helped it to endear itself to the masses but has brought accolades for showing a positive spirit in an otherwise hostile environment. The first Contingent Commander Shri J.S.Gill played a pivotal role in the triumph and glory won by the men in blue. The joint training and operations with the other Police Units including that of Spain, Ukraine, Jordan and Pakistan has paid rich dividends. The famous rescue of the Pakistan SPU in Mitrovica by the Indian SPU from the siege laid by the hostile Serbs was well-received in all quarters.



RAF men deployed on U.N. Peace Keeping Mission at Kosovo

The mission has given the Indian Special Police Unit personnel many eye openers and food for thought for the officers. Professional approach is the hall mark of the mission. In Kosovo personal relations don't count. Entertainment of guests in offices is rarely seen. Surprisingly many offices do not even have chairs for the visiting officers. It is a pointer to our own situation here in India where we waste of so much time entertaining guests in the offices and then sit till late hours disposing of "pending work." No better example of the dignity of labour could be witnessed than that of an MBBS girl carrying out the duties of a Safai Karamchari in an Indian Office and a professor of chemistry washing dishes in an Indian SPU mess in Kosovo. A strange misconception which came to light in Kosovo was the thinking of our personnel that all English speaking people were Englishmen and highly placed officers. This had catastrophic effect in the initial stages. The security of the Indian SPU camp was in doldrums as very often than not the Indian SPU camp gate was opened up to unknown and unwarranted aliens for the simple reason that they spoke fluent English and were hence mistaken to be high ranking officials of the mission. As Adjutant I had a tough time driving home the point. A strange site of the mission is the barbed wires atop armoured tanks. This has been done to prevent mobs from

perching on the tanks and torching them. **I asked a French Captain "Isn't it a shame for the Forces to be cowed down like this" to which he remarked, "It is not the question of what we can do but what we are allowed to do". That in a nutshell is the Rules of engagement for the mission, which is to be followed in letter and in spirit.**



Shri S.C. Chaube, DG, CRPF at Kosovo during his visit in March, 2003

The sheer positive attitude of the mission has transformed a war-ravaged, desolate and crippled state into a mission on the fast track towards democratization. UNMIK has made substantial progress in consolidating the participation of moderate Serbs in the administration. Herculean efforts are on to establish the judicial and penal system and to undertake reconstruction of health and social welfare, education, transport and infrastructure, post and communication, agriculture, environmental protection, banking and civil security. Every aspect of the administration has been started from a scratch and so much has been achieved in so little a time through sheer indomitable spirit of the mission. The beautiful landscape of the Balkans reminds each member of the mission of the famous lines by Robert Frost, "The woods are lovely, dark and deep, but we have promises to keep...."



A memento being presented to Shri T.N Chaturvedi, the Governor of Karnataka by DG, CRPF Shri S.C. Chaube during his Bangalore visit



Shri S.C. Chaube, DG, CRPF in a discussion with Shri Tarun Gogoi, the Chief Minister of Assam during his recent visit to Guwahati

CRPF : ON THE MARCH OF MODERNISATION

– R.K. Gaur,
ADIG (Prov)

Since the advent of independence the country has suffered endless series of tragedies on account of communal and ethnic clashes. The CPMF and the Police all have been found inadequately equipped in some measures or the other for dealing with this menace. All throughout need has been felt to enhance the quality and quantity of the forces. The CPMFs play vital role in providing a secure living environment to the citizens by protecting them from the menace of cross border terrorism, militancy and various other internal disruptive forces. They serve as an effective instrument to safeguard against all kind of disruptive, subversive and anti national activities. **The CRPF as a largest and oldest Para Military Force of the country has played multi dimensional and vital role in protecting the sovereignty of the country. 88% of the force personnel are deployed in the insurgency affected areas on C.I. role.** During the last decade due to all round increase in terrorism, need was felt for modernisation of security forces. The same has gained impetus after Kargil war. Govt. of India in order to enhance the operational efficiency of the CPMFs and to enable them to meet the challenges of increased militancy and terrorism vis-a-vis to fully prepare them in terms of strength and striking powers set up a Group of Ministers to look into the matters relating to defence, internal security, border management and intelligence which in turn constituted four different Task Forces with above perspectives. The Task Forces on internal security recognized the need for investment to the order of Rs. 4,000/- crores over the next 5 years to achieve the desired level of modernisation of CPMFs which has been accepted by the Group of Ministers and Cabinet Committee on Securities. The CRPF along with other CPMFs submitted its modernisation plan to the Govt. which has been approved in Feb, 2002.

With a time perspective till 2006-07 and budgetary allocation of Rs. 542.75 crores, CRPF, in a phased manner, will achieve feats of modernisation under following six heads such as :–



Shri N, Gopalaswami, the Union Home Secretary launched "Intranet Selo"- a project for enterprisewide computerisation in the Force.

Weaponry, Machinery and equipment, Transport including water crafts, Communication and Surveillance equipment, Training aids and Clothing and tentage.



CRPF men handling SLR (Source 149 Bn)

CRPF has adopted the current year as the year of e-Governance with employment of "SELO" the entreprise-wide computerization covering all functionalities in various modules for adm, ops, training, medical, provisioning and financial Directorate. It has arrangements for mailing and messaging. Data based training and net working training is being imparted to officers and employees. The old communication equipment are being phased out with new equipment fitted with scrambler and Best equipment which have inbuilt cryptographic system. Acquisition of communication jammers is a further leap in this direction. Use of pole net in alliance with DCPW is worth mentioning.

Revolutionary changes are being brought in training equipment and methodologies. Besides acquiring various class room aids and training aids like computers, printers, scanners, video cameras, multimedia projectors, CRPF is acquiring interactive small arms simulators on which 8 firers with 8 different weapons can practice together simulator gives all sorts of combat situation for sharpening physical and mental reflexes of the trainees. Infantry weapons effects system simulation are also being procured for simulating tactical situations in which as good as 50 personnel together can take part in a tactical exercise. In addition to it, driving simulators are also

being acquired.



Weapon Training imparted at 149 Bn, CRPF, Bhubaneshwar

Mobility in the force is the key area of concern. Govt. has approved additional authorisation of MT fleet with bullet proofing of 750 vehicles and procurement of 10 Nos of Water Canons for RAF. New generation vehicles like Scorpio, Indigo, Mahindra Invader, Bulero, Rashak and Mine protective vehicles are being procured. Acquisition of additional number of motor cycles and speed boats are being procured at the force level to meet out the motor cycle borne operations and water borne operations. Authorisation of special equipment for RAF for meeting out situations of calamity and disaster, Bomb disposal suits, Deep Search Mine & metal Detectors are worth mentioning.

During last and current financial year CRPF has acquired large number of prefabricated structures to cater for the accommodation needs of troops in remote localities. During the last two years CRPF has been able to achieve 13% satisfaction level in providing married accommodation to the force personnel besides acquiring land at various places for upcoming GCs, camping sites and meeting out the needs of separated family accommodation. Upcoming transit hostel, accommodation and officers

Institute at Delhi will definitely provide sequel to transient officers.

CRPF is solicitously striving hard to keep abreast with the changing needs of the force so that rank and file could look up with confidence and pride. Toil and turmoil shall offer the SWAT ANALYSIS of modernisation.



Shri S.C. Chaube, DG, CRPF inaugurating the Administrative Block of RTC-I at Neemuch



Shri S.C. Chaube, DG, CRPF flanked by Shri K.J. Singh, ADG, NWZ and Shri K.T.D. Singh, IGP (Ops) during the two day Trg/Ops Seminar at CTC-II, Coimbatore

CRPF IN ELECTION



CRPF men providing security to voters during election in J & K



CRPF Jawans guarding a polling booth in Assembly election of Nagaland

CRPF IN ITS NEW AVTAR : A PROTECTOR OF ENVIRONMENT

– D.G. MOHAPATRA
PRO, CRPF



CRPF men deployed at Barber a Forest (Orissa)

Sunlight filters through the lush canopy of teak and sal in the Barbera Forest as the air resonates with song of birds and murmur of streams. While birds chirp, leopards roar, wild boards grunt and woodpeckers screech, suddenly one could hear a sound alien to the jungle, the marching sound of khakhi-clad gunmen – the jawnas of Central Reserve Police Force (CRPF) armed with AK-47s and self-loading carbines.

"Few years ago, I could not spot a jungle fowl," recalls a local forest officer. "But now I found leopards during the day and spotted deer visiting the forest guesthouse in the afternoon. Thanks to the CRPF who has changed the entire environment here in a very shot span", he lauds.

It was on 27th November, 1993, the Central Reserve Police Force (CRPF), one of the oldest para-military forces of the country opened a new chapter in its life. In its colourful and skirmish-ridden life the new front was a novel and unusual experiment. It was neither quelling a mob violence and restoring order in the State, nor fighting with the terrorists and insurgents in various parts of the country. There was only bliss of the deep forests, full of romances with the exquisite flora and excitement with various species of fauna.

The Orissa Government requested CRPF to adopt a part of the forest in the State known as the Barbera Reserve Forest to protect, preserve and manage it for ecological conservation. This forest is located 35 kms away from Ballugaon and is a part of the Puri Forest Division, one of the oldest Forest Divisions created in the nineteenth century. It comprises of five reserve forest blocks and ten demarcated protected forests, covering an area of 23,436 hectares.

Permission to adopt these areas was formally accorded by the then Chief Minister of Orissa, late Shri Biju Patnaik personally on this auspicious day in a colourful function organised at CRPF Group Centre Bhubaneswar. Though overstretched – over 84 percent of its personnel are engaged on Counter Insurgency duties, still CRPF has been deputing one Company of their men along with vehicles and wireless communication at their own cost for effective protection of the forests. These forests were seriously endangered owing to illegal felling, poaching and devastation by many unscrupulous people.

Barbera forest is an interesting configuration of hills and valleys traversed with Salia river and two nallas known as Tava and Ashoka nallas. The forest has a rich flora of young teaks, old Sal, Asan, Arjun, Sisso, Harida, Bahada and many rich varieties of shrubs and bushes. The lofty teak and sal trees sprouted from seedlings that the British brought from Burma in 1904 to generate timber for shipbuilding, making gun-butts and for export to England for manufacturing railway sleepers, A few centurion teak trees remain, with girths of nearly 15 feet and valued Rs.5 lakh each. There is a sizeable wild life population of tigers, leopards, bears, bisons, nilgais, elephants, sambars and deers. There is also a beautiful lake and two Forest Rest Houses, each at Barbera and Dhanuali and another at top of a picturesque hill called Rajin. Small villages and hamlets are located largely

in plains and a few in the forest. There is a network of forest roads in different directions throughout the area.

This forest has given the CRPF an opportunity to prove how humane it can be not only towards other men and women, but also towards all types of life on this earth. It is a battle to protect the endangered ecosystem and restore the region's lush green cover.



CRPF Forest Protection Post-Barber a Forest



Crackdown on Sandalwood smugglers by CRPF men

Famous Chilka lake with a bird sanctuary is around 35 kms from Barbera and I.N.S Chilka which is a sailors training centre of Indian Navy is also located near Balugaon.

THREATS DUE TO URBANISATION

During the last 40 years, the valuable forests of this area were under great pressure due to growth of cities such as Bhubaneswar in the district. The increasing demand for timber and fuel wood contributed to the illicit fellings and smuggling of forest produce.

Smuggling of principal species such as Teak and Sal was a lucrative business for ever increasing unemployed youths who found it very convenient to carry and dispose off timber in and around Bhubaneswar inspite of best protection measures adoped by the State Forest Department. Of late smugglers armed with deadly weapons also found their way into the forests and confrontation with them by the staff of Forest Department became a common feature. All these activities led to a rapid depletion of the valuable sal and teak forest of this area while exposing the animals to poaching and epidemics.

PIL FOR CONTINUANCE OF DEPLOYMENT

Ministry of Home Affairs, Govt. of India in its communication during Feb,2002 ordered for withdrawal of CRPF Coy from Barbera. The State Govt, requested for continuation of deployment. However one NGO filed PIL in Hon'ble High Court of Orissa and against this the Hon'ble High Court issued stay order on withdrawal of Coy till State authority makes alternative arrangements.

The anti-social elements/ smugglers are, of course, interested for withdrawal of CRPF in order to re-start their clandestine operation. The civil population is demanding retention of CRPF.

ACHIEVEMENT

The CRPF personnel with highest sense of discipline and combating powers have created a positive Impact ever since their deployment. The dedicated CRPF jawans and officers in close cooperation with the officials of State Forest Department have been successful in catching a rich haul of forest goods. They have seized a good number of carts, bi-cycles, cutting instruments, buffaloes and other things. They have also arrested about 900 smugglers and produced them before the court of law. Besides the Force has assisted in seizure and dismantling of more than 40 illegal saw mills operating in the area. CRPF men have seized forest products worth of more than Rs.two crores since its deployment here.



CRPF men nabbing saw-mill men involved in clandestine activity

Smugglers from neighbouring districts like Nayagarh and Ganjam ventured regularly into Barbera to make a quick killing. They have now been dettered by the presence of the CRPF.

The forest has got a fresh lease of life and has been rapidly regenerating Chilka, Asia's biggest brakish - Water lake is a direct beneficiary of this, because Barbera is its prime catchment area and unchequed deforestation and erosion would have led to the lake getting choked with silt.

CRPF'S HUMAN ROLE

The area being malaria prone, the CRPF jawans have launched a general awareness campaign to educate the local populace to remain vigilant against this dreaded disease. The CRPF Medical Officers are visiting the area regularly and looking after the villagers. As a result the scenario has taken a positive turn inculcating a new ray of hope amongst the inhabitants of the forest. With the deployment of CRPF, they are no more subjected to exploitation at the hands of the influential smugglers and get wide opportunity to sell non-timber products at right prices which helps to earn their livelihood.

Besides keeping a strict vigil at the boundaries the CRPF has also been extending help to the forest department in handling seed collection, storage, methods of germination, preparation of seed beds, soil, mixing for poly pot nurseries replacing dead saplings, fostering growth of afforestation and reclaiming mined areas in the region.

"The day the CRPF Jawans are shifted, the valuable trees of Barbera Forest will vanish". This was the remark of a Puri District Forest Officer, indicating towards clamour of some vested interests to shift the force. The indispensable role played by CRPF has been lauded by Senior Forest Officials, NGOs and the local people.

AMARNATH YATRA



CRPF men on foot-patrol during Shri Amarnath Yatra



CRPF medical team checking Amarnath Yatris

INTRANET SELO

- Brig (Retd) J.S. Sawhney,
DIG (Comn.)



Keeping pace with technology even in a far-flung deployment

In the history of civilisation no work of science has so comprehensively impacted the course of human development as Information Technology. Undoubtedly, IT has been the greatest change agent of this milliennium and promises to play this role even more dramatically in the coming years. IT is changing every aspect of human life including national defense and internal security. It is breaking old concepts of organisations and individuals irrespective of nature of their endeavour. In the past 5 years or so an explosive growth has taken place in the field of computers in India in all walks of life. Computers have become not only cheaper but also extremely user friendly.

CRPF has had a clear concept and vision as regards adoption of Information Technology. CRPF has been fully aware that IT is not merely for storage and retrieval of information but with its current pace of development it is to be used for decision support extensively at various levels. In fact given the convergence of telecommunications and computers we can even modify organisational structures by automating a number of functions. After a detailed in-depth deliberations in the Force a 5 Year Computerisation Policy was formulated and submitted to the MHA in Sep 97. The proposal had conceived of total computerisation of CRPF over

a period of 5 years.

Once the computerisation of all elements takes place and they get inter-connected through leased line and/or V Sat or wireless we will have an organisational Intranet. This would then mean capture of data at source, faster flow of information, quick analysis of data and faster and well informed decisions. Needless to say it will result in higher operational performance and success at much lesser cost.

In view of the above factors CRPF had moved fast to take advantage of technical bonanza emanating from convergence of communications and computers with the aim "everage IT such that Force leadership may enhance its decision making process by accessing relevant and processed information, Any time, anywhere, In a few clicks. Thus imporving its operational effectiveness while simultaneously reducing the finance burden on the exchequer"

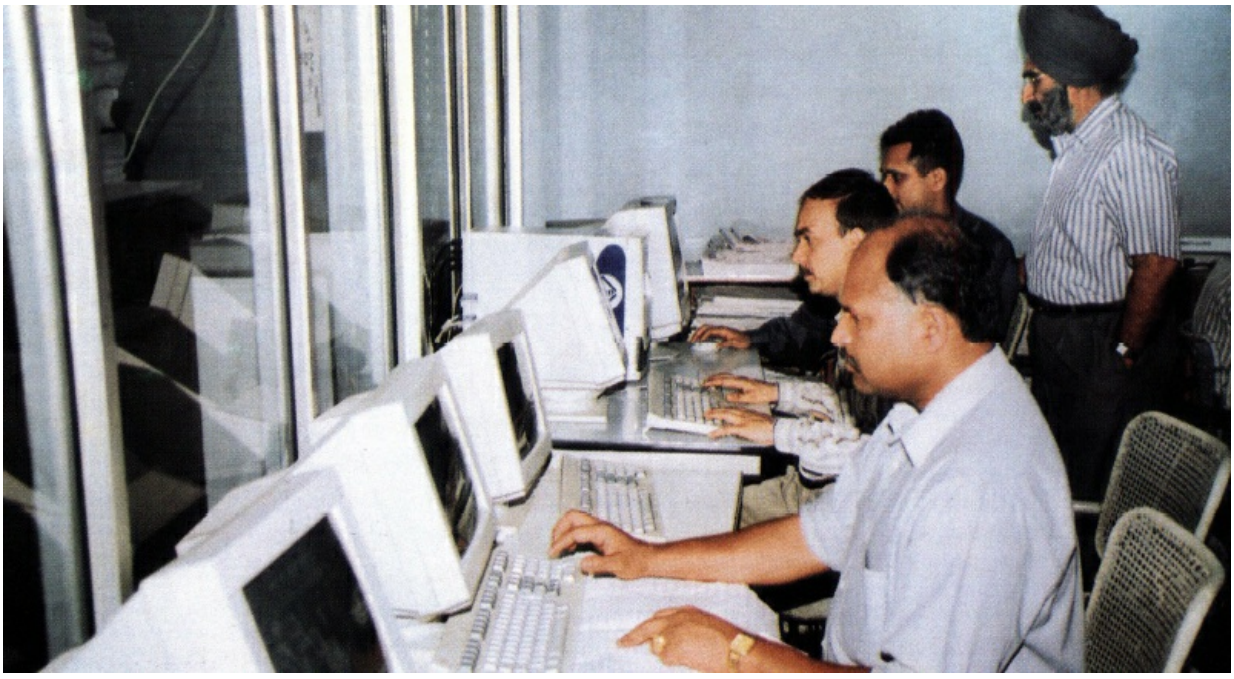
To implement the above CRPF has planned computerisation at all levels of the Force and to include all functionalities. Computerisation at all levels includes; Directorate General, Sector HQ, Range HQ, Group Centres, Executive Battalions, Remainder elements. Computerise all Functionalities means; Operations, Training, Personnel, Administration, Finance and PAO, Provisioning & Works, Communications, Work Flow and Mail and Messaging.

Integrated Application Software

Success of any IT project is dependent on the availability of the Application Software. This was a major factor which resulted in failure of initiative to introduce computerisation in Govt. Organisations. In fact some of the organisations even today continue to make this mistake. They, erroneously, think that just by buying enough computers would result in computerisation. We had very wisely taken the correct decision by first going in for development of a user friendly Application Software, covering all functionalities of the Force. A proposal for development of an integrated software for Directorate General and pilot project for development of software for the IG & DIG offices, GC and Battalions was submitted to the MHA in Jan 98 after getting technical opinion of the then Director NCRB.

Due to complexity and scope of the task, development of this had to be outsourced and therefore after due process M/s NIIT was appointed in Apr

2000 for development of our Application Software at a cost of Rs. 1.39 Crores. Our software project was comprehensive and extremely user friendly covering each any every function in every branch. After completion of the development of the software the MHA decided to modify this software suitably to meet the total computerization need of all CPMFs. This is being done by committee headed by the Director NCRB.



A step towards achieving "2003"-year of e-Governance in CRPF

Hardware Procurement

While the process of development was in progress CRPF had taken up case for procurement of software after getting the requirement worked out from the NIIT, who had developed the Integrated Application Software, as desired by the MHA. This requirement was then got thoroughly examined by NCRB, NIC and MIT.

CRPF is having Data Base servers at Directorate General and at all GCs. All IsG and DisG will directly log on to the Directorate Server. Further we are providing Mail servers at all locations. All these locations will be connected through 64 KBPS leased data lines hired from MTNL/BSNL. All locations will have 2 speech channels which means that 2 dedicated telephone links will be available connecting these locations. Contract has been signed between NIIT and Government of India on 7 July 2003.

Training

In the “Selo” project we have catered for extensive training for the staff. This include training to those who are not having any knowledge of computers and implementation training.

Implementation

Success of the Intranet will finally depend on the users. The users will however find it of no use unless relevant and adequate data has been fed into computers. In computer jargon there is a word called GIGO which is the acronym for “Garbage In Garbage Out”. Extending this further is the acronym NINO which means “Nothing In Nothing Out”. It will therefore be imperative that we take necessary steps to build our Data Base for all functionalities in as comprehensive manner as possible. It is a well-known fact that Data entry is a very painful process for the user and is generally resented. Users generally suggest that data entry be done by involving additional manpower or be contracted to an outside agency. The IT industry experience shows that both these methods are not satisfactory. A person who is not likely to use Data is generally not interested in its integrity and authenticity. If done on contract basis the user has to again spend great amount of time in verifying the Data. It is therefore essential that users enter their own Data. On a preliminary estimate it is visualised that on an average every Dealing Assistant will have to spend at least two to three hours in entering and verifying the Data initially for few months. Data entry will have to be done primarily at the Group Centres. Other offices will also need to do data entry relevant to their functioning.



Shri N. Gopalaswami, the Union Home Secretary launched the overall computerisation project of CRPF "Intranet Selo" at Force Hqrs during Nov'03

For Data entry exercise all offices need trained manpower and computers. An Adhoc Computer Training facility has been set up at CTC (Telecom) at Ranchi where regular courses are being held in basic computer usage. So far we have trained more than 1200 personnel at CTC (T) Ranchi and by availing courses run by NCRB, NIC etc.

The second requirement of Data Entry is availability of Computers. Way back in 1997 instructions were issued to all IsG to procure computers under their competency. We have also permitted all establishments to hire computers which has helped ensuring building of computer culture in the Force.

RAF-PEOPLE FRIENDLY FORCE



RAF men clearing debris to rescue trapped people of earth quake affected Ahmedabad



RAF men and women in the security cordon of Puri Rath Yatra

TERRORISM AND HUMAN RIGHTS



Justice Shri J.S. Verma, the then chairperson of NHRC giving away overall championship trophy to CRPF team in the Inter CPOs debate competition on Human Rights

The vexed question is how do or should demoratic states which adhere to the Rule of Law and respect basic human rights deal with this menace? It must be realised that the fundamental rationale of anti-terrorism measures is to protect human rights and democracy Counter-terrorism measures should, therefore, not under-mine democratic values, violate human rights and subvert the Rule of Law. **Consequently the battle against terrorism should be carried out in keeping with international human rights obligations and the basic tenets of the Rule of Law.**

No doubt "the war on terrorism" has to be relentlessly waged but that should be done without going overboard and in effect declaring war on the civil liberties of the people. It is imperative that the essential safeguards of

due process and fair trial should not be jettisoned. Counter-terrorism or anti-terrorism legislation must conform to international human rights obligations.

History and recent experience testify that the rubric of counter-terrorism can be misused to justify acts in support of political agendas, such as the consolidation of political power, elimination of political opponents, inhibition of legitimate dissent. Labelling adversaries as terrorists is a notorious technique to de-legitimise and demonise dissenters and politcial opponents. Therefore we should be cautions of offering, or be perceived to be offering, a blanket endorsement of all measures taken in pursuant of counter-terrorism.

It must be remembered that the more anxious the times and more devastating the effects of international terrorism, the more likely will be the tendency to bend the rule of law to accommodate popular sentiment for harsh and draconian measures against suspected criminals. It is in such testing times that the courts must be seen to be able to vindicate the rule of law and protect the basic human rights of the people.

When persons are indefinitely detained on suspicion by labelling them enemy combatants and whose trials will be by military tribunals in camera and without proper legal assistance, that is a travesty of the elementary principles of due process and fair trial.

The treatment and the state of the detainess at Guantanamo Bay is a shameful stain on the American justice system. One fervently hopes the United States Supreme Court will uphold the Rule of Law and the basic human rights of these detainees however despicable they may appear to be.

The spectre of danger to national security and public order is frequently invoked by the government ot justify its actions. The so-called dangers are often far fetched and also imaginary at times. Many sins have been and will continue to be committed under the umbrella of national security and public order.

The case of Fred Korematsu is a classic one. Korematsu, a native born American citizen of Japanese ancestry, was convicted for being in a place from which all persons of japanese ancestry were excluded pursuant to an Exclusion Order issued by the Commanding General, JL Dewitt. The constitutionality of the order was upheld by the United States Supreme Court and Korematsu’s conviction was affirmed. In 1984, Korematsu petitioned the United States District Court, ND Californiz, for a writ of

coram nobis to vacate his 1942, conviction on the grounds of governmental misconduct. During the hearing of the case before Judge Patel, some horrific facts were brought out.

It was established that the government had knowingly withheld information from the court when they were considering the critical question of military necessity and also provided misleading information to the Court Judge Patel, who decided the case, memorably concludes: “Korematsu... stands as a constant caution that in times of war or declared military necessity, our institutions must be vigilant in protecting constitutional guarantees.



CRPF Men in action in Raghunath Mandir attacked by terrorists.



Insurgent surrendering before CRPF authorities at Tripura

It stands as a caution that in times of distress the shield of military necessity and national security must not be used to protect governmental actions from close scrutiny and accountability. It stands as a caution that in times of inter-national hostility and antagonisms our institutions, legislative, executive and judicial, must be prepared to exercise their authority to protect all citizens from the petty fears and prejudices that are so easily aroused."

This caution should always be uppermost in judicial minds when the court is confronted with formidable and imperious claims of national security. In England, it has now been acknowledged that the majority of the Law Lords in deciding Liversidge vs Anderson, "were expediently and, at that time perhaps excusably, wrong and the dissenting speech of Lord Atkin was right". Liversidge's case is yet another example of how relief to a detainee can be denied by a court which is too deferential to the claims of the executive that detention of the perosn is imperative for reasons of national security.

It must be recognised that democracy, with its assurances of fundamental rights to all individuals, has certain inherent disadvantages which authoritarian regimes do not suffer from.

Though democracies may also impose harsh measures on individuals, there are limits to the means that they may employ. This dilemma was very aptly expressed by President Barak of the Israeli Supreme Court. “This is the destiny of democracy, as not all means are acceptable to it, and not all practices employed by its enemies are open before it. Although a democracy must often fight with one hand tied behind its back, it nonetheless has the upper hand. Preserving the Rule of Law and recognition of an individual’s liberty constitutes an important component in its understanding of security. At the end of the day, they strengthen its spirits and its strength allows it to overcome its difficulties”.

I, for one, am sure that ultimately we shall overcome and extirpate the menace of terrorism if we do not falter in our determination and remain steadfast to our democratic values and adherence to the Rule of Law and discharge our human rights obligations.

(This is an extract from the Second Radhakrishnan Memorial Lecture delivered at Seychelles by Shri Soli Sorabjee, the Attorney General for India).

Courtesy: The Statesman

PRESIDENT’S COLOUR TO RAF



Shri L.K. Advani, Dy. Prime Minister inspecting the 11th RAF Anniversary Parade at GC J/Kalan on 7th Oct, 2003



RAF men Marching before the saluting dias



President's Colour presented to RAF by Shri L.K. Advani, the Dy Prime Minister being carried alongwith the CRPF colour

TRAINING



Obstacle - Crossing



Rope-climbing - part of Training



Shri S.C. Chaube, DG, CRPF overseeing the basic training imparted at 152 Bn, CRPF, Pinjore

UNIT TRAINING

- C.V. Mathew
Addl. DIG (Training)



Unite training is the prime responsibility of the Commandant and commanders under him at various levels. How other forms of training relates to the efficiency and performance of the Unit is the prime concern of the Unit commander. **Training programmes are the building blocks of efficiency of a Unit. The base block is individual training and remaining is Unit Training.** It must be remembered that if individual training is weak, Unit training will crumble. Three points about Unit Training must always be kept in view:-

- Men fight as units

- Men practice individual skills so that they can develop unit skills
- Team work is the key to effective unit training.

The training of the individual therefore assumes great importance. As a square block can not fit into a round hole in the same way an ill trained individual can not fit into an efficient Unit. Unit efficiency is the sum total of the skill and efficiency of individuals in the Unit. The quality of individual training will determine the quality of combat worthiness of the Unit. Good combat training also develops team work and camaraderie.

A Unit can be trained through several methods. Some of the suggested methods are 1) Tactical exercises without troops 2) Sand model exercises 3) Map reading 4)Battle simulation 5) Command post exercises 6) Field training exercises 7) Situational training exercises 8) Emergency deployment readiness exercises and 9) Operational readiness exercises.

The first five exercises are meant to train leaders at the superior and subordinate level in appreciating and evolving workable plans to execute operations. This will train their mind in quick tactical appraisal of a situation and deciding appropriate course of action. The exercises from Serial No. 6 to 9 are for training the entire Unit.

The commander’s challenge is to keep his Unit proficient even though constant availability of men will be a problem. However for effective training the following should be borne in mind:-

• Emphasis on fundamentals i.e. correct principles, varied training to sustain interest, Keep training short to ward off boredom, Evaluate as training goes on and follow it with after action review Stress team work and safety.

Training in the Unit is not necessarily the class room variety but it is oriented towards performing the tasks on hand. Therefore, every commander who has to accomplish a task is a trainer. A section commander should be able to train his men on how to effectively patrol the given area, mount search, embus and debus tactically, immediate action drills when a patrol is fired upon, how to select fire positions, fire and move, etc. What is required is to task them to prepare and train in the same way as they are expected to carry out the task while on actual duty. Similar is the case with the Platoon Commanders and Company Commanders. Each commander must be able to train his men in the task they are expected to perform. The misplaced apprehension of not being a trainer in the sense of training

institution need not worry the commanders. What is required is functional explanation with logical demonstration of how to do a task effectively.

For enhancing effectiveness of Unit Training, the commandants must avail the facilities of institutionalised training under which seats are allotted to the Units in various courses of instructions. **The commandants who care for their officers and men would make maximum of his officers, SO & Ors to undergo different courses of instructions to increase their professional expertise.** Officers, SOs and UOs who have potential to become trainers must be selected and appropriately prepared to attend the courses of instruction, so that they reap maximum benefit out of the course in the interest of the Unit. Last minute detailment for the sake of availing the seat is a futile exercise. It neither benefits the individual nor the Unit.





CONCURRENT TRAINING

It has been observed that precious time is wasted while Coys are at firing ranges, in waiting for the turn to fire. While one platoon is firing, others can do musketry or practice correct site picture. Another platoon can be engaged in some tactical training such as fire and move or selecting of correct fire position, immediate action drills while on patrol, etc. Thus available time can be gainfully utilised to sustain skill and efficiency of the Unit. This is one instance, there can be other occasions where concurrent training can be applied to train the Unit in different skills.

Drills Operational drills are standard collective methods and techniques for executing a small unit collective task. Drills are the connecting link between individual and collective tasks. It is to be practiced repetitively and instinctively to achieve desired standard. Drills play a major training role particularly in combat training. This training follows a gradual course which involves steps as under: -

- Explaining and diagramming the drill for troops
- Practice the drill in slow motion, walk the drill until every individual understand the task.

- Practice drill on a regular pace and use all required equipments as in an operation. When drills are performed, it must be evaluated through an independent observer and critically assessed. Drill proficiency must be sustained through practice at regular intervals.
- Once men become well conversant in operational drills, it must be implemented in varied and demanding conditions such as during night, in poor weather, in smoke, etc.

These drills have to be evolved by the commanders in accordance with the dictates of the tasks in the given area of operation. For example quick reaction drill or immediate action drill when a patrol is ambushed, a convoy comes under fire or when a search party is fired upon and so on. All probable contingencies must be visualized and suitable drills devised and practiced as explained above. If this process is sincerely adopted nothing can stand in the way of combat efficiency and effectiveness of the Unit.

Combat worthiness and operational effectiveness entirely depends on the level and quality of sustained Unit Training.

COP SCAN

- A.P. Maheshwari,
DIG (Adm)

Cops are generally known to give heart aches to others. But doctors' statistics proves otherwise. ***The policemen, particularly from the armed units or paramilitary forces, are increasingly becoming a victim of three life threatening ailments.***

"There are glaring symptoms of certain diseases spreading amongst police personnel. Either they are grappling with *tuberculosis* or with *schemic cardiac problems.* Many of those who are constantly deployed for long stints far away from their families also become afflicted with *STD* (sexually trammitted diseases), says Dr. Ganesh emphatically.

The opinion of Dr. Ganesh is also based on the reports he gathers from

his other colleagues in the profession. Prolonged deployments, irregular schedules over-regimentation, lack of physical exercises, constant stress situations etc. could be responsible for it. These are the observations made by those who treat the cops when they eventually encounter such diseases. It is disclosed to those who lend a sympathetic ear to them when in distress and try to ease out their sufferings. This is the plight of those who are supposed to be rough, tough and robust.



CRPF Jawan keeping strict vigil in Pahalgam during Amarnath Yatra

The declining health of the guards responsible for internal security is fast becoming a serious problem. It cannot be taken lightly. Atleast, not by those who have the onus to manage such forces or take policy decisions affecting them. These overt health problems are only a part of the total ghetto which they have to face. The covert scanning has much more to say. The more you delve into the problem, the more you come to know.

Continuous deployment of the forces on various law & order duties, as has happened in the past few years, leaves them quite unsettled, insecure and distressed. *Camping at uncomfortable sites, an absence of time for healthy living, grave emotional ruptures due to family distancing, and of course, constant threats of displacement etc. create sufficient latent stress.*

The position in state police is even more alarming-thanks to the *frequent shuffling of the commanding officers, obvious incongruencies between the policy moves and the professional learnings (where the former is often coloured by political initiatives), over-regimentation and so on.* The lack of proper environment also sets a vicious circle of 'lose-lose' situation. Goal displacement is the natural outcome in their efforts to find sub-optimal equilibrium level for a forced survival and maximisation of perceived satisfaction level.

The nature of police job is such that it often falls in conflict with ground realities and aforesaid legal/moral values. The overloading factor has its own distinct impact The frustrative behaviour sets in a kind of attitudinal indifference towards the environment

The '*social outcaste syndrome'* (that they are not liked by society and that their social image is negative) adds to the malaise. At times, the negative learnings on their part end up creating remorse & tensions within. Besides this, the police 'subculture' has it own legacies and thereby affects the functioning of its members. Such a sub-culture has thrived due to the imbalances arising out of the glaring gaps between the socio-political realities and the expected maturity levels which the cops are supposed to handle, as their last resort of the visible governance. Within the department too, certain deviant tendencies have crept in. Timely & regular trainings are also a casualty. Regular health checkups have becomede a more farce & mere of a matter of routine. So, on paper all are healthy.



Shri S.C. Chaube, DG, CRPF interacting with CRPF Jawan after inaugurating the "Occupational Therapy Unit" at Base Hospital-I, New Delhi



CRPF Jawan under treatment at Base Hospital-II, Hyderabad

The problems of obesity, mental illness, arousal of brutal tendencies, gastro ailments etc. are also widespread. ***We need not forget that police jobs, at times, create inexplicable stress. With no inner drive to excel under the given environment, the tendency to escape with minimum indulgence further excelerates the continuous stress amongst them.***

The problem diagnosis would suggest the modes of rectification. This may result in a *two way approach.* One is to generate & sustain a conductive environment and the other to initiate health measures which would be preventive as well as curative. Such possibilities can encompass:

1. *Health counselling* and augmention of the desired facilities. Taking preventive & corrective health measures.

2. Focus on *regular exercises & training* in real terms.

3. Special courses on *healthy art of living*, right attitudes & right learnings.

4. *Strict medical check up* at each stage and correlating fitness with career opportunities.

5. *Redefining the work*, adding such tasks which may be promoting social indulgence/social service instead of mere enforcement.

6. Avoiding long & constant deployments, enforcing *compulsory leave* so that they mix up with families and socialise to prevent a loss of their sensitivities.

7. *Reducing frictions* arising out of the mismatch between political & professional ethos.

8. *Stable and able leadership* by commanding officers.

9. Taking constant measures to *activate service welfare*, Enhancing family welfare measures too.

10. Add *pride to the job* with social recognition.

Right perceptions, positive attitudes and a healthy art of living is a sine-quo-none for their inner bliss. The problem areas and solution parameters may eventually change over a period of time. Nevertheless, it calls for immediate attention and constant scanning. ‘Cop scanning’ is a pre-requisite to the task of ‘social scanning’ for which our cops are recruited.

BLOOD DONATION CAMP



Blood donation camp organised by CTC-III, CRPF at Nanded (Mudhked)



CRPF Mahila donating blood in a camp organised by 10 Bn, CRPF

MAHILA BN IN CRPF - AN ASSET TO THE FORCE

- Seema Dhundia,
2-I/C 88 (M) BN CRPF



Weightlifter Sonamacha Chanu of CRPF receiving "ARJUNA AWARD" from the then President Dr. K.R. Narayanan

The need for raising of armed women component was felt when people in independent India were becoming more and more conscious of their Rights. Early eighties saw a sudden spurt of agitation/dharana/ strikes etc. In traditional Indian Society,the women folk which were generally confined to the household were also increasingly lending support to their men folk in such agitation/ dharana/strikes . This sudden increase in women participation took the Indian police by surprise and it found it self

inadequately equipped to handle such unseen situation. The women component in the state police was neither adequate nor sufficiently trained to handle such situation as a result of which the male police had to handle the women agitators. This invited a lot a criticism and there were complaints of atrocities against women. The Govt of India found it extremely difficult to defend itself against such complaints in the parliament and in the global scenario. Different states started demanding women police force for handling such varied situations arising in their territory. **Since most of the states did not have mahila component in the police, and if a state had, it was too meager to spare for other states ,thus the Central Govt could provide very little help to States' Government. Under this background, the late Prime Minister Shri Rajiv Gandhi showed vision and exemplary courage in ordering raising of a Mahila Bn under the Banner of CRPF.** 88 (M) Bn enjoys the distinction of being first ever women armed Battalion in Asia. On the basis of the performance of first Mahila Bn the need was felt to raise second Mahila Bn and thus it was raised during 1995 .i.e 135 Mahila Bn.

Being an Armed Police Force, women personnel were trained in Un-armed combat,Judo and handling of all types of Fire Arms apart from acquiring knowledge of various provisions of IPC,CrPC, other acts and ordinance related to law and order. They were trained in Riot Control Drill and Mob dispersal drill with special reference to arrest and search in urban and rural areas. Special emphasis was given on field craft and tactics and practical training was given in handling all sorts of firearms . As a result during 1986 an exclusive Mahila Bn was ready to be inducted in performing various kinds of duties and he who had the vision of creating the first armed Mahila Para Military Force was given tribute in a befitting manner by inviting him to take the salute of the Passing Out Parade on 30 March, 1986.

On their first call of duty, mahilas of this unit were deployed during the communal riots at Meerut in 1988 where they proved their mettle by their firm and effective handling of the situation . There after wherever they were deployed, be it Shillong , J&K, Bihar.Delhi,Assam,and North Eastern States they performed their duties to the utmost satisfaction. The Mahilas of this Unit have performed successfully with their male counterparts of Army and other PMF in joint counter insurgency operations in J & K and North East.

The Mahila Contigent was an important constituent of Indian Peace

keeping Force in Srilanka where they took their assignment in the tough and inhospitable conditions with nerve and panache as expected . During search and frisking duties they recovered large amount of arms/ammunition and explosives .

During the deployment in insurgency prone area the Mahilas have even laid down their lives while performing their duties . In recognition of her supreme sacrifice Constable Mahila Kamlesh Kumari was awarded ASHOK CHAKRA who is the first recipient of the highest peace time military award in the history of CRPF. Constable Bindu Kumre got the Police Medal for Gallantry posthumously. And the first ever Police women to be honored with Sena Medal is Constable Bimla Devi.



CRPF Mahilas on Patrolling duty

Besides performing Counter-insurgency operations along side army and other para military force in J&K an North Eastern States, Mahila Bn personnel have successfully earned laurels in dealing with women and children with dignity and compassion. Had there been no Mahila Bn during the Mandal Agitation in Delhi it would have been a Herculean task for the male counterpart to tackle the young crowd . On the induction of Mahila in this Para Military organization the male counter-parts who were already

here have become more compassionate and dignified in dealing with sensitive issues where Mahilas and small children are involved . These Mahila Bn have smoothened the rough edges of their male counter parts to a considerable extent and they have become good in their personal behavior.

Not only the Mahilas have proved their worth in dealing with various kinds of duties for which they were recruited, they have excelled in other fields .

In the field of sports , Mahila Bn has achieved a position of great distinction not only amongst the police organizations but also at the national and international level. In the All India Police Games, they have been the unchallenged winners. They have also shown prowess in various adventure sports like Mountain Cycling, Water Rafting, Mountaineering etc. Many of our officers and women represented the country in international meets including Asiad and the Olympics .



Mahilas frisking women yatris on their way to Holy Cave of Shri Amarnath

It speaks volumes of the dedication of our sports women that despite their busy schedule and wide deployment in different corners of the country, they practiced hard for brief periods before the competitions and came out with flying colours. The whole country is proud of the sports women like Kunju Rani Devi , Rigzan Angmo, Jincy Philip, Sonamacha Chanu,Manjima Kuriokose, Parminder Kaur, Riza Channu who also brought laurels to the Force. The sincere efforts, hard work and total devotion coupled with right directions from the senior authorities and all logistic support, these sports women have made our country proud . Besides sports, Mahilas also take keen interest in other activities like , Dance , Drama, during CRPF anny. and Annual Welfare Exhibitions . By virtue of their inherent talent they form a very good team as far as presentation of cultural programs are concerned.

Needless to reiterate that in spite of various constraints and service conditions it is only the sheer will of Mahila personnel which is making them enable to march forward along with their male counterparts . They are no less than their male counter parts in any field. Somebody has rightly said.

SUCCESS IS MAINLY ATTITUDE

-T.G.L. IYER
Ex-DG, CRPF



Shri S.C. Chaube, DG, CRPF interacting with a disabled Jwan during his visit to 102 RAF, Bn, CRPF, Mumbai

Harvard Business Review once published a Research study highlighting the factors leading to success. The study discovered that what contributed most to success, surprisingly, was not skill, education or qualifiacation but attitude, motivation and self-belief. The study revealed that only 20 percent of success was based on knowledge and 80 percent on attitude. Obviously, we need a base level of ability and skill but once we have acquired that, it all depends how we develop it?

The crucial factor in realising our potential is self-belief. Self-belief open up new perceptions and helps us to take up ideas and develop them. Self-belief is not a guarantee that we will succeed in the way we expect, but it increases our chances of success. **Today in many fields like Athletics, Football, Hockey and Tennis, players and participants spend more time on developing right attitude than increasing and improving technical skills.** They make their minds receptacles of success. They imagine themselves winning races, games, medals and titles. In the process, they climb the victory stand with the flag flying and National Anthem playing.

CHARLES HANDY author and co-founder of the London Business School wrote a book titled “The New Alchemists” in which he studied a number of successful entrepreneurs creating organisations and systems. One

common thread he found was that most of them had someone who believed in them, someone who had seen and detected their skills, what Sigmund Freud would call the ‘golden seed’. These individuals were not superior to others but their innate talents were recognised. Like the desert rain, this recognition helped them to nurture towards unconditional success. The passion of what you want or want to do and where you want to go puts you on the road to achievement. Purpose is the engine that powers our lives.

Most of us are inclined to look upon success as coming in some mysterious way through advantages we do not have like inheritance, lottery or a shower of gold. Perhaps, because we do have them, we don’t see them. The obvious is often unseen. We can turn the right knob or push the right button to get what we want. Mostly, we grope and search for that knob or button when it is there right in front of us. The man with a problem only sees what is under his nose. Distant possibilities go unclaimed, unattended and unnoticed. When you are cornered with an immediate problem you see the small picture and not the big distant picture of possibilities and opportunities ahead.

So, see the opportunities that lie around. Grasp the positive mental attitude, learn to comprehend the capabilities, envision the possibilities and then start the climb to success. Be a self-starter, self motivator, so powerful that it should subconsciously force you to desirable action. Usually what we read and profess becomes part of our libraries and vocabularies instead of becoming part of our lives. The secret of getting done is to follow the motto DIN i.e. Do It Now. Prepare and prevent is better than repair and repent.

Since the quality of your thinking determines the quality of your life, you need to become a skilled thinker if you sincerely desire to fulfil your potential. Part of skillful thinking is objectivity to analyse mental blocks, excuses, procrastinations and shutting the eye not to see the problem.



RAF officer administering pulse polio drop to an infant

The acceptance of complete responsibility, the giving up of excuses is not easy. Most people don't do it because it is like a parachute jump for the first time or driving in the Bazar for the first time after getting the licence.

You cannot abandon responsibility, control or shift your focus when you are handling a problem. Self-responsibility is the core quality of fully mature people. Successful people have a strong sense of internal accountability which extends to their work, home, and leisure time. The principle to follow is that we are all self employed; we are in charge of our lives.

CRPF BAND



Jazz Band



Brass Band



Pipe Band

जम्मू-कश्मीर में के.रि.पु.बल



बक्शी स्टेडियम में आयोजित मुश्ताक मेमोरियल फुटबाल मैच के समापन समारोह में जम्मू-कश्मीर के मुख्य मंत्री श्री मुफ्ती मोहम्मद सईद का स्वागत करते *82* बटा. केरिपुबल कार्मिकों के बच्चे

अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण जम्मू-कश्मीर राज्य की भारत संघ में हमेशा से ही एक महत्वपूर्ण स्थिति रही है। सामरिक दृष्टि से भी इसका बड़ा महत्व है क्योंकि पाकिस्तान, अफगानिस्तान तथा चीन में इसकी सीमाएं मिलती हैं | यह प्रचीन सेंट्रल एशियन ट्रेड रूट पर स्थित है तथा कश्मीर घाटी अति प्राचीन समय से ही भारत के मैदानों तथा मध्य एशिया के उच्च शिखरों के बीच कारवा के लिए विश्राम स्थली रही है। सामरिक महत्व का स्थान होने के साथ-साथ प्रकृति ने इस राज्य को उदारतापूर्ण अद्वितीय सुन्दरता प्रदान की है। इन्हीं कारणों से कश्मीर के लिए भारतीय मानस में एक अद्वितीय स्थान है।

भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद जम्मू व कश्मीर के तत्कालीन महाराजा हरि सिंह द्वारा 26 अक्टूबर, 1947 को भारत में विलय के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने के साथ ही यह राज्य भारत संघ में सम्मिलित हो गया। पाकिस्तान द्वारा समर्थित भारी संख्या में सशस्त्र कबीलों द्वारा कश्मीर पर आक्रमण करने के कारण इस समय तक यहां स्थिति बहुत ही चिंताजनक बन चुकी थी। भारत में विलय होने के बाद भारतीय

सशस्त्र बलों ने कश्मीर में पहुँचकर घाटी का तीन चौथाई क्षेत्र 1 जनवरी, 1949 को युद्ध विराम की घोषणा होने से पहले खाली करा लिया था। इस प्रकार हिंसा व अलगाववाद के बीज शुरू में ही वो दिये गये थे।

तत्पश्चात् भारत व पाकिस्तान के मध्य जम्मू व कश्मीर का मामला राजनीतिक व सैनिक रूप से एक अत्याधिक नाजुक मुद्दा बन गया। **वैधानिक रूप से जम्मू व कश्मीर भारत का अभिन्न अंग हो, यह पाकिस्तान को बिल्कुल भी बर्दास्त नहीं था, अतः वह लगातार राज्य में तोड़-फोड़ की गतिविधियों में उलझा रहा तथा इस पर अपना कब्जा लेने की कोशिशें भी करता रहा।** उसने 1965 तथा 1971 में भारत पर आक्रमण कर कश्मीर को हथियाने के असफल प्रयास भी किए गये। बहरहाल पाकिस्तान द्वारा लगातार विरोध जताने तथा शरारतपूर्ण प्रचार करने से जम्मू व कश्मीर राज्य में शांति व स्थिरता का माहौल नहीं बन पाया है। तबाही मचाने तथा हिंसात्मक आंदोलन के लिए स्वार्थी तत्वों द्वारा लोगों की भावनाएं भड़कायी गई। इस प्रकार की स्थितियों से निपटने के लिए केरिपु बल को शुरू से जम्मू व कश्मीर में लगाया गया था। केरिपु बल जम्मू व कश्मीर में 1953 से भी पहले से मौजूद था। विभिन्न प्रकार के आंदोलनों के समय शांति व्यवस्था बनाए रखने में इसने सहायता दी। इन आंदोलनों के दौरान आंदोलनकारियों द्वारा ऐसेम्बली हॉल में आग लगा दी गई थी और यदि केरिपु बल समय पर पहुंचकर आग बुझाने में मदद नहीं करता तो वह जलकर पूरा भस्म हो जाता। वर्ष 1954 के शुरू में केरिपु बल कम्पनियों को वापिस बुला लिया गया, परंतु 1966 में प्रथम बटालियन की कंपनियां दोबारा राज्य को कूच कर गई तथा 1959 तक वहां तैनात रहीं। इस अवधि में शांति व्यवस्था बनाने में इस बल ने राज्य सरकार की सहायता की।

केरिपु बल की एक और बटालियन (तीसरी बटा.) फरवरी, 1957 के दौरान राज्य में भेजी गई थी जो जुलाई, 1966 तक वहां रही। सीमा पर अपराधों में बढ़ोत्तरी होने पर 1958-59 के दौरान इस बटा. को भारत-पाक सीमा पर पुंछ सैक्टर में लगाया गया। इस बटा. ने घुसपैठ व तस्करी रोकने, छापामारों तथा जानवरों की चोरी करने वालों से निपटने में प्रशंसनीय कार्य किए। 1958 के दौरान शेख अब्दुल्ला के जेल से मुक्त होने पर राज्य में कानून व व्यवस्था की स्थिति गंभीर हो गई। तीसरी बटा. की कंपनियों को कानून व व्यवस्था बनाए रखने में व्यापक रूप से प्रयुक्त किया गया तथा राज्य के तत्कालीन प्रधानमंत्री ने इनकी कार्य कुशलता की भरपूर सराहना की। इस बटालियन की कंपनियों को जम्मू स्थित स्पेशल जेल तथा कुद स्थित सब जेल की निगरानी पर भी लगाया गया जहां शेख अब्दुल्ला तथा अफजल बेग जैसे महत्वपूर्ण कैदियों को नजरबंद रखा गया था।

जम्मू व कश्मीर में केरिपु बल की शुरूआती तैनातियों का जिक्र करना अधूरा ही रहेगा यदि लद्दाख में 21 अक्टूबर, 1959 को चीनी सैनिकों के हमले में शहीद हुए 10 केरिपु बल कार्मिकों का जिक्र न किया जाए। उन्हीं की याद में 21 अक्टूबर पूरे देश में पुलिस स्मारक दिवस के रूप में मनाया जाता है।

पचास के मध्य तक जम्मू व कश्मीर में केरिपु बल की स्थायी तैनाती के लक्षण स्पष्ट हो चुके थे। अतः भारत सरकार को जम्मू व कश्मीर में ड्यूटियों के लिए बल की तीन बटालियनें खड़ी करने का निर्णय लेना पड़ा। 1956 में सरकार ने केरिपु बल के अधीन पहली, दूसरी व तीसरी ज.व.क. बटालियनें खड़ी करने की स्वीकृति दे दी। अस्तित्व में आने के बाद इन बटालियनों को के.रि.पु. बल की 4वी., 5वीं, व 6वीं, बटा. के रूप में बल में शामिल कर दिया गया। प्रशिक्षण के पश्चात् चौथी व छठी बटालियनें जम्मू व कश्मीर भेज दी गई जबकि 5वीं बटा. को नागालैंड भेजा जाना था। 1967 में राज्य की लगातार बिगड़ती हुई हालातों के कारण के.रि.पु. बल की दूसरी बटा. भी जम्मू व कश्मीर रवाना कर दी गई। काफी आई.आर. बटालियनों को केरिपु बल में सम्मिलित करने के बाद तीन अन्य बटालियनें अर्थात 16, 20 व 22वीं बटा. भी जम्मू व कश्मीर में भेज दी गई। 16वीं व 20वीं बटा. को सेना के नियंत्रण में सीमा पार से होने वाले अपराधों तथा तस्करी रोकने के लिए कुछ प्रेक्षण चौकियों के रख-रखाव की जिम्मेदारी दी गई थी। पुंछ में कुछ दिन ड्यूटी करने के बाद, 22वीं बटा. को भी घाटी में कानून व व्यवस्था बनाए रखने के लिए भेजा गया।



श्रीनगर में तैनात *127* बटा. के जवान वी.आई.पी. क्षेत्र में वाहन की जाँच करते हुए



श्रीनगर की डल झील में पेट्रोलिंग करते बल के जवान

1989 के दौरान उग्रवाद बढ़ने से पूर्व कानून व व्यवस्था बनाए रखने के लिए राज्य में केवल 4 से 6 बटालियनें ही तैनात थी।

1989 में पाकिस्तान ने भारत से कश्मीर को अलग करने के लिए अप्रत्यक्ष लड़ाई लड़ने की एक ओर साजिश रची। भारी संख्या में कश्मीरी युवकों को फुसलाकर पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में बुलाया गया तथा वहां उन्हें तोड़फोड़ करने को प्रशिक्षण दिया गया तथा हिंसा फैलाने के लिए राज्य में वापिस भेजा गया। 1989-90 के अंत तक यहां का माहौल भयंकर रूप धारण कर चुका था। आतंकवाद का शुरूआती आघात इस बल को सहना पड़ा। आतंकवादी गतिविधियों के कारण राज्य पुलिस पूरी तरह पंगु हो गई थी, अतः केरिप बल को प्रति-विद्रोहात्मक अभियान चलाने के लिए स्वतंत्र जिम्मेदारी दे दी गई। स्पेशल टास्क फोर्स की संकल्पना भी केरिपु बल की देन थी और साथ ही संपूर्ण कश्मीर घाटी में प्रति-विद्रोहात्मक अभियान चलाए गए। इन तीन सालों में भारी शस्त्रों से लैस आतंकवादियों के साथ संघर्ष में केरिपु बल के 113 जवानों की जाने गई जिससे बल को, भारी नुकसान हुआ। 1992 के अंत में केरिपु बल की भूमिका उस समय बदल गई जब सीमा सुरक्षा बल को भारी संख्या में पंजाब से जम्मू व कश्मीर भेज गया तथा केरिपु बल को अशांतग्रस्त राज्य पंजाब में सामान्य स्थिति बनाए रखने के लिए भेज दिया गया। केरिपु बल की नफरी 129 कंपनियों से घटाकर 89 कंपनियां कर दी गई। केरिपु बल बड़े-बड़े प्रतिष्ठानों व अति-विशिष्ट व्यक्तियों की सुरक्षा में तैनात था जबकि सीमा सुरक्षा बल को जम्मू व कश्मीर में प्रति-विद्रोहात्मक अभियानों के संचालन की

जिम्मेदारी दी गई। 1995 में केन्द्र सरकार ने जम्मू कश्मीर में चुनाव कराने का निर्णय लिया था तथा केरिपु बल की 105 अतिरिक्त कंपनियां जम्मू व कश्मीर में भेजी गई जिससे वहां कुल कंपनियों की संख्या बढ़कर 255 हो गई। इन अतिरिक्त कंपनियों को वहां चुनाव से पहले स्थिति को नियंत्रण में रखने हेतु स्पेशल अभियान चलाने में लगाया गया था। 1995 के चुनाव हालांकि स्थगित करने पड़े थे किन्तु केरिपु बल की अतिरिक्त कंपनियों की तैनाती लगातार बनी रही। 1996 में भारत सरकार ने अंतिम रूप से निर्णय लिया कि जम्मू व कश्मीर में पहले संसदीय चुनाव कराए जाएं और इसके बाद विधान सभा चुनाव। चूंकि राज्य में उस समय कोई लोकप्रिय सरकार नहीं थी और न ही चुनाव ड्यूटियां करने के लिए स्थानीय कर्मचारी ही आगे आ रहे थे। अतः चुनाव प्रक्रिया में सरकार की ओर से समन्वय कार्य निभाने की जिम्मेदारी केरिपु बल को सौंपी गई। केरिपु बल के अधिकारियों ने इस कठोर जिम्मेदारी को सहर्ष स्वीकार कर लोकसभा व विधान सभा के दोनों ही चुनाव को शांतिपूर्वक संपन्न कराया। केरिपु बल के समर्पित जवानों व अधिकारियों के प्रयास से ही जम्मू व कश्मीर में 8 साल के अंतराल के बाद अक्टूबर, 96 में लोकप्रिय सरकार का गठन संभव हो पाया। और वहां लोकप्रिय सरकार का गठन होने के बाद केरिपु बल ने कश्मीर घाटी में जम्मू व कश्मीर पुलिस के स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप के साथ स्पेशल आपरेशन का अभियान चलाया। विगत चार वर्षों में केरिपु बल तथा स्पेशल आपरेशन ग्रुप के संयुक्त आपरेशनों में अधिकांश महत्वपूर्ण आतंकवादियों का सफाया कर दिया गया तथा भारी मात्रा में हथियार व गोलाबारूद आदि बरामद किये।

सितम्बर, 2002 में स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव कराने के लिए केरिपुबल की पहले से तैनात 360 कम्पनियों के अतिरिक्त 160 अतिरिक्त कम्पनियां तैनात की गई थी, बल ने एक बार पुनः इस आतंकवाद एवं उग्रवाद से ग्रस्त प्रदेश में आतंकवादी तथा अलगाववादी तत्वों की धमकियों के बावजूद स्वतंत्र एवं सुरक्षित मतदान करा कर अपनी प्रतिबद्धता सिद्ध की है।



75 बटा. केरिपु बल के कमांडेन्ट श्री सी.एस. राठोर को घाटी में बटा. द्वारा की गई सतर्कता पूर्ण ड्यूटियों के लिए प्रशंसा पत्र देते जम्मू एवं कश्मीर के राज्यपाल लेफ्ट. जनरल (सेवानिवृत्त) श्री एस.के. सिन्हा



पु.उ. महा. निरीक्षक (परि.) बारामुल्ला, *29* बटा. डेट मुख्यालय पर आयोजित समारोह में आतंकवादी कार्रवाई में मारे गये जवान के निकटतम संबंधी को अनुग्रह राशि का चैक प्रदान करते हुए

वर्तमान में केरिपु बल की 276 कंपनियां जम्मू व कश्मीर में तैनात हैं जिनमें से 199 कंपनियां कश्मीर क्षेत्र में है तथा 77 कंपनियां जम्मू क्षेत्र में हैं। सामान्य सुरक्षा तथा प्रति विद्रोहात्मक ड्यूटियां करने के साथ-साथ, केरिपु बल ने पल्स-पोलियों के टीकाकरण तथा सिविक-एक्शन प्रोग्राम में बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया है।

वर्ष 1998 व 2000 के दौरान नागरिक कार्रवाई कार्यक्रम पर कुल 1 करोड़ रुपये व्यय किए गए थे जबकि वर्ष 2001 से 2002 के दौरान भी 50 लाख रूपये की राशि सीएपी के लिए स्वीकृत की गई है। श्री अमरनाथ यात्रा के दौरान केरिपु बल के योगदान ने आम नागरिकों का ध्यान अपनी ओर खींचा है। श्री अमरनाथ यात्रा के दौरान केरिपु बल ने विभिन्न प्रकार की सुविधाएं प्रदान की हैं। इस वर्ष दुर्घटना रहित श्री अमरनाथ यात्रा सम्पंन कराने का श्रेय भी इस बल को जाता है।

जम्मू व कश्मीर में 1989 से लेकर आज तक विभिन्न आतंकवाद विरोधी अभियानों में केरिपु बल को 281 बहुमूल्य जीवनों से हाथ धोना पड़ा है। **बल के अधिकारियों व जवानों द्वारा दिए गए बलिदान व्यर्थ में नहीं गए हैं। राष्ट्रीय सुरक्षा तथा एकता को बनाए रखने तथा इस अशांतग्रस्त प्रदेश में शांति बहाल करने के प्रयासों में इनका बहुमूल्य योगदान रहा हैं।**

विगत दो वर्षों के दौरान जम्मू व कश्मीर की स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। राज्य में वर्तमान समय आतंकवाद भाड़े के विदेशी तत्वों से चल रहा है जो पाकिस्तान द्वारा भेजे जा रहे हैं। बल स्थानीय पुलिस के साथ शानदान सौहार्दता बनाए हुए है तथा राज्य में पूरी तरह सामान्य स्थिति बहाल करने के लिए सभी संभव मदद दे रहा है। हाल ही में सरकार ने केरिपुबल की निरपेक्ष छवि तथा परिचालनिक दक्षता को देखते हुए जम्मू एवं कश्मीर की आतंरिक सुरक्षा की जिम्मेदारी इसे सौंपने का फैसला किया है। और बल की कम्पनियां क्रमशः सीमा सुरक्षा बल तथा अन्य सुरक्षा बलों से इस राज्य की आतंरिक सुरक्षा ड्यूटियों की जिम्मेदारी सभालने में लग गई हैं।

पूर्वोत्तर में बल की तैनाती



केरिपु बल कार्मिक देश के उत्तरी-पूर्वी भागों में पेट्रोलिंग करते हुए



केरिपु बल जवान बंकर में से निगरानी करते हुए

उत्तर-पूर्व में के.रि.पु.बल



दीमापुर (नागालैण्ड) के शहरी क्षेत्रों में गस्त करते बल के जवान

देश का उत्तर पूर्वी भाग सात बहनों के नाम से जाना जाता है। अब इसमें आठवां राज्य (सिक्किम) एक भाई के रूप में और जुड़ गया है। और अब उत्तर पूर्व के राज्य सात बहनें और एक भाई के रूप में जाने जाते हैं। यह क्षेत्र विभिन्न समुदायों, वर्गों और भिन्न भाषाएं बोलने वाले लोगों का क्षेत्र है जिन की सांस्कृतिक विरासत और परंपराओं में भी भिन्नता है। इस क्षेत्र के मनमोहक सौंदर्य के अतिरिक्त यहां के निवासियों का भोलापन और उनका सादगी भरा जीवन भी यहां आने वालों को अपनी ओर आकर्षित करता है। खूबसूरत झीलों, नदियों, पहाड़ों और घने जंगलों से भरा यह प्रदेश यहां आने वाले सैलानियों के लिए स्वर्ग से कम नहीं है। हालांकि देश के अन्य राज्यों की अपेक्षा ये सभी राज्य पिछड़े हुए हैं, किन्तु यहां के निवासी बहुत सभ्य और सुसंस्कृत हैं। मैदानी क्षेत्रों के नागरिकों के मन में यह गलत धारणा है कि इन प्रदेशों में रहने वाले नागरिक आदिवासी या जनजातियों के लोग हैं लेकिन ऐसा नहीं है।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल और उत्तर पूर्वी राज्यों का बड़ा पुराना रिश्ता है। जब आजादी के फौरन बाद केरिपुबल की एक टुकड़ी का नागा विद्रोहियों से निबटने के लिए नागालैण्ड में तैनात किया गया था।

इस क्षेत्र में नागाओं की विद्रोही गतिविधियां सब से पुरानी है तथा अंग्रेजों की देन हैं।

नागा क्लब की स्थापना 1918 में हुयी थी और 1929 में जब साइमन कमीशन कोहिमा आया तो नागाओं ने उससे कहा कि उन्हें प्रस्तावित सुधारों से दूर रखा जाए। नागा नेशनल कौंसिल (एनएनसी) का गंठन काहिमा के तत्कालीन डिप्टी कमीशनर चार्ल्स पावसे की पहल पर हुआ। भारत और बर्मा के जनजातीय इलाकों को मिलाकर एक ब्रिटिश कालोनी बनाने के विचार से जन्म लिया। यही विचार बाद में एनएससीएन के अंतर्गत अलगाववादी आंदोलन में बदल गया। केरिपुबल की चार कंपनियों की एक टुकड़ी को सबसे पहले 1956-57 में इस इलाके में कोहिमा और उसके आस पास के क्षेत्रों में नागा विद्रोहियों की गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए भेजा गया। यह इलाका असम जिले के नागा हिल्स और नेफा के त्वेन सांग सीमांत प्रांत के रूप में जाना जाता था। बाद में 1957 में इनसे केन्द्रीय प्रशासन के अधीन क्षेत्रों में ले लिया गया और 1 दिसम्बर, 1963 को इसे नागालैण्ड राज्य के रूप में बदल दिया गया। अब तक नागालैंड में विद्रोही गतिविधियां अपने चरम पर पहुंच चुकी थी। 1956 से 62 के दौरान नागाओं ने पांच बार केरिपु बल कैम्पों पर हमला किया। केरिपुबल ने 311 विद्रोहियों को गिरफ्तार कर 195 घातक हथियार बरामद किये। यह संघर्ष और भीषण होता गया और 1974 तक बल के 154 कर्त्तव्य पर लड़ते हुए मणिपुर और नागालैण्ड क्षेत्र में वीरगति को प्राप्त हो चुके थे।

1962 के भारत चीन युद्ध के दौरान केरिपुबल को तत्कालीन नेफा के कामेंग और सियांग सीमांत प्रदेशों में तैनात किया गया। बाद में यह प्रदेश 1972 में संघ शासित प्रदेश और 1987 में अरूणाचल प्रदेश के रूप में अलग राज्य के रूप में अस्तित्व में आ गया। युद्ध विराम के बाद केरिपुबल को एक तटस्थ बल के रूप में हथियार और गोलाबारूद को अपने अधिकार में लेने के लिए चुना गया। उस वक्त चीन का इरादा नेफा के कामेंगं सियांग, लोहित और तिरेप तक के सीमांत क्षेत्रों को अपने कब्जे में ले लेने का था। वहां हमारी टुकड़ियों के दोबारा नागरिक मुख्यालय स्थापित कर इन पांचों क्षेत्रों में भारतीय प्रशासन का कामकाज सुचारू रूप से शुरू कराने में मदद दी। **1971 के भारत पाक युद्ध के दौरान केरिपु बल की तीन बटालियनें पूर्वी सेक्टर में तैनात की गयी। बल के कार्मिकों ने महत्वपूर्ण संस्थानों की सुरक्षा के साथ साथ सरहद पर लड़ रही सेनाओं की सप्लाई लैन को भी यथावत बनाए रखने में मदद दी।**

केरिपुबल जिसका गठन मूलतः कानून व्यवस्था की स्थितियों को बनाए रखने के लिए किया गया था। दिन प्रति दिन आतंकवाद विरोधी चुनौतिपूर्ण भूमिकाओं में उलझता जा रहा था। चीनी आक्रमण के बाद आंतरिक गड़बड़ियों के कारण उत्तर पूर्वी क्षेत्र में केरिपुबल की तैनाती लगातार बढ़ती गयी। बल की टुकड़ियों को असम, नेफा और नागालैंड में तैनात किया गया। असम का लुसाई पहाड़ी जिला (मिजोरम) 60 के दशक के शुरू में विद्रोही गतिविधियों से सर्वाधिक प्रभावित था। विद्रोह का यह स्तर घटता बढ़ता रहता था, जिस ने अंततः देश के विरूद्ध सशस्त्र विद्रोह का रूप ले लिया। असम के लुसाई जिले को 1972 में मिजोरम के रूप में एक संघ शासित प्रदेश बना दिया गया। डिस्टर्व एरिया एक्ट के तहत इसे अशांत क्षेत्र घोषित कर दिया गया।

उस समय यहां केरेपुबल की 15 बटालियनें तैनात थीं। हमारे जवानों की बहादुरी लगातार एमएनएफ (मिजो नेशनल फ्रंट) पर दबाव बना रही थी और उन्हें आत्म समर्पण के लिए मजबूर कर रही थी। 1987 में शांति समझौते के बाद मिजोराम भारतीय संघ का 23वां राज्य बन गया। राज्य के प्रथम चुनावों को सुचारू एवं शांति पूर्ण ढंग से संपन्न कराने में केरिपु बल ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। लोकतांत्रिक ढंग से चुनी गयी सरकार के साथ ही राज्य में सामान्य स्थिति बहाल हो गयी।



पूर्वोत्तर में बल का मानवीय स्वरूप–एक बुजर्ग की सहायता करते बल कार्मिक



डिब्रूगढ़ (असम) के देहाती इलाकों में पल्स पोलियों अभियान में लगे बल के जवान

त्रिपुरा भारत में विलय के साथ ही 1949 में संघ शासित प्रदेश के रूप में गठित हो गया और 1972 में एक पूर्ण राज्य बना दिया गया। किन्तु यह राज्य अपने जन्म से ही जनजातीय और गैर जनजातीय और घुसपेठियों के बीच संघर्ष की भूमि बना रहा। अन्य उत्तर पूर्वी प्रदेशों की तरह त्रिपुरा में भारत संघ से अलग होने के लिए कोई आंदोलन नहीं चला, किन्तु यहां संघर्ष का रूप राज्य के अंदर ही अल्पसंख्यक जनजातीय समुदाओं की पहचान बनाए रखने से संबंधित था। इस संघर्ष के सूत्रधार मुख्य गुट एटीटीएफ (आल त्रिपुरा ट्राइवल फोर्स) का गठन 1990 में टीएनवी (ट्राइवल नेशनल वालंटियरस) से टूट कर हुआ। 1988 में भारत सरकार के साथ शांति समझौता करने वाला टीएनवी त्रिपुरा में सबसे खतरनाक भूमिगत गुट था। राज्य में बल की 11 बटालियनों की लगातार तैनाती बनी रहीं। बल के जवानों ने इलाके में अपना दबाव बनाए रखते हुए स्थितियों पर नियंत्रण बनाए रखा।

असम में केरिपु बल ने 1960 के दशक में भाषाई आंदोलन के दौरान स्थानीय पुलिस की मदद दी। केरिपुबल को गुवाहाटी से डिब्रूगढ़ तक ओर नौगांव और तेजपुर में कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए तैनात किया गया। जैसे-जैसे तूरा, सिलवर ओर डिब्रूगढ़ में अशांति फैलती गयी केरिपु बल की इन क्षेत्रों में तैनाती बढ़ती रही। बल के जवानों की कठोर कर्तव्यनिष्ठा और बहादुरी के दम पर बिगड़ती स्थितियों पर प्रभावशाली ढंग से नियंत्रण कर लिया गया। कचार में स्थितियों पर नियंत्रण पाने में केरिपु बल ने अद्वितीय कौशल का परिचय दिया। 11 बटालियन ने 38 पाकिस्तानी घुसपैठियों को पकड़ कर एक इतिहास की

रचना की।

फरवरी 1976 में उत्तर पूर्वी राज्यों में लगातार बढ़ती बल की तैनाती को दृष्टि में रखते हुए महानिरीक्षक (उत्तर पूर्व) के कार्यालय की स्थापना की गयी। बाद में महानिरीक्षक परिचालन मणिपुर और नागालैंड तथा त्रिपुरा की स्थापना के साथ उत्तर पूर्व में परिचालनिक जिम्मेदारियों को बांट दिया गया।

उत्तर पूर्व का सबसे पुराना राज्य असम, आज फिरौती, लूट, अपहरण और हत्याओं की भूमि बन कर रह गया है। इन सब गतिविधियों को अंजाम देने वाले मुख्य गुट उल्फा (युनाइटेड लिब्रेशन फ्रंट आफ असम) की स्थापना कुछ असंतुष्ट लोगों ने 1979 में की थी, बहरहाल 1986 तक यह नागरिकों को बंगला देशी घुसपैठियों के खिलाफ भड़काने में लगा रहा। बाद में 1992 तक इस ने अपने अभियान का स्वरूप बदल कर असम को एक तथाकथित स्वतंत्र देश का दर्जा दिलाने के लिए सशस्त्र संघर्ष का रूप दे दिया। असम में कार्यरत मुख्य अलगाववादी गुट है। उल्फा, यूएनएलएफ (युनाईटेड नेशनल लिब्रेशन फ्रंट आफ मणिपुर), एनएससीएन नेशनल सोशलिस्ट काउंसिल आफ नागालैंड), के इसाक और मुइवाह गुट तथा पीएलए (पीपुल लिब्रेशन आर्मी), इन गुटों की सक्रियता के कारण यहां सुरक्षा बलों को अत्यधिक चौकसी और अहतियात बरतनी पड़ रही है। इस क्षेत्र में एक दम से उभरे हिंसा एवं अलगाव वादी माहौल के कारण सातों राज्यों की सरकारी तथा केन्द्र सरकार ने आतंकवादियों के विरूद्ध एक साथ मिलकर अभियान चलाने की ठानी और 1995 में असम में युनीफाइड कमांड के अधीन एक संयुक्त आपरेशन चलाया गया। इस आपरेशन तथा इलाके पर केरिपु बल के दबाव के कारण इन अलगाववादी गुटों को गंभीर परिणाम भुगतने पड़े। बंगलादेश, भुटान एनएससीएन के साथ शांति वार्ताओं के साथ स्थितियों को और बेहतर बनाने का मौका मिला।

उत्तर पूर्वी राज्यों में अपनी परिचालनिक क्षमताओं के अंतर्गत कार्य करते हुए केरिपु बल ने हमेशा प्रयास किया है कि भारतीय संविधान के दायरे के अंतर्गत ही सभी को वार्ता के लिए तैयार कर सके। यह केरिपु बल टुकड़ियों के ही प्रयास थे कि सरकार और एमएनएफ, टीएनवी ओर बोड़ों गुटों के बीच वार्ताएं संभव हो सकीं। किन्तु समझौतों पर हस्ताक्षर करना उतना कठिन नहीं था, जितना की इन समझौतों के प्रावधानों को लागू करना था। सबसे पहले नागरिकों के दिलों दिमाग में पुनः विश्वास पैदा की जरूरत थी। वे खुद को विद्रोहियों और कानून के रक्षकों के बीच फसा न महसूस करें। इस के लिए जरूरी है इलाके की बुनियादी समस्याओं की तरफ जल्दी से ध्यान दिया जाए।

इन इलाकों में केरिपु बल विद्रोहात्मक गतिविधियों से निबटने के अतिरिक्त बाढ़ आदि प्राकृतिक विभीषिकाओं के दौरान बचाव ओर राहत कार्यों, नागरिकों के लिए चिकित्सा शिविरों, पल्स पोलियों कैम्पों, वृक्षारोपण, कमजोर तबकों की मदद तथा रेल दुर्घटनाओं आदि के समय भी मदद देने के कार्य में लगा है।

आज केरिपु बल की कुल 822 कम्पनियों में से 340 कम्पनियां उत्तर पूर्वी

राज्यों में असम में 144, मांणेपुर में 61, मेघालय में 12, अरुणाचल प्रदेश में 16, नागालैंड में 24 तथा त्रिपुरा में 77 तथा मिजोराम में 6 कम्पनियां आतंक विरोधी तथा अलगावादी तत्वों से निपटने एवं इन राज्यों में शांति व्यवस्था बनाये रखने के लिए तैनात हैं। इससे यह स्पष्ट है कि लगभग आधा बल इस समय उत्तर पूर्व में तैनात है। यहीं अपने आप में इस बात का साक्ष्य है कि केरिपु बल की भूमिका उत्तर पूर्वी राज्यों एवं वहां के नागरिकों के लिए कितनी महत्वपूर्ण है।



देश के पूर्वोत्तर क्षेत्रों में किसी भी स्थिति का मुकाबला करने के लिए मुस्तैद बल के जवान



गौहाटी के महत्वपूर्ण इलाकों में सुरक्षा निगरानी करते *122* बटा. केरिपुबल के जवान

1988 से लेकर अब तक लगभग 16 वर्षों के दौरान केरिपु बल ने अकेले असम में 20,806 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया है जबकि 285 आतंकवादी इस दौरान 390 आपरेशनों में मारे गये। इस दौरान 1833 घातक हथियार तथा 21,773 गोली बारूद भी बरामद किया गया। मगर इस उपलब्धि की भारी कीमत भी बल को चुकानी पड़ी है। बल के 119 जवान और अधिकारी इस दौरान यहां वीरगति को प्राप्त हुए तथा 322 गंभीर रूप से घायल।

जबकि मणिपुर में बल के कार्मिकों ने इस दौरान 1695 आतंकवादियों को

गिरफ्तार किया और 51 विद्रोही मारे गये। इस दौरान 238 आपरेशनों में बल के 215 कार्मिकों ने देश की एकता और अखंडता की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहूति दी। बल ने यहां से 877 घातक हथियार और 5392 गोली बारूद भी बरामद किये।

इस अवधि में नागालैंड में बल के कार्मिकों से साथ हुई 43 मुठभेड़ों में 5 विद्रोही मारे गये तथा 229 घातक हथियार तथा 10,714 गोली बारूद बरामद किया गया। बल के 16 बहादुर कार्मिकों ने यहां अपने प्राणों की आहूति दी।

त्रिपुरा में गत 16 सालों में बल के साथ हुयी 256 मुठभेड़ों में 86 विद्रोही मारे गये तथा 2850 को गिरफ्तार किया गया। इसके अलावा 852 हथियार और 2542 गोली बारूद बरामद किया गया। यहां बल के 80 कार्मिक शहीद हुए तथा 129 गंभीर रूप से घायल।

मिजोरम, अरूणाचल प्रदेश तथा मेघालय में बल ने 784 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया तथा 40 आतंकवादी मारे गये। और उनसे विभिन्न मुठभेड़ों में 234 घातक हथियार तथा 5599 गोली, बारूद बरामद किया, इस सब के लिए हमारे जवानों को भारी कीमत चुकानी पड़ी और हमारे 17 वीर साथी वीरगति को प्राप्त हुए जबकि 67 घायल हुए।

उत्तर पूर्वी राज्यों में नागरिकों का विश्वास जीतने के लिए अपने सिविक एक्शन कार्यक्रम के तहत बल की युनिटें इन राज्यों के दूरदराज के इलाकों में मुफ्त दवा, पुस्तकें, शिक्षण सामग्री तथा खेल सामग्री आदि का वितरण करती रहती हैं। इसके अलावा जरूरत होने पर केरिपु बल की युनिटें स्थानीय रूप से स्कूल, बाथरूम तथा अन्य सामाजिक महत्व की स्थायी या अस्थायी इमारतों आदि को बनाने में भी स्थानीय प्रशासन को मदद देती हैं। बल के इन प्रयासों को स्थानीय जनता का भरपूर सहयोग और प्रशंसा प्राप्त होती है।

1996 से 2003 के दौरान बल के इस सिविक एक्शन कार्यक्रम के तहत असम, मणिपुर, नागालैंड, मेघालय और त्रिपुरा सहित उत्तरी पूर्वी राज्यों में लगभग 2 करोड़ 66 लाख रुपये खर्च किये गये है।

हमारी खेल प्रतिभाएं



12 दिसम्बर *2003* को नई दिल्ली में आयोजित *52*वीं अखिल भारतीय पुलिस ऐथ्लेटिक चैम्पियनशिप की महिला चैम्पियनशिप की ट्राफी प्रदान करते उप प्रधानमंत्री श्री एल.के. आडवाणी



टोंगा में सम्पंन हुए कॉमनवेल्थ खेलों में पदक जीतकर लाने वाले केरिपु बल के भारत्तोलकों को बल मुख्यालय में सम्मानित करते बल के महानिदेशक



बार्सिलोना *(*स्पेन*)* में सम्पंन हुए विश्व पुलिस फायर गेम-*2003* में पदक जीतने वाले केरिपु बल के खिलाड़ियों को बल मुख्यालय में सम्मानित करते बल के महानिदेशक



नवम्बर, *2003* में उड़ीसा में सम्पंन हुई *47*वीं अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी मीट की चौथी शूटिंग प्रतियोगिता की पिस्टल/रिवाल्वर प्रतिस्पर्धा की चैम्पियनशिप तथा ऑल अवर चैम्पियनशिप के उप विजेता केरिपु बल की टीम के खिलाड़ी



तालकटोरा स्टेडियम में आयोजित *52*वीं अखिल भारतीय पुलिस तैराकी चैम्पियनशिप के पदक विजेता तैराकों के साथ केन्द्रीय खेल राज्य मंत्री श्री विक्रम वर्मा एवं केरिपुबल के महानिदेशक



चैन्नई में सम्पंन हुई *51*वीं अखिल भारतीय पुलिस ऐथ्लेटिकस महिला चैम्पियनशिप की ट्राफी केरिपु बल के पुलिस महानिरीक्षक *(*प्रशि*)* श्री के.टी.डी. सिंह को प्रदान करती हुई तमिलनाडु की मुख्य मंत्री सुश्री जयललिता

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में खेल

– खजान सिंह
कमांडेन्ट (खेल)



***52*वीं अखिल भारतीय पुलिस ऐथ्लेटिकस चैम्पियनशिप की *4x400* पुरुष रिले दौड़ में स्वर्ण पदक विजेता बल के ऐथ्लेटिकस**

खेल कूद केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जीवन का अभिन्न अंग है और इस बल की पहचान हैं। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल हमेशा से ही खेलों व खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करता रहा है और बल के प्रशिक्षण संस्थान व यूनिटें खेल कूद की नर्सरी है जहाँ प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की पहचान कर उन्हें कोचिंग दी जाती है तथा उन्हें उच्च कोटि का खिलाड़ी बनाया जाता है। अखिल भारतीय पुलिस खेलों में हिस्सा लेने के साथ हमारे खिलाड़ियों ने विभिन्न खेलों में भारतीय पुलिस टीम का प्रतिनिधित्व भी किया है। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के पास कुंजा रानी देवी, सनामाचा चानू, जिन्सी

फिलेप, एन० लक्ष्मी, गीता मनराल, राजाराम टोकस, खजान सिंह, रेचा मिश्रा, दीपक कुमार सिंह, कैलाश सिंह, परमजीत सिंह, मनप्रीत सिंह, सुंदर सिंह, अकरम शाह, तनवीर जमाल, रिग्जिन अंगमो, ए० अनीता चानू, विकास पाण्डे व मोहित यादव जैसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी हैं, जिन्होंने क्रीड़ा के विभिन्न क्षेत्रों में अन्तर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति अर्जित कर बल का ही नहीं बल्कि देश का नाम ऊँचा किया है।

भारी परिचालनिक प्रतिबद्धताओं तथा देख के विभिन्न भागों में बढ़ती साम्प्रदायिक तनाव तथा अलगाववादी ताकतों द्वारा फैलाई जा रही हिंसा को देखते हुए बल के जवानों की ड्यूटियों में इजाफा ही नहीं हुआ बल्कि ड्यूटी समय में भी बढ़ोत्तरी हुई है और बदलते हुए इस सुरक्षा परिदृश्य में बल का कार्य काफी हद तक बढ़ गया है। इन सबके बावजूद कुछ समय निकाल कर हमारे कार्मिक विभिन्न तरह की क्रीड़ा प्रतिस्पर्धाओं में भाग लेते हैं। तथा 2003, के दौरान आयोजित विभिन्न राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय खेल प्रतिस्पर्धाओं में बल के खिलाड़ियों ने देश का प्रतिनिधित्व किया था और ढेर सारे स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक जीते थे।

इस वर्ष खेल के क्षेत्र में के०रि०पु०बल की उपलब्धियों की शुरूआत हम साहसिक अन्तर्राष्ट्रीय खेलों से करते हैं।

1986 में बल में महिला बटालियन का उद्भव होने के साथ-साथ इस बल में कुछ ऐसी महिला प्रतिभाओं ने कदम रखा जिन्होंने अपनी नियमित ड्यूटियों के क्षेत्र में तो नाम कमाया ही बल्कि खेल जगत में भी भारत का नाम स्वर्णित अक्षरों में लिखा। 1996 में स्टेट वोमेन फेस्टीवल में कुंजा रानी देवी व एन० लक्ष्मी ने साहसिक खेल भारोत्तोलन में भाग लिया और महिला क्रीड़ा क्षेत्र में ख्याति अर्जित की। तब से अभी तक बल की महिला खिलाड़ियों ने हर वर्ष भारोत्तोलन में अनेक स्वर्ण, रजत तथा कांस्य पदक जीतकर अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय तथा अखिल भारतीय पुलिस खेलों में बल की प्रसिद्धि की पताका फहराई और सफलता का दौर यह रहा कि बल के भारोत्तोलक खिलाड़ियों ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। उत्कृष्ट प्रर्दशन के लिए कुंजा रानी देवी, एन० लक्ष्मी तथा सोनामाचा चानू को देश के सबसे बड़े खेल पुरस्कार (अर्जुन पुरस्कार) से सम्मानित किया गया। वर्ष 2002 में मानवेस्टर (यू०के०) में आयोजित कॉमनवैल्थ खेलों में केरिपुबल की भारत्तोलक खिलाड़ी, सुश्री एन० कुन्जां रानी देवी तथा सोनामाचू चानू ने बल की उच्च कोटि की साहसिक, अमिट एवं चुनौती पूर्ण कार्य करने की भावनाओं की गरिमा को बनाए रखते हुए 48 किलोग्राम तथा 53 किलोग्राम वर्ग में तीन स्वर्ण पदक जीते जबकि 63 किलोग्राम वजन श्रेणी में हमारी नई उभरी प्रतिमा, प्रतिमा कुमारी ने दो स्वर्ण तथा एक रजत पदक जीते। 69 किलोग्राम की श्रेणी में नीलम लक्ष्मी ने तीन रजत तथा प्रसुमिता मंगराज ने 63 किलोग्राम में दो रजत और एक कांस्य पदक जीते। 58 किलोग्राम वर्ग में सुनैना आनंद ने तीन कांस्य पदक जीते इस प्रकार से देश के लिए बल के भारत्तोलकों ने कुल 19 पदक जीतकर बल और देश का गौरव बढ़ाया।

इसी वर्ष टोन्गा में आयोजित कॉमनवेल्थ खेलों में के०रि०पु०बल की भारोत्तोलक सुश्री कुंजा रानी देवी, सोनामाचा चानू, सुनैना आनन्द, प्रतिमा कुमारी व सुमति देवी ने बल की उच्च कोटि की साहसिक एवं चुनौती पूर्ण कार्य करने की भावनाओं की गरिमा को बनाए रखते हुए स्वर्ण पदक जीत कर बल और देश का गौरव बढ़ाया हैं। बल के भारत्तोलकों ने देश के बाहर ही नहीं, देश के अन्दर भी अपनी प्रतिभा और साहस का उत्कृष्ट प्रर्दशन कर बल के लिए ढ़ेर सारे पदक जीते हैं। इसी वर्ष लखनऊ में आयोजित सीनियर राष्ट्रीय भारोत्तोलक प्रतियोगिता में बल की महिलाओं ने 08 स्वर्ण, 15 रजत व 07 कांस्य पदक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया जबकि हैदराबाद में आयोजित प्रथम एफ्रो एशियन प्रतियोगिता-03, में बल भारत्तोलकों ने तीन कांस्य पदक प्राप्त कर बल का नाम रोशन किया हैं।

के०रि०पु०बल पहला ऐसा संगठन है, जिसने सबसे पहले जूडो टीम का गठन किया। 1981 में जर्मनी में आयोजित जूडो चैम्पियनशिप में पहलवानी से जूडो में आए के०रि०पु०बल के रामनिवास से भाग लिया था। 1989 में टोरन्टो (इटली) में आयोजित विश्व पुलिस प्रतिस्पर्द्धा में बल के मोहिन्दर सिंह ने देश का प्रतिनिधित्व किया। वर्ष 1999 में बल के जूडो खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय जूडो चैम्पियनशिप में हिस्सा लिया और चैम्पियनशिप जीती। बल में महिला जूडो टीम का गठन 1987 में हुआ और 2000, 2001, 2002 में चंडीगढ़, लखनऊ व मुम्बई में आयोजित सीनियर राष्ट्रीय जूडो चैम्पियनशिप में बल की महिला टीम ने प्रथम स्थान हासिल किया और फैडरेशन कप चैम्पियनशिप-2000 में टीम ने दूसरा स्थान हासिल किया। पटियाला (पंजाब) में आयोजित सीनियर नेशनल जूडो चैम्पियनशिप में हमारे 18 जूडों खिलाड़ियों (09 पुरूष व 09 महिला) ने भाग लिया तथा 08 स्वर्ण, 04 रजत एवं 07 कांस्य पदक कुल - 19 पदक प्राप्त कर दोनों वर्गों में प्रथम स्थान प्राप्त कर बल का गौरव बढ़ाया।

बल के पहलवान पहली बार अखिल भारतीय पुलिस खेलों में 1953 में अखाड़े में आये थे तथा 1975 व 1977 में चैम्पियन बन गए। 1970 में श्री सुखवंत सिंह को हिन्द केसरी व रूस्तमे हिंद का खिताब दिया गया। बल के पहलवानों ने राष्ट्रमंडल खेलों में देश का प्रतिनिधत्व किया तथा देश के लिए अनेक पदक एवं खिताब जीते। वर्ष 2002 में बल के चार पहलवानों ने ईरान में आयोजित 9वें जी.एफ. तथा जी.एस. जूनियर टूर्नामेन्ट में भाग लिया और तीन रजत और एक कांस्य पदक जीता जबकि 23वीं जूनियर नेशनल रेसलिंग चैम्पियनशिप में हमारे पहलवान खिलाड़ियों में दो स्वर्ण, 4 रजत तथा दो कांस्य पदक कुल आठ पदक जीतकर अखिल भारतीय खेलों में बल का नाम ऊंचा किया हैं। इस वर्ष हमारे पहलवानों ने पुरी (उड़ीसा) में 3 दिसम्बर, 03 से 7 दिसम्बर, 03 तक आयोजित 50वीं राष्ट्रीय कुश्ती प्रतियोगिता में 02 स्वर्ण, 02 रजत व 03 कांस्य पदक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

के०रि०पु०बल में पहली बार अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिता में 1960 में हिस्सा लिया था तथा 1977 में तैराकी चैम्पियनशिप जीत कर इसने अपनी पहचान बनाई थी। तब से हमारे तैराकों ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा और अनेक पदक

तथा खिताब जीत कर बल का ही नहीं बल्कि देश का नाम ऊंचा किया है। जहां के०रि०पु०बल ने अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित खजान सिंह जैसे तैराक पैदा किए, वहीं महावीर शेखावत, वी०एस० रविशेखर, पवित्र शर्मा तथा धारासिंह जैसे बहुत कई विश्वस्तीय गोताखोर देश को दिए हैं जो वर्षों तक गोताखोरी के चैम्पियन रहे। वर्ष 2002 चैन्नई में आयोजित बल के पुरूष/महिला तैराकों, वाटरपोलो खिलाड़ियों ने जूनियर तैराकी प्रतियोगिता में हिस्सा लिया और 4 स्वर्ण, 9 रजत तथा 3 कास्य, कुल 16 पदक जीतकर बल का नाम रोशन किया है। यही नहीं बल के महिला/पुरूष तैराकों ने चीन में अक्टूबर, 2002 में आयोजित सेकिन्ड एशियन ऐज ग्रुप तैराकी चैम्पियनशिप में भी अपने जौहर दिखाए तथा देश के लिए तीन रजत एवं 6 कांस्य पदक जीते। त्रिचूर, केरला में आयोजित राष्ट्रीय तैराकी चैम्पियनशिप, 2002 में बल के महिला /पुरूष तैराकों ने भारतीय पुलिस टीम की ओर से दिल्ली तथा केरला राज्य का प्रतिनिधित्व किया तथा 12 स्वर्ण, 10 रजत और 6 कांस्य पदक जीते। हमारे तैराकों ने अखिल भारतीय 51वीं पुलिस तैराकी प्रतियोगिता में अपना दबदबा कायम रखते हुए बल के निरीक्षक कैलाश नाथ तथा दीपक कुमार ने 200 मीटर की मिडले तथा 50 मीटर की ब्रेस्ट स्ट्रोक प्रतियोगिताओं में स्वर्ण पदक जीते जबकि हवलदार बी० सीजू ने 10 मीटर की हाई बोर्ड डाईविंग में रजत पदक जीता। निरीक्षक अमर मुरलीधरन ने 100 तथा 200 मीटर की फ्रीस्टाईल प्रतिस्पर्धा में स्वर्ण तथा निरीक्षक कैलाश नाथ ने रजत पदक जीता और 50 मीटर की बैक स्ट्रोक प्रतियोगिता में सेन्थिल कुमार ने बल को स्वर्ण पदक तथा निरीक्षक युद्धबीर टोकस ने कांस्य पदक दिलाया। 100 तथा 200 मीटर की बटर फ्लाई प्रतिस्पर्धा में निरीक्षक दीपक कुमार ने स्वर्ण जीता और 1 मीटर स्प्रिंग बोर्ड डाईविंग में सिपाही दिनेश बडोनिया ने कांस्य जीता। 4 किलोमीटर व 12 किलोमीटर क्रास कन्ट्री चैम्पियनशिप में बल की टीम ने रजत पदक जीता इस प्रकार से बल की तैराकी टीम ने तैराकी में प्रथम, वाटर पोलो में द्वितीय तथा क्रास कन्ट्री में तीसरी पोजीशन हासिल की। बल के निरीक्षक दीपक कुमार को चैम्पियनशिप का सर्वश्रेष्ट तैराक माना गया। हमारी टीम ने 16 स्वर्ण, 10 रजत तथा 7 कांस्य पदक जीतकर चैम्पियनशिप में सर्वाधिक पदक जीतने का खिताब पाया।



52वीं अखिल भारतीय पुलिस तैराकी एवं क्रास कन्ट्री चैम्पियनशिप की वाटर पोलो प्रतिस्पर्धा में ट्राफी/ पदक जीतने वाले बल के खिलाड़ी

27 जूलाई, 03 से 3 अगस्त, 03 तक बार्सिलोना (स्पेन) में आयोजित बर्ल्ड पुलिस व फायर गेम्स में बल के तैराक (पुरूष व महिला) ने 07 स्वर्ण, 08 रजत व 05 कांस्य पदक प्राप्त कर बल व देश का गौरव बढ़ाया है। हमारे तैराकों ने अपने जोहर देश में भी दिखाएं हैं। 1 सितम्बर, 03 से 6 सितम्बर, 03 तक दिल्ली में आयोजित 52वीं अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिता में बल के तैराकों ने 19 स्वर्ण, 07 रजत व 07 कांस्य पदक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। बल की वाटर पोलो टीम ने भी 04 किलोमीटर क्रास कंट्री प्रतियोगिता में भी प्रथम स्थान प्राप्त किया। बल के निरीक्षक दीपक कुमार को इस चैम्पियनशिप का सर्वश्रेष्ठ तैराक घोषित किया गया। इसी तरह बल की तैराकों ने कलकत्ता में आयोजित राष्ट्रीय तैराकी प्रतियोगिता – 03 में भारतीय पुलिस टीम, दिल्ली व केरल राज्य की टीमों का प्रतिनिधित्व किया तथा 10 स्वर्ण, 11 रजत और 06 कांस्य पदक प्राप्त किये हैं।



बल की विश्व स्तर की भारत्तोलक सुश्री कुंजा रानी, सहा. कमा. तत्कालीन राष्ट्रपति डा. के.आर. नारायनन से राजीव गांधी खेल रत्न पुरस्कार प्राप्त करते हुए।

1964 में ओलम्पिक खेलों के ऐथलिट गुरचरन सिंह रंधावा ने 110 मीटर बाधा दौड़ को 14 सेकण्ड में पार कर खेल-कूद में के०रि०पु०बल को पहली पंक्ति में स्थान दिलाया था और खेलों में प्रथम अर्जुन पुरस्कार प्राप्त करने का गौरव भी श्री रंधावा को प्राप्त हुआ था। खेल कूद में बल ने कई और आर०एस० बल, हरीचन्द, रसदेव सिंह, ए०एस० योहनन, परमजीत सिंह, जिन्सी फिलिप, दीपा ऐ०के०, सुधा के०पी०, तथा मरियम्मा कुरयाकोजे जैसे चोटी के खिलाड़ी दिये। वर्ष 2002 में बुसान, दक्षिणी कोरिया में आयोजित 14वें एशियाई खेलों में बल के खिलाड़ियों ने एक अनूठा प्रदर्शन किया और हमारी ऐथलिट जिन्सी फिलिप तथा मरियम्मा कुरियाकोजे ने 4x400 मीटर (महिला) रिले दौड़ में स्वर्ण पदक जीता तथा उड़न सिख मिल्खा सिंह का रिकार्ड

तोड़ने वाले बल के ऐथलेट परमजीत सिंह ने 4x400 मीटर (पुरूष) रिले दौड़ में रजत पदक जीतकर बल की प्रतिष्ठा बढ़ाई है। बल की महिला ऐथलिटों ने इस वर्ष फरवरी 2002 में जगदलपुर में आयोजित 27वें महिला राष्ट्रीय खेल फेस्टिवल में दिल्ली राज्य की ओर से भाग लिया और सात स्वर्ण, 2 रजत तथा 4 कांस्य पदक अर्जित किया। नेशनल क्रास कन्ट्री चैम्पियनशिप में भी बल की ऐथलिटों ने दिल्ली राज्य की ओर से भाग लिया और 4 किलोमीटर की दौड़ में दूसरा स्थान अर्जित किया। सांगली महाराष्ट्र में आयोजित 7वीं फेडरेशन कप क्रास कन्ट्री चैम्पियनशिप में 4 किलोमीटर की दौड़ में दूसरे स्थान पर रहे। जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम में आयोजित प्रथम नेशनल ऐथलिट सर्किट प्रतिस्पर्धा – 2002 में हमारी महिला खिलाड़ियों ने एक रजत तथा दो कांस्य पदक जीते। महिला ऐथलिटों के साथ-साथ बल के पुरुष ऐथलिटों ने भी पदक जीतने का सिलसिला जारी रखा और 8वीं सीनियर फेडरेशन कप मीट-2002 में चैन्नई में एक रजत तथा तीन कांस्य पदक जीते तथा महिला ऐथलिटों ने एक रजत तथा दो कांस्य पदक जीतकर बल के लिए खाते में पदको की संख्या बढ़ाई। बल की जानी-मानी ऐथलिट सीमा अनतिल ने क्रिस्टन (जमैका) में सम्पन्न हुई विश्व जूनियर ऐथलिट चैम्पियनशिप-2002 में दूसरी बार स्वर्ण पदक जीत कर अपना प्रभाव बनाए रखा। 19वी नार्थ जोन जूनियर एथलिट चैम्पियनशिप 2002 में बल की सिपाही (महिला) मीना छांगरा ने स्वर्ण पदक जीता। इस वर्ष बल की महिला ऐथलिटों ने अपना प्रभाव कायम रखते हुए बल के लिए अधिक पदक बटोरे। चौथी राष्ट्रीय सर्किट मीट में एक रजत तथा दो कांस्य पदक अर्जित किए जबकि 42वीं ओपेन नेशनल ऐथलिट चैम्पियनशिप में बल के ऐथलिटों ने 3 रजत तथा 3 कांस्य पदक जीते।

बल की महिला ऐथलिट उप निरी० सीमा अनतिल ने बैंकाक (थाईलैण्ड) में आयोजित एशियन जूनियर ऐथलिट चैम्पियनशिप 2002 में देश का प्रतिनिधित्व किया और दो कांस्य पदक जीत कर देश की गरिमा को बनाए रखा। बल की तीन महिला एथेलिटों ने नेशनल ऐथलिट चैम्पियनशिप में बल की ओर से भाग लिया और इस प्रतिस्पर्धा में एक रजत तथा एक कांस्य पदक जीता।

इसी वर्ष बार्सिलोना (स्पेन) में आयोजित वर्ल्ड पुलिस एवं फायर गेम्स में बल के ऐथलिटों ने 07 स्वर्ण, 01 रजत व 02 कांस्य पदक प्राप्त कर बल व देश का गौरव बढ़ाया।

प्रथम एफ्रो एशियन प्रतियोगिता में बल के ऐथलिटों ने भाग लेकर देश व बल के लिए कांस्य पदक प्राप्त किये।

हॉकी में के०रि०पु०बल ने कई बड़े-बड़े टूर्नामेंट जैसे नेहरू हॉकी, श्रीराम डी०सी०एम० कप हॉकी, महाराजा गोल्ड कप, मुम्बई गोल्ड कप तथा के०डी०सिंह बाबू टूर्नामेंट में जीत हासिल की। के०रि०पु०बल ने एस०एस०मान, प्रमोद कुमार, तनवीर जमाल, मुकेश कुमार व सतिन्दर सिंह जैसे कई उत्कृष्ट हॉकी खिलाड़ी पैदा किए हैं। 52 वीं अखिल भारतीय पुलिस हॉकी प्रतियोगिता –03 में बल की टीम ने

तृतीय स्थान प्राप्त किया।

बल की बास्केटबॉल टीम ने पहली बार 1966 में अखिल भारतीय पुलिस खेलों में भाग लिया तथा विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय तथा पुलिस खेलों में लगातार जीत हासिल की। एम०बी०सिंह, पी०पी०सिंह, वी०एन०कुट्टी, जगजीत सिंह तथा सुखविन्दर सिंह जैसे बास्केटबॉल के खिलाड़ी बल की देन हैं।

इस वर्ष कुवैत में आयोजित आमन्त्रित बास्केटबॉल टूर्नामेंट में बल के हवलदार बिजेन्द्र सिंह ने भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व किया और भारतीय टीम ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

बॉलीबाल भी के०रि०पु०बल में बहुत लोकप्रिय खेल रहा है तथा के०रि०पु०बल की टीम 1981 व 1982 में अखिल भारतीय पुलिस खेलों में चैम्पियन रह चुकी है। सतिन्दर सिंह, स्वतंत्र सिंह तथा अर्जुनसिंह जैसे प्रतिभाशाली खिलाड़ी के०रि०पु०बल की ही देन हैं।



इस वर्ष केरिपु बल की सेन्ट्रल कबड्डी टीम द्वारा जीती गई ट्राफियां एवं शील्डों के साथ खिलाड़ी

शूटिंग एक बहुत ही शौकिया खेल है परन्तु के०रि०पु०बल के लिए यह कर्त्तव्य स्वरूप है। बल के निशानेबाजों ने अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी मीट में शानदार प्रदर्शन किया। बल में श्री टी०एस० ढिल्लन ने एशियाई खेलों में तथा बर्ल्ड पुलिस एण्ड फायर गेम्स, टोरन्टो में देश का प्रतिनिधित्व किया था। वह आज भी अन्तर्राष्ट्रीय शूटिंग

कोचिंग एसोशियेशन के सदस्य हैं। मानिक राम, तारू राम, हेम्मत सिंह, देवी सिंह, दिलबाग सिंह, के० माधवन तथा सर्वजीत सिंह आदि कई निशानेबाज, के०रि०पु०बल की ही देन हैं। वर्ष 2002 में 46वीं अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी मीट निशानेबाजी प्रतियोगिता में के०रि०पु०बल की महिला खिलाड़ी कनकलता ने पहली बार स्वर्ण पदक जीता जबकि बल के उप कमाण्डेन्ट एस०एस० घुमन ने रजत पदक जीतकर निशानेबाजी की साख को बनाये रखा। बल में शूटरों ने 12वीं अखिल भारतीय जी०बी० मवलकर शूटिंग चैम्पियनशिप में इस वर्ष अपना दबदबा बनाये रखते हुए एक स्वर्ण तथा तीन कांस्य पदक अर्जित किए। इस वर्ष 47वीं अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी मीट निशानेबाजी प्रतियोगिता में 03 रजत पदक प्राप्त कर पिस्टल में प्रथम और ओवर ऑल में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

खेल-कूदों तथा खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने में के०रि०पु०बल का बहुत बड़ा योगदान रहा है और राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में नाम कमाया है। **वर्ष 2003 में बल के महिला/पुरूष खिलाड़ियों ने एथलेटि प्रतियोगिताओं में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर 07 स्वर्ण, 01 रजत व 02 कांस्य पदक जीते। बल में महिला/ पुरूष तैराकों ने अन्तर्राष्ट्रीय तैराकी प्रतियोगिताओं में 07 स्वर्ण, 11 रजत व 08 कांस्य पदक प्राप्त किये।**

इसी वर्ष बल के महिला/पुरूष खिलाड़ियों ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर 21 स्वर्ण, 22 रजत व 22 कांस्य पदक प्राप्त किये। राष्ट्रीय स्तर पर 50 स्वर्ण, 52 रजत व 29 कांस्य पदक प्राप्त किये एवं अखिल भारतीय पुलिस खेलों में 37 स्वर्ण, 28 रजव व 29 कांस्य पदक प्राप्त कर बल को गौरवान्वित किया।

हमें पूरा भरोसा है कि बल के होनहार युवा खिलाड़ी इस बल तथा देश का नाम सदैव इसी प्रकार से ऊंचा करते रहेंगे।

सामुदायिक विकास - एक नया परिप्रेक्ष्य

- गुरचरण सिंह, पु.उ.म.नि., गुडगांव



वार्षिक कल्याण प्रदर्शनी में बल के परिवार कल्याण केन्द्रों द्वारा निर्मित वस्तुओं को देखती हुई श्रीमती कमला आडवाणी एवं श्रीमती कंचन चौबे

अर्ध सैनिक बल कार्मिकों के निरंतर सक्रिय ड्यूटी पर लम्बे समय तक रहने के कारण अपने परिवारों की तरफ उचित ध्यान नहीं दे पाते हैं। और निरंतर दबाब में रहते हैं जिसके परिणाम स्वरूप बल के सदस्यों में आत्म-हत्या तथा एक दूसरे को गोली मारने की प्रकृति पनप रही है। विभिन्न विभागों ने इस प्रकृति पर अध्ययन किए हैं, परंतु उनके द्वारा बताए गए निवारक उपायों में इस समस्या का स्थाई समाधान नहीं हो सका है। इस समस्या का समाधान केवल बल कार्मिकों के परिवार एवं उनके जीवन स्तर को उच्चा उठाने से हो सकता है। समाज में तेजी से बदलाव, सयुंक्त परिवारों का टूटना, मंहगी शिक्षा पद्धति और बढ़ती बेरोजगारी के कारण भी बल कार्मिक दबाब में रहते हैं।

उक्त समस्याओं के व्यापक समाधान से ही बल कार्मिकों के परिवार का विकास हो सकता है। अतः उनके परिवारों और बच्चों को सस्ती दर पर व्यावसायिक प्रशिक्षण दिलाना, सांस्कृतिक गतिविधियों में शामिल कराना, रोजगार के अवसर मुहैया कराना, विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाना तथा बच्चों के लिए विशेष रोजगार परामर्श कार्यक्रम चलाना आदि शामिल हैं। ऐसे सुगम प्रयास किये जाने चाहिए जिनमें समाज के सभी वर्गों की भिन्न-भिन्न आकाक्षांओं का समावेश हो सके। राजनैतिक-सामाजिक-आर्थिक वातावरण और धार्मिक-सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि के आधार पर प्रत्येक सामाजिक ग्रुप का अपना एक स्वभाव/लोकाचार होता है। इसलिए समाज में व्याप्त कुन्ठाओं को उचित रीति से बाहर निकाल फेंकना चाहिए। आदर्श विकास के

लिए सर्वप्रथम राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक बनावट को पहचान करना, समाज की सांस्कृतिक और धार्मिक पृष्ठभूमि में होने वाली अडचनों का पता लगाना, प्रोजेक्ट के लक्ष्यों को लागू करने वालों की पूरी तरह पहचान करना, विकास कार्यक्रमों की स्वीकृति के लिए टारगेट ग्रुप में जानकारी मुहैया करना और विकास कार्यक्रम बनाने के लिए उनकी उचित मांग और मुददों की पहचान करना बहुत जरूरी है। विकास कार्यक्रम बनाने के बाद इन्हें चरण बद्ध तरीके से लागू किया जाना चाहिए और इनकी वास्तविक प्रगति की जानकारी लेनी चाहिए। यह अवश्य सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि टारगेट ग्रुप बिना किसी विरोध के धीरे-धीरे इस बदलाव को स्वीकार करे है।

विद्यमान में के०रि०पु० बल के परिवार कल्याण केन्द्रों का मुख्य उद्देश्य जवानों के परिवारों को सिलाई के माध्यम से आय बढ़ाना है। लेकिन इससे मूल समस्या का हल नहीं निकलता हैं।

यह कहना भी यहां उचित होगा कि किसी भी सरकारी एजेन्सी में बदलाव और मजबूती तभी आ सकती है, जब उसके पर्याप्त नियम/कानून हों और उसके सभी कर्मचारी इस बदलाव को लागू करने की इच्छा शक्ति रखते हों। के०रि०पु० बल ने परिवार कल्याण केन्द्रों की गतिविधियों में विविधता लाने के लिए कुछ ऐसे ही नियम बनाए हैं ताकि बल कार्मिकों की एक लम्बे अर्से से चली आ रही शिकायतों का समाधान हो सके। इन नियमों को उदार बनाने का मुख्य उद्देश्य परिवारों कल्याण केन्द्रों में कुछ बदलाव लाना हैं ताकि बल कार्मिकों के परिवारों को बताया जा सके कि महिला और बच्चों के सशक्तिकरण से ही उनके जीवन में श्रेष्ठता लाई जा सकती है। ये उदार नियम परिवार कल्याण केन्द्रों की गतिविधियों में विविधता लाने के लिए बहुत लाभदायक हैं। यदि इन नियमों को सही ढंग से लागू किया जाए तो परिवार कल्याण केन्द्र स्थानीय निकायों से मिलकर न केवल नई गतिविधियां शुरू सकेगें बल्कि उत्पादक यूनिटें भी स्थापित कर सकेगें। इससे महिलाओं तथा बच्चों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने में काफी सहायता मिलेगी। इस तरह बल के कार्मिकों परिवारों की अस्थिरता संबंधित तकलीफें कम हो जाएगी।

उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए ग्रुप केन्द्र के०रि०पु० बल, गुडगांव में सामुदायिक विकास केन्द्र की स्थापना की गई है।

परिकल्पना

सामुदायिक विकास की आवश्यकता का मतलब समाज के सभी वर्गों का विकास कर आत्म-निर्भर बनाना है। एक आधुनिक परिकल्पनानुसार प्रत्येक समाज को जाति, धर्म और वर्ग के आधार पर बांटा गया है। किसी भी विकास कार्यक्रम को बनाने से पहले प्रत्येक वर्ग की जटिलताओं का ध्यान रखना आवश्यक है। विकास कार्यक्रम तभी सफल हो सकते हैं जब लोगों की समस्याओं और आर्थिक स्तर की पहचान हो जाए और यह ध्यान रखा जाए कि कार्यक्रम किसके लिए बनाए गये हैं।

विकासीय संस्कृति को शुरूआत करने के लिये कर्मचारियों, सरकार, गैर सरकारी संगठनों और समाज के प्रत्येक वर्ग को एक जुट होना आवश्यक है। यदि ये सभी वर्ग मिलजुल कर कार्य करें तो विकास कार्य आसानी से हो सकते है। सामुहिक विकास सही अर्थों में तभी सम्भव हो सकता है, जब समाज के सभी वर्गों के लोग आपस में एक दूसरे के साथ मिल-जुल कर काम करें। इसके लिए यह जरूरी है कि लोगों में जागरूकता पैदा की जाए और समाज के सभी वर्गों को यह जिम्मेदारी सौंपी जाए।



सीआरपीएफ वाइव्ज वेलफेयर एसोसियशन की अध्यक्षा श्रीमती कंचन चौबे, ग्रुप केन्द्र, नई दिल्ली में आयोजित हैल्थी बेबी शो में शिशुओं को पुरस्कार देती हुई।



कल्याण दिवस के अवसर पर उपहार ग्रहण करने वाली ग्रुप केन्द्र-*II*, अजमेर की महिला सदस्य

परिकल्पना के मूल्यांकन के लिये सभी उच्च अधिकारियों द्वारा ग्रुप केन्द्र के कार्मिकों की महिलाओं एवं बच्चों के विकास से संबंधित सुधारात्मक योजनाओं को लागू करने के लिये विचार विमर्श शुरू किया गया। यह योजनाएं बल के कार्मिकों की मनोदशा और सामाजिक-आर्थिक व सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के आधार पर बनाई गई थी। सबसे पहले यह रूकावट सामने आई कि लोगों में रूचि की कमी थी और परिवार के सदस्य बदलाव को ग्रहण नहीं करना चाहते थे। इसलिए यह निर्णय लिया गया कि कार्मिकों और उनके परिवार के सदस्यों को इन विकासात्मक परियोजनाओं के बारे में उचित सलाह दी जाए। और परिवार कल्याण केन्द्र में कार्यरत महिलाओं को उच्च अधिकारियों की पत्नियों द्वारा सलाह देना शुरू की गई। और यह प्रक्रिया लगभग एक माह तक जारी रखी। लेकिन फिर भी उत्साहवर्धक परिणाम नहीं निकले।

इसके बाद परामर्श का एक नया तरीका अपनाया गया जिसमें सभी उच्च अधिकारी व उनकी पत्नियाँ और चिकित्सा अधिकारियों ने कार्मिक एवं उनके परिवार के सदस्यों से विचार विमर्श शुरू किये। जिसके परिणाम स्वरुप बहुत सारी महिलाएं और बच्चे नई परियोजनाओं में स्वेच्छिक रूप से शामिल हुए। फिर भी इस योजना को लागू करने में निम्नलिखित रूकावटें आई :—

स्वंय की सहायता के आधार पर चलाए जा रहे व्यावयायिक प्रशिक्षण में शामिल होने के लिए महिलाओं ने रूचि नहीं दिखाई।

प्रशिक्षण की ऊंची दरों के भुगतान में रूचि नहीं दिखाई।

विकासात्मक गतिविधियों को व्यापक रूप से शुरू करने में मूल साधनों की कमी।

किसी भी सरकारी/गैर सरकारी संगठन ने शुरू करने में कोई सहयोग नहीं दिया।

उपरोक्त कठिनाईयों को दूर करने के लिए कई तरीके अजमाएं गये।

सबसे पहले यह जरूरी समझा गया कि अपनी योजनाओं की शुरूआत करने के लिए कुछ सामाजिक कार्यकर्ता और गैर सरकारी संगठनों की पहचान की जाए। इसलिये एक गैर सरकारी संस्था एस.एन.एस. फाउनडेंशन से सम्पर्क किया जिसका मुख्यालय गुडगांव में है। ग्रुप केन्द्र में एक संयुक्त उपक्रम सामुदायिक विकास केन्द्र की स्थापना के लिए एस.एन.एस. फाउनडेंशन के उच्चधिकारियों से बातचीत की गई। ग्रुप केन्द्र गुड़गांव के बारे में लोगों को जानकारी देने के लिए स्थानीय प्रेस और मीडिया से भी सम्पर्क किया गया। इसके बाद ग्रुप केन्द्र गुडगांव की छोटी-छोटी घटनाओं को भी स्थानीय प्रेस और मीडिया ने प्रसारित करना शुरू किया। एस.एन.एस. फाउनडेंशन ने सिलाई मशीनें, कम्प्यूटर, ब्यूटी पार्लर और मोमबत्ती बनाने के लिए जरूरी सामान निःशुल्क उपलब्ध कराने के लिए सहमति दी। एस.एन.एस. फाउनडेंशन विभिन्न योजनाओं के लिए प्रशिक्षित ट्रेनिंग स्टॉफ उपलब्ध कराने के लिये भी सहमत हो गया।

एस.एन.एस. फाउनडेंशन के सहयोग से ग्रुप केन्द्र गुड़गांव के परिवार कल्याण केन्द्र में प्रथम चरण में ब्यूटी पार्लर कोर्स, कटिंग और सिलाई, बुनाई, ड्रेस डिजाईनिंग, मोमबत्ती बनाना, कम्प्यूटर, स्वास्थ्य सहायक प्रशिक्षण कोर्स शुरू किए जायगें।

हमारे प्रशिक्षण केन्द्र में चलाए जा रहे इन प्रशिक्षण कोर्सों को मान्यता दिलाने के लिए राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय से सम्पर्क कर प्रयास किए गए। राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय के प्रशासनिक अधिकारी प्रत्येक व्यावसायिक कोर्सों की समाप्ति पर सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक परीक्षा लेने के बाद डिग्री/डिप्लोमा देने को सहमत हो गये है। इसके साथ-साथ विभिन्न व्यापारिक संगठनों, ब्यूटी पार्लर, निर्यातक कम्पनी, शापिंग और अस्पतालों आदि से भी हमारी प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण/अवसर जुटाने के प्रयास किए गए। इनमें से कुछ व्यापारिक और निर्यातक कम्पनियां हमारे प्रशिक्षण केन्द्र में अपने माल का उत्पादन कराने के लिए सहमत हो गयी।

यहां पर एस.एन.एस. फाउनडेंशन के बारे में भी संक्षिप्त चर्चा करना समीचीन होगा जिसके द्वारा यह परियोजना चलाई गई है।

इसका जन्म एक ट्रस्ट के रूप में हुआ। इसकी स्थापना आनन्द ग्रुप कम्पनी द्वारा की गई थी, जो ऑटोमेटिव पाटर्स की उत्पादक है। इस फाउनडेंशन का मुख्य उद्देश्य कार्यक्रमों को प्रत्यक्ष रूप से लागू करके भारत के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में सभी को शिक्षित करना, सभी के लिए जच्चा बच्चा स्वास्थ्य योजना तथा निरंतर विकास के साथ-साथ खण्डित समाज को गतिशील बनाना है। इस संस्था का उद्देश्य गुडगांव के

शिक्षित बच्चों के लिए विस्तृत स्तर पर "शहरी समृद्धि विकास आंदोलन" चलाना है। इस फाउनडेंशन की शाखाएं हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक और तमिलनाडु में भी हैं।

ग्रुप केन्द्र गुडगांव में सामुदायिक विकास केन्द्र स्थापना :—

पूरी पृष्ठभूमि तैयार करने के बाद ग्रुप केन्द्र गुडगांव में एस.एन.एस. फाउनडेंशन के सहयोग से 25 जून, 2003 को "कावा" की अध्यक्षा श्रीमती कंचन चौबे द्वारा सामुदायिक विकास केन्द्र का उद्घाटन किया गया और इसमें ब्यूटी पार्लर कोर्स, कटिंग और सिलाई, ड्रेस डिजाईनिंग, मोमबत्ती बनाना, कम्प्यूटर, स्वास्थ्य सहायक प्रशिक्षण कोर्स आरम्भ किए गये।

एस.एन.एस. फाउनडेंशन के साथ एक ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गये जिसमें गरीब व निम्न वर्ग के लोगों को इन कोर्सों में शामिल करने के लिए प्रस्ताव रखा गया है। विभिन्न कोर्सों की वर्तमान स्थिति इस प्रकार है :—

1. सौन्दर्य प्रसाधन कोर्स



ग्रुप केन्द्र, गुड़गांव में ब्यूटी पार्लर का उद्घाटन करती हुई श्रीमती कंचन चौबे

इस कोर्स की अवधि 6 माह रखी गई है। इस कोर्स को क्रमबद्ध बनाने के लिए इसे पांच भागों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक भाग में सैद्धांतिक व व्यावहारिक कक्षाओं के लिए एक महीने का समय सुनिश्चित किया गया है। छठा महीना पुनः अभ्यास एवम् व्यावहारिक कक्षाओं के लिए रिजर्व रखा गया है। प्रशिक्षुओं को

व्यावहारिक ज्ञान देने के लिए ग्रुप केन्द्र में कम कीमत पर ब्यूटी पालर भी चलाया जा रहा है। यह कोर्स महिलाओं को इस योग्य बनाता है कि वह अपने घर में स्वयं ब्यूटी पार्लर खोल सके। इस प्रशिक्षण केन्द्र में प्रशिक्षण ले रहे प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षणापरान्त ब्यूटी पार्लरों द्वारा रोजगार देने की इच्छा व्यक्त भी की गई है। कोर्स फीस बल के सदस्यों के परिवारजनों के लिए 50/- प्रति माह व अन्य के लिए 100/- प्रति माह निर्धारित की गई है। कोर्स की समाप्ति पर नेशनल ओपन स्कूल द्वारा डिप्लोमा प्रदान किया जाता है। इस समय 58 महिलाएं इस कोर्स में प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं।

2. कटाई सिलाई कोर्स :—

इस कोर्स की अवधि 6 माह है। यह मुख्य रूप से एक व्यावहारिक कोर्स है, कोर्स पांच भागों में विभाजित है। इस में भी सैद्धांतिक एवम् व्यावहारिक कक्षा चलाई जाती हैं। छठा महीना पुर्नाभ्यास व व्यावहारिक ज्ञान के लिए निर्धारित किया गया है। इस कोर्स में सूट, फ्राक, पेट-कोट, ब्लाउज, बेबी सूट की कटाई सिलाई व बुनाई आदि शामिल है। यह कोर्स इन महिलाओं को इस योग्य बनायेगा कि वह दर्जी की दुकानों एवम् निर्यात केन्द्रों में रोजगार के अवसर प्राप्त कर सके तथा घर बैठे कपड़ों की सिलाई करके पैसे कमा सकें। कोर्स की मासिक फीस बल के परिवारीजनों के लिए 50/- व आम जनता के लिए 100/- रखी गई है। कोर्स पूरा होने पर नेशनल ओपन स्कूल द्वारा डिप्लोमा भी दिया जायेगा। इस समय 51 महिलाएं इस कोर्स में प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं।

3. ड्रेस डिजाईनिंग कोर्स

कोर्स की अवधि 6 माह की निर्धारित की गई है। यह मुख्य रूप से व्यावाहरिक कोर्स है और इसे पांच भागों में बाटां गया है। प्रत्येक भाग के लिए एक महीना सुनिश्चित किया गया है। इस कोर्स में सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक कक्षाएं चलाई जाती हैं। छठा महीना पुर्नाभ्यास व व्यावहारिक कक्षाओं के लिए रिजर्व रखा गया है। इस कोर्स में कढ़ाई, क्रोशिया, डिजाईनर गाउन, सूट, फ्रॉक, बेबी सूट, पैरलल सूट, पुरूष शर्ट आदि की सिलाई की जाती है। यह कोर्स महिलाओं को निर्यात केन्द्रों में रोजगार प्राप्त करने और घर में सिलाई करके पैसे कमाने के योग्य बनाएगा। कोर्स की मासिक फीस बल के परिवारीजनों के लिए 50/- व आम जनता के लिए 100/- रखी गई है। कोर्स पूरा होने पर नेशनल ओपन स्कूल द्वारा डिप्लोमा भी दिया जायेगा। इस समय 51 महिलाएं इस कोर्स में प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं।

4. मोमबत्ती बनाना

यह पूर्ण रूप से व्यावाहारिक कोर्स है। पुरूष एवं महिलाएं इसे आसानी से सीख सकते हैं। यह कोर्स सेवा निर्वित कार्मिकों को भी इस योग्य बनायेगा की वह घर बैठे मोमबत्तियां बनाकर बाजार में बेच कर अपनी जीविका कमा सकें। जैल व डिजाइनर मोमबत्तियों की मांग बाजार में तेजी से बढ़ी है। इसे बनाना भी अत्यंत सरल है। यह

कोर्स दो माह का है। इसके पाठ्यक्रम में मोमबत्ती बनाना, डिजाइन करना, जैल व फ्लोटिंग मोमबत्तियां बनाना शामिल है। अब तक तकरीबन 8 के०रि०पु० बल कार्मिकों को इसका प्रशिक्षण निःशुल्क में दिया जा चुका है। इनके द्वारा बनाई गई मोमबत्तियों का प्रदर्शन परिवार कल्याण केन्द्र प्रर्दशनी के दौरान भी किया गया तथा उनकी कला की भरपूर प्रशंसा की गई। अभी 10 महिलाएं इस कोर्स में प्रशिक्षण प्राप्त कर रही है। प्रशिक्षण केन्द्र द्वारा बनाई गई मोमबत्तियों को खरीदने के लिए स्थानीय बाजारों द्वारा इच्छा व्यक्त की गई।

5. कम्प्यूटर कोर्स

इस कोर्स की अवधि 6 माह की है। इसमें सैद्धातिंक व व्यावहारिक दोनों सत्र समाहित है। संक्षेप में इस कोर्स में कम्प्यूटर की मूलभूत जानकारी, टाईपिंग टयूटर, एम.एस. ऑफिस, एम.एस. वर्ड, एम.एस. ऐक्सल, एम.एस. पावॅर पाउंट, फोक्सप्रो, इत्यादि शामिल है। इन प्रशिक्षणार्थियों के लिए रोजगार केन्द्रों से सम्पर्क स्थापित किया गया। कर्मचारियों को कम्प्यूटर चलाने का बेसिक प्रशिक्षण दिया गया है। एस.एन. एस. फाउनडेंशन के द्वारा 6 कम्पयूटर और प्रशिक्षण स्टाफ की व्यवस्था की गई है। मासिक फीस बल के परिवारीजनों के लिए 100 रूपये तथा आम जनता के लिए 200 रूपये प्रति माह रखी गई है। कोर्स की अवधि 6 माह की है। कोर्स की समाप्ति पर नेशनल ओपन स्कूल द्वारा डिप्लोमा प्रदान किया जायेगा। इस कोर्स में अभी तक 49 प्रशिक्षार्थी है।



ग्रुप केन्द्र, बनतलाब के परिवार कल्याण केन्द्र द्वारा चलाई जा रही ब्यूटी पार्लर में हेयर ड्रेसिंग कराती महिला

6. स्वास्थ्य सहायक ट्रेनिंग कोर्स

यह कोर्स 6 माह का है इसमें सैद्धांतिक व व्यावहारिक दोनों ही सत्र समाहित हैं। संक्षेप में इस कोर्स में मानव शारीरिक ढ़ांचे, मनोविज्ञान, पोषण, स्वास्थ्य एवं साफ-सफाई, शिशु देखभाल, बिस्तर की बनावट आदि शामिल है। प्रशिक्षुओं के रोजगार के लिए निजी अस्पतालों से सम्पर्क किया गया है। यह कोर्स महिलाओं को बाल गृह व केयर टेकर्स और अस्पतालों में रोजगार के अवसर दिलायेगा। यह कोर्स ग्रुप केन्द्र एवं एस. एन.एस. के चिकित्सकों द्वारा चलाया जा रहा है। इसकी मासिक फीस 100 रूपये है। इस कोर्स को भारतीय अस्पताल एशोसिएशन द्वारा मान्यता प्राप्त है। अभी इस कोर्स में 8 महिलायें भाग ले रही है।

भविष्य की योजनाएँ :—

उपरोक्त के अतिरिक्त ग्रुप केन्द्र गुडगांव ने कुछ अन्य कार्यक्रम भी शीघ्र शुरू करने की योजना बनाई है। एस.एन. एस. फाउण्डेशन एवं नाकों के माध्यम से एड्स जागरूकता अभियान। हस्तकला, बॉस का सामान व नरम खिलौने बनाने का

प्रशिक्षण भी शुरू किया जा रहा है। साथ ही निम्न रैंक के कर्मचारियों के किशोर बच्चों के लिए विशेष कैरियर काउसलिंग सत्र भी आयोजित करने का विचार है।

महिलाओं के स्वास्थ्य की देखभाल

महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए यह जरूरी है कि स्वास्थ्य एवम् पोषण सम्बन्धी समस्याओं की तरफ ध्यान दिया जाये और उसकी गहराई से व्यापक रूप से जांच की जाये। हमारी महिलायें ज्यादातर ग्रामीण परिवेश की हैं। अतः स्वास्थ्य की ओर उनकी जागरूकता बहुत कम है। आर्थिक कमजोरी, गरीबी, कुपोषण, साफ-सफाई की कमी, अशिक्षा, रीति-रिवाज तथा आचार-विचार और स्वास्थ्य के प्रति अनभिज्ञता, अस्वास्थ्यता का कारण बनते हैं। उनकी स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं चाहे छोटी हो या बड़ी नजरअंदाज कर दी जाती है,। अतः यह महसूस किया गया कि महिलाओं के सामान्य उत्थान की अत्यंत आवश्यकता है। उन्हें ऐसी मदद की जरूरत है जिससे कि वे एक स्वस्थ जीवन व्यतीत कर सके और अपनी जिदंगी के निर्णय स्वयं ले सके।



ग्रुप केन्द्र, हैदराबाद के परिवार कल्याण केन्द्र द्वारा स्थापित रूप-निखारिका

अतः महिलाओं की समस्याओं के समाधान के लिये ग्रुप केन्द्र गुड़गांव की महिला डाक्टरों ने प्रतिदिन 2-3 महिलाओं से व्यक्तिगत बातचीत शुरू की है, जो आपसी विश्वास बनाने की प्रक्रिया का एक हिस्सा था एवं डाक्टर व रोगी के पारस्परिक सम्बधों के लिए एक जरूरी कदम है। महिलाओं के स्वास्थ्य की रूप-रेखा एक विवरण के रख रखाव हेतु एक कम्पयूटराईज प्रोग्राम तैयार किया गया जो कि हमें निम्न सहायता प्रदान करता है।

* कम्पयूटराईज चिकित्सा आकड़ों का रख-रखाव।

* आवश्यकता पड़ने पर किसी भी विषय का विवरण तुरंत प्रदान करना।

* किसी व्यक्ति के स्थानांतरण पर ई-मेल द्वारा स्वास्थ्य रिपोर्ट नए स्थान पर भेजना।

निष्कर्ष

राष्ट्र के स्वास्थ्य का राज हमारे देश के लोगों के घरों में छिपा है तथा घर मूलरूप से महिलाओं एवम् बच्चों से बनता है। अतः महिलाओं एवम् बच्चों के स्वास्थ्य के प्रति हम लोगों को जागरूक रहना अत्यन्त आवश्यक है। महिलाओं का शारीरिक, मानसिक और सामाजिक कल्याण करने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए ताकि उन्हें स्वस्थ्य एवं बेहतर कल, उपहार स्वरूप दे सकें।

बल के सामाजिक कार्यक्रम



पूर्वोत्तर में लोगों का विश्वास हासिल करने के लिए स्थानीय स्कूली बच्चों को किताब-कापियां बाटते हुए केरिपु बल के अधिकारी व जवान



गोकुलपुरी, नई दिल्ली में आरएएफ द्वारा आयोजित मुफ्त चिकित्सा शिविर

सांस्कृतिक कार्यक्रम





केरिपु बल में चिकित्सा सुविधाएं



कम्पोजिट अस्पताल जम्मू में ऑपरेशन करते बल के चिकित्सक



गौहाटी के बेस अस्पताल-*3* में इलाज करा रहे जवानों से बातचीत करते हुए बल के महानिदेशक श्री एस.सी. चौबे

केरिपु बल की औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान



औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, भुवनेश्वर में टीवी मैकेनिक का प्रशिक्षण लेते प्रशिक्षु



सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल, रोहिणी के छात्रों द्वारा आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम





विद्यालय का वह अविस्मरणीय दिवस



केरिपु बल महिला कल्याण समिति की अध्यक्षा श्रीमती कंचन चौबे सीआरपीएफ, पब्लिक स्कूल, रोहिणी की केन्टीन का उद्घाटन करती हुई

18 अक्टूबर, 2003 द्वितीय कक्षा के विद्यार्थियों के लिए हर्ष और उल्लास का दिन था। इस दिन इस कक्षा के विद्यार्थियों के लिए विद्यालय में ही रात्रि-निवास की व्यवस्था थी। हमारी मान्यता है कि यदि बालक को स्वाभालंबी बनाना है तो उसमें उत्तरादायित्व की भावना इसी उम्र में डालनी चाहिए। इसी दिशा में हमारा यह प्रयास है। कि बच्चों का स्र्वांगीण विकास किया जाए। उनमें सहयोग की भावना, शारीरिक विकास, मानसिक चेतना तथा उत्तरदायित्व वहन करने की क्षमता का विकास हो। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए स्कूल प्रतिवर्ष विद्यार्थियों के लिए रात्रि निवास का आयोजन करता है।

स्कूल का प्रयास रहता है कि इस दौरान बच्चों को संतुलित भोजन के गुणों से अवगत करा जाए। आज के युग में जहाँ डिब्बाबंद भोजन का प्रचलन जोरों पर है, हम चाहते हैं कि हमारे विद्यार्थी ताजे व संतुलित भोजन का सेवन करें, जिससे उनका संपूर्ण शारीरिक विकास हो सके। उस दिन दोपहर के भोजन से लेकर अगले दिन के नाश्ते की संपूर्ण व्यवस्था विद्यालय के छात्रावास की ओर से की

गइ थी।

सर्वप्रथम विद्यार्थियों को मैट्रो रेल की सैर करवाई गई। यह उनके लिए नया अनुभव था। विद्यार्थियों के चेहरे खुशी से चमक रहे थे। स्कूल आने के पश्चात् उन्होंने अपने कपड़े बदले और चल दिए छात्रावास की ओर, यह हमारा सौभाग्य था कि उस दिन हमारे विद्यालय के प्रबन्धक श्री ए०पी० महेश्वरी भी हमारे विद्यालय में आए हुए थे। उन्होने हमारे नन्हे विद्यार्थियों के कार्य-कौशल की प्रशंसा की। दोपहर के विश्राम के पश्चात् कुछ मनोंरजक खेल बच्चों की प्रतीक्षा कर रहे थे, जिसका उन्होंने दोनों बाहें फैलाकर स्वागत किया। विद्यार्थियों ने अपना कौशल संगीत व नृत्य प्रतियोगिता, चित्रकला प्रतियोगिता आदि में दिखाया। उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए पुरस्कार स्वरूप पुस्तकें दी गई। उनकी ऊर्जा को कायम रखने के लिए शाम को गर्म दूध तथा फल दिए गए।



सीआरपीएफ़ पब्लिक स्कूल रोहिणी के वार्षिक समारोह के दौरान आयोजित रंगा-रंग कार्यक्रम में भाग लेने वाली छात्रा से वार्तालाप करती श्रीमती अंजना कुमार एवं स्कूल के प्राचार्य, श्री सूरज प्रकाश

रात्रि में भोजन की व्यवस्था पुनः छात्रावास में थी। रात्रि में आरामदायक बिस्तर, अध्यापिकाओं द्वारा विद्यार्थियों से वार्तालाप तथा मनोरंजक कहानियों द्वारा उन्हें घर जैसे वातावरण का अहसास करवाया गया। रात्रि के शान्तिपूर्ण विश्राम के पश्चात् भोर

हुई। सभी विद्यार्थी तरोताजा थे। उसी कुशलता से वे दैनिक कार्यक्रम से निवृत्त हुए। प्रातः ईश वन्दना हुई फिर नाश्ता कराने तथा आकर्षक उपहारों के साथ उन्हें अपने अभिभावकों के साथ विदा किया गया।



गुजरात में आयोजित राष्ट्रीय लम्बी कूद प्रतिस्पर्धा में दिल्ली राज्य का प्रतिनिधित्व करने वाले छात्र विजय कुमार से बातचीत करते उप महानिरीक्षक (प्रशा) एवं स्कूल मैनेजर डा. ए.पी. माहेश्वरी

इस एक दिन और रात के सानिध्य ने शिक्षक और शिक्षार्थियों के संबंध को और भी घनिष्ठ बना दिया। अपनेपन तथा प्यार की भावना को और भी सुदृढ़ कर दिया।



उप प्रधान मंत्री, श्री एल.के. आडवाणी की धर्म पत्नी श्रीमती कमला आडवाणी केरिपु बल द्वारा आयोजित वार्षिक कल्याण प्रदर्शनी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करती हुई।



ग्रुप केन्द्र, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "हैल्थी बेबी शो" में शिशुओं को पुरस्कार प्रदान करती हुई केरिपु बल परिवार कल्याण समिति की अध्यक्षा श्रीमती कंचन चौबे



केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री आई.डी. स्वामी *27* नवम्बर, *2003* को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित अलंकरण समारोह में बल के अधिकारियों एवं जवानों को राष्ट्रपति का सराहनीय सेवा पदक प्रदान करते हुए